आज़ादी की लड़ाई

लेखक व प्रकाशक —

वीर लक्ष्मी चन्द गुप्त

शीतलप्रसाद "विद्यार्थी"

के प्रबन्ध से शान्ति प्रिन्टिङ्ग प्रेस,

सहारनपुर में मुद्रित।

प्रथम बार } १५ जून १[illegible]

भारत के बे ताज बादशाह



पं० जवाहरलाल नेहरू

❋ समर्पण ❋

श्रीमान् पं० जवाहरलाल जी

भारत वर्ष की सेवा करने में आप को जो जो कष्ट भोगने पड़े हैं उनका इतिहास साक्षी है। भारत वर्ष को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये और यहां के दीन हीन दुखी किसानों और मजदूरों के कष्टों को दूर करने के लिये भारत माता ने आपके मस्तिष्क पर ही विजय कुंकुम लगाया है और देश की पताका आपके हाथ में दी है इस लिये देश वासी आप को अपना बेताज बादशाह मानते हैं। इन भावों से प्रेरित होकर सेवक आपको सेवा में आजादी की लड़ाई सादर समर्पित करता है।

आपका सेवक—

ता० १५-६-३६ वीर लक्ष्मीचन्द गुप्त

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम् ॥

सुजलाम् सुफलाम्, मलयज शीतलाम् ।
शस्य श्यामलाम् मातरम्॥वन्दे मातरम् ॥
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुम दल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥
त्रिशंकोटि कंठ कल कल निनाद कराले ।
द्वित्रंश कोटि भुजै धृर्त खर कर वाले ॥
के बोले माँ तुभि अचले ।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम् ॥
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम् ।
धरणीम् भरणीम् मातरम् ॥ वन्दे मातरम् ॥

आज़ादी की लड़ाई



※ भारत माता ※

भारत माता के प्रति



मा जागो, क्या तुम नहीं देखती कि हमारे पैरों मे परत न्त्रता की बेड़िया पड़ी हुई हैं। हम बेबस है, दूसरों के आधीन हैं फिर भी आप सो रही हो यह तुम्हारी कैसी लीला है मा!

सर्व भूमडल पर शासन करने वाली माता तुम्हारे एक हाथ में खांडा है, दूसरे में त्रिशूल, तीसरे में गदा, चौथे में देश का तिरगा झडा जो कि सचाई और स्वतन्त्रता का झडा है। माता कभी तो आपने यह झडा अत्याचार के विरुद्ध उठाया। तुम शक्ति हो मा फिर भी हम निर्बल हैं, वृथाए नष्ट हैं। विदेशियों ने हमारे पैर काट डाले, हाथ काट डाले, जन्म भूमि को अपने अपवित्र पैरों से कुचल डाला यह कितनी बुरी बात है मां!

अब तो जागो क्या इस में तुम्हारा अपमान नहीं है। तुम यह कब तक देखती रहोगी कि तुम्हारे पुत्र परतन्त्र ही बने रहें। जागो भारत जननी! हमारे प्रश्न का उत्तर दो। तुम कब तलक परतन्त्रों की माता कहलाती रहोगी। उठो, जागो, हम तुम्हें कब से जगा रहे हैं मा!

माता! तेरे लाल महात्मा गांधो जी कितने दिनों से अपने सत्याग्रह रूपी अस्त्र से तेरे पुत्रों की रक्षा कर रहे हैं।

जवाहरलाल जी कितने दिनों से तेरे लालों को तेज और जोहर दे रहे हैं सुभाष तेरे चरणों में कितने दिनों से सेवा कर रहा है परन्तु हे माता जी तुम कब तक हमारी कठोर परीक्षा लेती रहोगी।

अब तो जागना ही पड़ेगा। अपने घर में आई हुई दुर्गन्धि को हटाना ही पड़ेगा! आप हमें शक्ति दो कि हम सर्वदा आपकी सेवा करते रहें। माता मैं आपकी सेवा में यह दूसरी तुच्छ भेंट चढ़ाता हूँ मुझे पूरी आशा है कि आप इसे स्वीकार करोगी और मुझे शक्ति प्रदान करोगी कि मैं आपकी सेवा अन्तिम दिन तक करता रहू।

आपका का प्रिय पुत्र—
वीर लक्ष्मीचन्द गुप्ता



प्रस्तावना

संसार द्वंद्वमय है। इसमें सुख दुख हर्ष शोक और संयोग वियोग आदि सभी एक के बाद एक होते रहते हैं। भारत ने भी कभी बड़े अच्छे दिन देखे थे। उस समय उसके पास विद्या, बुद्धि, बल एवं वैभव सभी कुछ था, किन्तु संसार के नियम के अनुसार अथवा इतिहास के सार्वजनिक नियम के अनुसार उसको पराधीनता के बंधन में पड़ना पड़ा। अब यहां परतन्त्रता रूपी कालरात्रि के गहन अंधकार ने अपना वह प्रभाव जमाया कि हम अपने को बिलकुल भूल कर अज्ञानता एवं दासता की मोह निद्रा में बेसुध होकर सो गए। किन्तु प्रकृति अथवा इतिहास के उसी सार्वजनिक नियम के अनुसार हमारी उस दासता का अंत भी आने वाला है। इस समय भारत की परतंत्रता रूपी कालरात्रि का अन्तिम प्रहर समाप्त हो रहा है। सुदूर पूर्व में आशा के अरुण का उदय होने के कारण हृदय में उत्साह की तरंगें हिलोरें मार रही हैं। अब यदि कमी है तो केवल स्वतंत्रता के बाल सूर्य प्रगट होने मात्र की ही है।

किन्तु स्वतन्त्रता का बालसूर्य सांसारिक सूर्य से कुछ भिन्न प्रकार का होता है। सांसारिक सूर्य नित्य प्रति ठीक समय पर उदय हो जाता है, जबकि स्वतन्त्रता के बालसूर्य का उदय निश्चित समय के अनुसार न होकर वह उदय होने से पूर्व पूरी उपासना की अपेक्षा करता है। वह उपासना होती हैं आत्म बलिदान कष्ट सहन एवं तपस्या के रूप में। इसके लिये भारत वासियों और विशेषकर उसके नवयुवकों

को अतीत के गौरव की याद दिलानी होगी। सोये हुये सिंह को न केवल रण की हुंकारों से, वरन् विरदावली से जगाना होगा। वीर लक्ष्मीचन्द्र गुप्त ने अपने जिम्मे यह कार्य लेकर वर्तमान ग्रन्थ के द्वारा भारत के नवयुवकों को झकझोर कर जगाने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने ग्रन्थ में भारत के अतीत गौरव का स्मरण कराकर अंग्रेजों के उन रोमहर्षण अत्याचारों को स्मरण कराया है, जिन को पढ़ कर आप कभी भी चुप नहीं रह सकेंगे। गुप्त जी ने वर्तमान ग्रन्थ के द्वारा अपने को महात्मा गांधी के अहिंसामय आन्दोलन का अनुयायी सिद्ध किया है, किन्तु उनकी लेखनी बतलाती है कि वह वर्तमान अंग्रेज़ी शासन के एक जबरदस्त विद्रोही हैं, उन्होंने अपने ग्रन्थ के स्थान २ पर विद्रोह की रणहुंकार के सदेश को ओजस्वी शब्दों में सुनाया है। यद्यपि वह नवीन लेखक एवं नवयुवक हैं किन्तु भाषा उनके उत्साह एवं अग्निमय सदेश को किसी प्रकार भी छिपाने में सफल नहीं हो सकी है। गुप्त जी और रूसी टाइप के विद्रोहियों में मुख्य अन्तर यह है कि गुप्त जी विद्रोह का मन्त्र देकर केवल विनाशात्मक काम ही करना नहीं चाहते वरन् आज की आवश्यकता को स्पष्ट शब्दों में रखते हुए कांग्रेस और मुसलमान, सब से बड़े ग्रहशिल्प खद्दर, हमारी शिक्षा प्रणाली के दोष, देहात सुधार, जेल सुधार, एवं ग्रामीणों की शिक्षा के विषय में भी निश्चित राष्ट्रीय दृष्टिकोण उपस्थित करते हैं, जिससे निश्चय ही इस पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। इसके विरुद्ध दूसरे प्रकार के विद्रोही केवल लड़ाई चाहते हैं। वह उसके बाद का प्रोग्राम उपस्थित नहीं करते।

आज भारत वर्ष स्वतंत्रता सग्राम के साथ २ पुनर्जागृति काल (Renaissance) में से गुज़र रहा है। वास्तव में किसी देश के इतिहास में यह काल इस बात का चिन्ह है कि अब उस देश का मस्तिष्क जाग्रत हो गया है और वह उन्नति के मार्ग पर है। हमको आज उन्नतिशील साहित्य की आवश्यकता है। हमारे देश की सब से बड़ी साहित्यिक आवश्यकता है वर्तमान इतिहास का ज्ञान, हमको देश विदेशों की वर्तमान् राजनीतिक स्थिति को न केवल शब्दों में वरन् इस प्रकार के भावों में भी समझ लेना चाहिये कि हमको प्रत्येक वर्तमान् घटना का पूरा इतिहास मालूम हो इस उद्देश्य के लिये हमको वर्तमान् शासकों की जीवनियों देश विदेश के वर्णनों एव राजनीतिक पुस्तकों के अध्ययन का विशेप रूप से प्रचार करना चाहिये। वर्तमान् ग्रथ के प्रचार से भी हमारे इस राष्ट्रीय उद्देश्य की बड़े अ श तक पूर्ति होगी।

इस प्रकार वर्तमान् इतिहास के अध्ययन से हमको यह पता लगेगा कि हमारा ससार के नागरिकों में कहा स्थान है। ससार के साथ २ चलने के लिये हमको इतिहास भूगोल तथा विज्ञान का भी गभीर अध्ययन करने के लिये इस प्रकार के ग्र थों की रचना करनी होगी।

इसमें सदेह नहीं कि राष्ट्रीय कविताए तथा राष्ट्रीय उपन्यास हमारे इस ग्रन्थ निर्माण के कार्य में बहुत बड़ी सहायता दे सकते हैं, किन्तु खेद है कि उस प्रकार के लेखकों की रुचि अभी तक भी मुख्य रूप से वासनामय साहित्य की ओर ही है। स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द्र जी तथा कविवर मैथिली

शरण गुप्त जी का आदर्श अभी हिन्दी साहित्य में विशेष प्रचलित नहीं हो पाया है।

जिस समय हम इस प्रकार अपने साहित्य के द्वारा भारत की राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति करने में जुट पड़ेंगे उस समय समस्त जनता भी हमारे साथ होगी और उस स्वतंत्रता के उस बालसूर्य के उदय होने में अधिक विलम्ब न होगा। वास्तव में स्वतंत्रता की अग्नि सामान्य अग्नि से कुछ भिन्न प्रकार की ही होती है। सामान्य अग्नि अपने ऊपर राख पड़ जानेसे कुछ समय अन्दर सुलग कर बिल्कुल ठंडी हो जाती है, किन्तु स्वतन्त्रता की अग्नि जिसका वर्तमान ग्रन्थ के कुछ आरम्भिक अध्यायों में वर्णन किया गया है दमन रूपी राख में दबादी जाने पर भी अन्दर ही अन्दर सदा सुलगती रहती है और फिर किसी दिन ऐसा समय आता है कि वह भीषण ज्वालामुखी का रूप धारण करके प्रगट होती है और अपनी क्रांति रूपी लावा में अपने को ढकने वाली प्रत्येक वस्तु को जला कर उसकी राख तक को बहा कर ले जाती है।

आओ हम भी आने वाली क्रान्ति की उपासना करने के लिये सब एक होकर अपने उसी पुराने मंत्र का एक स्वर से उच्चारण करें।

'क्रांति चिरजीवी हो'

चन्द्रशेखर शास्त्री M O Ph , H M D,
काव्य साहित्य तीर्थ, आचार्य प्राच्य विद्या
वारिधि, आयुर्वेदाचार्य भूतपूर्व प्रोफेसर
बनारस यूनीवर्सिटी।

आज़ादी की लड़ाई



चन्द्र शेखर शास्त्री

पाठकों की सेवा में

"सन्देश"

भारत माता के सपूतो उठो, जागो, अपनी दुखमयी निद्रा को त्याग कर अपनी माता का दुख दूर करो। तुम्हारी जननी पुकार २ कर कह रही है कि तुम्हीं तुर्कों पर फतह पाने वाले वीर हो तुम उसी छत्रपति शिवाजी की सन्तान हो जो कभी भी अपने अपमान को सहन नहीं कर सकते थे। तुम उसी अर्जुन की भूमि में रहते हो जिसने अपने अधिकारों के लिये युद्ध करके शत्रु के दांत खट्टे किये। गांधी और जवाहर से सबक सीखो और सोचो भारत वर्ष की वीरता की बराबरी आज तक कोई भी देश न कर सका। तुम्हारे पूर्वज अस्त्र और शस्त्र में पूरे थे, पराक्रमी और बली थे हम उनको बड़े गौरव के साथ वीर कह कर पुकारते हैं। कसम खाओ कि अपने भाग्य को बदल कर छोड़ोगे। अपने अधिकारों के लिये अर्जुन की तरह रण भूमि में आकर लड़ोगे।

याद रक्खो! अपमान सहकर तुम अपने माथे पर कलंक का टीका लगा रहे हो। माघ कवि ने बड़ा ही अच्छा कहा है "अपमान के दुख से जलकर भी जो जीवित रहे उसका जन्म ही न लेना अच्छा था। क्योंकि उसके जन्म लेने से जो कुछ हुआ वह यही कि उसकी माता को दुख उठाना पड़ा, जो चुप चाप अपमान सह लेता है और अपमान सह लेने

करते हुए अपनी माता का दुख निवारण करो। इस की आज़ादी के लिये अपना तन मन धन सब कुछ अर्पण कर दो। जो भी काम अपने हाथ में लो उस में क्रान्ति पैदा करके जीवन भरदो ताकि तुम्हारी सन्तान तुम्हारे गुण गावे। भारत जननी जो कि शताब्दियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुवी है आजादी की राह तक रही है। आज हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हमारे पथ प्रदर्शक बन रहे हैं आप उन के नेतृत्व में रह कर देश की सेवा करते चले जाओ आज फिर भारत माता ने अपने पवित्र हाथों से उनके मस्तिष्क पर सिन्दूर का टीका लगाया है और देश की पताका उन के हाथ में दी है वह आपके सेनापति हैं आप उनकी आज्ञा के अनुसार स्वतन्त्रता की ओर चलते रहो यही आपका सबसे उच्च कर्म, धर्म और बलिदान है।

बड़े बड़े देशों और जातियों के उत्थान और पतन के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि जिस प्रकार आंधी या तूफान आने से पूर्व सख्त गर्मी पड़ा करती है उसी प्रकार उन देशों या जातियों के क्रान्ति सम्पन्न होने के पूर्व नवयुवकों के आचार निर्माण के आन्दोलन भिन्न भिन्न रूप में चलते रहते हैं। नवयुवकों में अपने देश के लिये जो प्रेम हो सकता है वह फिर बड़ी उमर में कदापि नहीं हो सकता ऐसे ही भावों से प्रेरित होकर और अपने देश वासियों को

तत्कालीन, अवस्था को देख कर मैंने वर्तमान भारत को तमाम आवश्यकताओं को लेते हुये उनपर अपनी विचार धारा प्रकट की है। अगर आप ध्यान देकर इस पुस्तक को पढेंगे तो आपको ज्ञात होगा कि किस प्रकार हमारा देश परतन्त्रता की जञ्जीरों में जकड़ा गया। इस पुस्तक में मैंने देश भक्तों के लिये भारत की हर एक वर्तमान समस्या पर रोशनी डाली है, और बताया गया है कि किस प्रकार हम अपने कष्टों, कठिनाईयों और बाधाओं को पार करके शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करके अपना खोया हुवा सब स्थान प्राप्त कर सकते हैं।

यह बात मानी हुयी है कि भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अन्तर है। अन्तर न कहकर इसे वैपरीत्य कहना चाहिये। एक वह समय था कि यह देश विद्या, कला कौशल और सभ्यता में ससार का शिरोमणि था और एक यह समय है कि इन ही बातों का इसमें शोचनीय अभाव होगया है। आर्य जाति कभी सारे ससार को शिक्षा देती थी वही आज पद पद पर पराया मुंह ताक रही है।

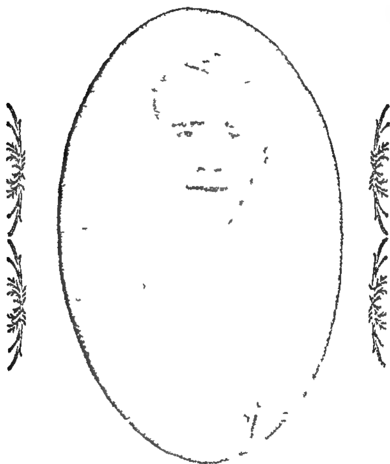
परन्तु क्या हम लोग सदा अवनति में ही पड़े रहेंगे? हमारे देखते २ जङ्गली जातियां तक उठ कर हम से आगे बढ़ जायें और हम वैसे ही पडे रहें, इस से बढ़ कर दुर्भाग्य

की बात और क्या हो सकती है ? क्या हम लोग अपने मार्ग से यहा तक हट गये हैं कि अब उसे पा ही नहीं सकते ? क्या सचमुच हमारी यह निद्रा चिर निद्रा है ? क्या हमारा रोग असाध्य होगया है कि उसकी कोई चिकित्सा ही नहीं।

संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं जो समुचित उद्योग से सिद्ध न हो सके। परन्तु उद्योग के लिये उत्साह की आवश्यकता है, बिना उत्साह के उद्योग नहीं हो सकता, इस लिये देश के प्रेमियो अगर आप में सच्चा स्वदेश प्रेम है तो उत्साह के साथ आगे बढ़िये वह दिन जरूर आवेगा कि आप को स्वतंत्रता का ताज आप के मस्तिष्क पर शोभायमान होगा।

आपका सेवक—
वीर लक्ष्मी चन्द गुप्ता

आज़ादी की लड़ाई



लेखक

विषयानुक्रमणिका

❀ प्रथम भाग ❀

❀ द्वितीय भाग ❀

आज़ादी की लड़ाई

प्रथम भाग

प्राचीन भारत की झलक



हमारा प्राचीन काल कितना सुन्दर था, हमारी भूमि, माता-स्वरूपा, जन्मदात्री ज्ञान गौरव शालिनी, प्रत्यक्ष लक्ष्मी रूपिणी, धन-धान्य पूर्ण, पालिनी और शत्रु का हनन करने वाली थी। हमारा भारत वर्ष भू लोक का गौरव और प्रकृति का पुण्य लीलास्थल था। इस देश की रक्षा के लिये मनोहर गिरि हिमालय और पवित्र करने के लिये गङ्गा जल मिलता है। यहां पर वही नगर, वन शैल नदियां जो पहले थीं आज भी मिलती हैं परन्तु आज हमारा इतिहास उनका असली रूप ओझल है। हमारा देश संसार का सिरमौर और सब भूतियों का प्रथम भण्डार था। भगवान ने नर-सृष्टि का सब से पहले यहां पर ही विस्तार किया, यहां से ही ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना का आरम्भ किया। यह पुण्य भूमि बड़ी ही प्रसिद्ध थी और इसके निवासी आर्य्य कहलाते थे, आज उसी भारत वर्ष के लाल अधो गति में पड़े रो रहे हैं परन्तु उनकी उच्चता के चिह्न आज भी मिलते हैं।

यहां पर शान्ति का निवास था स्वर्गीय भावों को लेकर ऋषि मुनि यज्ञ हवन किया करते थे। हमारे पूर्वजों की कीर्ति आज संसार गा रहा है। वह धर्म पर निछावर होते थे और धर्म उनकी रक्षा करता था। वह धर्मवीर थे, दानवीर थे युद्ध धीर थे और सच्चे देश प्रेमी थे उनके दर्शन करने ही मनुष्य स्वर्ग प्राप्त कर लेता था। जिन मन्दिरों पूजा किया करते थे आज उनमें पशु और पक्षी

बनाये हुये उस प्रभु का स्मरण करते हैं। वह दूसरों के हित के लिये ही अपना जीवन समझते थे वह भारती मोह बन्धन से मुक्त थे, स्वच्छन्द थे, स्वाधीन थे, सम्पूर्ण सुख सयुक्त थे वह मन से, वचन से, कर्म से प्रभु भजन किया करते थे।

हमारे पूर्वजों के आदर्श उच्च थे, सत्यवादी थे, धनको छोड़कर सत्य और प्रण निभाना आवश्यक समझते थे। अतिथि सत्कार करना वे अपना धर्म समझते थे। प्राचीन भारतवासी, धैर्यशाली, वीर गम्भीर विशाल इन्द्रिय दमन करने वाले थे।

केवल पुरुष ही वीर न थे किन्तु स्त्रिया भी उनसे किसी भी भांति कम न थीं वे पुरुषों से बढ़कर वीरता दिखाती थीं, पतिव्रता स्त्रिया थीं। स्वामी के कार्यों में समभाग लिया करती थीं यहा पर विदुला, सुमित्रा और कुन्ती तुल्य माताएं हुई हैं, राजपूताने में स्त्रियों ने अपनी देश सेवा के लिए जो वीरता दिखाई है उसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में और कभी भी नहीं मिलता। यवन राजाओं को भी उनकी वीरता के सामने हार माननी पड़ी थी।

हमारी सभ्यता ऊच्च थी। भारत वर्ष ने आचार, व्यापार व्यवहार, और विज्ञान की शिक्षा को इस संसार में फैलाया। कोई भी देश सभ्यता में भारत का मुकाबला नहीं कर सकता था यूरप की जातिया जो आजकल सभ्यता में आगे बढ़ी हुई हैं उस समय सभ्यता से बिलकुल अनभिज्ञ थीं। भारत वासियों का सिद्धान्त था कि आत्मा अमर है देह नश्वर है। लोकहित के लिए अपने जीवन को त्यागना एक साधारण काम समझते थे। भारतवासी अपनी बड़ाई

मारना नहीं जानते थे बल्कि काम करके दिखाना अपना धर्म समझते थे।

भारतवासी सिवाय ईश्वर के और किसी के सामने सिर झुकाना नहीं जानते थे। वे लोग बाहरी सुन्दरता पर मुग्ध होना नहीं जानते थे इनका व्योपार दूर देशों तक फैला हुआ था। जापान जो आजकल शिल्पकला में इतना चढ़ा हुआ है वह भी भारतवर्ष का ही शिष्य है। जिस आनन्द के लिए तमाम संसार प्रयत्न कर रहा है उसको भारतवासी वर्षों पहले पा चुके थे। भारतवर्ष की एक भाषा थी और सब का एक धर्म था, एक विचार थे। भारतवर्ष के बराबर कोई भी देश न था। यहां के निवासी देवता समझे जाते थे और भारतवर्ष देवताओं की नगरी कहलाता था।

भारतवासियों ने तरह तरह की विद्याओं में उन्नति की थी जैसे —वेद, वाकोवाक्य विद्या, ब्रह्म विद्या, नक्षत्र विद्या, क्षत्र विद्या, निधि, नीतिविद्या, राशि विद्या, पित्र्य विद्या, सर्पादि विद्या, देव विद्या, भूत विद्या इत्यादि। कोई भी विद्या, ऐसी न थी जिसको भारत वासी न जानते हों

यहां का कला कौशल भी ऊंचे दर्जे का था भारतवासी शिल्प में प्रवीण थे, चित्रकारी यहां की सर्वोत्तम थी।

वीरता में भी वे लोग किसी से कम न थे। वह मृत्यु की कभी परवाह नहीं करते थे। इस भूमि पर भीम, अर्जुन और रामचन्द्र जी जैसे बली भी हुये हैं जिन्होंने अकेले बड़े २ युद्धों में विजय प्राप्त की थी। राजपूत भी किसी से कम न थे, उन्होंने बहुत से स्थानों

दुष्टता से अनेक छल छिद्रों से भारतवर्ष पर अधिकार किया इसका वर्णन आप अच्छी तरह अगले पृष्ठों से जान लेंगे। पर साथ ही मैं हम बड़े दुख के साथ स्वीकार करते हैं कि भारतवर्ष की फूट ने राष्ट्रीयता के अभाव ने विदेशियों के अत्याचारों ने और धोके बाजियों ने ही उनको सफल बनाया। अगर भारत वर्ष एक राष्ट्र के रूप में सुसंगठित होता- अगर उसके एक कोने से दूसरे कोने तक राष्ट्रीयता की भावनाओं का राज्य होता और यहां का बच्चा बच्चा यह समझे हुये होता कि जिसका शरीर भारत की पवित्र मिट्टी से बना है वह मेरा भाई है, उसके भले में मेरा भला और उसके बुरे में मेरा बुरा है तो हम स्वप्न में भी यह नहीं सोच सकते थे कि मुट्ठी भर विदेशी पैंतीस करोड़ मनुष्यों को भेड़ बकरी की तरह आज अपनी आधीनता में रख सकते। मैं तो स्पष्ट शब्दों में कहता हूँ कि अंग्रेजों ने भारत वर्ष नहीं जीता परन्तु भारत वासियों ने ही इसको जीत कर उनके हवाले कर दिया। भारतवर्ष में राष्ट्रयता की भावनाओं का अभाव था और इसी से वह पराधीन हुआ और मुझे तो पूरा पूरा विश्वास है कि जिस दिन राष्ट्र भावों को गुंजार होने लगेगी, भारत वर्ष के बच्चे २ के दिल में अपनी मातृ भूमि का प्रेम पैदा हो जायगा उस ही दिन से किसी विदेशी की यह ताकत न होगी कि वह क्षण के लिये भी भारतवर्ष को आधीनता में रख सके।

इन सब बातों का सार यही है कि भारतवासी एक माला के दाने न बन सके, इन की शक्तियां तितर बितर हो गईं और उस रूप में भी एक दूसरे को नष्ट करने में लगी रही इस ही से देश पराधीन हुआ।

भारत वर्ष में अंग्रेज़ कब और क्यों

पुर्तगाल वासी वासकोडी गामा ने सन् १४९८ में भारत वर्ष के लिये एक नया मार्ग ढूंढ निकाला, तब से भारत वर्ष और यूरुप का गमनागमन बहुत ही सरल हो गया। इस नये मार्ग का पता चलते ही पुर्तगाल वासी यहां पर अपना ईसाई धर्म का पूर्ण रूप से प्रचार करने के लिये आये परन्तु इस के साथ साथ व्यापार-वृद्धि को भी अपने सन्मुख रक्खा इस प्रकार पुर्तगाल वासियों को भारत वर्ष का नया और सरल मार्ग मिल जाने से संसार के इतिहास में बड़ी भारी क्रांति फैल गई थी।

पुर्तगाल वालों की सत्ता बहुत समय तक स्थापित न रह सकी, उनका अधःपतन होगया पुर्तगाल वासियों का इस देश से नाम व निशान मिट जाने के बहुत से कारणों में सबसे बड़ा कारण यह था कि उन्होंने यहां पर बड़े बड़े अत्याचार, आसुरी और निष्ठुर कार्य किये, उन के राज्य में अधर्म तथा छल बहुत बढ़ गया। उन्होंने यहां की स्त्रियों पर अमानुषिक अत्याचार किये और यहां के पुरुषों के दिलों में बुरे भाव पैदा होगये। अन्त में तंग आकर वह लोग यहां से चलते ही बने।

इसके बाद भारत वर्ष में डच लोगों का सितारा चमका समग्र सतरहवीं सदी में डच लोगों का पूर्व की ओर व्यापार पर आधिपत्य रहा इसका कारण उनका समुद्र

अबाधित अधिकार था। यहां पर यह बात कह देना आवश्यक है कि डच लोगों का उद्देश केवल व्यापार को बढाना था। किसी भी तरह से उन्होंने देश की राजनीति में भाग नहीं लिया। डच लोगों को पापात्मक व्यापारिक नीति के कारण उनकी भी सत्ता डगमगाने लगी और वह स्थानीय लोगों की सहानुभूति से हाथ धो बैठे। भारत वर्ष के लोग उनसे घृणा करने लगे। सन् १७५८ में क्लाइव ने चिन सुरा में डच लोगों को परास्त किया। तत् पश्चात भारत वर्ष में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों का नम्बर आयो। इन दोनों में भी खूब ठनी और अंत में अंग्रेज अपनी चाल और धोखेबाजी से अपने कार्य में सफल होगए।

अब आप के सामने ईस्ट इण्डिया-कम्पनी पर रोशनी डालेंगे और इस के पढने से आप को ज्ञात होजावेगा कि किस प्रकार इसके कर्मचारियों ने अपनी कूट नीति से यहां पर अपना विशाल साम्राज्य संगठित कर लिया।

सतरहवीं शताब्दी में इंगलैण्ड की महारानी एलिज़बेथ राज्य कर रही थीं उस समय इंगलैण्ड की स्थिति बहुत ही नाज़ुक और शोचनीय हो रही थी। राज्य कोष खाली पडा हुआ था। पैसे की भी बहुत तंगी थी। सन् १६०७ में लंडन नगर के कुछ व्यापारियों ने मिलकर ७२००० पौंड की पूंजी से भारत वर्षमें व्यापार करने के लिये एक जाइन्ट स्टाक कम्पनी स्थापित की। इस कम्पनी का उद्देश भारत से मसाले और दूसरे पदार्थ लाना था। एलिजाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधियों के लिये भारत वर्ष के सम्राट अकबर को निम्न लिखित आशय का पत्र लिखा।

सर्व शक्तिमान प्रभु ने संसार में उत्तम वस्तुएँ उत्पन्न कर सर्वत्र सुख व्यवस्था स्थापित कर रक्खी है। उस सर्व शक्ति मान का यह संकेत दिखलाई देता है कि सब देश मिलकर उस प्रभु की उदारता का एक सा लाभ उठायें। सुना है कि आप अन्य राष्ट्रीय लोगों का अपने देश में अच्छा सत्कार करते हैं अतएव हमारे व्यापारियों को आपके राज्य में जाने की आज्ञा देते हुये प्रसन्नता होती है। जब आप इनसे मिलेंगे तब आपको ज्ञात होगा कि यह व्यापार में सभ्य हैं आपको इनसे कभी किसी प्रकार से अप्रसन्नता न होगी। इससे पहले भारत वर्ष में स्पेन वासी पुर्तगाल वासी तथा डच लोग आपके देश के साथ व्यापार कर रहे हैं और यह लोग व्यापार के कार्य में हमारे लोगों को बहुत तंग करते हैं सच पूछिये तो यह लोग आपके देश में व्यापार करने के लिये ही नहीं गए हैं परन्तु यह तो अपना राज्य स्थापित करने की भी चेष्टा रखते हैं परन्तु हमारे लोग केवल व्यापार के उद्देश को लेकर आपके देश में आरहे हैं। हमें आशा है कि आप कृपा कर उन्हें अपने देश में आने देंगे और आप हमारे देश के साथ व्यापार और स्नेह की वृद्धि करेंगे। हमारे आदमी आपके पास आवेंगे और आपके साथ जो कुछ समझौता करेंगे उसका हम ईमानदारी से पालन करेंगे और आप उनके साथ जो उपकार करेंगे उसका बदला हम बड़ी प्रसन्नता से देंगे।

पाठको! आपको ऊपर के पत्र से प्रतीत हो रहा है कि इन कूटनीतिया से अंग्रेजों ने दूसरे के व्यापार को नष्ट के लिये क्या क्या ढंग रचाए और हमारे देश को लिये किन किन चालों से काम लिया।

सन् १६११ में मि० थाम्स वेस्ट इंगलैंड के तत्कालीन राजा जेम्स का सिफारशी पत्र सम्राट जहांगीर की सेवा में उपस्थित हुआ २१ अक्टूबर सन् १६२२ को राजा के दरबार में आया जिसको बहुत सी जगह पर व्यापार करने की मंजूरी मिल गई सन् १६०६ में केप्टन हाकिन्स नामक एक अंग्रेज देहली के सम्राट से मिलने आया और उसने सब से पहिले अंग्रेजी कम्पनी के लिये सूरत में व्यापार करने की स्वीकृति प्राप्त करली सन् १६१४ में इंगलैंड के राजा जेम्स ने सर थाम्स को राजदूत की हैसियत से सम्राट जहांगीर के पास नजराना देकर और निम्न लिखित आशय का पत्र देकर भेजा।

"श्री मान्! आप ने शाही फर्मान देकर हमारे प्रति और हमारी प्रजा के प्रति इंगलिश राष्ट्र के प्रति जो कृपा ज़ाहिर की है उसे हम सदैव स्मरण करेंगे। अब हमारी प्रजा आप के राज्य में शांति और आराम से बिना किसी बाधा के व्यापार कर सकेगी। हम आपके दरबार में अपने राजदूत सर थाम्स रो को भेजते हैं हमने इन्हें सूचना करदी है कि वह ऐसा कार्य करें जिससे दोनों राष्ट्र कीप्रजा का हित और कल्याण साधन हो। आशा है आप इन पर कृपा रक्खेंगे। हम आपके प्रति जो सद्भाव और प्रीति रखते हैं उसे प्रकट करते हुए आपकी सेवा में यह तुच्छ नजराना भेजते हैं। यह नजराना हमारे राजदूत आपकी सेवा में पेश करेंगे। दयामय ईश्वर आपको प्रसन्न रखें।"

इंगलैंड के राजा के पत्र के उत्तर में सम्राट जहांगीर ने जेम्स को जो पत्र लिखा उसका आशय यह है।

आप ने अपने व्यापारियों के लिये जो पत्र भेजा, वह पहुचा, आप ने मेरे प्रति जो कोमल प्रेम प्रकट किया है उस से मुझे बहुत सन्तोष हुआ हैं। मैने अपने सब प्रान्तों में इस आशय के फर्मान भेज दिये हैं कि अगर कोई अंग्रेजी जहाज़ या व्यापारी मेरे राज्य की किसी बन्दरगाह में पहुचे उन्हें स्वतन्त्रता पूर्वक व्यापार करने को आज्ञा दे दी जावे और दुख सुख के समय उनकी योग्य सहायता भी कर दी जावे और उनको किसी प्रकार का कष्ट न होने पावे वह मेरी प्रजा की तरह स्वतन्त्र रहें। आपने जो प्रेम पुरस्कार के रूपमें जो नजार भेजी है उसे मैंने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया है। आपके व्यापारियों को माल के बेचने तथा माल को लाने जाने में कोई बाधा और कष्ट न होगा। मेरी आज्ञा के भंग करने पर मैं अपनी प्रजा को कड़ी से कड़ी सज़ा दूंगा। आपके साथ प्रभु हमारा प्रेम बढ़ाये यही मेरी इच्छा है।

देहली के जहांगीर सम्राट ने इस प्रकार के फरमान अंग्रेज व्यापारियों के लिये जारी किये थे। पाठक देख सकते हैं कि भारत वासियों ने सात समुद्र पार के विदेशियों के साथ कैसा अच्छा व्यवहार किया था। और उसके बदले में आप आज की स्थिति पर नज़र डालें कि इंगलैण्ड में भारतीयों के साथ कैसा व्यवहार किया जारहा है। भारत का इतिहास इस प्रकार के आदर्श से भरा पड़ा है। आज वही अंग्रेज भारतवासियों को काला आदमी समझते हैं इन के दिलों में भारतीयों के लिये कोई आदर नहीं। हमारी सभ्यता की नजर में एक तुच्छ सभ्यता है। क्या आपको

आती कि विदेशी व्योपारी जो कभी आपके दिये हुये टुकड़ों को लेकर अपना पेट भरते थे आज वह आप पर किस कटु नीति से शासन कर रहे हैं अब भी समय है अगर आप अपने देश को इस लूट खसोट से बचाना चाहते हो।

यहां के लोगों ने इन की कटुनीति को कुछ समय के बाद ही जाच लिया था और उनके दिलों में अंग्रेज़ों के लिये कोई प्रेम के भाव नहीं पाये जाते थे।

तब आकर १६५८ में अंग्रेजों ने यह विचार किया था कि या तो यहां से हट जाना चाहिये या यहां साम्राज्य की शक्ति का प्रतिरोध करना चाहिये। तब से कम्पनी के कर्मचारी एक नीच कार्य पर उतर पड़े और कम्पनी ने अपनी नीच शक्तियों से काम लेना चाहा उन्होंने अपने राजा से आज्ञा लेकर सूरत को लूटने और भारतीयों के जहाजी बेडे को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। इसी प्रकार से बंगाल में भी लूट मार आरम्भ कर दी और बम्बई में तो गवर्नर मि० चाइल्ड ने लूट खसोट, डाके जनी के ऐसे नीच कार्य करवाये जिस से आज भी अंग्रेज़ों को शर्म आनी चाहिये जो काम डाकू लुटेरे, और उचक्के किया करते हैं वही काम उस कप्तान ने यहां पर करवाये यहां के लोगों पर बड़े बड़े जुल्म अत्याचार और अन्याय किये गये और इन सब बातों का असर कम्पनी पर पड़ा। और भारतीयों के दिलों में उस कम्पनी का सन्मान कुछ न रहा।

उस समय इन अंग्रेजों ने भीगी बिल्ली की भांति भारत के सम्राट औरङ्गजेब से क्षमा की भिक्षा मांगी। इस क्षमा याचना के लिये इन्होंने मि० जार्ज वेल्डन और एब्राहम नामक दो अंग्रेजों को सम्राट की सेवा में भेजा।

जरा ध्यान से इस नीति को विचारिये उस समय यही अंग्रेज हाथ जोडे हुये क्षमा की याचना कर रहे थे। इन दोनों के हाथ दुपट्टे से बधे हुवे थे। सम्राट ने इन्हें बहुत धिक्कारा इन लोगों ने अपना अपराध स्वीकार किया क्षमा के लिये गिड़ गिड़ाने लगे इन्हों ने प्रार्थना की कि श्रीमान् आप हमें पूर्व अधिकार को फिर से प्रदान कर दीजिये और बम्बई से अपनी फौजों को हटा लेने की दया कीजिये। सम्राट औरङ्गजेब का कलेजा दया से पसीज गया और क्षमा कर दिया। और उनको हुक्म दिया कि शपथ खाओ कि हमारी प्रजा को फिर किसी प्रकार की हानि न पहुँचाओगे इन सब बातों की पड़ताल के लिये सम्राट ने एक दरबारी को भेजा जिस का नाम अजिम उलशाह था यह मनुष्य बडा ही लालची और दुष्ट स्वभाव का था। अंग्रेजों ने इसे रिश्वत देकर इस बात की मजूरी लेली जिससे अंग्रेज भारतीय जमींदारों से जमीन खरीद सकें और इसी ही की मजूरी से अंग्रेजों ने एक मील चौरस जमीन खरीद ली पहले इसी भूमि में गौरखपुर और कलकत्ता शहर बसाये गये थे। इसके पश्चात् सम्राट फरुख शियर ने उन्हें एक महान फर्मान दिया जिस से उन्हें बहुत सुविधायें मिल गई और सब प्रकार के कर छोड दिये गये केवल इन के बदले में अंग्रेजों को १०००० रुपया देना पड़ता था।

बंगाल में अंग्रेज़ों का प्रवेश

सन् १६२० में सम्राट शाहजहां की लड़की के वस्त्रों मे आग लग जाने से वह बुरी तरह जल गई। उस लड़की का इलाज करवाने के लिये वजीर अहमद खां के द्वारा सूरत से एक योरोपियन सर्जन बुलाया गया इसका नाम गेबरियल बाऊटन (Gabriel Boughton) था। इसने शाहजादी का इलाज किया और सफलता प्राप्त की। इसका परिणाम यह हुआ कि वह सर्जन मुगल सम्राट का प्रिय पात्र होगया। मुगल सम्राट ने उस से पूछा आप क्या चाहते हैं इस पर सर्जन महोदय ने अपने लिये कुछ न चाहा जो कुछ मांगा अपने देश के लिये मांगा और सम्राट से प्रार्थना की कि किसी प्रकार से मेरे देश वासियों को बंगाल में बिना महसूल के व्यापार करने की तथा फेक्टरिया खोलने की आज्ञा दे दी जावे उसकी प्रार्थना सम्राट ने स्वीकार की। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने सबसे पहिला अधिकार बिना महसूल के व्यापार करने का सर्जन बाऊटन के हाथों प्राप्त कर लिया। कुछ भी हो अंग्रेज़ों के व्यापार का बङ्गाल में इसी समय से प्रधान रूप से सूत्रपात हुवा और इसी समय अंग्रेज़ों को नाम मात्र के लिये ३०००) रुपया सालाना देने पर बङ्गाल और उड़ीसा में स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने की इजाज़त मिल गई।

यहां यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि इस समय

तक अंग्रेजों को किले बन्दी करने का अधिकार नहीं था। आत्म रक्षा के लिये केवल उन्हें सौ सैनिक रखने की इजाजत थी इस समय के बङ्गाल के नवाब के खिलाफ एक भयङ्कर विद्रोह उठ खड़ा हुवा। इस समय का लाभ अंग्रेजों ने उठाया उन्होंने नवाब से किला बनाने की इजाजत लेली। फोर्ट विलियम नामक किले की नीव इसी समय से पड़ी। नये नवाब से अंग्रेजों ने १६०००) रु० के नजराने पर चटानही गोविन्द पुर और चटानही नाम के तीन ग्रामों पर जमींदारी प्राप्त करली। इसी समय अंग्रेज पहले पहल बङ्गाल में जमींदार हुवे और अपनी जमींदारी में इनको कुछ अधिकार भी मिल गये धीरे धीरे अंग्रेजों के पैर फैलने लगे और उन्होंने खासी ताकत बनाली। सन् १७१६ में एक ऐसी घटना हुई जिसने अंग्रेजों के सौभाग्य को और भी बढ़ा दिया। दिल्ली के सम्राट फर्रुखसियर बीमार पड़ गये। विलियम हेमिलटन ने इलाज करके सफलता प्राप्त की, उस के पुरस्कार में उस सर्जन ने अपने व्यापार को बढ़ाने का अधिकार मांगा। इस तरह इन विदेशियों ने अपना दांव चलाने के लिये जो जो मौके तलाश किये वे भी आपको भली भांति ज्ञात हैं। देखिये हमारे सम्मुख कितना उच्च देश और जाति प्रेम का जीता जागता उदाहरण उपस्थित है अगर कहीं किसी भारतवासी के साथ कभी ऐसा मौका पड़ जाय तो वह अपने स्वार्थ के सिवा और कुछ नहीं विचार सकता वह अपने स्वार्थ के सन्मुख देश व जाति सब कुछ भूल जाता है। बंगाल का नवाब अलीवर्दी खां इन लोगों से बहुत ही जलता था क्योंकि वह जानता कि यह लोग बड़े पापी और अपने काम को निकालने

और अंग्रेजी सेना ने किले की चार दीवारी में लगी हुई नवाबी तोपों को तोड़ ताड़कर गंगा जी में फिकवा दिया। यह खबर हुगली पहुंची। सिराजुद्दोला आग-बबूला होगया १४ जून को टाना के किले के फाटक पर अंग्रेजों और बगालियों में लड़ाई शुरु हुई। अंग्रेज सिपाही कायरों की तरह निर्लज्जता से पीठ दिखाकर भाग निकले। कुछ यूरोपीयनों ने जहाज से गोले बरसाये परन्तु दूसरे दिन नवाब के दो हजार सिपाहियों ने जो हुगली से भेजे गये थे आकर किले को घेर लिया। वे तोपों से गोला बारी करने लगे। कुछ थोड़े से अंग्रेज सिपाही कलकत्ते से उनका मुकाबला करने के लिये भेजे गये पर उनकी दाल न गली और कलकत्ते वापिस आये अंग्रेजी लेखकों ने सिराजुद्दोला की नीति को भला बुरा बताया और उसको निर्दयी, अत्याचारी और तरह २ के आलोचनों से विभूषित किया।

अमीचन्द को, जो कि, अंग्रेजों के पास आकर छुप गया था, राजा रामसिंह ने चुप चाप एक गुप्त चिट्ठी भेजी कि चुपके से कहीं अन्यत्र चले आओ, यह चिट्ठी किसी तरह अंग्रेजों के हाथ में पहुंच गई बस फिर क्या था यकायक अंग्रेजी फौज ने उन्हें गिरफतार कर लिया और उन्हें किसी खूनी डाकू की तरह बांध कर ले गई इससे स्वदेशी लोगों में हा हा कार मच गया बिना किसी योग्य कारण के अंग्रेजी सेना ने अमीचन्द का घर घेरने के लिये धावा बोल दिया इस समय अमीचन्द के पास एक बुड्ढा विश्वासपात्र और स्वामी भक्त जमादार था जो क्षत्रियों के एक मशहूर वंश में पैदा हुआ था। उसने अमीचन्द के नौकरों को

इकट्ठा कर महल की रक्षा करनी चाही अंग्रेज सैनिकों ने आकर मकान के फाटक पर लड़ाई दंगा मचा दिया। अन्त में अमीचन्द के नौकर हार गये।

जब फिरङ्गियों की सेना बड़े ज़ोर-शोर के साथ अन्तःपुर की ओर बढ़ने लगी तो जगन्नाथ का खून उबलने लगा उसके दिल में स्वामी के लिये बड़ा आदर था और वह यह न चाहता था कि मेरे स्वामी के घर में जहाँ किसी पापी आदमी की छाया भी न जा सकती थी, विदेशी आदमी इस तरह पादस्पर्श करें, उसको डर था कि कभी यह लोग अमीचन्द की स्त्रियों पर आक्रमण कर अमानुषिक अत्याचार न करें उस ने अपनी समझ के अनुसार जो काम किया वह नीचे लिखा जाता है।

"उस निमिषमात्र में बिजली के वेग की भांति जगन्नाथ की रगों में हिंदुओं की ऐतिहासिक गौरव नीति का संचार हो गया। वह आगे पीछे का कुछ भी विचार न कर सका। शीघ्र ही उसने बड़ी फुर्ती से अन्तःपुर के फाटक पर चिता कुण्ड-प्रज्वलित कर दिया और अपने हाथ से एक के बाद एक करके स्वामी की तेरह महिलाओं के सिर काट डाले और पति व्रताओं के खून में सनी हुई वह तेज तलवार अपनी छाती में भोंक कर उसी खून के कीचड़ में गिर पड़ा। उसकी जलाई हुई अग्नि चारों ओर हवा के ज़ोर से फैल चुकी थी धुंयें के गु गड़े सारे शहर में व्याप्त हो गये आग की भयङ्कर लपट महल में, चौक में, कमरों में, और फाटक पर सर्वत्र अपने तीव्र तेज से भकभक करने लगी। अमीचन्द का इन्द्र-भवन इस प्रकार श्मशान की राख के ढेरों में

गया यह हत्या काण्ड इतना भीषण हुआ कि जिसे पढ़कर हृदय में एक असह्य वेदना उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार के अंगरेजों ने कई क्रूर काण्ड करवाये परन्तु अंग्रेज इतिहास लेखकों ने इन सबको छिपाने की बड़ी चेष्टा की है।

कुछ भी हो नवाब ने दुर्ग पर अधिकार कर लिया जब नवाब दुर्ग में गये अमोचन्द और कृष्णचन्द उनके सामने लाये गये। नवाब ने इनके प्रति किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं किया और बड़े सन्मान के साथ आसन प्रदान किया। जो लोग सिराजुद्दौला को निर्दयी, दुष्ट, पिशाच और पापी आदि विशेषणों से विभूषित करने की चेष्टा करते हैं उन्हें ऊपर की घटना से छाती पर हाथ रख कर सोचना चाहिये। उनके इतिहास को अंग्रेजों ने बड़ी बुरी तरह बयान किया है।

अब आपके सामने ब्लेक होल या कलकत्ते की काल-कोठड़ी के सच्चे हालात को पेश करते हैं, आपको मालूम हो जायगा कि संसार के सामने नवाब सिराजुद्दौला को और तत्कालीन भारतियों को गिराने के लिये कैसी झूठी २ घटनाओं को बनाया था। कलकत्ते के काल कोठरी वाले हत्या काण्ड को हम ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध करना चाहते हैं कि वास्तव में यह सच घटना है या किसी चतुर अंगरेज की कल्पना। अंगरेजों ने जो और जिस तरह इस हत्या काण्ड को लिखा है उसको पढ़कर छाती फटती है। नवाब सहाब को राक्षस और पिशाच प्रकट करने के लिये तथा अपने अन्याय पूर्ण कार्य को न्याय पूर्ण सिद्ध करने के लिये इस महा झूठे काण्ड की सृष्टि की गई है। देखिये

पाठक ! अंग्रेज़ इतिहासकारों ने एक मिथ्या घटना को कितना भीषण रूप दिया है ।

"कलकत्ते में नवाब के हाथों १४६ अंग्रेज़ कैद हुये । एक बीस वर्ग फीट लम्बी चौडी कोठडी में यह भर दिये गये और उस कोठडी का द्वार बन्द कर दिया गया । इस दिन सूर्य्य बडी तेज़ी से चमक रहा था, भयङ्कर गर्मी पड रही थी इस कोठडी में आने के लिये दो छोटे २ हवादानों के छोड कर और कुछ भी नहीं था । लोग एक के ऊपर एक भर दिये गये थे । उन सब का इस छोटी सी कोठडी में रहना बहुत ही मुशकिल था । सभा ने, आत्म रक्षा के लिये दरवाज़े पर आघात करके उसे तोड़ देना चाहा । उनका यह कार्य निष्फल गया । सभी उन्मत्त हो गये हाल वेल भी इन ही में थे (जिन्होंने इस झूठी अफवा को उड़ाया) इन्होंने कभी डाटडपट बतला कर और कभी खुशामद कर सबको शान्त करने की चेष्टा की । किन्तु सफलता नहीं हुई । धीरे २ यंत्रणा बढ़ने लगी । पसीने की धाराएं बहने लगी । प्यास से गले सूख गये । छाती फटने लगी, कितने ही लोग गिर पड़े । धीरे २ सब मर गये । सिर्फ २२ के प्राण बचे । हालवेल अचेत पड़े थे ।"

यह तमाम हाल ऐतिहासिक अन्वेषणों से काल कोठड़ी का हत्या काण्ड केवल कपोलकल्पित और मिथ्या आविष्कार जान पड़ता है । "मुताखिरीन" इतिहास में जो एक मुसलमान का लिखा हुवा है सिराजुद्दोला की अनेक कुकीर्तियों का वर्णन है परन्तु उसमें भी काल कोठडी के हत्या वर्णन नहीं मिलता । मुहम्मद अलीखां के

गद्दी से उतार दिया। कलकत्ते की कौंसिल के सदस्यों ने पूरा अनुसन्धान करके हालवेल के वर्णन को सर्वथा मिथ्या सिद्ध किया है। उन्होंने लिखा है।

परलोक वासी नवाब मीरजाफर की स्मृति को न्याय की दृष्टि से देखते हुए हम आप लोगों पर इस बात को प्रकट कर देना आवश्यक समझते हैं कि हालवेल ने मीर जाफर पर जिस भयंकर हत्या काण्ड का दोष लगाया उसको सत्य समझने के लिए जरा भी गुंजाईश नहीं है।

कलकत्ते की कौंसिल का कथन है कि भारतीयों को बदनाम करने के लिए और अपना कलंक पोंछने के लिए इस कहानी की रचना की गई है। अगर सत्य भी मान ली जावे तो भी इसकी जिम्मेवारी सिराजुद्दौला पर नहीं डाली जा सकती।

काल कोठड़ी की घटना की असत्यता इससे प्रकट होती है कि इसका कोई स्मारक नहीं पाया जाता। सिर्फ एक स्मारक हालवेल साहब ने निजी खर्च से बनवाया बतलाते हैं पाठक लोग अन्दाजा लगा सकते हैं कि कहां तक यह घटना सत्य सिद्ध हो सकती है। इस स्मारक को भी बाद में कस्टमहाउस बनवाने के लिए तोड़ दिया गया। क्या यह स्मारक जहां पर इनके १२३ भाईयों ने प्राण गवाये थे इतना तुच्छ था कि उसको तोड़ कर एक मामूली सा कस्टम हाउस बना दिया जाता।

अंग्रेजों की कूटनीति संसार में प्रसिद्ध है उन्होंने कूटनीति ही के बल पर इस विशाल-साम्राज्य का संगठन किया है। सिराजुद्दौला ने जबसे कलकत्ते पर अधिकार कर

लिया था उससे अंग्रेज बड़े बेचैन थे। वे नाना प्रकार के षड़यन्त्रों को जोड़ने में लगे हुए थे।

क्लाइव और वाटसन ने क्या किया। वे हमेशा इसी चिन्ता में निमग्न रहते थे कि सेना की सहायता से बंगाल को लूट कर कौन कितना धन प्राप्त करे। वाटसन ने जो सिराजुद्दौला को चिट्ठी लिखी थी वह इसी प्रकार है :—

"मेरे मालिक ने मुझे इस प्रदेश में ईस्टइण्डिया कम्पनी के स्वत्वों और अधिकारों की रक्षा के लिये एक बड़ी जहाज़ी सेना के साथ भेजा है। मैंने तुम्हारे राज्य को अनेकों लाभ पहुँचाये हैं ऐसी दशा में यह सुनकर मुझे बड़ा भारी अचम्भा हुआ है कि आपने एक बड़ी सी फौज लेकर कम्पनी की कोठियों पर आक्रमण किया और नौकरों को जबरदस्ती निकाल दिया। उसका माल असबाब लूट लिया और मेरे राजा की बहुत सी प्रजा को मार डाला। मैं कम्पनी के नौकरों को उनकी कोठियों में बसाने आया हूँ। आपको वे भलाइयां याद रखनी चाहियें जो आपके देश में हमारे कारण हुई हैं। मैं आशा करता हूं आप उन बातों को मरने के लिये राजी हो जावेंगे और मेरे राजा के मित्र बन जायेंगे जो शान्ति प्रिय और न्याय परायण हैं।

क्लाईव ससैन्य कलकत्ते पर आक्रमण करने के लिये निकला। सूने किले पर क्लाईव अपनी विजय पताका बड़ी जोरों के साथ उड़ाने लगे। अरक्षित किले पर अग्रेजों का अधिकार हो गया। अंगरेज़ विजय के मद से उन्मत्त हो गये। वे तरह तरह के अत्याचार करने लगे। अंगरेज इतिहासकारों ने अङ्गरेजों की अन्धेरी बाजू के छिपाने की चेष्टा की है। पर

विचार छोड दिया है। मै फ्रांसीसियों को सन्धि के लिये चिट्ठी लिखता हू । इन बातों से पता चलता है कि युद्ध के असली चाहने वाले कौन थे । अंगरेज या सिराजुद्दोला।

फ्रांसीसियों ने सन्धि करने के लिये अपना प्रतिनिधि कलकत्ते भेजा। परन्तु वाटसन ने अपनी बातों को फिर छोड दिया और फ्रांसीसियों का सर्वनाश करने पर तुल गया। कुछ भी हो आखिर अंगरेजों ने चन्द्रनगर पर आक्रमण कर ही दिया। परन्तु फ्रांसीसियों ने वीरता पूर्वक किले की रक्षा करने का सकल्प किया। क्लाईव सैना को देखकर भयभीत हुआ । उसने अमीचन्द को भेजा और नन्दकुमार को समझा बुझा कर हटवा दिया । फ्रांसीसियों के टेरान नाम जल सैनिक को अंगरेजों ने किसी तरह फोड लिया। टेरान ने जैसा विश्वास घात किया उससे उसका मुह काला हो गया। अंगरेजों ने कूट नीति से नवाब को भी मदद न करने दी और चन्द्रनगर को जीत लिया। अङ्गरेजी सैना ने कितने ही ग्रामों और नगरों का नाश कर डाला। बर्धमान और नदिया के प्रदेशों को तहस नहस कर डाला। अधिकांश फ्रांसीसी कैद कर लिये गये और जो भाग गये उन्हें पकडने के लिये सिपाहियों को छोड दिया । कुछ फ्रासीसी नवाब की शरण में आ गये। वाटसन ने नवाब को लिखा कि आप फ्रांसीसियों को बाध कर हमारे पास भिजवा दो। युद्ध की धमकी दी। अगरेजों ने सिराजुद्दौला की एक न सुनी वे बार बार सिराजुद्दौला को दबाने लगे।

सिराजुद्दौला जानता था कि अगरेज उसे भूल से बड़ा

देना चाहते हैं। वह समझ चुका था कि अंगरेज उसके विपक्ष में षड्यन्त्र रच रहे हैं और नमक हराम मीरजाफर उस षडयन्त्र का मूलाधार है। यह सोचकर उसने मीरजाफर को पद च्युत किया और उसके महल को मिट्टी में मिला देने का संकल्प किया। परन्तु उसने समय की हालत को देखकर मीरजाफर को बुला भेजा परन्तु वह नहीं आया। तब सिराजुद्दौला स्वयं गया। मीरजाफर का सिर नीचा हो गया और उसने कुरान पर हाथ रखकर कसम खाई कि मैं आपका साथ दूंगा। और आप के लिये जान देने को तैयार हूं सिराजुद्दौला को यह सुनकर शान्ति मिली और उसने वाटसन को लिखा कि आपने सन्धि भंग करने की इच्छा की है। इससे मैं प्लासी से फौज नहीं हटा सकता। मीरजाफर कसम खाने पर भी बाज नहीं आया और नवाब के विरुद्ध षडयन्त्र रचने लगा और क्लाईव ने नवाब के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

मुर्शिदाबाद कुछ दिन का नवाब भगवान जो ले गया। परन्तु जिस नवाब के हुक्म में लाखों करोड़ों आदमी थे। उसको स्त्री कन्या तथा अन्य साथी तीन दिन तक लगातार भूखों मरते रहे। तीन दिन के बाद एक फकीर दानाशाह के आश्रम में आश्रय लिया। परन्तु दानाशाह भी उसका शत्रु ही हो गया उसने चुपके २ मीरजाफर और उसके साथियों को वहां पर बुला लिया। नवाब की स्त्री को भी कासिम ले गया और उसके जेवर वगैरा ले लिए। यहां तक कि नवाब का सर्वस्व उन लोगों ने लूट लिया। और नवाब को सपरिवार बन्दी बना लिया गया।

वह मुर्शिदाबाद लाया गया। इस समय उनके पैरों में बेड़ियां हाथों में हथकड़ियां पड़ी हुई थीं मुर्शिदाबाद के लोगों को महाशोक हुआ। आधी रात के समय उसको मीरजाफर के सामने लाया गया। सिराजुद्दोला बार २ उसके सामने प्राणों की भिक्षा मांगने लगे। मीरजाफर इस दृश्य को नहीं देख सका और उसको दूसरे स्थान पर ले जाने की आज्ञा दी। इसके बाद मीरन के इशारे से सिराजुद्दोला को एक मैली कोठड़ी में कैद कर दिया गया। परन्तु मीरन को इससे शान्ति न मिली और वह एक ऐसे आदमी को ढूंढने लगा जो नवाब को तलवार से मार सके। मुहम्मदबेग नाम का एक व्यक्ति जो सिराजुद्दोला के घर पर ही पाला पोसा गया था इस काम को करने के लिए तैयार हो गया।

दो तीन घंटे बाद तेज तलवार लेकर वह सिराजुद्दोला के पास कैद खाने में गया। सिराजुद्दोला गिड़गिड़ा कर कहने लगा मुहम्मदबेग क्या तुम मुझे मारने आये हो।

नवाब ने तरह २ से उसकी मिन्नतें की। और ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए जञ्जीरें खोलने के लिए कहा परन्तु उस दुष्ट ने एक भी न सुनी अन्त में नवाब ने कहा कि क्या वे लोग मुझे बंगाल के एक कोने में भी स्थान न देंगे। क्या इस पर भी वे राजो नहीं हैं। फिर कुछ सोच कर बोला। मैं अवश्य महंगा और हुसेन कुली खां की हत्या का प्रायश्चित करूंगा। बस इतने ही वाक्य निकले थे कि नराधम पिशाच, जल्लाद मुहम्मद बेग ने उसकी गर्दन पर तलवार मारी।

परन्तु मुहम्मदबेग इतने से ही सन्तुष्ट न हुआ उसने नवाब के टुकड़े २ कर डाले। उन टुकड़ों को हाथी की पीठ पर लदवा कर शहर के चारों ओर फिराया। जब हाथी सिराजुद्दौला की मां अमीना बेगम के मकान के पास से निकला और अमीना बेगम को सारा हाल मालूम हुआ तो वह प्राणशून्य हो लज्जा शर्म छोड़ कर खुले हुए बालों से नंगे पांव बाहर निकल आई। हाथी पर प्यारे पुत्र की लाश के टुकड़े देख जमीन पर गिर कर जोर जोर से छाती पीटकर कहने लगी हाय बच्चे जिगर के टुकड़े मुझे छोड़ कर कहां चला है यह हृदय विदारक दृश्य देखकर लोगों की आंखों से आंसू गिरने लगे। पीलवान भी इस दृश्य को देखकर रोया। हाथी वहां बैठ गया। अमीना बिजली की तरह दौड़ कर पुत्र के खण्डित मांस पिण्ड पर गिर कर उन्हें चूमने लगी मीरजाफर के नौकर यह हाल देखकर दंगा फिसाद होने की आशंका से जबरदस्ती अमीना बेगम को उठाकर महल के भीतर ले गए।

मीरन सिराजुद्दौला को मार कर ही नहीं शान्त

दिल्ली के बादशाह ने अंग्रेजों को अपना माल यहां पर बिना महसूल लाने की आज्ञा दे दी। परन्तु इन्होंने उसका नाजायज़ फायदा उठाया और यहां के लोगों के व्यापार को हानि पहुंचाना शुरू किया। नवाब ने यह अत्याचार देखकर कम्पनी के जिम्मेदार अफसरों के पास शिकायतें कीं परन्तु उन्होंने कोई सुनाई नहीं की। हर एक देहात में देशी व्यापारियों की दुकानें बन्द हो गईं। लोग अंग्रेज व्यापारियों के डर से भागने लगे, नवाब की आमदनी को भयङ्कर नुकसान पहुंचाया, देश की शान्ति नष्ट हो गई। जिस समय का यह जिक्र है उस समय अकेले बंगाल से १५ करोड़ रुपये महीने का कपड़ा हर साल विदेशों को भेजा जाता था।

यहां पर कलाकौशल की इतनी उन्नति थी, कि दुनियां के परदे पर कहीं पर भी देखने तक को नहीं मिलती थी। बढ़िया से बढ़िया कपड़ा यहां पर बुना जाता था। परन्तु जब से अंग्रेज आये तब से इन लोगों ने व्यापार का सत्यानाश कर दिया लाखों गरीब और विधवा स्त्रियों के पेट भरते थे वे सब भूखी मरने लगीं इन्होंने लूट मचाने में कोई कसर नहीं की। नादिरशाह और चंगेजखां की लूट से भारत को जो नुकसान नहीं पहुंचा वह नुकसान अंग्रेजों ने किया। इन्होंने अपनी चालबाजियों से यहां के व्यापार को डुबोया और यहां की कलाकौशल को नष्ट किया।

बालटस साहब ने लिखा था कि जिस तरह कम्पनी इस देश में व्यापार कर रही है वह जुल्म और उपद्रव का एक दृश्य है। अंग्रेज लोग इस देश में होने वाली

प्रत्येक वस्तु का ठेका लेते हैं अपनी खुशी से ही उसका भाव मुकर्रिर करते हैं। जुलाहों से मनमानी शर्तें लिखवा लेते हैं यदि कोई पेशगी लेने से इन्कार करे तो जबरदस्ती उसको कमर में रुपये बांध देते हैं और उसको कोड़े मार कर बाहर निकाल देते हैं। जिस वस्तु की कीमत सौ रुपये होती है उसको ५०) मुश्किलों से देते हैं। जब वह माल तैयार नहीं करते तो उनकी जायदादें छीन ली जाती हैं और उसे बेच कर अपनी के लिये रुपये वसूल किये जाते हैं।

रेशम लपेटने वालों के अंगूठे तक काट डाले ताकि उनको भयङ्कर दुःखों का सामना करना पड़े। देश को बरबाद करने के लिये उसे भीख मंगी हालत में ला देने के लिये जैसे २ नीच उपाय काम में लाये गये थे उनका वर्णन करना लेखनी की शक्ति के बाहर है। इन लोगों ने अपने गुमाश्तों को जुलाहों के नाश करने के लिये भेजा। यहां के व्यापारियों को गुमाश्ते भेजने के लिये मना कर दिया।

बेचारे जुलाहों को इस प्रकार के तमस्सुकों पर दस्तखत करने पर बाध्य किया जाता था कि अमुक अमुक माल अमुक तादाद में इतने नियमित मूल्य पर देंगे। अगर कोई जुलाहा या कारीगर इस पर दस्तखत करने से इकार करता तो वह बांध दिया जाता और उसपर भयंकर रूप से कोड़े पड़ते थे। वे अन्धेरी कोठरियों में बन्द कर दिये जाते थे बना बनाया माल तक उन लोगों से जबरदस्ती छीन लिया जाता था।

उसने नमक जैसी आवश्यक भोजन सामग्री का भी ले लिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने एक विज्ञप्ति

दूसरे शख्शों को सुपारी, नमक, तम्बाकू इत्यादि चीजों का व्यापार करने के लिये सर्वदा मनाही कर दी।

पहले हमारे यहां रुपये का सात आठ मन नमक मिलता था पर जब से अंग्रेजों के हाथ आया तब से इसका सोलवां भाग भी नहीं रहा। और भी तरह २ की चालबाजियों से इन लोगों ने हमारा व्यापार डुबोया। हमारी कारीगरी नष्ट की और भारत की इतनी दुर्दशा कर दी कि आज दस करोड़ आदमियों को एक समय भी पेट भर कर भोजन नहीं मिलता। ट्रीविलियन साहब कहते हैं कि हमने भारतीयों के व्यापार को चौपट कर दिया। अब इन लोगों को भूमि की उपज के सिवाय और कोई आधार नहीं है।

मीरकासिम से यह अत्याचार नहीं देखे गये। उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से इन अत्याचारों को मिटाने के लिये प्रार्थना की। उसने कम्पनी को लिखा कि इस प्रकार के अत्याचारों से देश बरबाद हुआ जा रहा है। व्यापार डूब गया है। चारों ओर हाहाकार मच रहा है भयंकर रूप से लोग लूटे जा रहे हैं।

पर उसकी बात पर ध्यान न दिया गया। उसने सब लोगों के लिये व्यापार पर कर माफ कर दिया। ये, गुस्से में चूर होगये और मीरकासिम पर दांत पीसने लगे। उन्होंने मीर कासिम को अपना हुकम वापिस लेने के लिए कहा परन्तु वह तैयार न हुआ उन लोगों ने लड़ाई की तैयारी की उसने कलकत्ते की कम्पनी को चिट्ठी लिखी और लिखा कि मैंने तुम्हारे साथ कोई बुरा काम नहीं किया है परन्तु उसकी कोई बात भी नहीं सुनी गई क्योंकि वह तो उसका सर्वनाश करने तुले हुए थे। उन्होंने उसको राज्य से उतारने की सोची।

अब नवाब ने देखा कि इनके अत्याचार बढ़ते ही जारहे हैं और युद्ध करना चाहते हैं तो वह भी सतर्क हो गया वह भी युद्ध की तैयारियां करने लगा।

अंग्रेजों ने चुपके से पटना पर अपना अधिकार जमा लिया। पहले तो नवाब की सेना डर कर भाग गई परन्तु जब ये लोग विजय की खुशी में चूर हो रहे थे नवाब की सेना ने आक्रमण किया और अंग्रेजों को मार भगाया। और पटना पर फिर अधिकार कर लिया। जब नवाब को यह खबर लगी तो उसने सोचा कि युद्ध शुरु हो गया है और हुक्म दे दिया कि जहां पर अंग्रेज मिलें उनको मार डालो। और उसने खुद भी अंग्रेजों की कोठियों पर अधिकार करके उनको मुंगेर में भेज दिया। परन्तु कर्मचारियों के विश्वास घात के कारण नवाब मुर्शीदा नगर न ले सका और उस पर अंग्रेजों का राज्य हो गया। नवाब की पटने में भी हार हुई। धीरे २ अंग्रेज नवाब के नगरों पर अधिकार करते गए मुंगेर को भी ले लिया जब नवाब ने सुना तो उस समय उसके पास डेढ सौ कैदी थे उनको कतल करवा डाला इस हत्या काण्ड से अंग्रेजों का खून उबलने लगा मेजर मनरो ने नवाब मीरकासिम को बक्सर के युद्ध में हराया मीरकासिम की फौज ने बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया अंग्रेजों के साढ़े आठसो आदमी मारे गए मीरकासिम चारों ओर से निराश होकर भाग गया अंग्रेजों ने मीरकासिम को कतल कर दिया मीरजाफिर को बैठाया, खजाना खूब लूटा अंग्रेज लोग मीरजाफर को अपने इशारे पर नचाने लगे जिससे देशी व्यापारियों का व्यापार नष्ट हो गया अत्याचारों और जुल्मों का,

गरम होगया बंगाल की गरीब प्रजा पर फिर वही लूट शुरु हो गई मीरजाफर ज्यादह दिन तक जिन्दा न रहा उसके मरने के बाद अंग्रेजों ने उसके दूसरे लड़के को गद्दी पर बैठाया और उसको अपने हाथ का कट-पुतला बना लिया इससे कहा गया कि हमारे व्यापारिक अधिकारों को मत छूना । इन्होंने अपने मालिकों की भी बात नहीं मानी रिश्वत खोरी चलने लगी सब नियम तोड़ दिया जब इस अन्धेर की खबर विलायत पहुँची लार्ड क्लाइव को हिन्दुस्तान भेजा ।

लार्ड क्लाइव ने आकर देखा कि चारों ओर कम्पनी के कर्मचारियों ने अन्धेर मचा रक्खा है, रिश्वत अत्याचार और जुल्म का बाजार बहुत गर्म है रीति नियम सब कुछ ताक में रख दिये गए हैं ।

क्लाइव ने यहां आकर शाहआलम से दीवानी की सनद प्राप्त करली और इस प्रकार से भूमिकर वसूल करके खूब रुपया लूटना प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार से धीरे २ इन्होंने और भी जगहों का भूमिकर वसूल करने का ठेका ले लिया और अपना राज्य धोखे और दगाबाजी के साथ स्थापित कर लिया ।

क्लाइव के बाद वारेन हेस्टिंगज़ को गवर्नर बनाया गया इसके समय में भी लूट मार रिश्वत खोरी होती रही । सन् १७७० के आस पास बंगाल में एक महा भीषण अकाल पड़ा करोड़ों आदमी मरे । ऐसे समय में भी कम्पनी के नौकरों ने बड़ी बेदर्दी और असीम पाशविकता के साथ भूमिकर वसूल किया भूखे किसानों पर बड़ी २ सख्तियां की गई । अन्न के दाने के लिए त्राहि २ करती हुई हत भाग्य प्रजा

के लिये कम्पनी ने कुछ भी नहीं छोड़ा। देश का सारा चावल कम्पनी के लोगों ने खरीद लिया। क्या धनी क्या किसान किसी के घर में अन्न नहीं रहा। गृहस्थों की कुल ललनाओं ने घरों को छोड़कर कलकत्ते की ओर प्रस्थान किया। सैकड़ों स्त्रिया और बच्चे अन्न से तड़पते हुए रास्ते में मर गए। भूख शान्त करने के लिए इन्हें मुट्ठी भर भी अन्न नहीं मिला। कई छोटे २ बच्चे भूख के मारे रास्ते में ही काल कवलित हुए। हाय घर से चलते हुए माताओं की गोद भरी थी अब,वह सूनी हो गई। माताओं ने भी अपना शरीर त्याग दिया। जो कुछ थोड़ी बहुत स्त्रियें कलकत्ते पहुंच गई वहां जाकर उन्हें और भी ज्यादा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। एक मुट्ठी अनाज के लिए वे अपने गोद के बालकों को बेचने को तैयार हो गई परन्तु उन्हें एक मुट्ठी अनाज भी न मिला।

इन घटनाओं के देखने से आपको मालूम हो गया होगा कि किस प्रकार से इन लोगों ने भारत वर्ष के गरीब किसानों को तरह २ से दुखी कर अपना राज्य स्थापित किया। केवल किसानों को ही नहीं परन्तु धनियों और नवाबों तथा उनके कर्मचारियों के साथ मिलकर उनको रिश्वत इत्यादि देकर अपने स्वामियों का सत्यानाश करने पर उत्साहित किया। और राज्य के लोभ में पड़कर इन्होंने देश की भलाई बुराई का कुछ भी ध्यान नहीं किया। यह घटना इनके राज्य स्थापित करने के समय की हैं। इसके बाद की घटनाएं आपको अगले अध्याय में प्रतीत होंगी कि किस प्रकार से इन्होंने अपने राज्य को उन्नति की है।

धर्म युद्ध

सन् १८५० में भारत में अंग्रेज़ी राज्य एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल चुका था। १८५७ का गदर इस देश में लोगों के लिये एक स्वप्न के समान था परन्तु इस गदर की हालत ऐसी हुई जैसी कि टिमटिमाती हुई अन्तिम ज्योति की होती है जिस के बाद वह बुझ जाती है परन्तु फिर भी मुझे तो पूरा विश्वास है कि यदि भारत के नवयुवक सच्चे हृदय से इस धर्म युद्ध को पढ़ें तो उनके हृदय में माता के अपमान का अपने पूर्वजों के अपमान का बदला लेने का सच्चा उत्साह भर जायगा और यह भी अच्छी तरह से प्रतीत हो जायगा कि भारत की स्वतन्त्रता में ही हमारा जीवन सफल हो सकता है।

आज तक बहुत कम लेखकों ने १८५७ के गदर के इतिहास के लिखने का प्रयत्न किया है बहुतों ने तो इसका बिल्कुल उलटा ही वर्णन किया है बहुतों ने अंग्रेज़ों के अवध पर अधिकार कर लेने ही को क्रान्ति का कारण कहा है परन्तु यह सब बिल्कुल मिथ्या है कितने ही ऐसे शूरवीर इस युद्ध में लड़े हैं जिनका अवध राज्य से, किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं था। यदि इस पर ध्यान दिया जाय तो साफ प्रकट होता है कि वस्तुतः इस क्रान्ति का कारण था स्वराज्य और स्वधर्म, उस समय भारत के पुत्रों को यह पूरा विश्वास हो गया था कि यदि हम दृढ़ निश्चय वाले हो जायें तो शत्रुओं का हम कुछ ही क्षणों में नाश कर सकते हैं शत्रु का नाश करके हम अपने देश और धर्म को

पतन से बचा सकते हैं। देश और धर्म हमें जीवन से भी प्यारा है। १८५७ का गदर देश और धर्म की रक्षा के लिये हुआ था।

जो लोग अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकते वे देश की रक्षा नहीं कर सकते और जो देश की रक्षा नहीं कर सकते वे अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकते, जो मनुष्य इन दोनों कामों के लिये जीवन न्योछावर कर देता है उसके लिये स्वर्ग द्वार हमेशा खुला रहता है। स्वधर्म और स्वराज्य के लिये किया गया युद्ध हार जाने पर भी महान कार्य हो रहता है।

इस क्रान्ति के बहुत से कारण थे। एक अंग्रेज इतिहास वेत्ता ने तो यहा तक लिखा है कि "सैनिक अन्याय, जातीय घृणा और धार्मिक दृढ़ता" तीनों ने मिलकर अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध क्रान्ति खड़ी करदी, भारतीय राजाओं और सिपाहियों का इसमें हाथ था। चरबी लगी हुई कारतूस का जो झगड़ा था वह तो केवल बारूद को भड़का देने वाली चिनगारी थी। मेरठ के सिपाहियों को तत्क्षण एक नेता, एक झंडा और एक निमित्त मिल गया बस युद्ध एक क्रान्ति में बदल गया।

सबसे पहले तो पलासी की लड़ाई में अंग्रेजों ने मिल कर जो विश्वास-घात किया था उसका घाव सब लोगों के दिलों में हरा था जगह जगह क्रान्ति-कारियों का आक्रमण इस घात का प्रमाण था। अंग्रेजों ने जिस कौशल और धूर्तता से विजय पाई थी उसको कोई भी नहीं भूला था। अंग्रेजों ने भारत वासियों का निरादर करने में कोई कसर उठा न रक्खी थी भारतीय सैनिकों के साथ उनका व्यवहार

भी ठीक नहीं था और बराबर सौ साल तक यहां के सिपाही दुःख उठाते रहे।

पंजाब के लोग इस लिये खार खाए बैठे थे कि महाराजा रणजीत सिंह को लार्ड डलहौजी ने बुरी तरह से अचानक घेरे में डालकर पंजाब को हमेशा के लिये अपने अधिकार में कर लिया था। सन् १८४८ में अप्पा साहब सितारा राज्य का कोई उत्तराधिकारी न छोड़ कर मर गये। डलहौजी ने पोलिसी औफ लेप्स" (Policy of Lapse) कह कर उस पर अपना अधिकार जमा लिया। १८२६ में दौलत राव सिन्धिया की विधवा स्त्री के द्वारा गोद लिये हुए पुत्र को उत्तराधिकारी माना गया। १८४२ में किसनगढ़ की महारानी के द्वारा गोद लिया हुआ पुत्र उत्तराधिकारी बनाया गया। उस समय तक इस प्रकार का कोई कानून पास न हुआ था। यह डलहौजी की एक पौलिसी थी। इससे अंग्रेजों की आमदनी बढ़ती थी नागपुर का प्रदेश हाथ में आने से पांच लाख रु० सालाना की आमदनी बढ़ गई थी। अभी जब कि रानियां पड़ी हुई दुर्ग में शोक मना रही थी पापियों ने किले को आ घेरा दरवाजा खोला गया अंग्रेज सेना अन्दर घुस गई घोड़े खोल दिये गये हाथियों को बाजार में नीलाम के लिये निकाल दिया और सोने चान्दी के आभूषणों पर नीलाम की बोली चढ़ने लगी स्वयं महारानी की सवारी का घोड़ा ५) में बेचा गया रानियों के गलों में से हीरे जवाहरात उतरवा लिये गये। छुपा हुआ खजाना पाने के लिये महल का फर्श तक खुदवा डाला। अन्न पूर्णाबाई को इतना डराया धमकाया कि वह बीमार हो गई और

तो भारतीयों के हृदयों में से राष्ट्रीय भावनाओं का भी लोप हो जाता। बड़े मिशनों को खूब अधिक सहायता दी जाती थी कानूनन ईसाई बन जाने वाले पुरुषों का अधिकार अपने सम्बन्धियों की जायदाद वगैरा पर उतना ही रहता था जितना कि ईसाई बनने से पहिले। दूसरी बात, यह भी है कि पादरियों और बड़े२ पादरियों को मोटी २ तनख्वाहें भारत के कोष में से ही दी जाती थी। सेना के पदाधिकारी भी अपना फालतू समय बाइबिल के प्रचार में ही लगाते थे। धर्म बदल लेने वाले सिपाही की खूब प्रशंसा होती थी और उसकी खूब तरक्की होती थी। बंगाल प्रान्त की सेना के नायक ने सरकारी रिपोर्ट में स्वयं लिखा है कि २८ वर्ष से वह बराबर सैना ईसाई धर्म में परिवर्तन करने का यत्न कर रहा है और यह भी सैनिक का एक कर्तव्य है कि वह मनुष्यों को ईसाई बनाकर उन्हें नरक की सड़क पर चलने से बचाए। ऐसी दशा में जनता को ऐसा डर होना कि अंग्रेजी राज्य के आधीन रहने में उनके धर्म पर विशेष आपत्ति आने की सम्भावना है स्वाभाविक है।

जब इस प्रकार से देश भर में खलबली मची हुई थी उसी समय डलहौजी ने गोद लेनेके प्राचीन रिवाज को पैरों तले कुचलने का प्रयत्न किया सारे भारत को एक धक्का सा लगा। बारूद तो तैय्यार हो गया था केवल पलीता दिखाने भर की देरी थी।

इसी समय पर नये कारतूसों को काम में लाया गया। इन में चर्बी लगानी पड़ती थी और इनके सिरे को दांतों से फाड़ना पड़ता था। यह पहिले के कारतूसों के अनुसार हाथों से नहीं फटते थे। सिपाहियों ने शंका की कि फिरंगियों

ने उनका धर्म खोने के लिये कारतूस को गऊ और सुअर की चर्बी से तैय्यार किया है। सरकारने उत्तर दिया कि यह खबर निराधार और झूठ है यह तो कदापि नहीं माना जासकता कि सरकार को भी यह पता न हो कि कारतूस किस २ चीज़ से बनाए गये हैं किन्तु जब सत्य सब पर प्रकट हो गई तो फिरंगियों ने हुक्म निकाल दिया कि केवल भेड़ बकरी की चर्बी ही लगाई जावे। थोड़े ही समय बाद सरकार को एक बात के लिये और दबना पड़ा सिपाहियों को आज्ञा मिल गई कि वे स्वयं चर्बी खरीद कर लगा लिया करें।

सिपाहियों ने इन सब बातों से उत्तेजित होकर शपथ करली कि इस नैतिक परतन्त्रता से छुटकारा पाये बिना वह आराम भी नहीं करेंगे। दासों का क्या धर्म? धर्म की पहिली सीढ़ी स्वतन्त्र देश का एक स्वतन्त्र व्यक्ति होना है।

उठो! ऐ भारत! उठो! धर्म के लिये मर जाओ यह कह कर सिपाहियों ने स्वधर्म और स्वराज्य के युद्ध के लिये अपनी अपनी तलवारें पैनानी शुरू कर दीं।

यह आवश्यक था कि वृटिश साम्राज्य पर जितनी जगह भी धावा बोला जा सके बोला जावे। भारतवासियों ने यह निश्चय कर लिया कि संसार में तलवार के सिवा इस गुलामी रूपी रोग की और कोई दवा नहीं है। बहादुर शाह नाना साहब, मौलवी अहमद शाह, खानबहादुरखां आदि नेताओं ने जो सोचा कि भारत माता तो हिन्दू और मुसलमान दोनों ही की जननी है। इस लिये हिंदू और मुसमान तो हकीकी भाई हैं। बस सब वैर भाव भूलाकर दोनों ही स्वदेश के झन्डे के नीचे एकत्रित हो गये। सिपाहियों ने गंगाजल

करती थी। सिपाहियों को यह कुछ नहीं बताया जाता था कि क्या निश्चय हुआ। सेनाओं में आपस में यह तै हो गई थी कि वह भी वही काम करेंगे जो और सेनाएं करेंगी मुख्य २ कार्य क्रम कमेटी ही तय करती थी लिखा पढ़ी आदि और और काम भी कमेटी को ही करना पड़ता था। तय होगया था कि सब अंग्रेजों को मारदेंगे उसके बाद सब खजाने लूट लिए जायगे। जेलों को तोड़ कर सब कैदी बाहर निकाल दिये जायगे। इन सब कामों के लिये धन की कमी इसलिये नहीं पड़ी कि लखनऊ के साहूकारों नाना साहब, बज़ीरन की अजोखां, दिल्ली के महल और क्रान्ति कारी मुख्य २ नेताओं के पास इस काम के लिये काफी सम्पत्ति थी।

बिना नाम के इश्तहार सब जगह चिपको दिये गये थे। आफिसर लोग सिवाय उनको फाड़ देने के और कुछ न करसके। पुलिस ने इश्तहार चिपकाने वाले अपराधियों को पकड़वाने में असमर्थता दिखाई। अंग्रेजों को इसका कारण शीघ्र ही मालूम न होगया क्योंकि पुलिस स्वयं क्रान्तिकारी दल से सहानुभूति करती थी और उनसे मिली हुई थी। संक्षेप में पदाधिकारियों का यह काम था कि चुपचाप इस संगठन में आजावें और सरकारी नौकरी भी न छोड़ें और समय आने पर स्वराज्य सरकार के आधीन वही काम करने लगजावें।

आगे चलकर आप को मालूम होगा कि स्त्रियें फिरंगियों को कितनी घृणा की दृष्टि से देखतीं थी और वह इस राज्य को नाश कर देने को कितनी उत्सुक थीं। इस प्रकार से इस

युद्ध के लिये मन्दिरों में मस्जिदों में क्षेत्रों में यात्राओं में त्योहारों पर, सड़कों पर, घरों में अर्थात् सर्वत्र, बड़े बूढ़े, बच्चे, स्त्रियें और युवकों में प्रचार किया जाता था।

हर जगह इस गुलामी से घृणा और स्वराज्य की इच्छा प्रकट हो रही थी। "मेरा धर्म मर रहा है, मेरा देश मर रहा है मेरे आदमियों की दशा कुत्तों से भी बुरी हो रही है" इसी प्रकार के भय ने सबके दिलों को हिला दिया। सब लोग इस बात पर विश्वास करते थे कि खून की नदिया स्वतन्त्रता पाने के लिये बहुत कम मूल्य की हैं इसके साथ २ एक अजीब तरह के दूत क्रान्तिकारियों की ओर से जनता को इस महत्व पूर्ण अवसर के लिये तैयार करने की खातिर सारे भारत वर्ष में बहुत तेजी से घूम रहे थे। उन्होंने सारे देश को मातृ भूमि की आवाज़ सुना दी और सारे देश को बतला दिया कि भारतवर्ष स्वतन्त्रता के लिये धर्म युद्ध करने को तैयार है। देश और धर्म की रक्षा इसी पर निर्भर है।

मित्रो तैयार हो जाओ!

जब जनरल हारडी ने यह सुना तो वह कुछ अंग्रेज सिपाहियों को लेकर वहां पर गया जब मंगल पांडे ने यह देखा कि वह अब शत्रुओं के हाथ में पड़ने वाला है तो उसने शत्रुओं के हाथ पड़ने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेय समझा और फौरन अपनी बन्दूक का मुंह अपनी छाती की ओर कर बन्दूक चला दी। तत्काल ही उसका जख्मी शरीर मैदान में भूमि पर लोटने लगा। जख्मी मंगल पांडे का कोर्ट मार्शल हुआ। मुकद्दमे के दौरान में उससे उसके और साथियों के नाम पूछे गये जो कि साजिश में शामिल थे। किन्तु उसने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया उसने यह भी कहा कि जिन अफसरों को उसने मारा है उनसे उसे कोई व्यक्तिगत शत्रुता न थी। उसे फांसी की आज्ञा हुई और ८ अप्रैल को फांसी लगने के लिये निश्चित हुई किन्तु बैरकपुर में कोई भी नीच से नीच आदमी फांसी लगाने को तैयार न हुआ। आखिरकार चार जल्लादों को कलकत्ते से लाया गया। ८ अप्रैल सन् १८५७ को प्रातः काल ही उसे फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

नम्बर ३४ की पलटन के सूबेदार के ऊपर रात्रि के समय क्रान्तिकारियों की गुप्त सभा करने का दोष लगाया गया और उसका सिर काट दिया गया। उस सेना को बरखास्त कर दिया गया और हथियार इत्यादि ले लिये गये। वर्दी इत्यादि फाड़ दी। सिपाहियों को सैनिक टोपी पास से खरीदनी पड़ती थी इस लिये वे उन्हें ले जा सकते थे परन्तु वे इस गुलामी की निशानी को अपने पास नहीं रखना चाहते थे इस लिये वे भी सब उन्होंने फेंक दीं अंग्रेज अफसर आश्चर्य और क्रोध

से वशीभूत पत्थर बनकर खडे हुये यह सब देख रहे थे।

मंगल पांडे के बलिदान ने अम्बाले जैसी दूर २ की छावनियों में आग लगाने का काम किया और कमान्डर इनचीफ अनसन वहीं ठहर गया। वहा के सिपाहियों ने रात्रि के समय अंग्रेजों के घर में आग लगाने का निश्चय किया हजारों रुपयों का लोभ देने पर भी कोई विश्वास घातक बनने को तैयार नहीं हुआ। इसी प्रकार से और जगहों पर भी अग्नि लगनी प्रारम्भ हो गई।

यद्यपि इस गुप्त सस्था की लखनऊ शाखा ने यह मान लिया था कि विद्रोह ३१ मई को ही किया जाय परन्तु वीर सिपाही इतने समय तक सन्तोष न कर सके तीसरी मई के दिन ऐसे ही चार सिपाही लेफ्टीनेन्ट मैकम के खीमे में घुस गये और कहने लगे हमें तुम से व्यक्तिगत रूप से कोई दुश्मनी नहीं परन्तु तुम फिरंगी हो इस लिये तुम्हें मारना ही पड़ेगा। यह सुनकर वह बोला मुझ गरीब को मार कर तुम क्या लोगे यह तो सरकार की शासन प्रणाली है यह सुनकर उनका खून ठण्डा पड गया और वे वापस चले आये परन्तु यह बात ऊंचे ऊंचे अफसरों पर बिना पहुँचे न रही और सर हेनरी लारेन्स ने सेना के हथियार चालाकी से वापिस ले लिये।

मेरठ में कुछ और ही घटना घटने वाली थी। कुछ अंग्रेज अफसरों ने यह परीक्षा करनी चाही कि क्या वास्तव में सिपाही कारतूस बरतने से परहेज करते हैं और उन्होंने छठी मई को एक सेना को कारतूस काम में लाने के लिये जबरदस्ती की। परन्तु ८५ में से केवल ५ सिपाहियों

जब जनरल हारडी ने यह सुना तो वह कुछ अग्रेज सिपाहियों को लेकर वहां पर गया जब मंगल पांडे ने यह देखा कि वह अब शत्रुओं के हाथ में पड़ने वाला है तो उसने शत्रुओं के हाथ पड़ने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेष्ट समझा और फौरन अपनी बन्दूक का मुंह अपनी छाती की ओर कर बन्दूक चला दी। तत्काल ही उसका जख्मी शरीर मैदान में भूमि पर लोटने लगा। जख्मी मंगल पांडे का कोर्ट मार्शल हुआ। मुकदमे के दौरान में उससे उसके और साथियों के नाम पूछे गये जो कि साजिश में शामिल थे। किन्तु उसने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया उसने यह भी कहा कि जिन अफसरों को उसने मारा है उनसे उसे कोई व्यक्तिगत शत्रुता न थी। उसे फांसी की आज्ञा हुई और ८ अप्रैल को फांसी लगने के लिये निश्चित हुई किन्तु बैरकपुर में कोई भी नीच से नीच आदमी फांसी लगाने को तैयार न हुआ। आखिरकार चार जल्लादों को कलकत्ते से लाया गया। ८ अप्रैल सन् १८५७ को प्रातः काल ही उसे फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

नम्बर ३४ की पलटन के सूबेदार के ऊपर रात्रि के समय क्रान्तिकारियों की गुप्त सभा करने का दोष लगाया गया और उसका सिर काट दिया गया। उस सेना को बरखास्त कर दिया गया और हथियार इत्यादि ले लिये गये। वर्दी इत्यादि फाड़ दी। सिपाहियों को सैनिक टोपी पास से खरीदनी पड़ती थी इस लिये वे उन्हें ले जा सकते थे परन्तु वे इस गुलामी की निशानी को अपने पास नहीं रखना चाहते थे इस लिये वे भी सब उन्होंने फेंक दीं अंग्रेज अफसर आश्चर्य और क्रोध

से वशीभूत पत्थर बनकर खड़े हुये यह सब देख रहे थे।

मगल पाडे के बलिदान ने अम्बाले जैसी दूर २ की छावनियों में आग लगाने का काम किया और कमान्डर इनचीफ अनसेन वहीं ठहर गया। वहां के सिपाहियों ने रात्रि के समय अ ग्रेजों के घर में आग लगाने का निश्चय किया हजारों रुपयों का लोभ देने पर भी कोई विश्वास घातक बनने को तैयार नहीं हुआ। इसी प्रकार से और जगहों पर भी अग्नि लगनी प्रारम्भ हो गई।

यद्यपि इस गुप्त सस्था की लखनऊ शाखा ने यह मान लिया था कि विद्रोह ३१ मई को ही किया जाय परन्तु वीर सिपाही इतने समय तक सन्तोष न कर सके तीसरी मई के दिन ऐसे ही चार सिपाही लेफ्टीनेन्ट मैकम के खीमे में घुस गये और कहने लगे हमें तुम से व्यक्तिगत रूप से कोई दुश्मनी नहीं परन्तु तुम फिरंगी हो इस लिये तुम्हें मारना ही पड़ेगा। यह सुनकर वह बोला मुझ गरीब को मार कर तुम क्या लोगे यह तो सरकार की शासन प्रणाली है यह सुनकर उनका खून ठण्डा पड गया और वे वापस चले आये परन्तु यह बात ऊ चे ऊ चे अफसरों पर बिना पहुँचे न रही और सर हेनरी लारेन्स ने सैना के हथियार चालाकी से, वापिस ले लिये।

मेरठ में कुछ और ही घटना घटने वाली थी-। कुछ अग्रेज अफसरों ने यह परीक्षा करनी चाही कि क्या वास्तव में सिपाही कारतूस बरतने से परहेज़ करते हैं और उन्होंने छठी मई को एक सैना को कारतूस काम में लाने के लिये जबरदस्ती की। परन्तु ८५ में से केवल ५

ने कारतूस छूये। उन पर कोर्ट मार्शल में मुकदमा चलाया गया और आठ वर्ष से दस वर्ष तक सख्त सजायें हुई यह हृदय विदारक दृश्य ६ मई को हुआ। उन्हें अंग्रेजी तोपखाने के सामने खड़ा करके वर्दी उतरवाली और हथियार छीन लिये।

इस बात को सुन कर सिपाहियों के क्रोध की ज्वाला प्रज्वलित हो उठी और अभी ३१ तारीख [illegible] थी इस लिये उन्होंने दूतों द्वारा यह कहला भेजा कि हम ११ या १२ तारीख को देहली पहुंचेंगे हर एक चीज़ तैयार रखना।

१० मई को रविवार के दिन प्रभात में सूर्य के दर्शन हुए सिपाहियों ने यह निश्चय कर लिया था कि जिस समय अंग्रेज गिरजे में होंगे उस समय सब इकट्ठे होजाए और जब वापिस लौटें तो उनको मार कर गिरा दिया जाए। सब से पहले सैकड़ों आदमी जेल की तरफ अपने साथियों को छुड़ाने चले जेलर भी उसी पार्टी का आदमी था उसने सबको छोड़ दिया फिर सब गिरजे की ओर सिंहनाद करते हुए बढ़े। यह खबर बड़ी जल्दी सारे शहर में फैल गई शहर के सब आदमी हथियार ले कोई तलवार कोई भाला कोई चक्कू आदि लेकर सिविल लाइन की ओर दौड़ पड़े और मकानों में आग लगादी अंग्रेजों को मार डाला तारों को काट डाला और रेलवे लाइन पर भी पूरी चौकसी रक्खी गई।

अंधेरा होने से पूर्व ही सिपाहियों ने देहली की ओर प्रस्थान किया, और सौ वर्ष के अन्याय का बदला लेने के नागरिकों को छोड़ कर चल दिये।

अंग्रेजी सैना बजाय इसके कि पीछा करती तमाम रात्रि ऐसे पड़ी रही मानो है ही नहीं सचतो यह है कि अंग्रेजों के होश हवाश खोगये थे और उनके हाथ पाव फूल गए थे।

दोहजार सिपाही रक्त से रंगी हुई तलवारें लिये जोर से चिल्लाते आ रहे थे "देहली को" "देहली को"।

मलेसन ने लिखा है कि यदि भारत में एक ही दिन क्रान्ति पैदा होती तो शायद अंग्रेजों के लिये उसे जीतना असम्भव था परन्तु समय से पूर्व मेरठ का उठ खड़ा होना क्रान्ति कारियों की अपेक्षा अंग्रेजों को अधिक लाभदायक हुआ। मेरठ के सिपाहियों ने समय से पहिले ही विद्रोह करके अनजाने में अपने भाइयों को गड़बड़ में डाल दिया क्योंकि शत्रुओं को इस से सावधान होने का अवसर मिल गया। और १० मई को रात्रि को ऐसी दुर्घटनाओं का श्री गणेश हुआ जो कि उससे पहिले भारत के अंग्रेजों के हाथ में जाने के समय से अब तक किसी ने नहीं देखी थी।"

देहली में नावों के पुल को पार करके सिपाही दिल्ली की दिवारों तक पहुंच चुके थे। जब अंग्रेज अफसरों को मालूम हुआ तो उन्होंने सिपाहियों को परेड के मैदान में एकत्रित किया और स्वामी भक्ति पर लैक्चर देना शुरु किया। नं० ५४ के सिपाहियों ने अफसर से कहा हमें मेरठ के सिपाहियों को दिखाओ तब उसके बाद में देखा जायगा अफसरों ने उनको इस पर शाबाशी दी और सैना क्रान्ति कारियों की ओर बढ़ी उन्होंने देखा कि मेरठ वाली सैना किले की ओर बढ़ी चली आ रही थी उनके पीछे २ अंगरेजों के रक्त का प्यासा मेरठ का वो परवाना लाल वर्दी

आ रहा था ज्यों ही दोनों सेनाएं समीप आईं उन्होंने एक दूसरे को सलाम किया। देहली के सब अफसरों को वहीं पर खत्म कर दिया गया उसी समय ऐतिहासिक काश्मीरी गेट खुला और स्वतन्त्रता सेना राष्ट्रीय रण गीत गाती हुई शहर में घुसी। मेरठ की सेना की एक टुकड़ी कलकत्ता दरवाजे से घुसी। सिपाहियों ने अब अपना रुख दरियागंज के बंगलों की ओर किया उन सब में आग लगादी। शाही महल में सिपाही और नागरिक सब इकट्ठे हो रहे थे। और "बादशाह की जय" के नारे लगा रहे थे। यहां पर क्रान्तिकारियों के नेताओं ने सलाह की कि अब क्या करना चाहिये। अब ३१ तारीख की प्रतीक्षा करना केवल बेवकूफी ही थी। जरा हिचकिचाहट के बाद बादशाह ने भी प्रत्यक्षरूप से विद्रोहियों के साथ मिलजाने का निश्चय किया। और बादशाह ने उनका नेतृत्वग्रहण कर लिया। उस समय शहर में भी गड़बड़ी मची हुई थी जिसे जो हथियार मिला वह लेकर विद्रोहियों के साथ मिल गया और गली २ में अंगरेजों की तलाश होने लगी। बैंक लूट लिया गया छापा खाना बिल्कुल सत्यानाश कर दिया गया और अंगरेजों के सम्पर्क से जो वस्तु अपवित्र हो गई थी उसका नाश कर दिया।

महल के समीप ही अंग्रेजों का एक हथियार ग्रह था। विद्रोहियों ने उसे ले लेने का निश्चय किया। किन्तु यह आसान नहीं था। साथ ही उनको लिये बिना क्रान्तिकारियों की एक क्षण भी रक्षा नहीं हो सकती थी। इस लिये उन्होंने अंग्रेजों के पास बादशाह के नाम से एक पर्चा भेजा कि उनको दे दें परन्तु कहीं कागज़ के घोड़ों से किले

जीते जा सकते हैं। अंग्रेजों ने इसका उत्तर तक भी न दिया। इस अपमान से उत्तेजित हजारों सिपाही दीवारों पर चढ़ गये। तब अंग्रेजों ने साहस के साथ उनका मुकाबला करना चाहा। यह साहस वह साहस था जो निराशा से उत्पन्न होता है।

उन्होंने निश्चय कर लिया कि यदि वह उसकी रक्षा नहीं कर सकेंगे तो उसमें आग लगा देंगे। धावा होता ही रहा और अचानक बड़े जोर का भयकर शब्द हुआ मानों हजारों गोले एक साथ फटे हों। सारे आकाश में धुआ ही धुआ हो गया और आग की लपटें आकाश की ओर लपकीं। सैकड़ों आदमियों को किरची किरची उड़ गई परन्तु इतनी कीमत पर भी यह हथियार गृह लेना व्यर्थ नहीं था।

बादशाह के सख्त हुक्म से कुछ अंग्रेजों को जानें बख्श दी गई थीं परन्तु उनको महल में कैद कर दिया गया था। परन्तु लोग इनके प्रति जले भुने बैठे थे और अन्त में बादशाह को विवश होकर उन ५० अंग्रेजों को १६ मई को मैदान में सबके सामने कत्ल करवाना पड़ा अंग्रेजों से इतनी घृणा थी कि बहुत से गांवों वालों ने तो कसम खाली थी कि अंग्रेजों को हम अपने गांव की हद में भी पैर न रखने देंगे।

इस असाधारण और अनपेक्षित सफलता का प्रधान कारण यही था कि सब लोगों में दासता से छुटकारा पाने की अतीव उत्कट इच्छा थी। १६ मई को देहली में अंग्रेजी राज्य का नामो निशान तक बाकी न रहा। वह पांच दिन भारत के इतिहास में सदा याद रहेंगे। उसी दिन सब

पहले यह कहा गया था कि हिन्दू, मुसलमानों का सम्बन्ध विजेयी, विजेता का नहीं वे दोनों प्रति द्वन्द्वी नहीं बल्कि भाई हैं। उन्होंने राष्ट्रीय झन्डा एक मत होकर ऊंचा कर दिया। इन्हीं पांच दिनों में जनता की वह शक्ति जो अब तक सोई पड़ी थी जाग उठी और यह भाव भारत में फिर से पैदा हो गया कि जनता को अपना राजा चुनने का अधिकार है।

देहली की स्वतन्त्रता की खबर बिजली की तरह देश भर में फैल गई परन्तु पंजाब की हालत ठीक नहीं थी। इसके कई कारण हो सकते हैं। दूसरे शत्रुओं को कुछ समय दे देना क्रान्तिकारियों के लिये हानिकर था। क्रान्तिकारियों की यह सुस्ती अंग्रेजों के लिये बहुत लाभदायक हुई। ऐसे समय में सब यदि एक साथ उठते तो निश्चय ही विदेशी राज्य का अन्त हो जाता।

भारतीय यदि अंग्रेजों से अलग रहते तो अंग्रेजी शक्ति बुहार कर फेंक दी जाती। १८५७ तो लम्बी रात्रि व्यतीत हो जाने वाला प्रभात था। जिन्होंने उस ज्योति के दर्शन कर लिये थे वह जाग उठे और जो अब भी सोचते थे कि रात्रि ही है वे दासता का लिहाफ ओढ़े हुये पड़े रहे और फिर सो गये।

नाभा पटियाला और जींद आदि रियासतें यदि औरों की तरह चुप भी रहतीं तो भी क्रान्ति सफल होने का बहुत अवसर था परन्तु इन्होंने तो अंग्रेजों से भी बढ़कर क्रान्ति की जड़ पर कुठाराघात करना शुरू किया।

पटियाला, जींद और नाभा इत्यादि का विश्वास करके

कमाण्डर-इन चीफ अम्बाले से २५ मई को देहली को चल पड़ा किन्तु मानसिक और शारीरिक कष्टों के कारण थका हुआ वह २७ मई को करनाल में हैजे से मर गया।

अम्बाले और देहली के बीच सैंकड़ों भारत वासियों को फांसी दे दी गई। उनके बाल एक २ करके उखाडे गये। उनका शरीर भाले से छेदा गया और उनके मुंह में गो मास तक भर दिया (हिष्ट्रीज औफ सीज औफ देहली) हजारों निर्दोष भारतीयों को उनका न्याय करने के लिये इकट्ठा किया गया। जजों को मुकर्रर करने से पहले उनसे कसमें ली जाती थीं कि वे अपराध और निरपराध का निर्णय किये बिना ही मृत्यु की सजा देंगे। ऐसी जगह जहां पर सब अंग्रेजी अफसर देशी आदमियों को उनका अपराध और निरपराध को बिना विचारे ही फांसी पर टांग देने की पवित्र कसम खाकर बैठते हैं उसे अंग्रेजी में (कोर्ट मार्शल) कहते हैं। (होम का सिपाही युद्ध का इतिहास पृष्ठ १२४)

पजाब मे बहुधा सब जातियां एक दूसरे से लड़ती रहती थीं उन्होंने इकट्ठी राष्ट्रीय जागृति को नहीं समझा वास्तव में उन्हें स्वतन्त्रता खोये अभी दस ही वर्ष हुये थे। पजाब के शासकों ने उनके अन्तर दोष को भली प्रकार समझ लिया था उन्होंने सिक्खों और जाटों में मुसलमानों के प्रति घृणा उत्पन्न करानी प्रारम्भ कर दी। उनको प्राचीन भविष्य वाणी याद दिलाई गई "कि खालसा, एक दिन देहली पै जहां मुगल बादशाह ने गुरु गोविन्दसिंह जी को मारने की आज्ञा दी थी, चढ़ाई करेंगे और उसे धूल में मिला देंगे। परन्तु इस वाणी के अनुसार यदि खालसा ही देहली को

जीत लेते तो इसमें अंग्रेजों का क्या लाभ था। यह स्वाभाविक था कि जिनका लाभ इसी में था वे और सबों को भारत के सिंहासन से हटा दें इसी बात को बदल कर यह बनाई गई कि देहली जब ही धूल में मिलगी जब खालसा अंग्रेजों से मिल जायेंगे। और सिक्खों को भड़काने के लिये यह लिखकर चिपकाया गया कि बादशाह का पहला हुक्म सब सिक्खों को कत्ल करने का था। क्रान्तिकारी दल ने यद्यपि बहुत प्रयत्न किया तो भी सिक्ख अंग्रेजों से मिल ही गये परन्तु और सब पंजाब की सेनायें विद्रोह के लिये तैयार बैठी थीं और इशारे की प्रतीक्षा कर रहीं थीं।

अलीगढ़

अलीगढ़ में नं० ९ सेना थी इस सेना का कुछ भाग मैनपुरी इटावा और बोलन्द में था। सरकार को इस सेना पर पूरा भरोसा था और उन्हें विश्वास था कि यह सेना कभी भी विद्रोह नहीं करेगी।

मई के महीने में छावनी में एक पूज्य और स्वतंत्रता प्रेमी ब्राह्मण आया। ब्राह्मण ने उन्हें अचानक उठ खड़ा होने की सलाह दी। किसी तरह तीन सिपाहियों ने सरकार को इसकी सूचना दे दी उसको पकड़ कर अलीगढ़ मुकदमे में भेज दिया गया और वहां उसे फांसी की सजा हुई। सारी सेना ने विचार किया कि यदि ३१ मई की प्रतीक्षा करें तो ब्राह्मण की जान जाती है। जब वे सब इस बात की कानाफूसी कर रहे थे कि उन्होंने देखा कि उसकी आत्मा स्वर्ग जा चुकी है और उसका नश्वर शरीर फांसी पर झूल

रहा है। मानों शत्रों की बजाय रक्त की धाराओं से लोगों को बदला लेने के लिये उत्साहित कर रहा हो। तत्काल ही एक सिपाही लाइन से आगे बढ़ आया और अपनी तलवार उस मृत शरीर की ओर करके कहने लगा मित्रो! यह शहीद खून में नहा रहा है। उसके मुंह से निकले हुए शब्द तीर की तरह सब सिपाहियों के हृदयों को पार कर गये और उन्होंने तलवारें खींचली और क्रोध में पागल हो कर नाचने लगे और "फिरंगी राज का नाश हो" के नारे लगाने लगे और आधी रात के बाद अलीगढ़ में अंगरेजी राज्य का नामो निशान तक नहीं रहा। अपने साथियों को इस प्रकार खड़े देखकर स्वयं न खड़ा होना उन्होंने अपमान समझा और वह उसी दिन उठ खड़े हुए। उन्होंने भी अंगरेजों के जीवन माफ कर दिये और उसी दिन देहली को चल दिये। २३ तारीख को इटावे की भी सारी सेना "हर हर महादेव" का नाद करती हुई उठ खड़ी हुई और अंगरेजों पर धावा बोल दिया खजाना लूट लिया जेलों को तोड़ दिया। अंगरेज जिस सेना के लिये सोच रहे थे कि यह सेना विद्रोह करने वालों में से सबसे पीछे खड़ी होगी वही औरों से बहुत पहिले उठखड़ी हुई। इस लिये अंगरेजों को किसी पर भी विश्वास न रहा।

आजमगढ़ की ओर से भयङ्कर समाचार आने लगे। ३१ मई का प्रभात हुआ और सिपाहियों ने बनारसके बारकों में आग लगादी सारे सूबे को उठखड़े होने का यह इशारा मात्र था। इस प्रकार विद्रोह वास्तव में ३ जून जब कि खजाना आजमगढ़ और गोरखपुर से बनारस जाने वाला

है कानों को फाड़ देनेवाली ढालों की आवाज़ आनेलगी। एक क्षण भी नहीं बीता था कि अंग्रेजों को आंखों के आगे मेरठ का यह दृश्य घूमगया और वे अपनी जीवन रक्षा के निमित्त इधर उधर भागने लगे। ७ लाख ६० का खज़ाना गोला बारूद जेलखाना दफ्तर बारकें सब सिपाहियों के हाथ में आगये।

आजमगढ़ से खबर आने पर ४ जून को दोपहर बाद परेड करने की आज्ञा हुई। इस प्रकार उनसे हथियार छीन लेने की इच्छा थी। सिपाही इस बात को समझ गये और आस पास के हथियारगृह पर धावा बोल दिया और बहुत बुरी तरह अंग्रेज अफसरों को मारा अंग्रेज़ी फौज ने उन पर गोली चलाई। घमासान लड़ाई होने पर भी सिपाहियों ने तीन बार आक्रमण किया और हटते २ सारे सूबे में फैल गये।

अंग्रेजों ने जो अत्याचार इस सूबे में किये वे बिलकुल अनुचित थे। बनारस के विद्रोह के बाद जनरल नील ने सिखों और अंग्रेजों की एक २ टुकड़ी आस पास के गांवों में शान्ति रखने के लिये भेजी। यह टुकड़ियां अरक्षित गावों में घुस जाती थीं। जो कोई भी उनको मिलता उसीको काट दिया जाता था। अधिक संख्या में ऐसे पुरुष एकत्र हो गए जो फांसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसलिये फांसियों की एक लम्बी कतार बनानी पड़ी। मनुष्य का पूरा सांस भी न निकलने पाता था कि वह फेंक दिया जाता था किन्तु फिर भी मरने के लिये अभी बहुत बाकी थे। यह देखकर अंग्रेज अफसरों ने वृक्षों से फांसियों का काम लिया। इस से वृक्षों की टहनी २ में रस्सों से टंगे हुए भारतीय

मर रहे थे। गरीब किसानों को पकड़ना और फांसी पर लटकाना एक खेल बना लिया गया और एक कला के रूप में अंग्रेज लोग नये २ तरीके निकालने लगे। पहले उनको हाथियों पर चढ़ाया जाता और फिर उनको एक लम्बे वृक्ष के समीप ले जाया जाता और जब गर्दन अच्छी तरह बांधदी जाती थी तो हाथी को चला दिया जाता था तब भी इस दृश्य को एकाग्रता से अंगरेज लोग ऊबने लगे। इस लिये जब देशी लोगों को लटकाया जाता तो तरह २ के हिंसों की शक्ल में होकर मरना पड़ता था। कुछ को तो अंगरेजी हिंसे ८, ९ की शक्ल में होकर मरना पड़ा (काए और मलेसन का भारतीय गदर का इतिहास)

फिन्तु अंग्रेजों को अब भी लाखों काले आदमियों को मारना था उन्होंने एक और ही तरकीब सोच निकाली। किसानों के गले में जलते हुए रस्से डालकर बन्दूकों का मुह उनकी ओर करके हज़ारों भारतीयों को जलाते कितने खुश लगते थे इस प्रकार से गावों के चारों ओर आग लगा देना और उनके निवासियों को जला देना यह अंग्रेजों को इतना भला लगा कि उन्होंने इस बात को विलायत लिख कर भेजा इसका एक बहुत ही हास्यप्रद चित्र खींचा। एक अंग्रेज कहता है - "हमने जन मनुष्यों से भरे हुए एक गाव में आग लगादी और जब उठती हुई ज्वालाओं के बीच में से भाग कर आए तो हमने उन्हें गोलियों का शिकार बनाया।"

बस! इन शब्दों से अधिक कोई भी शब्द अंग्रेजों की अमानुषिक बर्बरता का वर्णन नहीं कर सकते।

इलाहाबाद पंजाब से कलकत्ते के सब रास्तों के बीच में है इसलिये जो इलाहाबाद को अपने अधिकार में कर लेता उसके हाथ में सारे इलाके की कुंजी थी। इलाहाबाद को जीतने की बहुत इच्छा हुई विद्रोहियों ने पहले अंग्रेजों की कोठियां जलादीं रेल तार इत्यादि तोड़ दिया। उन्होंने खजाने को जिसमें लगभग ३० लाख रुपया था घेर लिया और दोपहर बाद थाने पर भी झंडा टांग दिया गया।

न केवल युवक सिपाही बल्कि बुड्ढे पेनशनरों ने भी सिपाहियों की राष्ट्रीय सेना में नाम लिखा लिया। किसान और व्यापारियों ने भी इस क्रांति में बहुत भाग लिया। बच्चे तक गलियों में राष्ट्रीय झंडा लेकर जलूस निकालते थे। अंगरेज गली कूचों में ऐसे जुलूसों को पकड़ लेते थे और छोटे २ बच्चों को फांसी टांगदेते थे। जो बच्चे अपने हाथ में राष्ट्रीय झंडा लेने का अपराध करते थे उनको सरेआम फांसी की सजा दी जाती थी।

सारे कानपुर शहर में १५ मई को एक खास प्रकार का जोश सा मालूम देने लगा। किन्तु सुह्यूगह्लीलर को अब भी विश्वास था कि यह कुछ जोश नहीं है, यह तो मेरठ की असाधारण घटनाओं के कारण ऐसा हो रहा है। परन्तु सर्व साधारण के क्रोध की आग जो अब तक गुप्त रक्खी गई थी एकाएक खुले तौर से भड़क उठी।

२३ जून का दिन आया १०० साल पहले इसी दिन पलासी की लड़ाई में अंगरेजों ने भारत माता को स्वतंत्रता का मंगल सूत्र तोड़ा था। पलासी के युद्ध का बदला लेने की अब तक नहीं बुझी थी।

इस दिन नाना साहब की सेना में अपूर्व जोश था नाना साहब की सेना आगे दिवारों तक बढ़ती चली गई यद्यपि उनपर बराबर गोलियां बरसती रहीं। इधर भी किले पर दोनों तरफ से गोलिया बरसने लगी। क्रान्तिकारी किले के अन्दर तो नहीं घुस सके और उस दिन पलासी को लड़ाई का बदला बिना चुकाए ही सेना को वापिस लौटना पड़ा। किन्तु वह धावा व्यर्थ नहीं गया। अंग्रेजों की सब आशायें जाती रहीं अगर २३ को नहीं तो २५ को उन्हें सुलहका झन्डा टागना पड़ा। अंग्रेजों ने हथियार पटक दिये। अंग्रेज लोग कानपुर छोड़कर जाने के लिये तैय्यार होगए।

२७ जून को प्रातःइसी प्रकार की गड बड और भड़कीला वातावरण हो रहाथा। अंग्रेज सतीचउटा घाट में जाने वाले थे। जब सब अंग्रेज नाव में बैठ चुके और मल्लाह चलने के लिये बिल्कुल तैय्यार थे कि कहीं से इस शान्ति को भङ्ग करता हुआ, एक बिगुल बज उठा। तत्काल ही बन्दूकों भालों और तलवारों की झनझनाहट से आकाश गूंज उठा। मल्लाह नावों में से कूद पड़े। सिपाही पानी में घुस गये। शीघ्र ही सब नावों में पानी भर गया और पुरुष और स्त्रियें सब पानी में कूद पड़ी। कुछ तैरने लगे, कुछ डूब गये कुछ भालों के शिकार बने। अधिकाश गोलियों से गले लगकर ससार के परले पार हो गए।

जब कानपुर में अंग्रेजी राज्य की कोई भी निशानी बाकी नहीं रही तो २८ जून को नाना साहब ने एक दरबार किया और अपने माथे पर राज्य तिलक धारण किया।

उधर लक्ष्मी बाई भी अपना खोया हुआ राज्य लेने के

लिये यत्न कर रही थी। ४ जून को, झांसी में भी जागृति हो गई। क्रान्तिकारियों ने किले पर कब्जा कर लिया और अंग्रेजों को विवश होकर शहर के किले में जाना पड़ा किन्तु क्रान्तिकारियों ने उसे भी जीत लिया।

अवध

डलहौजी के अवध अपनी ओर मिला लेने के कारण वहां की जनता की हालत नित्य प्रति खराब होती गई। ब्रिटिश फौज के अधिकांश सिपाही अवध के ही थे और अपनी मातृ भूमि की दासता और बुरी दशा देखकर उनमें भी अशान्ति फैल गई। किन्तु इसकी दवा यह नहीं थी कि अंग्रेज भली प्रकार राज्य करते। इस की दवा यह थी कि अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जाये। जनता की इच्छाएं बिना वाजिद अलीशाह को दुबारा सिंहासन पर बिठाये पूरी नहीं हो सकती थीं। लगभग सारी जनता ही अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने को तैयार बैठी थी और 'सर्व साधारण' में असन्तोष की आग बिजली की तरह दौड़ गई।

१३ मई को मेरठ की जागृति की खबर मिली और १४ को पता लगा कि देहली क्रान्तिकारियों के हाथ आ गई है। और भारत की स्वतन्त्रता का ऐलान हो चुका है। ३१ मई और ७ जून के बीच सारा सूबा विद्रोही बन चुका था और १० ही दिन में फिर वाजिद अलीशाह को सिंहासन पर बिठा दिया और अवध में अंग्रेजी राज्य का नामो निशान भी बाकी न रहा।

तब सिपाही और वालिन्टियर लखनऊ की ओर चल पड़े जहां सर हैनरी भरती हुई अंग्रेज ज्ञांकको जीवन प्रदान कर

रहा था। दोनों ओर की सेनाएं युद्ध करने से पहिले कानपुर के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहीं थी। और २८ तारीख को यह खबर मिली कि कानपुर में एक भी अंग्रेज जीता न बचा। यह सुनकर सर हैनरी ने कानपुर को फिर से जीतने का निश्चय किया।

१८५७ में जनता ने यह भली प्रकार समझ लिया था कि बिना स्वतन्त्रता प्राप्त किये जीवन व्यर्थ है। सब रियासतों के मनुष्य भी क्रान्ति के रंग में उतने ही रंगे हुये थे जितने कि और सूबों के। ग्वालियर की जनता ने सिन्धिया से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने की आज्ञा देने का अनुरोध किया परन्तु पहले तो उसकी जबान तक न हिली और बाद में यही कहा कि मित्रता करो युद्ध नहीं। जनता ने १४ जून के शाम तक प्रतीक्षा की और फिर सूरज छिपते ही एक बंगले में आग लगी। सब अंग्रेज सिन्धिया के राज्य से बाहर निकाल दिये गये।

वास्तव में जो बदला अंग्रेजों ने लखनऊ से चुकाया। उसको लिखने के लिये कलम को खून में डुबोना पड़ता है। नगर और महल को किस तरह लूटा गया किस तरह नागरिकों का कत्ले आम किया गया। यह एक बहुत शोक जनक कहानी है। हम अंग्रेज इतिहासकारों की पुस्तकों के दो पैरे नीचे देते हैं।

"लखनऊ की जेल में बहुत से अंग्रेज अफसर और औरतें थीं। ६ महीने तक उन्हें कुछ न कहा गया किन्तु जब अंग्रेज सेना नगर में घुस आई और उन्होंने निर्दोष और दोषी सब को मारना शुरू किया तो क्रोधित

महल में गये और कुछ अंग्रेज कैदियों से बदला चुकाने का निश्चय किया और तत्काल ही आठ अंग्रेज अफसरों को गोली से मार दिया परन्तु जब अंग्रेज औरतों को भी मारने की आज्ञा हुई तो बेगम साहबा ने स्त्रीत्व के आदर स्वरूप उन्हें मारने से इन्कार कर दिया और तत्काल ही अपने जनाने महलों में रक्षा के लिये ले गई" (चारलस बोलकी पुस्तक भारतीय गदर नं० २ पृष्ठ ५४)

"जब कि महल में अंग्रेजों ने कत्ले आम किया हुआ था तो एक भयभीत बच्चा एक वृद्ध आदमी को लिये जा रहा था। उस बूढे ने अंग्रेज अफसरों के आगे जमीन पर लेटकर अपने बच्चे की प्राण भिक्षा मांगी। परन्तु उसके उत्तर स्वरूप पिस्तोल निकाल कर गोली चलाई। निशाना चूक गया। गोली फिर चलाई। फिर निशाना चूक गया। तीसरी बार उस निर्दयी ने फिर गोली चलाई परन्तु गोली ने इस बार भी निर्दोष बच्चे को मारने से इन्कार कर दिया। चौथी बार (तीन दफा उसको मुंह की खानी पड़ी)। उसको सफलता प्राप्त हुई और बच्चे के रक्त की धारा बह चली। (लन्दन टाइम्स पत्र के प्रधान संवाद दाता की डायरी से पृष्ठ ३४८)

कुछ सिपाही जो अब तक जीवित थे आसानी से मार दिये गये। किन्तु कुछ को पांव पकड़ घसीट कर एक खास जगह ले जाया गया और उन्हें लटका दिया जाता था। सैनिक भाले से उनके शरीर को छेदते थे और नीचे से आग जला दी जाती थी।

अब आपके आगे उन शहीदों में से रानी लक्ष्मी बाई के

जीवन पर रोशनी डालेंगे कि किस प्रकार उस महान आत्मा ने अपने देश और धर्म की रक्षा के लिये प्राण त्यागे।

"क्या ? मैं अपनी झांसी छोड़ दूं ?" कभी नहीं। अगर किसी में हिम्मत है तो आकर मुझ से छुड़ालें।" यह रानी लक्ष्मी बाई के शब्द थे। जब डलहोजी ने उससे उसका राज्य छुरा लिया था तो जनता की भावनाओं में बड़ी हलचल मची हुई थी। किन्तु शीघ्र ही उसने अपना राज्य वापिस ले लिया और अपनी विजय से गर्वित वह अब राज कर रही थी।

सहृदय भारत तो सदा यही कहता रहा "मैं दूंगा" "मैं दूंगा" किन्तु आज यह क्या असाधारण घटना हो रही थी। एक कठोर आवाज एक दृढ़ चेहरे से निकल रही थी। "मैं नहीं दूंगी' मैं नहीं दूंगी' इसी प्रकार की अचानक आवाज सुनकर फिरंगी झल्लाके और सर ह्यूगरोज को इस झगड़े को दबाने के लिये भेजा गया।

अंग्रेज झांसी तक पहुँच गये क्योंकि सिन्धिया और टेहरी के राजा ने सारे युद्ध भर अंग्रेजों को सब सामान दिया २३ तारीख की रात्रि को रणभेरी गूंज उठी और किले से कुछ दूरी पर जलती हुई मसालें चमकने लगीं २४ का प्रभात हुआ। अब और देर का काम नहीं है। घन गर्जे तो परवाने ने अपना काम शुरू किया।

२५ तारीख से युद्ध ठीक तौर से शुरू हो गया दोनों ओर से ६ दिन तक बराबर गोले बरसते रहे ७ वें दिन शत्रु की तोपों ने फसील तोड़ दी परन्तु रातों रात में फिर फसील बना दी गई। ८ वें दिन अंग्रेजों ने शंकर किले पर

धावा किया। दूरबीनों की सहायता से उन्होंने किले के अन्दर के तालाब पर बहुत अधिक गोलाबारी की। किन्तु पश्चिमी और दक्षिणी दरवाजे वाली तोपों ने अंगरेजों की तोपों का मुंह बन्द कर दिया और जलके तालाब को बचा लिया अंगरेज इतनी बड़ी सेना और सामग्री होने के बावजूदभी ३१ मार्च तक किले में न घुस सके। झांसी की सहायता के लिये तातिया टोपी बढ़ा आ रहा था। तातिया आगे बढ़ा परन्तु उसके सैनिकों ने बहुत कायरता का परिचय दिया उन्हों ने जरा भी युद्ध न किया और भाग खड़े हुए।

तीसरी अप्रैल का प्रभात हुआ। अंगरेजों का झांसी पर अन्तिम हमला शुरू होगया। किले पर सीढ़ियां लगाई गई परन्तु उसमें उन्हें सफलता न हुई और अंग्रेजों को वापिस लौटना पड़ा। परन्तु वे शहर में सुरक्षित स्थानों से गोलियां बरसाने लगे कुछ शान्त होने पर रानी ने सोच लिया कि किले से इतनी दूर पर अकेले लड़ना बेवकूफी थी। जब झांसी पर शत्रुओं का झन्डा उन्होंने फहराते देखा तो उसकी आंखों में से एक अद्भुत ज्वाला निकलने लगी। उसी समय एक हरकारा दौड़ता हुआ आकर कहने लगा। "महारानी जी! किले के प्रधान दरवाजे के दोनों ओर रक्षक मारे गये हैं"। रानी ने कहा "मैंने किले के सहित अपने को उड़ा देने का निश्चय किया है। मैं अपने हाथ से बारूद में आग लगाऊंगी"। यह सुन कर बड़े सरदार ने धीरता पूर्वक उत्तर दिया "आपको आज रात को यहां से बचकर जाना चाहिये और वहां जा कर पेशवा के साथ जाना चाहिये। रानी ने ऐसा ही किया। उसने कुछ

छूटे हुये घुड सवार लिये और आधी रात को हाथी पर सवार होकर हर हर महादेव के नारों के साथ किला छोड दिया। उसने मर्दा[illegible] बना रक्खा था और अपने दत्तक पुत्र दामोदर को सा[illegible] लपेट कर बांध रक्खा था। रानी तमाम रात खूब तेज सव[illegible] करती रही। ज्यों ही जरा वह कुछ खा-पी चुकी कि उसने फिर काल्पी के लिये प्रस्थान किया। किन्तु पीछे यह धूल उडती कैसी नजर आ रही है खबरदार! बोकर समीप आ गया है अपनी तलवार निकाल लो। रानी ने एक हाथ तलवार का घुमाया और बोकर नीचे आ रहा। फिर रानी तमाम दिन सवारी करके आधी रात को काल्पी पहुँची। एक बार फिर रानी ने और तातिया ने युद्ध की तैयार की। रानी ने पेशवा के साथ कुचक गाव पर धावा किया। परन्तु कठोर सैनिक नियमों के न होने के कारण सेना वहा से भाग खडी हुई और वापिस काल्पी आ गई और वहा आपस में लडकर और गालियां देकर अपनी पराजय का बदला निकाला। तातिया टोपी अपने पिता से मिलने चरखी चला गया। इसी बीच में रानी ने फिर से युद्ध की तैयारी की। उसने अग्रेजों पर फिर हमला किया रानी ने बडी वीरता दिखायी। सारे क्रान्तिकारी रानी की इस वीरता से जागृत हो उठे। अग्रेज गोलन्दाज तोपें छोड २ कर भाग निकले। सर ह्यू रोज इस मार काट को देखकर घबरा उठा और अन्तिम उपाय उसने अपने खास ऊंटों की सैना को काम में लाया। और केवल ऊंटों की ही बदौलत उसने अंग्रेजों का जीवन बचाया। वह २२ मई को पेशवा की सैना को

पीछे हटाने में समर्थ हुआ। और छोटी मोटी लड़ाई भिड़ाइयों के बाद २४ मई को काल्पी में घुसा। वहां वीर और अविजयी क्रान्तिकारी नेताओं को छोड़कर सब कुछ हथिया लिया।

जब तातिया अपने पिता से मिलने गया था तो रास्ते में उसने ग्वालियर का सिंहासन हिला दिया और उसकी सारी सेना अपनी तरफ मिला ली। तातिया की सफलता को जानकर लक्ष्मी बाई ने उससे ग्वालियर चलने के लिये कहा और जनता ने उनका स्वागत किया। सिन्धिया ने उनका मुकाबला करा परन्तु सिवाय कुछ सेना के सब ने लड़ने से इन्कार कर दिया तब तो सिन्धिया आगरे की ओर भागा। तातिया ने एक नया राज्य ले लिया। ग्वालियर पर राष्ट्रीय पताका फहराने लगी। इस विजय के बाद क्रान्तिकारी ऐशो आराम में लग गये और हर समय सेना तैयार रखने की बात को भुला दिया। ग्वालियर की खबर सुन शीघ्रता से ह्यू गरोज़ उस ओर बढ़ा।और उधर तातिया भी अंग्रेजों से लड़ने के लिये निकल आया। अंग्रेज मोरार वाली टुकड़ी को तो पहले ही हरा चुके थे। रानी के सिवाय सब गड़बड़ी में पड़े हुये थे। रानी ने स्वयं पूर्वीय दरवाजे की रक्षा की क्योंकि उसकी इच्छा थी कि जब तक जीवित रहूँ तब तक झंडा फहराता ही रहे। उसने अंग्रेजों पर बड़ी तेजी से धावा किया। उसकी दो मित्र मदर और काशी भी उसके दोनों ओर होकर बड़ी वीरता से लड़तीं रहीं।। अंगरेजों को नीचा देखना पड़ा और स्मिथ पीछे हट गया। इसी प्रकार से उस दिन का युद्ध समाप्त हुआ। दूसरे दिन अंग्रेजों ने कोशिश करने की ठान ली। उसपर बार बार

भयंकर हमले होते रहे थे। उसकी सेना की संख्या घटती ही आ रही थी तो भी वह सब से आगे रहकर धैर्य बन्धा रही थी और अपना कर्तव्य पालन कर रही थी। सर ह्यू रोज ने ऊटों की सेना लेकर धावा बोला। किंतु फिर भी रानी निर्भयता पूर्वक डटी रही। उसने देखा कि पीछे से भी अंग्रेजी सेना बढ़ी चली आ रही है तोपें चुप हो चुकीं थी प्रधान सेना हार चुकी थी। रानी कुछ घुड सवारों के साथ आगे बढ़ी और उसने चाहा कि अंग्रेजों को चीरकर अपने साथियों से जा मिलें। फिरंगियों ने धमाधम उनपर गोली चलाई। एक गोली उसकी सहेली मुन्दर के लगी। इस पर क्रोधित होकर रानी ने उस फिरंगी का सिर काट लिया वह और आगे बढ़ी। आगे नाला था यदि वह नाला पार कर जाती तो अंगरेजों के हाथ से निकल जाती परन्तु घोड़े ने छलांग नहीं लगाई। इतने ही में अंग्रेज घिर आये। उनकी इतनी तलवारों के सामने रानी की एक तलवार चल रही थी। अन्त में रानी पर पीछे से वार हुआ और रानी घायल हो गई रानी का नौकर रामचन्द्र एक कुटिया में ले गया। वहां रानी का स्वर्गवास हो गया। उसने वहीं घास की चिता बनाकर आग लगा दी। रानी की चिता सुनसान में थी परन्तु गौरव की कमी न थी। ऐसा एक जीवन ही सारे राष्ट्र के आदर और मान का हेतु होता है। भारत माता ऐसी पुत्रियों को जन्म देकर गर्व कर सकती है॥ किन्तु इस प्रकार के स्वतन्त्रता के युद्ध के बिना गौरवान्वित देश भी ऐसे महान व्यक्तियों को उत्पन्न नहीं कर सकता।

हा! बाबा गंगा दास की कुटिया के पास विश्वासपात्र

नौकर रामचन्द्र राव द्वारा जलाई गई चिता ही १८५७ के स्वतंत्रता युद्ध रूपी ज्वाला मुखी की अन्तिम लपट है।

देहली के घेरे के समय की पंजाब की घटनाओं के बाद यह सूबा तो लग भग चुप ही रहा। कहीं कहीं कभी २ कुछ जागृति उत्पन्न हुई किन्तु वह कुछ नहीं हिन्दू और मुसलमान दोनों ही विदेशी शासकों से घृणा कर रहे थे तदपि दोनों मिलकर उठने का साहस न कर सके।

१८५७ के स्वतंत्रता के युद्ध के लिये हम देख चुके हैं कि यू०पी० अवध रुहेल खण्ड, बिहार बंगाल बुन्देलखण्ड और सी० पी० एक तरह से कुरुक्षेत्र का मैदान बने हुए थे बर्मा और रंगून में भी कुछ २ जागृति हुई थी किन्तु वह व्यर्थ थी।

विन्ध्या पर्वतों के दक्षिण की ओर हम शिवाजी द्वारा स्थापित मरहट्टा राज्य देखते हैं। यद्यपि दक्षिण भी जागना तो नहीं भूला परन्तु वह भूल गया कि उसको उत्तर के साथ ही साथ जाग उठना चाहिये। उन लोगों ने उत्तरीय भारत की क्रान्ति के परिणाम की प्रतीक्षा की। जब एक दफे बिगुल बज चुके तो फौरन ही जीवन की चिन्ता न करके दृढ़ता से युद्ध आरम्भ कर देना चाहिये। वह उत्तर के साथ नहीं उठा। वह कदम कदम पर डगमगाता और गिरता पड़ता उठा। और इस प्रकार की जागृति का एक ही निश्चित और अवश्यम्भावी परिणाम था, असफलता।

अब हमें एक अन्तिम दृष्टि वीर अवध की ओर भी डालनी चाहिये। हम नये वीर मौलवी अहमदशाह का अन्त उस प्रान्त में देख चुके हैं। निरन्तर हारते रहने के कारण यद्यपि

वह निस्साहस हो गया और पराजय के मान लेने पर क्षमा मिलजाने की आशा और लालच था। तथापि मौलवी अहमदशाह की मृत्यु पर सारा अवध बदला २ की ध्वनि से गूंज उठा और एक दम उठ खड़ा हुआ निज़ाम अली खां पीलो भीत तक बढ़ गया और और प्रधान आदमियों ने एक दम ही अवध और रुहेल खण्ड में युद्ध शुरु कर दिया कमान्डर इन चीफ ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि क्रान्तिकारियों को नैपाल तक पीछे खदेड़ दो किन्तु अवध फिर भी पीछे न हटा और बगैर लड़े तो वह बिल्कुल न हटा।

१८५८ में रानी विक्टोरिया का आदेश छपा इस आदेश का प्रधान उद्देश्य अवध को क्रान्ति को मिटा देना था अवध की बेगम ने एक दूसरा आदेश निकाला और उसमें विक्टोरिया के आदेश पत्र को गलतियों और थोथी बातों को दिखलाया था। किन्तु अवध चाहता था स्वतन्त्रता या मृत्यु। वह १८५६ तक लड़ता रहा। किन्तु अन्त में सब तरफ से नैपाल में खदेड़ दिया गया। उनको अब भी एक आशा थी कि नैपाल का राजा उनको शरण देगा। ६० साठ हजार आदमी उनके साथ बेगम नाना साहब बाला साहब और २ बड़े २ आदमियों को अवश्य शरण देगा। किन्तु उसने तो अंगरेजों को नैपालमें घुस कर इन क्रान्तिकारियों के मारने की आज्ञा देदी। सब तो सबकी आशा जाती रही। कुछ ने अपने हथियार छिपादिये और अपने अपने घरों का चल दिये परन्तु फिर भी कुछ उच्च आत्माओं ने जंगल में रहना पसन्द किया।

इसी समय के लग भग नाना साहब ने होपग्रान्ट को एक पत्र लिखा क्या पराजय या आधीनता मानने की कोई बात या इच्छा थी? नहीं भारत के ऊपर अत्याचार पूर्ण अंग्रेजी राज्य को बुरी तरह फटकारने के बाद नाना साहब पूछते हैं "तुम्हें भारत को ले लेना और भारत को भगोड़ा करा देने का क्या हक है? भारत पर राज्य करने का हक तुमको किसने दिया है? क्या तुम फिरंगी तो इसके राजा हो और हम अपने ही देश में चोर हैं।

१८५७ की राष्ट्रीय क्रान्ति का अवध में इस प्रकार अन्त हुआ। बेगम साहिबा और उनके युवा पुत्र को इसने आश्रय दे दिया।

अन्तमें जब लार्डक्लाइवने वालों में से बचे खुचों को नैपाल के जंगलों में आश्रय लेने के लिये विवश कर दिया तो भी उन लोगों ने आधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा भूखों मरना स्वीकार किया।

२० जून १८५८ को ग्वालियर के भीषणयुद्ध में अंग्रेजों का जानी दुश्मन तांतिया टोपी होशियारी से निकल गया।

कुछ ही दिनों में सारे मध्य भारत में तांतिया टोपी की आवाज गूंज उठी। अब उसके पास सैना कहलाने योग्य कुछ न था। न सैना न तोप न मसाला यहां तक कि इन चीजों के पाने की कोई आशा ही नहीं थी तब भी वह निर्भयता पूर्वक अंग्रेजों को तंग करता हुआ स्वयं पराजय को भी पागल बनाते हुए वह आधीनता स्वीकार नहीं करता था।

तांतिया का उद्देश्य यह था कि किसी तरह से नर्वदा

को पार करके मरहटों को उनके जगलों में ले जाया जाये। अंग्रेजों का उद्देश्य उसे पार न करने से रोकना था बल्कि उस को देखने से भी रोकना था।

तांतिया ने जब सुना कि अंग्रेजों की सेना भरतपुर में आ गई है। तो एकायक जेपुर की तरफ घूम गया किन्तु अंगरेज फौरन ही नसीराबाद से जेपुर पहुँच गये। जब तांतिया का यह उपाय भी फेल हो गया तो वह दक्षिण की ओर बढ़ा इधर उसका पीछा करनल होम्स ने किया। उसने पीछा करने वालों को बुरी तरह हराया और सीधा टोंक तक चला गया। वहा टोंक रियासत की सैना उससे आ मिली और उन्होंने तांतिया को तोपें और बारूद इत्यादि सब सामान दिया। इतनी सहायता पाकर वह ठीक इन्द्रगढ़, आ सका। इसके पीछे २ होम्स और दाएं बाए-रौबर्टस था। तांतिया चलते २ नसीराबाद आ गया। यहा ७ अगस्त को रौबर्टस तांतिया से लड़ा। तांतिया तमाम दिन लड़कर कोटरा पहुँचने में सफल हुआ। वहां पहुँचकर फिर आधी रात को लड़ाई हुई इसमें तांतिया की बुरी तरह हार हुई। किन्तु फिर भी अंग्रेजों से बचता हुआ वह झालरा पाटन गया यहां की सारी सैना तांतिया से आ मिली। इस सहायता के मिलने पर वह इन्दोर को ओर बढ़ा। इन्दोर की सैना को भी उसने पहले से ही अपनी ओर मिला रक्खा था तांतिया के पीछे चारों ओर रोबर्टस, होम्स, पार्क, मिचल, होप और लोक हार्ट लगे हुये थे। इतने आदमियों के सामने तांतिया के थके हुए आदमियों को हारना पड़ा और वह फिर जंगल में घुस गया। किन्तु वहा से वह एकायक दक्षिण की ओर

बढ़ने लगा। अंगरेजों की इस प्रकार की वीरता और धृष्टता को देखकर वह नर्मदा तक पहुँच गया और उसने नदी पार कर ली। तातिया के सामने अब निज़ाम राज्य था। सब आश्चर्य से चकित रह गये। किन्तु अब इस समय सब जगह क्रान्ति को दबाया जा चुका था यहां तक कि महाराष्ट्र के लोग तातिया की सायहता करने को भी डरते थे। किन्तु इस प्रकार के अद्भुत यत्न का यह फल पाकर वह घबड़ाया नहीं। सब ओर से अंगरेजी सेनायें इधर आने लगीं। अब डाक को लूटता हुआ तारों को तोड़ता हुआ छावनियों पर छापा मारता हुआ नर्वदा के मुहाने तक जा पहुंचा। परन्तु जब वह कारा गाव के पास नर्मदा पार करने को ही था तभी मेजर सदरलैंड ने उसपर धावा किया किन्तु शीघ्र ही वह सब तोपों को वहीं छोड़ नदी पार करने लगे। बड़ोदा अब केवल ५० मील रहगया था किन्तु उसके पीछे बहुत सी सेनायें लगी हुई थी। तातिया उधर से घूम कर फिर बस्वाराके जंगल में घुसा। ११ दिसम्बर को वह फिर जंगल से बाहर आया और फिर उदयपुर की ओर बढ़ा किन्तु तत्काल ही उसे फिर जङ्गल में घुसना पड़ा। बहुत से पड़ाओं और लड़ाई झगड़ों के बाद तांतिया देवासा पहुँचा अब बचने का कोई रास्ता न था अब नेता लोग अपने भविष्य के कार्य क्रम को सोच रहे थे अब अचानक निराश भरी अन्तिम चीख सुनाई दी। तातिया को कमर पर अंग्रेजों के हाथ पड़े। बहुत से अंगरेज उसके तम्बू में घुस आये थे। अंग्रेज खुशी के मारे चिल्ला उठे "तांतिया पकड़ा। किन्तु शीघ्र ही उनको आवाज पलटनी पड़ी थी अब पड़ता था "ओह वह अभी यहां था! दौड़ो सिपाहियों

दौड़ो।" ताँतिया तो अब तक कहाँ का कहाँ पहुँच चुका था। ताँतिया फिर एक दफा २१ तारीख को सोखर के पास दिखाई दिया था। वहाँ पर उसको होम्स की सैना से हार खानी पडी। अब वह अपनी सेना के साथ मानसिंह के पास जो कि ग्वालियर का सरदार था और पाटन के जगलों में छिपा हुआ था गया। अब अ गरेजों ने ताँतिया के पकड़ने के लिये विश्वास घात का अस्त्र काम में लिया। केवल एक स्वदेशीय के विश्वास घात से ताँतिया को बन्दी बना लिया गया था।

तत्काल ही कोर्ट मार्शल कचहरी बैठी। ताँतिया ने कह दिया" मैं मुकदमे में कोई भाग नहीं लेना चाहता। किन्तु अ गरेजों के खास तौर पर प्रार्थना करने पर उस ने क्रान्ति की कहानी आरम्भ से अन्त तक कह दी। १८ तारीख को मुकदमे का स्वाग खतम हो गया और तातिया को फांसी की आज्ञा हुई। वह खुशी २ तख्ते पर चढ़ गया उसने रस्सी गले में डाल ली। गाठ स्वतन हुई तख्ता खींच लिया गया झटका लगा और

फांसी इस शहीद के खून से भीग गई। और देश आसुओं से भीग गया। उसका कसूर था देश की स्वतन्त्रता के लिये कठिनाइयां झेलना उसका इनाम था एक कमीने विश्वास घाततक की दुरगी चाल और उसका अन्त था अग्रेजों को फाँसी पर अपराधियों की तरह लटकना।

ताँतिया! ओ ताँतिया! तुम हमारे इस निर्भाग्य देश में क्यों उपत्न्न हुये थे।

" हम निर्बलों के आसुओं के बदले में खून बहा! क्या हो

अच्छा सौदा है।

१८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध की भीषण वेदी पर यह अंतिम और पूर्ण बलिदान था।

परिणाम

१८५७ की क्रान्ति में जो तैयारियाँ मिलती हैं वे सफल क्रान्ति में मिलनी मुश्किल हैं। जब कि सेनाओं ने, राजाओं ने, जमींदारों ने, पुलिस ने, शहरों ने, गाँवों ने एक के बाद एक उठ खड़े होने की प्रतिज्ञा की तो कौन नहीं एक दम युद्ध शुरू कर देगा। किन्तु वास्तविक कठिनता तो आरम्भ करने में ही होती है फिर तो सारा देश ही उठ खड़ा होता है। इतना सुभीता होने पर भी नहीं उठते, वह शायद कभी उठ ही नहीं सकते।

किन्त फिर यह असफलता क्यों। इसका प्रधान कारण यह प्रतीत होता है। यद्यपि क्रान्ति का नाशात्मक भाग तो पूरा था किन्तु रचनात्मक भाग काफी मोहक नहीं था। कोई भी अंग्रेजी शक्ति को नष्ट कर देने के विरुद्ध नहीं था। किन्तु भविष्य की सबको चिन्ता थी। यदि फिर पहले ही की तरह अन्दरूनी झगड़ों को स्थापित करना था यदि फिर वही पहले वाली दशा आने वाली थी जिस दशा से थक कर लोगों ने बेवकूफी से विदेशी लोगों को घुसने दिया। यदि जनता के सामने एक विशाल सुन्दर और आकर्षक आदर्श रख दिया जाता तो क्रान्ति का अन्त भी उतना ही सफल होता जितना कि उसका जन्म। किन्तु रचनात्मक भाग को छोड़कर देश तो नाशात्मक भाग भी पूरा नहीं कर पाया। अभी तक देश में से विश्वासघातकता और कमीनेपन

के दुर्गुण नहीं निकले थे।

पराजय का कारण केवल ऐसे लोग थे जो अभी तक यह नहीं समझ सके थे कि अंग्रेजी राज्य तो पहले के भारतीय राज्य से अधिक बुरा और हानिकर है और जो अंग्रेजों की सहायता से इन्कार करने के लायक ईमानदारी और देश भक्ति नहीं रखते थे।

जब देश भक्ति से लाभ होता है तो देश भक्त बनना कोई महत्व की बात नहीं। सच्चा गौरव तो उन्हीं को मिलता है जो भली प्रकार यह समझ कर स्वतन्त्रता के लिये युद्ध करते हैं कि स्वराज्य विदेशी राज्य की अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ होता है। चाहे वह प्रजात्मक हो चाहे विद्रोहात्मक। स्वतन्त्रता देश की समृद्धि के लिये ही वांछनीय नहीं है किंतु इससे आत्मा को शान्ति मिलती है। साम्पत्तिक हानि अथवा लाभ की अपेक्षा सम्मान अधिक प्यारा और ऊंचा है। स्वतन्त्रता का जङ्गल गुलामी के बाग की अपेक्षा बहुत अच्छा है। जिन्होंने इस महान् सिद्धांत को भली तरह समझ लिया है। जिन्होंने स्वराज्य और स्वधर्म के लिये अपना कर्तव्य पालन किया और यदि विजय के लिये नहीं तो कम से कम कर्तव्य के लिये जिन्होंने मृत्यु को गले से लगाया उनका नाम सदा आदर से लिया जाने योग्य है।

जब कि भारत माता का एक हाथ गुलामी के सिर पर प्रचण्ड वज्रा घात कर रहा था शोक कि उसका दूसरा हाथ उसी हृदय में छुरा घुसेड़ रहा था और वह घायल माता फिर पृथ्वी पर गिर पड़ी। आप ही बतलाइये इन दोनों हाथों में से कौनसा हाथ अधिक दुष्ट या अधिक निर्दय, अधिक विश्वास घाती और अधिक नीच था?

बादशाह बहादुरशाह एक बड़ा कवि था जब क्रान्ति ज़ोरों पर थी तब उसने एक ग़ज़ल बनाई थी। किसी ने उससे पूछा :—

अब दमदमे में दम नहीं, अब खैर मांगो जान की।
अब ज़फ़र ठण्डी हुई शमशीर हिन्दुस्तान की॥

तो कहते हैं बादशाह ने उत्तर दिया :—

आदमियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तब तो लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की॥

वन्देमातरम्

भीषण नर हत्या काण्ड

भीषण नर हत्या काण्ड

१९१४

यदि हम भारत के इतिहास को उठा कर देखें तो उसमें पंजाब का इतिहास अलग ही स्वर्ण के शब्दों में छपा हुवा मिलेगा, महा भारत के समय से आज तक पंजाब की भूमि खून चूसती चली आई है कौरव व पाण्डवों का प्रसिद्ध युद्ध भी इसी भूमि पर हुवा था धन और सम्पत्ति की बाहुल्यता के कारण हमेशा से यहां पर विदेशी आक्रमण होते रहे हैं।

मिसर के राजा आसीरस की सेना का खून चूसा असेरिया की रानी सेमरामिस की फौज को हड़प कर गई। सिकन्दर ने पोरस की सेना को नष्ट करवाया पंजाब की उपजाऊ भूमि का यहां के निवासियों पर बड़ा प्रभाव पाया जाता है। यहां पर कई जातियां ऐसी मिलती हैं जिनकी कहानियां सुन कर हृदय हिलता है और कोप उत्पन्न होता है अंग्रेजी राज्य ने पंजाब की वीरता को ही सर्वश्रेष्ठ माना है महा युद्ध १९१४ में भी पंजाब ने एक लाख २४ हजार नवयुवक भेजे थे। और आज भी पंजाब के सैनिकों की सख्या शेष सारे भारत के सैनिकों के बराबर है। एक बार नहीं सैंकड़ों बार पंजाब ने भारत के भाग्य का निर्णय किया है यहां के निवासियों की वीरता के राग केवल हम ही नहीं गाते बल्कि ब्रिटिश शासक भी लोहा मानते हैं। अप्रेल १९१९ में सर माईकल ओडवायर ने कौंसिल में अपने भाषण में कहा था "मैं हर समय पंजाब वासियों की वीरता के गान गाता रहता हूं पंजाब का नाम मैं बड़े अभिमान से लेता

मेरा यह अभिमान हर प्रकार से सच्चा है मैं लग भग १५ साल से भारत के भिन्न २ प्रान्तों में कार्य करता रहा हूं परन्तु मैं गोरव के साथ कह सकता हूं कि जो वीरता मैंने पंजाब के लोगों में पाई उसकी समता किसी भी प्रान्त के मनुष्य नहीं कर सकते-पंजाब का बच्चा भी शूरवीर है इसी कारण से हर एक भारतवासी के हृदय में पंजाब के प्रति बहुत सम्मान है सन् १६१९ में ब्रिटिश शासकों ने सारे भारत के लिए रोलट एक्ट के नाम से एक कानून बनाया था। यह कानून समस्त भारतीयों के पेरों में जंजीरें डालने का काम करता था सारे भारतीय इसके विरुद्ध ध्वनि उठा रहे थे विशेष कर पंजाब के शहर २ और ग्राम २ में अंग्रेजी शासन को निर्दयता की चर्चा थी कांग्रेसी इसको तोड़ने का उद्योग कर रहे थे। इस कानून को कदापि मानने को तैयार न थे, वही अंग्रेज जो पहले पंजाब वालों के गुण गाते थे अब अवगुणों को बखानने लगे हैं। किन्तु हमारे पंजाबी भी इसको खूब समझ गये वहीं ओडवायर साहब का वक्तव्य था लाहोर और अमृतसर में रोलट एक्ट के विरुद्ध जो कुछ गप्पें हांकी जारही हैं वह महा शोकमय हैं। हजारों लोगों को पंजाब के नेता अनुचित रास्ते पर लेजाते हैं और वे नेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए जनता की आंखों में धूल डाल रहे हैं किन्तु उन नेताओं को याद रखना चाहिए कि एक न एक दिन उनके पाप का घड़ा फूट जाएगा।

आपके मस्तिष्क में एक बू भरी हुई थी कि किसी तरह इन नेताओं को छांट कर सदा के लिए इनके हाथ पैर कटवा दिये जायं आपने लोगों को बहकाने के लिए १०

अप्रैल को मिंटगुमरी में अपने भाषण में कहा कि पिछले दिनों में कई लोगों ने रोलट एक्ट के विरुद्ध झूठी बातें कही हैं वास्तव में यह कानून लोगों के जान व माल की चोरों और बदमाशों से रक्षा करने के लिए बनाया गया है जिन्हों ने इस कानून का अच्छी तरह अध्ययन किया है वे जानते हैं कि जो इसके विरुद्ध कहते हैं वे झूठे हैं और इस प्रकार देश में झगड़ा होने का डर है और यह भी हो सकता है कि खून की नदियां बह जाएं इस लिए नागरिकों को चाहिए कि इस विरोध को दबाने के लिए सरकार की सहायता करें सरकार अपना कानून अवश्य लागू करेगी यदि कानून लागू करते समय खून बहाना पड़े तो इसका अपराध और जिम्मेवारी इन विरोधियों पर रहेगी जो कानून को तोड़ने का यत्न कर रहे हैं इस लिए मुझे आशा है कि इस काम में आप सरकार की सहायता करेंगे।

सर माइकल साहब ने अंग्रेज़ी सेनाओं व सरकारी अफसरों को हमारे नेताओं के विरुद्ध भड़काने की बड़ी चेष्टा की इनके शासन की निर्दयता आने वाली घटनाओं से विदित हो जायेगी। बहुतेरे समाचार पत्रों की जमानतें छीन लीं। यदि किसी समाचार पत्र ने सरकार के भेदों को जनता के सामने थोड़ा बहुत रक्खा भी तो इन साहब ने उनको जड़ से उखाड़ फेंका, पंजाब में एक युद्ध छिड़ गया। गवर्नर साहब ने Defence of India Act के नाम का एक कानून बना दिया। भाइयो तनिक उस तार को ओर ध्यान दो जो गवर्नर साहब ने वायसराय को हमारे नेताओं को मिटाने के लिये दिया था, वह यह था, पञ्जाब के लफटीनेन्ट गवर्नर

की यह राय है कि पञ्जाब के क्रांतिकारियों की सजाओं के विरुद्ध मुकदमा चलाने, अपील करने, या वकील, बैरिस्टरों को तर्क वितर्क करने की आज्ञा न दी जाये और जहाँ भी कहीं क्रांतिकारी मनुष्य मिलें उन्हें कैद करके कड़ी से कड़ी सजा दी जाये।

गवर्नर साहब ने विचार लिया था कि मैं केवल आज ही पञ्जाब वासियों को शासन करना बतला सकता हूँ और आपने अपने अधिकारों को बुरी तरह बरतने के लिये जो बुरी २ बातें जारी की वह भारत वासियों के हृदय में आज तक खटक रही हैं आप ने लोकमान्यतिलक और बाबू बीनचन्द्र पाल को पञ्जाब में प्रवेश न करने का आज्ञा पत्र निकाला पञ्जाब के हजारों मनुष्य बिना किसी दोष के नजर बंद किये गये हिन्दी व उर्दू के समाचार पत्रों का मुंह बंद कर दिया गया New India व अमृत बाजार पत्रिका जैसे अंगरेजी पत्रों का पञ्जाब में जाना बन्द कर दिया पञ्जाबियों पर हर प्रकार के अत्याचार ढाये गये छोटे २ अफसरों को डाँट दिखाई गई कई प्रकार के सरक्यूलर जारी किये गये। १९१७ में पञ्जाब के बड़े २ आदमियों ने मिलकर वायसराय के पास कानून बदलने के लिये एक डेपूटेशन भेजा उसे जनता से पास करवाने के लिये एक नोटिस निकाला गया। इस नोटिस पर कुछेक आदमियों के हस्ताक्षर थे। माईकल साहब ने इन्हें बुलाकर खूब डांट दिखाई। गवर्नर ने कांग्रेस की नीति को तोड़ने की सिर तोड़ चेष्टा को। हिंदू मुसलमानों की एकता की हँसी उड़ाई। आपने लोकमान्यतिलक व मिसेज़ पर १८५७ की तरह गदर मचाने का दोष लगाया।

यहां तक कि गवर्नर ने वे कानून पास कराये जो उसकी शक्ति से बाहर थे पञ्जाब वासियों में आग भड़कती चली गई। सरकार के अत्याचार बढ़ती हुई आग पर हवा का काम कर रहे थे।

सितम्बर १९१७ में गवर्नर साहब ने अपने भाषण में भारतीय नेताओं की खूब निन्दा की मदनमोहन मालवीयजी से जोकि वहाँ पर बैठे हुये थे यह न सुना गया और उनसे क्षमा मांगने के लिये कहा, अन्त में वायसराय के कहने पर माइकल साहब को क्षमा मागनी पड़ी। किंतु सत्य यह है कि यदि कुत्ते की पूंछ को १२ वर्ष भी नलकी में रखा जाय तो वह सीधी नहीं होती। गवनर साहब क्षमा मांगने के बाद भी उसी प्रकार ऊधम मचाते रहे और हर प्रकार से लोगों को हमारे नेताओं के विरुद्ध भड़काने की चेष्टा करते रहे।

अब मैं आप लोगों के सामने उन अत्याचारों का वर्णन करूंगा जो कि ब्रिटिश शासकों ने हम पर महायुद्ध के दिनों में किए देश की हर एक वस्तु जहाजों में भर कर बाहर भेजी जा रही थी इनके घरों में पड़े हुए अनाज के कुछ दानों को भी एकत्रित करके बाहर भेजा जा रहा था। लोगों को सैना में भर्ती करने के लिए जो ढग और अत्याचार किए जा रहे थे उन्हें वर्णन करने के लिए मेरे पास हृदय नहीं'मेरी छाती में एक पीड़ा उठती है और वह पीड़ा आंसुओं का रूप धारण करके दूर हो जाती है— ४ मई १९१७ को सर माईकल ने एक सरक्यूलर निकाली कि हमें पञ्जाब से केवल २ लाख रंगरूटों' की आवश्यकता है यदि पञ्जाब ने सहर्ष

इतने आदमी दे दिये तो अच्छी बात है वरना सरकार बल पूर्वक भरती करेगी, और इस प्रकार सरकार ने नौकरों को आज्ञा दी कि यदि कोई स्वतः भरती न हो तो बलपूर्वक भरती करलो। पञ्जाब सरकार ने सरक्यूलर निकाला था कि हर एक मनुष्य को अपनी आय का, उस आयका जिस पर कि वह इन्कमटैक्स देता है आधा या चौथा हिस्सा युद्ध में व्यय करना हो चाहिए डिप्टी कमीशनरों को लिखा गया था कि वे साहूकारों को बुला कर निश्चय कराले कि इतना रुपया वसूल करना ही पड़ेगा। लोगों को हर प्रकार का लालच दिया गया जो लोग खुले हृदय से युद्ध के लिये ऋण देंगे उन्हें सनदें सारटिफीकट व दर्बार में कुर्सी दी जायगी और इसके अतिरिक्त वही मनुष्य आनरेरी मजिसट्रेट और म्यूनिसपल कमिशनर बनाये जायेंगे जिन्होंने सरकार को अधिक ऋण दिया है। छोटे शासकों ने रुपया इकट्ठा करने के लिए जो अत्याचार किए उसका वर्णन नहीं हो सकता अम्बाला प्रान्त के एक मनुष्य को पत्र लिखा गया कि एक सप्ताह के अन्दर डिप्टी कमिशनर को खबर करो कि तुम कितना रुपया देना चाहते हो। शासक छोटे बड़े सब इस आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते थे वह देखते थे कि किसने कितना रुपया दिया है इस पर चोरों और अत्याचारियों को बिना दण्ड दिए छोड़ देते थे पहले दर्जे के मजिसट्रेट ने १९१७ में १८ नम्बर के मुकदमे के अपराधी को इस लिए छोड़ दिया था कि मुकदमें में अपराधी ने एकसौदस रुपये सरकारी फण्ड में दिए थे। महसिंह नामी आदमी ने इन्कमटैक्स घटाने के लिए प्रार्थना की

थी लेकिन उसकी प्रार्थना इस लिए नामन्जूर करदी गई कि न तो उसने सरकार को कोई ऋण दिया है और न ही अपने लड़के को सैना में भरती करवाया है एक बड़ी भीड़ने लोहिया गाँव के नायब तहसीलदार का घर घेर लिया व एक चपरासी और एक चौकीदार को पीटा इस बारे में ५२ आदमियों पर मुकदमा चलाया गया अब मुकदमें की अपील सिशन जज के यहा की गई तो कुछ मनुष्यों को छोड़ दिया गया शेष सब लोगों का दण्ड घटा दिया गया अन्त में रुपया लेकर उन सबों को छोड़ दिया गया।

जो लोग रगरूट न होते थे वे ग्राम की औरतों के सामने नगे खड़े किये जाते थे मनुष्यों को काँटेदार झाड़ियों में बन्द कर दिया जाता था, लोग १५ दिन तक जगल मे रह कर समय बिताते थे। घर आने पर पकड़ लिये जाते थे केराकोट व गुरना मे औरतों पर जो अत्याचर किये गये थे वे लिखे नहीं जा सकते। वे पकड़ कर दूर ग्राम मे भेज दी जाती थीं और जब तक उनके भाई बन्धु सेना मे नहीं भरती होते थे छोड़ी नहीं जाती थीं उनकी पवित्रता बिगाड़ी जाती थी उनके शरीर के आभूषण बेचे जाते थे।

यहा है यह पद्मिनी की पवित्रता और स्त्री धर्म जो गैर के सामने आने से मरना अच्छा समझती थीं। जो लोग डर से घरों से भाग जाते थे अफसर उनका मकान लूट लेते थे। उनके खेतों मे दूसरों के पशु चरवा देते थे। इसी तरह लगभग २० हज़ार रुपया सरकारी कर्मचारियों ने इकट्ठा किया। जगह २ पर फायर किये गये। गांव २ पर खास नम्बर लगा दिया था, उस गाव को उतने ही

पड़ते थे। कई गावों ने दूसरे ग्राम के आदमी पकड़ कर दे दिये।

अम्बाला डिवीजन के कमिश्नर कहते हैं कि हजार पांच सौ रुपये में नवयुवकों को खरीद २ कर सरकार के पास भेजने शुरू कर दो। क्रिमिनल प्रोसीजर की १०४ और ११० धारा के अनुसार लोगों पर बदमाशी करने का अपराध लगाकर उन पर मुकदमा चलाया जाता था या तो उनसे नेक चलनी का मुचलका मांगा जाता था या फौज में भरती होने के लिये जोर दिया जाता था फौज में भरती हो जाने के बाद मुलजिम को रिहा कर दिया जाता था।

'गुजरानवाला जिले में डिपटी कमिश्नर ओब्रायन ने ११७४५ से ऊपर आदमी बुरे तथा भले तरीके से भर्ती किये और उनको बहुत ज्यादा दुख दिया। इस प्रकार के अत्याचारों को देखकर सारा पञ्जाब हाहाकार कर उठा। परन्तु गवर्नमेन्ट ने इस पर भी ध्यान न देकर डा० सत्यपाल, महात्मा गांधी तथा किचलू को इस मामले के बारे में कुछ भी व्याख्यान देने को रोक दिया। इस पर पञ्जाबी लोग बहुत चिढ़ गये और उन्होंने एक मत होकर सब लोगों को इसका विरोध करने के लिये उकसाना प्रारम्भ किया।

ब्रिटिश राज्य ने १६१४ से लेकर १६१८ तक जो जो जुल्म किये हैं उसकी याद उन गरीब किसानों से पूछो जिनके घरों को लूट करके माल व धन बाहर भेजा गया। या उन छोटे २ बच्चों से पूछो जिनके माँ बाप ने यूरुप में जाकर इस निर्दयी राज्य की मदद की। या उन विधवाओं से पूछो जिन्होंने अपने पतियों को रण की चण्डी में आहुति

दे दी। या उन वृद्ध माताओं से पूछो जिन्होंने अपने प्यारे पुत्रों को अपनी छाती से अलग करके हमेशा के लिये दफ्न किया। अत कुछ भी हो भारतवर्ष ने इस गवर्नमेंट के तमाम जुल्मों को अपने ऊपर सहा अब सबकी आंखें इस चीज पर लगी हुई थी कि कब लड़ाई समाप्त हो और हमें अपने परिश्रम का फल मिले। भोले भाले भारतीयों को क्या पता था कि उनकी इच्छाओं पर पानी फेर दिया जायगा। गवर्नमेंट ने एक चाल चली और ऐसा पासा बदला कि लेने के देने पड़ गये। जो कुछ भी हमें मिला वह था रौलट एक्ट जो कि सन् १९१९ की १८ वीं मार्च को बिल कानून बनाकर पास कर दिया गया।

जिस मनुष्य में जरा भी स्वाभिमान है, स्वदेशाभिमान है और जो चलता फिरता मुर्दा नहीं है वह अपने ऊपर इस अत्याचार को कब सह सकता था।

अमृतसर के जलियांवाले बाग का अत्याचार

इस नगर में जो अत्याचार हुए हैं उसका उदाहरण किसी भी निर्दयी राज्य में नहीं मिलेगा मुझे आशा है कि इस प्रकार की सत्य घटना को पढ़कर कौन सहृदय व्यक्ति होगा जो ऐसी सरकार से अपना पीछा छुड़ाने का प्रयत्न न करेगा। महा युद्ध के बाद सरकार का ढंग देख कर सारे भारत वासी जले भुने बैठे थे जब कांग्रेस ने अपनी मांगे आगे रक्खीं तो सरकार का कोरा उत्तर देख कर हर एक के हृदय में आजादी की आग

क्रान्तिकारी मनुष्य फिर भड़क उठे रोल्ट बलपूर्वक थोपा जारहा था बस फिर क्या था हिन्दू मुसलमान एक हो गये माइकल साहब ने इस संगठन को तोड़ने की बहुत चेष्टा की लाहौर के नेताओं पर मुकदमा चलवाया उनका अखबार मुख बंद किया गया। इस आन्दोलन में डाक्टर सत्यपाल और किचलू ने हिन्दू मुसलमानों को मिलाने की जो सफलता प्राप्त की वह आज तक किसी को प्राप्त न हुई बस फिर क्या था सरकार ने २६ मार्च १८२० को सभा में इनके भाषण बंद कर दिए अमृतसर में नजर बंद किया गया आपने जाते हुए यह सन्देश दिया देश सेवा के समय हमें आपस के झगड़े मिटा देने चाहियें बार २ आपको महात्मा गांधी का संदेश सुनाया जा चुका है उन का शस्त्र सत्य है हमें सदा शान्ति रखनी चाहिए अगर फिर भी जेल मिले तो कोई हानि नहीं अमृतसर की हड़ताल व हिन्दू मुसलिम संगठन देख कर माइकल साहब आपे से बाहर हो गये और अन्त में डाक्टर सत्यपाल और किचलू को देश निकाले की आज्ञा दी ५० हजार मनुष्य बच्चे और बुड्ढे नंगे सिर व नंगे पाव अपने नेताओं को छुड़ाने की प्रार्थना करने के लिये डिप्टी कमिश्नर की कोठी की ओर जाने लगे सिपाहियों ने भीड़को रोक दिया और गोली बरसा दो बहुतेरे जख्मी हो गये और बहुतेरे मर गये। वाह रे भारतीय वीरो आपने किस शान्ति से काम लिया कि अपने मुर्दों और जख्मियों को उठा कर चुप चाप लौट आए इस रोने धोने को देखकर भी सरकार का दिल न पसीजा बल्कि हुक्म निकाला कि "जख्मी सरकारी हस्पतालों

में न पहुँचाये जाएँ लोग अपना प्रबन्ध आप करें " यह अत्याचार सहे न गये बैंक के मैनेजर मिस्टर सिटवारट और अकाउनटेंट को मार दिया गया लोग बल पूर्वक अस्पताल में घुस गये। माल गोदाम के मैनेजर का सिर धड़ से अलग कर दिया गया थाने के पास सारजन्ट रोलेंड कत्ल किया गया। टाऊन हाल, डाकखाना, मिशन हाल को आग लगा दी गई। यह तमाम कार्य नगर के गुन्डों ने किया था नेताओं को इसका कुछ ज्ञान तक न था, भारत वालो सोचो इस सरकार को तुम्हारे प्रति कोई प्रेम नहीं है वरना क्या कोई अपने नेताओं को छुडाने में भी निहत्थों को इस तरह भून देता है। बाद में जो काम किये गये वे पुलिस के अपने गुण्डों ने किये यह उन्हें रोक सकती थी लेकिन इसने नहीं रोका। दूसरे दिन इमारतों में आग लगाई गई थी पुलिस ने सब कार्यवाही जान बूझ कर की थी। वे निरअपराधी जो मरे थे उनको अरथी के साथ चार से अधिक मनुष्य एक कानून के अनुसार नहीं जासकते थे भारत वालों ने इसे भी शान्ति पूर्वक निभाया।

११ अप्रैल को नगर म खबर फैल गई कि डा० कन्हैया लाल की प्रधानता म जलया वाले बाग में एक सभा होगी। सरकार को अच्छा समय हाथ लग गया। यात्रियों की तलाशी लेकर नगर मे आने दिया जाता था। नगर में पानी व बिजली भेजने बन्द कर दिये गये। १३ अप्रैल को जनरल डायर कुछ सैनिकों को साथ लेकर नगर में आये और एक हुक्म जारी किया "कि शहर के बाहर या अन्दर कोई जलूस न निकाला जाय। चार से अधिक आदमी एक जगह न

मिलें यदि आवश्यकता हुई तो भीड रोकने के लिये शस्त्र काम में लाये जायेंगे" यह ऐलान कुछ जगह पर ही हुआ शेष नागरिकों को इसका पता तक नहीं बैसाखी के मेले का समय होने के कारण बाहर से सैंकडों नर नारी आये हुये थे वे इस बात से अपरिचित थे किन्तु इस सूचना से पहले ही तमाम नगर में यह चरचा हो गई थी कि शाम को जलयाँ वाले बाग में एक विराट सभा होगी सभा को रोकने के लिये डायर साहब ने कोई चेष्टा न की। सवा पांच बजे जब कि जलसा हो रहा था पच्चीस गोरे सिपाहियों और पच्चीस सिक्ख सिपाहियों और दो मशीन गर्न लेकर जनरल डायर जलया वाले बाग में पहुँच गया। सभा में लगभग बीस हजार आदमी आ चुके थे लाला हंसराज जी अपना भाषण दे रहे थे सभा में हर तरह की जनता मोजूद थी लोगों को यह किंचित पता न था कि हम पर मौत के बादल मडला रहे हैं। जनरल डायर ने बाग में जाते ही सिपाहियों को गोलियां बरसाने का हुकम दिया उस समय जनरल के पास केवल एक हजार छः सौ पचास कारतूस थे सबके सब वहीं खतम कर दिये गये बाग में मशीन गर्न ले जाने का रास्ता नहीं था यदि रास्ता होता तो शायद सारे शहर को नष्ट कर दिया जाता जिन रास्तों से लोग भाग रहे थे उन रास्तों पर गोलियों की वर्षा हो रही थी गोलियों से बचने के लिये लोग पृथ्वी पर लेट गये थे सरकार की तरफ से घायलों और मुर्दों का कोई प्रबन्ध नहीं किया। चारों ओर से खून की नदियां बह रही थीं मुर्दों के ढेर लगे हुये थे और बहुत से निरपराधी बच्चे बिलक २ कर रो रहे थे बहुत से मनुष्यों के

सिर धड़ से अलग हो गये थे। अधिक तर मनुष्यों की आंखें फूट गई थी किसी का कान टूट गया था अर्थात् कोई भी ऐसा मनुष्य न था जिसको चोट न पहुँची हो। लगभग एक सहस्र से अधिक लाश पडी हुई थी। और सरकारी आज्ञा थी कि रात के ८ बजे बाद कोई बाहर न निकले। शवों के उत्तराधिकारी इनका मृतक सस्कार भी न कर सके और नगी शवों पर मक्खियां भिनभिना रहीं थीं और बहुधा जो घायल ही होते थे घर की ओर जाने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन इन शहीदों ने रास्ते मे ही तड़प २ कर अपनी जान दे दी। इन सब बातों के होते हुये भी एक निर्दयी अग्रेज ने सूचना निकाली कि हम एक २ अग्रेज के कत्ल का बदला एक २ हजार भारत वासियों के खून से लेंगे। और कुछ अग्रेज यह विचार रहे थे कि अमृतसर को नष्ट कर दिया जाये। शहर का नक्शा खींचा गया। जगह जगह तोपें रखी गई। शहर के बच्चे २ की जिह्वा पर यह शब्द थे कि थोडी देर में ही शहर उजड़ा हुआ जङ्गल बन जायेगा। कमिश्नर साहब ने शहर के बड़े आदमियों को बुलाकर कहा कि तुम युद्ध चाहते हो या शान्ति। मैं दोनों बातों को पूर्ण कर सकता हूँ आप को यह भी ज्ञात होना चाहिये कि सरकार में इतनी शक्ति है कि इसने जर्मन तक के दांत खट्टे कर दिये मैंने सारा शहर डायर को सौंप दिया है अत आप उसकी आज्ञा का पालन करें। इस समय डायर की आज्ञा परमात्मा की आज्ञा से कम न थी डायर ने भी यह घोषणा कर दी थी कि मैं एक सिपाही आदमी हूँ और मैं स्पष्ट कहता हूं कि यदि आप लोगों की युद्ध की इच्छा है तो रण भूमि में उतर

आओ सरकार युद्ध के लिये सदा उद्यत है। यदि शान्ति चाहते हो तो मेरी आज्ञा का पालन करो और दुकानें खोल लो वरना गोली से उड़ा दिये जाओगे। मेरे लिये जर्मन की रण भूमि और अमृतसर का शहर एक ही है। और उन मनुष्यों को जो इस शहर के शिक्षित विभाग से सम्बन्ध रखते हैं अच्छी प्रकार मजा चखाऊंगा सारांश यह कि अमृतसर के लोगों पर सरकार ने अत्याचार करने में कोई बात न उठा रक्खी। गली मोहल्लों में चलते हुए आदमियों को कोड़ों से पीटा गया और लोगों को पेट के बल चलने को आज्ञा दी गई और प्रत्येक पथिक के लिए यह बात अति आवश्यक है कि वह गोरों को सलाम करके गुजरे और जो बिना सलाम किये चला जाता था तो उसे कैद कर लिया जाता था और हर प्रकार से इनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता था जिसको लिखने की मेरी कलम में शक्ति नहीं इसके अतिरिक्त शहर के वकीलों और बैरिस्टरों से कुली का काम लिया गया और स्पेश्यल कोर्टस बनवा कर लोगों पर बड़े २ अत्याचार किए गये और उनकी अपीलों पर कोई ध्यान तक न दिया गया यहां तक अत्याचार किए गये कि ५०० फुट लम्बी गली में से कोड़ों की तरह चलाया गया शहर को देवियों के धर्म को बिगाड़ने की चेष्टायें की गई पवित्र स्थानों पर अधर्म किए गये यह है योरुप की सभ्यता का नमूना और प्रकृति का नकशा, यही है इनके अत्याचार की प्रेम कहानी जिसको समझदार मनुष्य स्वयं जान सकते हैं इसके अतिरिक्त छः निरअपराधी छोटे बच्चों को एक अंग्रेज औरत पर आक्रमण करने के अपराध में

कैद करके और रस्सियों से बांध कर तीस २ बैतें लगाई गई वे बेहोश हो गये फिर उनसे चलने के लिए कहा गया जब इन से पेट के बल न चला गया तो पुलिस ने इनको ऊंची नीची जगह पर मुर्दों की तरह खेंचा यह ही अंग्रेजी राज्य की दयालुता व सभ्यता का अच्छा नकशा प्रत्येक भारत वासियों की दृष्टि में सदा जमा हुवा है और सर्वदा भारत के इतिहास पर एक गहरा प्रभाव डालता रहेगा।

लाहोर में अत्याचार ?

निरस्त्र जनता पर गोलियां !!

भयङ्कर अपमान !!!

रौलट एक्ट के खिलाफ विरोध की ज्वाला जो सारे देश में फैलगई थी सम्भव नहीं कि उसका असर लाहोर पर न हुआ हो इसके विरोध स्वरूप ६ अप्रैल को हड़ताल मनाई गई। हजारों आदमियों ने महात्मा गांधी के कथनानुसार उपवास किया सर माइकेल ओडवायर का पारा हमेशा ११० डिग्री पर रहता था। उन्हें किसी प्रकार का आन्दोलन पसन्द न था। जब ६ अप्रैल को हड़ताल रही तो उनको बेचैनी बढ़गई। उन्होंने कहकर जता दिया कि इस हड़ताल कराने के अपराध का बदला नेताओं से लिया जायगा। डा० सत्यपाल ने महात्मागांधी को सत्याग्रह का उपदेश देने के लिये अमृतसर निमंत्रित किया था और सन्यासी श्रद्धानंद के निमंत्रण को स्वीकार कर वे बम्बई से दिल्ली की ओर रवाना हो गये तो ओडवायर ने तुरन्त वाइसराय की मंजूरी लेकर पंजाब की सीमा के भीतर के पहिले ही स्टेशन पर उन्हें गिरफ्तार कर बम्बई लौटा दिया। महात्माजी की गिरफ्तारी की खबर सारे देश भर में फैल गई और बिना किसी संगठन ही के सब दुकानें बंद हो गई। एक जलूस माल की तरफ जाने लगा और अनारकली पहुंचते २ उसने विशालरूप धारण कर लिया। ६ अप्रैल को पुलिस ने माल की तरफ जाने से रोका। कुछ मनुष्य तो पीछे रह गये परन्तु कुछ आगे बढ़ते ही चले गये जब इसकी खबर

पुलिस को लगी तो फौरन एक दल मौके पर पहुंचा और चारों ओर से घेर लिया परन्तु जनता ने कुछ उपेक्षा की इस पर गोली चला दी गई। इसमें बहुत से आदमी घायल हुए जनता को पुलिस भगाती हुई लाहौरी दरवाजे तक ले आई इसी बीच में एक प्रसिद्ध नेता वहा पहुंच गये और जनता को बिखेर देने के लिये कहा गया। उन्होंने ऊंची जगह से समझाना चाहा परन्तु उनकी आवाज वहा तक न पहुंच सकी। इसी बीच में सुपरिन्टेन्डेन्ट भी वहां पहुंचे थे बहुत व्यग्र हो रहे थे। रामभजदत्त चौधरी ने झुन्ड को समझा बुझा कर हटाने के लिये कुछ अवधि मागी डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें दो मिनट का समय दे दिया। बेचारे दो मिनट में क्या कर सकते थे। उन्होंने फिर उपदेश शुरू किया। आंशिक सफलता भी हुई। किन्तु डिप्टी कमिश्नर साहब वचन के पक्के थे मजाल क्या कि दो से सवा दो मिनट हो जाते उन्होंने चट गोली की आज्ञा दे दी। कुछ मरे कुछ घायल हुए झुन्ड तितर बितर हो गया परन्तु इसका असर बहुत जहरीला पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप १ तारीख को लाहोर में हड़ताल रही। इसके बाद नेताओंकी एक सभा हुई और डिप्टी कमिश्नर से यह कहा गया कि सभा के स्थान पर पुलिस न रक्खी जावे। बादशाही मस्जिद में एक सभा हुई किन्तु उसमें कुछ भी निश्चय न हुआ और जब आदमी घर जाने लगे तो उन पर गोलियां चलाई गई। फौज की ओर से यह कहा गया कि अवस्था ने हमें गोली चलाने के लिये मजबूर किया। अगर यह बात सच है कि डिप्टी कमिश्नर ने सभास्थान पर पुलिस न र

अभिवचन दिया था तो यहाँ फौज की उपस्थिति ही अन्याय मूलक थी। इससे लोगों का क्रोध और भी भड़क गया। नेताओं के लिये अब जनता को सभालना दुस्साध्य कार्य हो गया। हड़ताल अभी तक जारी ही थी जगह जगह भोजनालय खुल गये जिससे गरीब लोग मुफ्त में भोजन ले सकते थे। होते होते १५ तारीख को कमिश्नर साहब ने कई नेताओं को बुलाया और वहां बुलाकर उन्हें देश निकाले का हुक्म सुना दिया गया। और थोड़े अर्से के बाद ही मार्शलला जारी कर दिया गया। कर्नल जानसन ने तो यहां तक कहा कि यदि लोग दुकानें न खोलते तो मैं उन्हें फौजी चार्ज में दे देता और जबर्दस्ती सामान बिकवा देता। दुकानें खोलने के लिये सूचना दे दी गई थी। कुछ व्यापारियों को घोर अपमान सहकर फौजी दबाव के कारण दुकानें खोलनी पड़ी। करनल जानसन ने कहा कि लाहौर में फौजी शासन शुरू करने को आवश्यकता इस लिये थी कि पजाब के अन्य ज़िलों में बलवा न फैल जाये। किन्तु बलवा सिद्ध करने के लिये कोई दृढ़ प्रमाण न दिया। किन्तु लाहौर का फौजी शासन ५ अप्रैल से २६ मई तक करनल जानसन के हाथ में था इसने इस वक्त जैसे २ अत्याचार किये उससे कलेजा कांप उठता है उसने कहा कि लाहौर को जनता श्रीमान् सम्राट के विरुद्ध युद्ध करना चाहती है हमें दुःख है कि इस पशुवत करनल जानसन ने बेचारे निरपराध लाहौर के निवासियों पर ज़रा ज़रा सी बात पर राक्षसी अत्याचार उसने सब तांगे और मोटरें अपने कब्जे में ले लीं।

लगर (मुफ्त भोजनालय) बन्द करा दिये । उसने समरी कोर्टस खोलीं । उसने स्वयं २७७ आदमियों पर मुकदमा चलाया जिनमें से २०१ को सजा हुई उनको जेलखाने और जुर्माने के अतिरिक्त कम से कम ५ और ज्यादा से ज्यादा ३० कोड़ों की सजा हुई उनके सरे आम कोड़े लगाने का हुक्म दिया गया । यह करनल घर के दरवाजों पर नोटिस लगवा देता और इसको टूट फूट का जिम्मेदार घर वाला होता था । इसका मतलब यह हुआ कि घर वाले उस नोटिस की चौबीसों घंटे देख भाल किया करें । उसने कालेज और स्कूल के विद्यार्थियों को भी खूब तङ्ग किया । उसने नोटिस फट जाने के परिणाम स्वरूप ३ मील के फासले पर किले तक सब विद्यार्थियों और प्रोफेसरों को आने से मजबूर किया । और उनको वहां दो तीन दिन हिरासत में रक्खा । कसूर में भी मार्शल्ला जारी किया गया । और वहां भी तरह तरह के अत्याचार किये । बहुत से नेताओं की बिना कुछ कारण बतलाये तलाशी ली गई । १ मई सन् १९१९ को कसूर के सब लोग स्टेशन पर आने के लिये बाध्य किये गये । ये अभागे नंगे सिर दिन के २ बजे तक सूरज की कड़ी धूप में बिना अन्न पानी के बिठाये गये । पब्लिक रोड पर लोगों को फांसी लगाने की टिकटिकिया लगाई गई । अब हड़ताल के चिह्न दीखने लगे । नेताओं ने हड़ताल रोकने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वे विफल हुये । और १४ तारीख को पूर्ण हड़ताल हुई । यह बैसाखी का दूसरा दिन था जिस दिन गुजरानवाला के बहुत से मनुष्य वजीराबाद मेले में जाते थे । गुजरानवाला के स्टेशन पर बहुत भीड़ थी ।

खचाखच भर गई और सैंकड़ों मनुष्य तो फुटबोर्ड पर भी खड़े हो गये । इन में से कुछ लोग अमृतसर से भी आ रहे थे । इन्होंने ने इन लोगों को धिक्कारा । इन्होंने कहा कि सैंकड़ों भाई जलियान वाले बाग में मारे गये हैं और तुम खुशी मना रहे हो। थोड़े ही समय में जलियान वाले बाग की खबर सारे में फैल गई । ट्रेन आगे जाकर ठहर गई। लोग फिर उस तरफ दौड़े। किन्तु जो लोग बैठ चुके थे वे भी उतर पड़े। पर इतने में ही किसी ने एक गाय का मरा हुआ बछड़ा टांग दिया। इससे क्रुद्ध भड़क उठा। इसी बीच में खबर मिली कि किसी ने पुल के उस पार सूअर का एक बच्चा कत्ल करके लटकाया है। इससे क्रुद्ध और भी भडक गया। उसने तार काट डाले और आग लगा दी। कहा जाता है लाहौर के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के पास ऐसी अफवाह पहुंची कि उनके विश्वसनीय करनल मार डाले गये। उसने तीन वायुयान भेजे। पहले ने तीन बम फेंके । पहला खालसा हाई स्कूल के होस्टल पर फेंका जिससे एक विद्यार्थी तथा कुछ अन्य मनष्य घायल हुये। दो बम एक मस्जिद पर गिरे । दूसरा वायुयान सवा तीन बजे पहुँचा। इसने मशीनगन के ७०० राउन्ड किये। तीसरे ने न तो बम ही गिराये न मशीनगन के फायर किये । केवल गुजरानवाला पर ही नहीं वरन आस पास के कई ग्रामों पर बम बरसाये गये। यह जुल्म यहीं तक खतम नहीं हुआ १५ अप्रैल को सुबह के वक्त करनल ओब्रायन ने अत्यन्त प्रतिष्ठित २२ [illegible] को गिरफ्तार किया। इसमें बहुत से ऐसे सज्जन थे जिन्होंने इसके पहिले दिन ही शान्ति स्थापन करने में

सरकार को मदद दी थी। पर इसकी कुछ परवाह नहीं की गई। ये लोग सिर्फ इस लिये गिरफ्तार किये गये कि उन्होंने रौलेट एक्ट के खिलाफ आन्दोलन में भाग लिया था। एक जलूस निकाला गया और उसके बीच में ये कैदी रक्खे गये। इनके आस पास फौज और पुलिस इन्हें घेरे हुए था।

१६ तारीख को करनल ओब्रायन वजीराबाद पहुँचे और शीघ्र ही वजीराबाद में गुजरानवाला का दृश्य नज़र आने लगा। तारीख १८ को एक दरबार हुआ जिसमें करनल ओब्रायन ने कहा था। "ऐ मूर्ख लोगो, सुनो! तुमने सोचा था कि अंग्रेजी सरकार का राज्य रहा ही नहीं। परन्तु मैं तुम्हारे इस पागलपन को शीघ्र ही मिटा दूंगा। मेरे पास इसकी एक रामबाण औषधि है। याद रक्खो सरकार को तुम्हारी जमीन जायदाद जब्त करने, मकानों में आग लगाने तक का अधिकार है। तदनुसार मैं हुक्म देता हूँ कि जमीयत सिंह बग्गा की कुल जायदाद जब्त कर ली गई है" उसके दूसरे रोज ही फौजी कानून की घोषणा कर दी गई नोटिस और इश्तहार मकानों की दीवारों पर चिपकाए गए और उनके फाड़े जाने या खराब होने की जिम्मेदारी मकान वालों पर होती थी।

आर्य समाज के सेक्रेटरी दौलतसिंह १० दिन के लिये बन्दी बनाये गये। उनसे एक के विरुद्ध गवाही देने के लिये कहा गया और तब ३० वीं मई को छोड़ दिये गये।

भूल कर यदि कोई मनुष्य गोरे को सलाम नहीं करता था तो उसके सिर को पगड़ी या साफा उतार कर उसके

गले से बांधा जाता था और सिपाही उसे छावनी तक घसींट कर ले जाते थे। और वहां कोड़े से पीटा जाता था। एक गवाह ने कहा कि मैंने गोरे को सलाम तो किया किन्तु उसने देखा नहीं और इसी अपराध के कारण वह उस अफसर का जूता चूमने के लिये बाध्य किया गया। फौज के खर्च के लिये लोगों से एक बड़ी रकम वसूल की गई और हर एक घर से एक २ रुपया लिया गया। इसके अलावा हर्जाने के तौर पर ६७००० रुपया लिया गया।

विद्यार्थियों को रोज शाम को हाजिरी देनी पड़ती और यूनियन जेक को सलाम करने लिये भर दोपहर बहुत दूर जाना पड़ता था।

सरदार जमीयत सिंह सिक्खों के एक बड़े नेता थे। आपने कई स्कूलों कालेजों और अन्य सस्थाओं की मुक्त हस्त से सहायता की थी और स्वयं युद्ध में भी सराहनीय कार्य किया था और उनके पास कमाण्डर इनचीफ का दिया हुआ प्रमाण पत्र भी था। इस समय वे जम्मू गये हुए थे। उनके लड़के ने यह बात डिप्टी कमिश्नर तथा अन्य अफसरों से कही भी थी। किन्तु पुलिस घर में घुस गई औरपूछा सरदार जमीयतसिंह कहां हैं? तदनन्तर चार स्त्रियों और छः बालकों को एक दम घर से बाहर निकाल दिया उनके बदन पर उतने ही कपडे रहने दिये जितने कि वे पहने हुए थे। पुलिस का यह कार्य कितना अन्याय पूर्ण था!

गांव के बदमाश लड़के सिखापढ़ा कर तैय्यार किये जाते थे और उन्हीं गवाहों के आधार पर सबका दण्ड

मिलता था।

निजामाबाद एक छोटा सा गांव है यहां के कुछ लोगों ने मि० येली का मकान जलाने में योग दिया था। परन्तु उनके अपराध को देखते हुए उनको बहुत कड़ी सजादी गई। १८ ता० को सिपाहियों से भरी एक स्पेशल ट्रेन पहुंची और सैनिकों ने गांव को चारों ओर से घेर कर लूटना शुरू किया। एक पखवाड़े तक गाव वालों को एक निश्चित समय पर जाकर हाजिरी देनी पड़ती थी। गाव से हर्जाने के तौर पर ६५०० रुपये वसूल करे। अकालगढ़ एक छोटा सा गाव है यहा को जनसंख्या चार हजार है। लाहोर और अमृतसर की घटनाओं के कारण तारीख १४ को एक हड़ताल मनाई गई। २२ वी अप्रैल को डिप्टी कमिश्नर साहब कैप्टन स्मिथ के पास पहुंचे। आपने गांव के भले आदमियों को बुला कर आज्ञा दी कि सड़क की मरम्मत करो ताकि मोटर अच्छी तरह आ जा सके। लोगों को दो हजार रुपया एकत्र कर जबरदस्ती मरम्मत करानी पड़ी तदनन्तर गाव के नेता गिरफ्तार किये गये और उन पर मुकदमे चलाये गये।

मानक चद को थाने में बुलाकर झूठी गवाही देने के लिये कहा गया किन्तु इनकार करने पर उन्हें आध घन्टे कड़ी धूप में खड़े रहने की आज्ञा दी गई। उनको गोली से मार देने की धमकी दी गई तब वह गवाही देने को राजी होगया। बाबू गोपालचन्द भी पकड़े गये और उनसे दो हजार रुपया मांगा और इनकार करने पर दो महीने कैद में रक्खे गये और फिर उनके रिश्ते दारों से पांच हजार

रुपया लेकर छोड़ दिया।

म्युनिसिपैलिटी के वाइस प्रेजिडेन्ट फ़ज़लदाद पकड़ लिये गये। गांव के सब लोगों को डाक बंगले के पास जमा होने का हुक्म दिया गया और उनके वहां इकट्ठे होने पर रेलवे लाइन की ओर से मशीनगन चलाई गई। आश्चर्य तो यह है कि लोगों से मशीन के खर्च के लिये १ हजार रुपया वसूल किया गया।

उपसंहार

पंजाबके भिन्न भिन्न जिलों की हृदय विदारक घटनाओं की जांच करते समय हमने भारत सरकार के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा है। भारत सरकार ने पंजाब सरकार की कारस्वाइयों में खुल्लम खुल्ला भाग नहीं लिया है तो भी हम उसके हाथ पर हाथ धर कर चुप बैठे रहने के कार्य को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकते। वाइसराय साहब ने प्रजापक्ष की जांच करने का कष्ट नहीं उठाया उन्होंने व्यक्तियों और संस्थाओं के तारों, पत्रों की ओर फूटी आंख से भी नहीं देखा। और पंजाब की ओर अपनी आंखे खोल कर न देख कर ही उन्होंने पंजाब सरकार के दुष्कृत्यों का एक दम समर्थन कर दिया। उन्होंने अन्याय पूर्वक अति शीघ्र माफी का कानून पास कर अधिकारियों के दोषों को छिपाने का यत्न किया। सरकारी गवाहों ने हंटर कमिटी के सामने जो जो बातें स्वीकार की हैं वे सब वाइसराय महोदय को कम से कम मई मास में तो अवश्य ही मालूम हो गई होंगी तो भी उन्होंने जनता या इंगलैंड की सरकार को जलियांवाला बाग के हत्याकांड का पूरा २ स्वरूप नहीं दिखाया और न फौजी कानून के अनुसार किये हुए कामों ही को बताया। उन्होंने मि० सि० एफ० एन्डूज जैसे सज्जन को पंजाब जाने से रोका। पंजाब सरकार के सेक्रेटरी मि० थामसन ने उनके सामने सत्य को छिपाने के लिये बगलें झांकी और कौंसिल में माननीय मदनमोहन मालवीय का अपमान किया। मि० थामसन ने मालवीय जी के जिन

विधानों का अपमान किया था वे सरकारी अधिकारियों के गवाहों से सच्चे सिद्ध हो चुके हैं। वाइसराय महोदयने लोकमत का निर्दयता पूर्वक खून कर और कल्पकता का अभाव दिखा कर इतना असम्य अपराध किया है कि मार्शललॉ द्वारा दो हुई फांसी की सजाएं तब तक मुलतवी नहीं की जब तब उन्हें भारत सचिव ने मजबूर न किया वाइसराय ने रोलट आन्दोलन के सम्बन्ध में जिस नीति का अवलंबन किया उसकी आलोचना हम करना नहीं चाहते। श्रीमान् लार्ड चेम्सफोर्ड ने अपने कृत्यों से सिद्ध कर दिखा दिया है कि वाइसराय के समान श्रेष्ठ पद के लिये वे बिलकुल अयोग्य थे।

१—सर माइकेल ने शिक्षित समुदाय को निंदा कर उन पर अविश्वास किया और रगरूट भरती और युद्धऋण के लिये अन्याय पूर्ण उपायों का अवलम्बन किया तथा स्थानिक समाचार पत्रों का गला घोट कर पंजाब के बाहर के प्रान्तों के राष्ट्रीय पत्रों का प्रान्तों में आना रोक दिया जिससे पंजाब के निवासी उनके शासन से चिढ़ गये।

२—रौलट आन्दोलन ने पंजाबियों के दिलों में घबराहट पैदा करदी और सरकार की सदिच्छा पर से उनका विश्वास काफूर की तरह उड़ा दिया। इसका मुख्य कारण सर माइकेल का राजनैतिक आन्दोलन दबाने के लिये भारत रक्षा कानून का उपयोग करना ही था।

३—उस सत्याग्रह और हड़ताल से राष्ट्र में जागृति उत्पन्न हो गई थी जिससे लोगों के मनोविकार और उत्पात
। का निग्रह हुआ और अधि—

आपदाओं से पंजाब बाल बाल बच गया।

४ रौलट आन्दोलन अंग्रेजों के प्रति विरोध भाव से नहीं उठाया गया था और सत्याग्रह आन्दोलन द्वेष और उत्पात से एक दम अलग है।

५—सरकार को उलट डालने के लिये पंजाब में कोई षडयन्त्र नहीं रचा गया था।

६—महात्मा गांधी की नजरबन्दी और डाक्टर किचलू और सत्यपाल का निर्वासन अन्याय संगत था।

७—रेलवे पुल के पास किये गये फैरों के कारण ही अमृतसर में दंगा हुआ था।

८—उत्तेजना का कारण कुछ भी क्यों न हो किन्तु उपद्रवी भीड़ द्वारा किये गये अत्याचार लज्जास्पद और निन्दनीय हैं।

९—जितनी बातें मालूम हुई हैं उन पर से यही ज्ञात होता है कि फौजी कानून का घोषित किया जाना अत्यन्त अनुचित था।

१०—शान्ति स्थापित हो जाने पर ही फौजी कानून घोषित किया गया था।

११—सो भी उस फौजी कानून का एक लम्बे समय तक जारी रखना सर्वथा उचित न था।

१२—पांचों ज़िलों में फौजी कानून द्वारा किये गये कृत्य अनावश्यक और क्रूरता पूर्ण थे।

१३—जलियां वाला बाग की हत्या जान बूझकर अमानुषिकता का नमूना था।

१४—फौजी अदालतें और समरी कोर्ट निर्दोष को तंग करने के साधन बना लिये गये थे।

१५—रेंगने का हुक्म और दूसरी मनमानी सजायें किसी सभ्य राज पद्धति के अयोग्य थीं।

१६—मार्शल ला के जमाने में अधिकारियों की रिश्वत-खोरी का एक भयङ्कर काण्ड किया गया था।

मार्शलला पर एक दृष्टि

यहां हम यह विचार करना चाहते हैं कि क्या पंजाब में मार्शलला का जारी किया जाना आवश्यक और न्याय युक्त था हम स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि खुल्लमखुल्ला बगावत को बे रोक टोक चलने दे। अतएव वैध कानूनों का यह तत्व है कि जब देश पर किसी विदेशी का हमला होने की पूर्ण सम्भावना हो और ऐसे सम यदि देश में गदर हो जाय तो सरकार की मजबूती के लिये मुल्की के बजाय फौजी कानून शुरु कर दिया जाय। अतएव जब सरकार का अस्तित्व तक गम्भीर जोखिम में गिर जावे और लोगों की जान माल खतरे में हो तब सरकार को मजबूर होकर मार्शलला का आश्रय लेना आवश्यक है फौजी कानून एक सुप्रसिद्ध आईन विद्या विशारद के मता-नुसार सरकार की बेकानूनी ताकत है। जब साधारण कानून शान्ति स्थापित करने में असमर्थ हों तो ही फौजी कानून काम में लाई जा सकती है। हिन्दुस्तान में गवर्नर जनरल को यह अधिकार है कि युद्ध के समय फौजी कानून जारी कर सके।

बृटिश भारत के किसी हिस्से में फौजी कानून के में ही जारी किया जा सकता है।

जब बृटिश सरकार किसी देशी या विदेशी से युद्ध में लगी हो या सरकार की हकूमत के खिलाफ कोई खुला गदर हो रहा हो। इसका मतलब यह है कि ज्यों ही युद्ध मिट जावे या गदर का अस्तित्व रहे तभी मार्शललॉ उठा दिया जावे। किन्तु यहां यह देखना है कि पंजाब में फौजी कानून कई मास तक किस आधार पर जारी रक्खा गया था। भारत सरकार ने १५ अप्रैल वाली प्रकाशित विज्ञप्ति में कहा था'—

चूंकि गवर्नर जनरल को निश्चय हो गया है कि पंजाब के कुछ हिस्सों में खुली बगावत हो रही है इस लिये उनको प्राप्त अधिकार से फौजी कानून जारी करना पड़ता है। सरकार ने यह तो कहा कि कई हिस्सों में बगावत हुई है किन्तु यह नहीं बताया कि ऐसी कौन२ सी घटनाएं हुई हैं जिनको बगावत कहा गया। क्या पंजाब के लोग शस्त्र लेकर सरकार से युद्ध करने आये थे। हमें आश्चर्य है कि पंजाब में कई ऐसी जगह मार्शललॉ जारी किया गया जहां अशान्ति का नामो निशान भी नहीं था। पंजाब के गुजरात जिले में जब मार्शललॉ जारी करने का हुकम आया तो वहां के डिप्टी कमिश्नर को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे यह समझने लगे कि क्या गुजरात देश में भी मार्शललॉ जारी किया जाने वाला है। दूसरी बात यह कि पंजाब के प्राय सब ग्रामों और नगरों में जब मार्शललॉ जारी किया गया जब अशान्ति सब जगह मिट गई थी। अशान्ति मिट जाने के बाद कई मास तक मार्शललॉ क्यों जारी रक्खा गया। यह भी तो ज़रा सी अशान्ति को खुला गदर कहना ही हमारी

दिमाग नौकर शाही की योग्यता का पता देता है। दूसरे इस अशान्ति के मिट जाने पर भी मार्शलला का जारी किया जाना नौकर शाही के हृदय का पता देता है। हमें यह साफ शब्दों में कहना पड़ेगा कि।

नौकर शाही ने इस वक्त कानून और सारा सार के विचार को एक कोने में रख कर केवल बदला लेने के लिये इतने अत्याचार किये।

आतंकवाद की चिनगारियां

संसार भर के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि सभी देशों के स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रयत्न में एक युग आतंकवाद का अवश्य आता है। भारत की राष्ट्रीय जागृति के इतिहास में आतंकवाद का समय पूरा ८० वर्ष का है। भारत वर्ष के आतंकवाद ने महात्मा गांधी के अहिंसामय आंदोलन के सामने पराजय स्वीकार करके अपने को स्वयं ही समाप्त कर लिया है। भारत आतंकवाद १८५७ के विप्लव से आरम्भ होता है और १९३७ में भारत से नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। देश के धन और जन की इतनी भारी हानि करने के बाद भी आतंकवाद के द्वारा देश की कोई ठोस सेवा नहीं की जा सकी इस लिये भारतीयों को शिक्षा लेनी चाहिये और इस मार्ग से स्वयं बचकर दूसरों को भी बचाना चाहिये।

पाठक १८५७ के धर्म युद्ध की सच्ची कहानी पढ़ चुके हैं। परन्तु आप को ज्ञात होना चाहिए कि भारती इस युद्ध में असफल होने पर भी चित्पावन लोग निराश हुये और

उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिये खुल्लमखुल्ला युद्ध करने को नीति के त्याग कर गुप्त समितियाँ स्थापित कीं थीं तथा भारतीय आतंकवाद आन्दोलन के जन्म दिया।

१८५७ में पंजाब मे कूका विद्रोह हुआ। इस विद्रोह के नेता गुरुराम सिंह थे। आप बडे देश भक्त थे और आप के राजनैतिक कार्य के लिये राम दास नामक एक साधू ने उत्साहित किया था आपने देश मे असहयोग का प्रचार किया जिससे सरकार का पारा चढ़ गया और आप पर कडी कडी पाबंदियां लगा दीं गई थीं इस पर रामसिंह जी गुप्त रूप मे कार्य करने लगे। सन् १८७२ मे कुछ कूके वीर अमृतसर के जा रहे थे कि मार्ग मे उनकी भेंट कुछ कसाइयों से हो गई और उन्होंने उनका वध कर दिया, इधर इसी हत्या मे अमृतसर मे कुछ आदमी पकड़ लिये गये, गुरु रामसिंह जी ने घातकों को तुरन्त ही अदालत मे जाकर अपना अपराध स्वीकार करवा कर वापस लौटा दिया।

१३ जनवरी १८७२ को कुछ कूके मेले मे जा रहे थे उनमे से एक का रास्ते मे मुसलमानों से झगडा हो गया, मुसलमानों ने उसे पीटा और उसके पास एक गाय को गिराकर उसको पीटा। जब यह कथा उस कूके ने अपने साथियों को सुनाई तब उन्होंने मिलकर किले पर आक्रमण कर दिया अगले रोज यह लोग मालेर कोटला के राज महल में आ घुसे, यहा पर भारी संग्राम हुआ। उनमें से ६८ नामधारी युद्ध करते हुये गिरफ्तार कर लिये गये उनमें से पचास को तोप के मुंह से बाधकर उडा दिया गया

उनमें एक बालक भी था। डिप्टी कमिश्नर मि० कावन की पत्नी ने अपने पति से उस बच्चे को छोड़ने की प्रार्थना की। मि० कावन ने गुरु रामसिंह को गाली देते हुये बालक से कहा यदि तुम यह कहते हो कि तुम रामसिंह के अनुयायी नहीं हो तो छोड़ दिये जाओगे। गुरु के प्रति कुत्सित शब्द सुनकर बालक को इतना क्रोध आया कि यह तड़प कर पहरे वालों के हाथ से निकल गया। फिर उसने मि० कावन की दाढ़ी को इतने जोर से पकड़ लिया कि अपने दोनों हाथ कट जाने पर ही इसको छोड़ा। बालक के उसी स्थान पर टुकड़े टुकड़े कर दिये गये। बाकी मनुष्यों को भी फांसी पर लटका दिया गया उन मनुष्यों ने बड़ी खुशी से अपने प्राण दिये गुरु रामसिंह भी पकड़ लिये गये और अन्त में १८८५ में वह स्वर्ग लोक को सिधार गये।

बम्बई में विप्लववादी षड्यन्त्र

पश्चिम भारत में विप्लववाद रूपी आंधी के पहले झोंके धार्मिक त्योहारों के रूप में देखे गये। परतन्त्रता का छुरा सब के दिलों में चुभा हुवा था। उस समय के लोग यह समझने लगे कि शत्रुओं के राज्य को विध्वंस करने के लिये यह आवश्यक है कि धार्मिक जलसे किये जावें लोग शिवाजी का नाम लेकर उनके नाम पर सालाना उत्सव करने लगे और उनके बनाये हुवे श्लोकों को पढ़कर उनपर अमल करने लगे। आपके सामने एक शिवजी श्लोक का अर्थ लिखा जाता है "ऐ भले लोगो समझो और अब तो ढाल तलवार ...े हो जाओ,हम दुश्मनों के अनगनित सर काट डालें ...हम राष्ट्र की लड़ाई में अपने जीवन को बलिदान

करदेंगे हम उन दुष्टों के खून से जो हमारे धर्म पर आघात करते हैं धरती को रंग देंगे। हम मार कर ही मरेंगे तुम्हें शरम नहीं आती कि तुम गुलाम हो क्यों आत्महत्या नहीं कर डालते आओ अंग्रेजों को मार दो हमारा देश तो भारत वर्ष है यहां अंग्रेज क्यों राज्य करते हैं इस प्रकार जलसों में श्लोक पढ़कर लोगों में बेदारी पैदा करने लगे और धर्म का नाम लेकर अपनी आजादी की ओर बढ़ने लगे। वहां पर लोगों को बताया जाता था कि अगर आपके देश पर कोई कठोरता कर रहा हो तो तुम्हारा प्रथम कार्य है उस को साफ कर डालो यह न समझो कि तुमने खून किया है। किन्तु अपने रास्ते के कांटों रोड़ों को दूर कर दिया। श्रीकृष्णजी ने गीता में लिखा है कि अगर हमें अपनी आजादी के लिये गुरू और सम्बन्धियों को भी मारना पड़े तो उनको भी मारने में न चूको जो लोग पापियों का खून करते हैं उनके मारने में कोई दोष नहीं अगर आप मुल्क की भलाई के लिये अपने हाथ खून में रंगना चाहते हो तो बड़ी खुशी से रंगो। विदेशी व्यापारियों को जो आपके घर में आन घुसे हैं उनको मार डालो क्या भारत का राज्य भारत माता ने सदा के लिये अंग्रेजों को देदिया है हरगिज नहीं यह राज्य मक्कारी और धोके बाजी से लिया गया है। अब चार दीवारों में बन्द रहने से काम नहीं चलेगा। सोचो आप के पूर्वज कैसे थे।" इस प्रकार के भाषण जलसों में दिये जाते थे। सन् १८९७ में पूना में जोरों का प्लेग हुवा। भारतीय जनता उस समय प्लेग को जानती भी न थी, सरकार ने इस बारे में बड़ी सख्ती से काम लिया, प्रत्येक

घर की तलाशी ली जाती थी यदि घर में प्लेग का कोई रोगी होता था तो उस घर को जबरदस्ती खाली करवा दिया जाता था, लोग सरकार के विरुद्ध हो गये इस काम में बाल कृष्ण चाफेकर कार्य कर रहे थे उन्होंने इन अत्याचारों का बदला लेना निश्चय कर लिया। और रेंपड जो कि प्लेग कमिश्नर थे उनको मार दिया इस पर चाफेकर को पकड़ लिया और उसके दो भाइयों के साथ फांसी दे दी गई। इस पर तिलक महाराज को भी राजद्रोही ठहरा कर उन पर मुकद्दमा चलाया गया परन्तु सरकार उनको सज़ा देकर नवयुवकों की आग को शान्त न कर सकी।

अलीपुर षड्यन्त्र

महाराष्ट्र की क्रांति के पश्चात् यह आन्दोलन बंगाल में भी आरम्भ हो गया। इस क्रांति के नेता योगी अरविन्द के छोटे भाई बीरेन्द्र घोष थे यह बचपन से ही बड़े प्रतिभा शाली थे। उनका विचार आदि से ही देश सेवा करने का था उसी उद्देश्य को लेकर १९०२ में बंगाल में आये उन्होंने नवयुवकों को क्रान्तिकारी कार्यों में सम्मिलित होकर विदेशी शासन के जुए को कन्धे से उतार फेंकने के लिये अपील की परन्तु उस समय बंगाल के नवयुवक बड़ी घोर निद्रा में सो रहे थे परन्तु समय आया कि बंगाली नौजवान जागे और ऐसे जागे कि यह जागृति तमाम भारत में फैल गई। सरकार ने १९०५ में बंगाल के दो भाग कर डाले। बंग भंग की घोषणा से तमाम बंगाल एक दम रोष में भर गया और स्वदेशी आन्दोलन का चलाकर ब्रिटिश वस्त्र के का आन्दोलन करना आरम्भ कर दिया।

यह समय वीरेन्द्र के लिये बहुत अच्छा था उसने जगह २ पर आज़ादी का सबक नवयुवकों को पढ़ाया और लगभग इसी काम में अपने दो वर्ष बिता दिये। उनका मुख्य कार्य उस समय युगान्तर कार्यालय ही था।

उस समय वीरेन्द्र के कुछ मित्रों ने बंगाल में एक युगान्तर नामक पत्र चलाया, सरकार को इस समय युगान्तर वालों पर पूरा सन्देह हो गया था, सी० आई० डी० अपना काम कर रही थी। युगान्तर के लेखों के अधिक उग्र होने पर सरकार ने उसको एक चेतावनी दी किन्तु आजादी के दीवानों पर भला चेतावनी का प्रभाव हुआ करता है अन्त में एक दिन युगान्तर कार्यालय की तलाशी ली गई। भूपेन्द्रनाथ जी को सम्पादक समझ कर पकड़ लिया गया, देश के नवयुवकों में बड़ी हलचल सी मच गई जब यह खबर मिली कि उनको एक साल की सजा हो गई है। देश में राजद्रोह की आग फैल गई, अनेक नवयुवक जेल जाने लगे उस समय वीरेन्द्र जो उपदेश दे रहे थे कि इस प्रकार व्यर्थ ही शक्ति नष्ट करना ठीक नहीं, अब हमको गुप्त सङ्गठन से काम लेकर सरकार को मिट्टी में मिलाना चाहिये। उस समय उस वीर के साथ मिलकर मानिकतल्ला के बगीचे में यह काम शुरू हो गया। दिन रात नये २ नवयुवक यहा पर आने लगे उनमें मशहूर देवव्रत और उल्लासकर दत्त जी थे। इस समय वीरेन्द्र बराबर शस्त्र संग्रह कर रहा था और थोड़े ही दिनों में उस बगीचे में बम बनाये जाने लगे। इस समय दमन जोरों पर था। पुलिस की खाकर सारे [illegible] के लोग व्याकुल हो रहे थे।

निश्चय किया गया कि अत्याचारों का बदला लिया जावे, सबसे पहले बंगाल के गवर्नर का निश्चय किया गया। कई बार कोशिश की गई परन्तु लाट साहब की मृत्यु उस समय न थी। तीन बार रेल की पटरी के नीचे बम रक्खा गया परन्तु सफलता प्राप्त न हुई।

इन हालात मे बीरेन्द्र जी ने एक नये ढग से विप्लव वादियों की भर्ती करना आरम्भ कर दिया और साथ २ पुलिस की देख रेख ाफी बढ गई थी और अपना पहला कार्यालय स्थान भी बदलना पडा। इन ही दिनों में चन्द्र नगर के मेयर पर बम फेंका गया क्योंकि वह बडे ही कठोर मनुष्य थे परन्तु यहा भी सफलता प्राप्त न हुई इसके बाद मुजफ्फरनगर के ज का बार था। इस काम के लिये हेम चन्द्र और उल्लासकर को नियत किया गया, उनके पास पहला बम पार्सल द्वारा भेजा गया उस पार्सल में एक पुस्तक थी ौर पुस्तक में एक स्प्रिंग लगाया गया था और उस पुस्तक के एक भाग को काटकर उसमे बम रक्खा गया था ताकि पुस्तक का खोलते ही बम फट जाये, परन्तु जज साहब ने पुस्तक समझ कर पार्सल नहीं खोला इसलिये बच गये कहावत है—'जिसको राखें साइयां उसे मार सके न कोय'। कलकत्ते के पुलिस अधिकारियों को इस षड्यन्त्र की खबर लग चुकी थी उन पर हर समय पुलिस का पहरा रहने लगा। अबकी बार उन पर बम फेंकने के लिये प्रफुल्ल चन्द्र चाकी और खुदीराम बोस भेजे गये। उन्होंने कई रोज वहा पर ठहरने के पश्चात यह सोचा कि जज साहब क्लब से गाडी पर चढ़कर घर जावें, जभी तो उसी समय बम ठीक होगा। परन्तु जिस रंग की गाड़ी पर जज

साहब आया करते थे उसी रंग की एक गाड़ी वकील पो० कनेडी की थी और इन दोनों नवयुवकों को इस बात का पता न था। बम फेंका गया और सब व्यक्ति मर गये, इधर दोनों नवयुवक भाग निकले, यह खबर सारे शहर में बिजली की तरह फैल गई इनकी गिरफ्तारी का वारंट काट दिया गया और आखिर यह खुदीराम बोस पकड़ लिये गये। अब इनको मुजफ्फरपुर लाया गया उस समय सारा शहर इनके दर्शन के लिये उमड़ आया था पर यह प्रसन्न दिखलाई देते थे और उन्होंने बड़ी खुशी के साथ अपने अपराध को स्वीकार कर लिया। प्रफुल्ल चाकी भी पकड़े गये परन्तु उन्हीं ने रिवाल्वर से आत्मघात कर विप्लववादियों के उच्चतम चरित्र का परिचय दिया।

उस समय खुदी राम की आयु १७ वर्ष की थी। आठ दस दिन मुकदमा चलने पर फांसी की सजा मिली। अन्त में ११ अगस्त को यह वीर हाथ में गीता लेकर हँसता २ फांसी के तख्ते पर जा खड़ा हुआ और अमर लोक को चला गया उसकी अन्तिम इच्छा के अनुसार उसके वकील काली दास घोष ने इनकी अन्त्येष्टि क्रिया की। खुदीराम की श्मशान यात्रा में इतनी भीड़ थी कि सामने सागर की तरंगों के समान नर-मुण्ड ही नर मुण्ड दिखाई देते थे उसके शरीर की भस्म को लेने के लिये छीना झपटी होने लगी और लोग उस भस्म को सोने चांदी और हाथी दांत के डिब्बों में भर कर ले गये। इसी समय के बीच में पुलिस अलीपुर षड्यन्त्र वालों के पीछे पड़ी हुई थी आखिर २ मई १६०८ पुलिस ने बड़े हलचल के साथ नौ स्थानों की

और निम्न लिखित व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।—
बीरेन्द्र कुमार घोष, उपेन्द्र नाथ बनर्जी, उल्लासकर दत्त, भूषण राय, शिशिर कुमार घोष और भी इस प्रकार १३ व्यक्तियों को पकड़ा। शहर के प्रसिद्ध २ व्यक्ति पकड़ लिये गये परन्तु बीरेन्द्र कुमार, उल्लास कर दत्त और उपेन्द्रनाथ ने जब देखा कि हमारे देश वासियों पर जुल्म हो रहे हैं इन वीरों ने तमाम अपराध को स्वीकार कर लिया। और इस प्रकार अपने निरपराध देश वासियों को खुद फांसी पर चढ़ कर छुटवाया। सुना जाता है कि जब कन्हैयालाल को फांसी दी गई तो खुशी में उनका १६ पौंड वजन बढ़ गया था। सरकार इस वीर की मौत को देखकर डर गयी थी इस लिये जब सतेन्द्रनाथ को फांसी दी गई उसका दाहकरण संस्कार जेल में ही करवाया उस वीर ने अपनी माता से इस शर्त पर मिलना स्वीकार किया कि वे मिलते समय रोवे नहीं भारत माता हो तो ऐसी हो जिसने पुत्र को हंसते हुये बलिवेदी पर भेंट चढ़ा दी जब वे वीर फाँसी के तख्ते पर खड़े हुये थे और भारत माता का हजारा हार गर्दन को चूम रहा था उस वक्त वीर ने शेर गर्जन करके सरकारी कर्मचारियों को इस प्रकार कहा था।

चूम तो लेने दे रे मुझे जल्लाद रसरिया फाँसी की।
पूरे हुये अरमान हमारे सुनकर के फर्मान रसरिया फाँसी की
रेशम डोर लड़ी ज्यों फूलन कद लेने दे केश रसरिया फाँसी की
भौं हार हजारा भेजा कर लेने दे प्यार रसरिया फाँसी की
देखो वीर अब झूला झूले अन्तिम होत बिदाई रसरिया
फाँसी की।

विनायक दामोदर सावरकर

अब हम आपके सामने सावरकर युग के इतिहास को वर्णन करते हैं उस समय इंगलैण्ड में विप्लववाद के सबसे बड़े नेता विनायक दामोदर सावरकर ही थे वे बालकपन से ही बहुत चतुर थे आपको शिवाजी के चरित्र से आज तक बड़ा प्रेम है आप मुसलमानों से हमेशा लड़ते रहे आप बड़े अच्छे कवि बन गये थे। आपकी कवितायें समाचार पत्रों में आती थीं जिस समय प्लेग फैली आपके पिता चल बसे पुलिस ने आप सब को घर से बाहर निकाल दिया आप हमेशा अपनी एक टोली बनाये रहते थे और जब आप कालिज में पढ़ते थे विद्यार्थियों को देश के राग सुनाकर खुश किया करते थे आपने सन् १६०५ में विदेशी कपड़ों की होली खेली ये सब से पहली होली थी आपने खद्दर प्रचार करते हुये कहा था।

हम अपने मोटे खद्दर को समझ कर गुलबदन पहने।
जरूरत क्या रहे तनजेब की फिर क्यों चिकन पहने॥
सितम है बेड़ियां जिसके लिये फख्र वतन पहने।
विदेशी पर मरे वह मर के गैरों का कफन पहने॥
ये मर जाने की बातें हैं अजी शरमिन्दगी कैसी।
कि अब बेगैरती इतनी तो फिर है जिन्दगी कैसी॥

सन् १६०६ में बी० ए० की परीक्षा पास कर ली और ६ मास बाद श्याम जी कृष्ण वर्मा की बनाई इण्डिया हाउस में जो कि इंगलैंड में थी भर्ती।

[चले आगे आपकी आयु २२

आकर विनायक दामोदर सावरकर श्याम कृष्ण वर्मा के दाहिने हाथ बन गये और लाला हरदयाल आपके सच्चे मित्र थे उधर भारत में राजनैतिक संग्राम मचा हुआ था और ११ मई सन् १९०७ को लाला लाजपतराय राजद्रोही ठहरा कर पकड़ लिये गये उनके पकड़ने की भारत में तो क्या इंगलैंड में भी चर्चा फैल गई। दामोदर जी ने वहां पर रहते हुए भी क्रान्ति की चिनगारियां फैलानी शुरू कर दी और सन् १९०८ में नेता माने जाने लगे उस समय उनके पीछे खुफिया पुलिस लगी हुई थी सन् १९०८ में गणेश सावरकर को काले पानी जाने की खबर मिली सावरकर जी भी वहां पर पकड़ लिये गये परन्तु आप अपनी कानून की चतुरता पर साफ बच आये आपने जज के सामने कहा था अदालत के फैसले से पूर्व किसी को हत्याकारी कहना अदालत का अपमान करना है।

भारत के नवयुवक सावरकर जी के नेतृत्व में रहकर पुलिस को बड़ा तंग किया करते थे आखिर एक दिन वह आ गया कि सावरकर को मकान भी किराये को नहीं मिला और होटल वाले रात को भी रहने को इजाज़त नहीं देते थे इंगलैंड के समाचारपत्र यह कह रहे थे कि इन सब हत्याओं की जड़ सावरकर है आखिर में उनको पेरिस आकर रहना पड़ा। पुलिस किसी न किसी तरह सावरकर पर मुकद्मा चलाना चाहती थी भारत में मिस्टर जेकसन की हत्या का मुकद्मा चल रहा था। पुलिस सावरकर जी को इस के सम्बन्ध में पकड़ना चाहती थी आखिर में सिपाहियों ने पकड़ लिया और भारत सरकार ने उस पर मुकद्मा मुकद्मे में मुख्य प्रश्न यह था कि क्या भारत सर

कार इंगलैंड से अपराधी को कैद करके वापिस मांग सकती है। वहां की अदालत ने निर्णय भारत सरकार के पक्ष में दिया। पुलिस सावरकर जी को जहाज पर कैद करके भारत ले चली, जहाज के लिये यह आज्ञा थी कि उसको बीच में किसी भी राज्य के बन्दरगाह पर न ठहराया जावे। जहाज़ में सावरकर जी पर इतना सख्त पहरा था कि इनको एक मिनट के लिये भी अकेला नहीं छोड़ा जाता था।

क्रमशः जहाज़ फ्रांस के बन्दर मारसील के पास आया, जहाज़ बन्दर से लगभग आधी मील दूर समुद्र में था कि श्री सावरकर जी ने अपने बचाव का फिर यत्न किया। पौ फट रही थी। सावरकर जी शौच के बहाने कोठरी में गए और खिड़की से बाहर निकलकर एक दम समुद्र में कूद पड़े। जहाज पर कोलाहल मच गया। सिपाही इनका निशाना साधकर गोलियां चलाने लगे किन्तु यह समुद्र में गोता लगाए निशाना बचाते हुए चले ही गए। सावरकर जी किनारे पर लग गये किंतु किनारे पर ऊंची दीवार थी सावरकर जी ने बचपन से ही ऊंची दीवार पर चढ़ना सीखा था। वह अभ्यास इस समय काम आया वह दीवार पर चढ़कर फ्रांस की भूमि पर पहुँच गये। वह एक क्षण भी न ठहर कर तीर की तरह भाग चले। उनके पीछे अंग-रेज लोग चोर चोर कहते भागे जा रहे थे। सावरकर जी ने बड़ी आशा के साथ चारों ओर देखा ताकि कोई आरसी नजर पड़े किंतु वहां कोई भी न था। वह सोचते थे कि चार पैसे ही मिल जाने पर वह ट्राम पर चढ़कर भाग

पर वहां पैसे देने वाला कौन था। हाय! भारत माता तेरे लाल इस हकूमत ने किस तरह सताये।

इतने में एक फ्रैंच पुलिस का आदमी दिखलाई दिया। सावरकर जी उसके द्वारा फ्रैंच अदालत में जाने की आशा से रुक गये। उसी समय उनके पीछे चालीस पचास अंग्रेजों का झुण्ड भी आ गया। वह लोग सावरकर जी को चोर कहते थे, वहां के सिपाही ने सावरकर जी को पकड़ लिया परन्तु सावरकर जी ने बहुतेरा समझाया कि मैं चोर नहीं हूं। अगर मैं चोर भी हूँ तो तुम मुझको इन अंग्रेज़ों को नहीं दे सकते। तुमको मुझे फ्रैंच अदालत में उपस्थित करना चाहिये, लेकिन उस पुलिस के सिपाही को कानून का ज्ञान नहीं था। अंग्रेज़ों ने उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा न कर सावरकर जी को पकड़ लिया। वह उनको घसीटते हुए समुद्र तक ले आये और जहाज़ में दाखिल कर दिया। वहां अंग्रेज़ सिपाही उन पर अत्याचार करने वाले थे परन्तु सावरकर जी ने प्राण पर खेल जाने की धमकी दी और इस तरह उन दुष्टों को शांत किया। उनको बड़े भारी पहरे पर रखकर भारत लाकर नासिक जेल में रखा गया। अब एक बड़ा भारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न उपस्थित हो गया कि क्या अंगरेज फ्रांस की भूमि से अपने राजनैतिक अपराधी को ले जा सकते थे? फ्रांस की राजसभा ने ज़ोर दिया कि उनको लौटा देना चाहिये। परन्तु कोई सुनवाई न हुई और २२ मार्च १९२१ को उनको आजन्म काले पानी का दण्ड किया गया। परन्तु उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण उनको जमानत पर छोड़ दिया गया। आज मुतवातिर कई

साल से हिन्दू महासभा के प्रधान बन रहे हैं और उनके पीछे भारत के करोड़ों लाल काम कर रहे हैं।

कठिनाईयां

इस समय विप्लववादियों के सामने दो बड़ी बड़ी कठिनाईयां थीं एक तो यह कि बहुत सारे नवयुवक ऐसे निर्बल प्रमाणित होते थे कि पुलिस को सारा भेद बतलाकर अपने साथियों को पकड़वा देते और सरकार के गवाह बन जाते थे दूसरी कठिनाई धन की थी परन्तु नवयुवकों का यह ख्याल था कि कुछ धनाढ्य व्यक्तियों का धन जबर्दस्ती ले भी लिया जावे तो उसको स्वराज-मिलने पर वापिस किया जा सकता है और यह निश्चय करके लोगों ने डाके डालने प्रारम्भ किये पर यह इस बात को ध्यान में रखते थे कि न तो स्त्रियों के सतीत्व पर हाथ डाला जावे और न किसी की हत्या की जावे। इस प्रकार डाके डाले गये और देश सेवा के लिये धन इकट्ठा किया गया बहुतेरे डाके डाले गये, पुलिस का भेस भर भर धन लिया गया बहुत सारी ट्रेनों को लूटा गया।

प्रेस ऐक्ट

इस समय सरकार विप्लववादियों और उनके साथ बढ़ती हुयी जनता की सहानुभूति से इतना अधिक तंग आ गई थी कि उसने छापे खाने और समाचार पत्रों के दमन के लिये १९१० में एक नया प्रेस ऐक्ट बनाया। इस एक्ट के द्वारा युगान्तर प्रेस को जब्त करने के अतिरिक्त अन्य अनेक गुप्त प्रेसों को भी जब्त किया गया। भारत में क्रान्ति

को चिंगारियों को रोकने के लिये १६११ में दोनों बंगालों को मिला दिया किन्तु बंगालियों के हृदय में अब स्वाधीनता की चिंगारी उत्पन्न हो चुकी थी और वे भारत के लिये स्वराज चाहते थे इसलिये दिन रात भारत के नौजवान जेलों में जाने लगे कई हजार आदमी जेल में पहुँच गया था १६१७ में बंगाल सरकार ने बड़ी भीषणता से दमन किया उस समय तनिक संदेह होने पर भी बड़े से बड़े आदमी को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाता था। अनेकों को बगैर मुकदमा चलाये नजर बन्द कर दिया गया। उन दिनों जेल खाने भी नरक बने हुये थे और वहां की कठिनाइयों और बीमारियों को बहुत सारे नवयुवक कष्ट सहन करने में असमर्थ होकर कालके गाल बन गये। इन लोगों के ऊपर जेल में अत्याचार किये। जाने के सम्बन्ध में बंगाल कौंसिल में अनेक बार प्रश्न किये गये परन्तु सरकार के कान पर जूं न रेंगी।

उन दिनों कांग्रेस में दो दल पाए जाते थे एक तो ब्रिटिश शासन के परम भक्त थे उनकी दृष्टि में राष्ट्रीय आवश्यकता के सभी रोगों को दूर करने की दवाई प्रार्थना थी दूसरे लोग क्रान्तिकारी थे। इस प्रकार नरम और गरम दो दल थे। बंगाली क्रान्तिकारियों का एक मात्र उद्देश्य आतंकवाद था तो उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों का उद्देश्य विप्लववाद था।

देहली में भी क्रान्ति कारी अपना काम कर रहे थे और १६१२ में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया। परन्तु बम उनके लगा और उनके पीछे बैठे हुवे अंगरक्षक को मारता हुवा

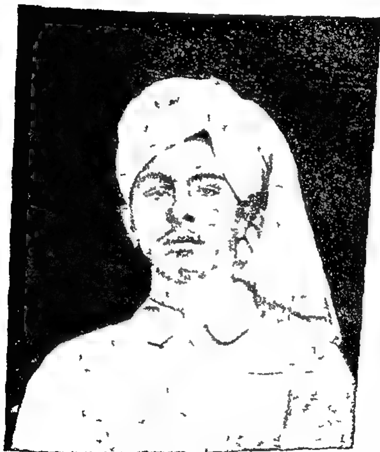
चला गया। बहुत दिनों तक तो अपराधियों का पता न चला आखिर बड़ी कारवाई के पश्चात १६१४ में अवध बिहारी, मास्टर अमीरचन्द और भाई बालमुकन्द को फांसी और बसन्त कुमार को काले पानी की सजा दी गई फांसी पर लटके हुये अवध बिहारी से एक अंग्रेज ने पूछा आपकी अन्तिम इच्छा क्या है। आप ने उत्तर में कहा कि अंग्रेजी साम्राज्य बाद नष्ट हो जावे मैं यह चाहता हूं कि चारों ओर ऐसी आग भड़के जिसमे तुम भी जलो, हमारी गुलामी भी जले और अन्त में भारत कुन्दन बनकर रह जावे।

लाला हरदयाल

लाला हरदयाल जी देहली के निवासी और पन्जाब विश्वविद्यालय के एम० ए० थे। उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में पास होकर वजीफा लिया। वह इंगलैंड में सन् १६०८ तक रहे। भारत में आकर उन्होंने ब्रिटिश वस्त्र बहिष्कार का कार्य जोर शोर से करना आरम्भ कर दिया। उनके पीछे पुलिस अपना दमन चक्र चला रही थी उनके मित्रों ने उनको भारत छोड़ देने पर मजबूर किया और वह १६०८ में भारत से हमेशा के लिये चले गये। पहले कुछ दिन लन्दन में रहे इसके पश्चात् अलजीरिया (अफ्रीका) में जाकर रहे। इस स्थान पर वह निर्धनों जैसा जीवन व्यतीत करके तप किया करते थे। इसके बाद आप अमरीका पश्चिमी द्वीप समूह में जाकर रहे। ला० हरदयाल यहा पर पास वाली पहाड़ी पर तप करने जाया करते थे, यहा वह नगी भूमि पर सोते, आलू उबाल कर खाते थे और दिन भर थोड़ा पढ़ने के इलावा शेष समय ध्यान में

इस संस्था ने पंजाब में जगह जगह लूट मार की। बहुत से षड यन्त्र रचे परन्तु किसी में भी सफलता न मिल सकी। १९२९ में यह ठहराया गया कि देहली की असेम्बली में बम फेंका जावे। भगतसिंह और दत्त जी ने इस काम को अपने हाथ में लिया और यह निश्चय ठहरा कि असेम्बली में बम फेंक कर आत्म समर्पण करदें जिससे देश में व्यापक जागृति की जासके। ८ अप्रैल १९२९ को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने देहली की असेम्बली हाल में खाली सरकारी बेंचों पर उस समय बम फेंका जब प्रेसीडैंट पटेल पब्लिक सेफटी बिल के विषय में अपनी रूलिंग देने को खडे हुये। बम फेंकते ही सारे हाल में धुवाँ छा गया धुवें के कारण वह वीर भाग सकते थे, परन्तु वे भागे नहीं और, खडे हुवे इन्कलाब जिन्दाबाद, और साम्राज्य वाद का नाश हो यह नारे लगाते रहे। उन्होंने उस समय कुछ लाल पर्चे भी बांटे जिसमें एक अपील थी। पुलिस डर के मारे पकडने के लिये उनके पास न आई तब इन दोनों ने अपने पास के भरे रिवाल्वर दूर फेंक कर पुलिस अफसरों को इशारा किया कि वह उन्हें गिरफ्तार करलें और फिर उन्होंने बडी खुशी के नारे लगाए आप दोनों को १९२९ में कारावास का दंड दिया गया। इस के बाद भगतसिंह को मियाँ वाली जेल और दत्त को लाहोर सेंट्रल जेल में भेज दिया उन्होंने राजनैतिक कैदियों के अधिकार के लिये अपने अपने स्थान पर अनशन करना आरम्भ कर दिया। बालातपन जारी था। बालातपन कराते समय एक एक के सात आठ मनुष्य नियुक्त किये जाते थे। एक आदमी

आज़ादी का दीवाना



सरदार भगत सिंह

सर पर बैठता, दूसरा छाती पर और शेष हाथ पैर पकड लेते थे सब नेताओं ने इस अनशन को बन्द कराने का यत्न किया। आखिर सरकार को हार हुवी और राजनैतिक कैदियों को ए० और बी० क्लास में रक्खा जाने लगा। इस प्रकार उन्होंने अनशन तोडा। उधर पंजाब की सरकार ने प्रथम लाहोर षड्यन्त्र पर स्पेशल ट्रिब्युनल बिठा रक्खा था और इस ट्रिब्युनल ने १९३० में मुकदमे का फैसला सुनाया जिस में भगतसिंह, शिवराम राज गुरू और सुखदेव को फांसी का हुकम दिया गया। इन वीरों को फांसी का दण्ड दिये जाने के कारण लाहोर, बम्बई, देहली, इलाहाबाद और अमृतसर तथा अन्य अनेक स्थानों में हडतालें हुईं और प्रदर्शन किया गया। इसी बीच में ४ मार्च १९३१ को गांधी इर्विन समझौता हुआ। इस समय महात्मा जी ने वायसराय से अनुरोध किया कि सविनय अवज्ञा के कैदियों के अतिरिक्त भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु और शिव वर्मा को भी छोड दिया जावे अथवा कम से कम उन के फांसी के दण्ड को तो जरूर ही बदल दिया जावे। परन्तु इस खूनी सरकार ने एक न सुनी और २३ मार्च १९३१ को उनसे अन्तिम बार भेंट करने का निमन्त्रण दिया गया और उसी दिन तीनों को सायंकाल फांसी दी गई। उस समय भगतसिंह अपनी कोठरी में बैठे हुए यह पद गा रहे थे:—

मेरा रंग दे बसंती चोला।
इसी रंग में रंग के शिवा ने, मां का बन्धन खोला।

भगतसिंह और उसके साथियों की फांसी

में सरकार की निन्दा की गई उस पर यहां तक आरोप लगाया गया कि उसने शवों को चढ़ी येपरवाही से मिट्टी का तेल छिड़क कर जलवा दिया। उन शवों के जल जाने पर सरकार ने उनके फूल तक उनके सम्बन्धियों को न देकर सतलज में स्वयं ही डलवा दिये। २३ मार्च को फांसी हो जाने के समाचार से लगभग सभी नगरों में २४ मार्च को हड़ताल हुई। लोगों ने करेंसी दफ्तर, तारघर और कचहरी पर भी धावा बोल दिया। इस प्रकार इस दंगे में २५० मनुष्य मरे, ५०० घायल हुए ५०० मकान फूंके गये और २००० लूट लिये गये। इस प्रकार भारत में इन वीरों के शोक को मनाया गया।

चन्द्रशेखर आज़ाद

आतंकवाद के नवीन युग में चन्द्रशेखर आज़ाद का नाम सबसे अधिक सम्मान पूर्वक लिया जाता है। उनका जन्म स्थान कोई नहीं जानता। सबसे पहले आप का नाम १६२१ में सुना गया था जबकि आपको बनारस के गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज पर धरना देते हुए गिरफ्तार किया गया। मैजिस्ट्रेट के पूछने पर उसने अपना नाम 'आज़ाद' पिता का नाम 'स्वतन्त्र' और निवास स्थान जेलखाना बतलाया था। उसको पन्द्रह बेंत की सजा दी गई। जिस समय १४ वर्ष के इस बालक के कोमल शरीर पर सड़ासड़ बेंत पड रहे थे तो उसने तनिक भी कायरता या अधीरता न दिखलाकर प्रत्येक बेंत के साथ 'महात्मा गांधी की जय' 'वन्दे मातरम्' आदि कहा। अन्त में वह मूर्छित होकर गिर पड़े। आज़ाद बना

रस में संस्कृत पढ़ने आया था किन्तु वह जेल की बेंतों से विद्रोही बनकर काशी विद्यापीठ में बुलाकर रख लिया गया और आप वहां पर विद्रोह की उपासना करने लगे। परन्तु आजादी के दीवानों के लिये कैसी शिक्षा? आप बहुत जल्दी हिन्दुस्तानी दल में भर्ती हो गये आपको इस दल में चटर्जी ने भरती किया था। आपने बिहार के योगेन्द्र शुक्ल और स्वामी गोविन्दप्रकाश को इस पार्टी में भरती किया। आप का चक्कर शाहजहांपुर, कानपुर और लखनऊ में विशेष रूप से लगने लगा।

जब क्रांतिकारी कामों के लिये धन की अधिक आवश्यकता पड़ी और किसी प्रकार धन एकत्रित न किया जा सका तो आजाद को इस आशा पर गाजीपुर में एक महन्त का चेला बना दिया गया कि महन्त जी के मरने पर उनकी सम्पत्ति का मालिक बन सके। परन्तु आजाद को वहां मनहूस जीवन सहन न हो सका। वह वहां से भाग निकला और वहां से आकर क्रांति का काम करने लगे।

सन् १९२४ में एक अंगरेज़ी का पर्चा सारे भारतवर्ष में रंगून से लेकर पेशावर तक बांटा गया। आपने इस पर्चे के बंटवाने में बड़ा परिश्रम किया। आप ९ अगस्त १९२५ में काकोरी की घटना में सम्मिलित थे आपके सब साथी पकड़े गये थे परन्तु आप फरार हो गये थे और आपका कहना था कि मैं आजाद हूं 'जिन्दा हाथ न आऊंगा' उस समय आपकी प्रतिभा का विकास पूरी तरह से नहीं हुआ था, अब आप झांसी जाकर रहने लगे। यहां पर आपने मोटर और गोली [illegible] सीखा। इसके बाद

भगतसिंह जी मिल गए तब तो काम बड़े ज़ोर से होने लगा। बड़े २ डाके डाले जाने लगे। असेम्बली में बम फेंका गया जिसका वर्णन पहले हो चुका है। जब देहली में गांधी जी और लार्ड इर्विन में समझौते की बात चीत हो रही थी तो आज़ाद ने महात्मा गांधी के पास सदेश भेजा कि यदि वह भगतसिंह आदि की फांसी को रुकवा सकें तो उत्तर भारत के क्रांतिकारी क्रांति के मार्ग को त्याग कर उन का अनुसरण करेंगे, किंतु यदि भगतसिंह आदि को फाँसी हो गई तो यह निश्चय है कि क्रांति की लहर देश में अधिक भयानक रूप धारण कर लेगी। आज़ाद इन दिनों इस व्यापक क्रांति की तैयारी में लगे हुए थे। इसके बाद आप इलाहाबाद चले आये। सरकार आपके पीछे पड़ी हुई थी और आपके पकड़ने के लिये पांच सहस्र का इनाम रखा गया था।

आज़ाद २७ फर्वरी सन् १६३१ को १० बजे के लगभग इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में सुखदेव के साथ घूम रहे थे उस समय ठाकुर विश्वेश्वरसिंह जो कि खुफिया पुलिस के डिप्टी थे घूम रहे थे, उनको अचानक एक नीच आदमी मिस्टर डालचन्द ने बता दिया कि आज़ाद इस समय बाग में घूम रहे हैं और वह उनकी निगरानी करते रहे और इस बात की सूचना यहां के सुपरिन्टेण्डेण्ट मिस्टर बावर को दे दी। वहां पर मिस्टर नाट बावर आ गए। उन्होंने उन दोनों से दस गज पर अपनी मोटर रोक कर उनका परिचय पूछा तो उन्होंने निकाल लो और फायर शुरू कर दिया। यह देख

कर मिस्टर नाट बावर ने आज़ाद पर एक दम गोली छोडी जो उनके पैरों पर जाकर लगी। दूसरी गोली शरीर में लगी इस समय दो और कान्स्टेबिल बराबर गोली छोड रहे थे। आज़ाद की एक गोली नाट बावर की बांह पर लगी जिससे उनके हाथ से पिस्तौल छूट गया और वह एक वृक्ष की ओट में छिप गये और आज़ाद भी छिप गये परन्तु विश्वेश्वरसिंह अब उन पर फायर कर रहे थे। यह देखकर आज़ाद ने एक गोली मारी जो उनके मुख पर लगी और वह भी बेकार हो गये। आज़ाद उस वृक्ष पर बराबर गोलियां छोड रहे थे जिसके पीछे बावर साहब छुपे हुये थे बाद में पता चला कि आज़ाद की गोलियां मिस्टर नाट बावर से कुछ इञ्च के फासले पर ही पेड में लगी थीं। उस समय सुखदेव राज वहां से आज़ाद के इशारा करने पर भाग निकले। इस समय अगर आज़ाद की टांग में गोली लगी न होती तो वह सम्भवतः ही भाग जाते। सिपाहियों की गोलियों ने आज़ाद को भून ही डाला जिससे वह शीघ्र ही निश्चेष्ट होकर पृथ्वी पर लेट गये। उनके पास आने की अब भी किसी को हिम्मत न थी। इस प्रकार इस क्रान्तिकारी दल के इस वीर प्रधान सेनापति ने अपने पद के अनुरूप ही सम्मुख युद्ध क्षेत्र में वीर गति प्राप्त की।

चौधरी शेर जंग

चौधरी शेरजंग का जन्म १९०६ या १० में नाहन में हुवा था। आपके पिता वहां राजमन्त्री थे। बाल्यावस्था में आप को युरोप से आये हुये एक फ्रांसीसी अध्यापक ने शिक्षा दी थी। आप घर पर प्राईवेट ही पढ़ते हुये

भगतसिंह जी मिल गए तब तो काम बड़े ज़ोर से होने लगा। बड़े २ डाके डाले जाने लगे। असेम्बली में बम फेंका गया जिसका वर्णन पहले हो चुका है। जब देहली में गांधी जी और लार्ड इर्विन में समझौते की बात चीत हो रही थी तो आज़ाद ने महात्मा गांधी के पास संदेश भेजा कि यदि वह भगतसिंह आदि की फांसी को रुकवा सकें तो उत्तर भारत के क्रांतिकारी क्रांति के मार्ग को त्याग कर उन का अनुसरण करेंगे, किंतु यदि भगतसिंह आदि को फाँसी हो गई तो यह निश्चय है कि क्रांति की लहर देश में अधिक भयानक रूप धारण कर लेगी। आजाद इन दिनों इस व्यापक क्रांति की तैयारी में लगे हुए थे। इसके बाद आप इलाहाबाद चले आये। सरकार आपके पीछे पड़ी हुई थी और आपके पकड़ने के लिये पांच सहस्र का इनाम रखा गया था।

आज़ाद २७ फर्वरी सन् १९३१ को १० बजे के लगभग इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में सुखदेव के साथ घूम रहे थे उस समय ठाकुर विश्वेश्वरसिंह जो कि खुफिया पुलिस के डिप्टी थे घूम रहे थे, उनको अचानक एक नोच आदमी मिस्टर डालचन्द ने पता दिया कि आज़ाद इस समय बाग में घूम रहे हैं और वह उनकी निगरानी करते हैं और इस बात की सूचना वहां के सुपरिन्टेण्डेण्ट मिस्टर बावर को दे दी। वहां पर मिस्टर नाट बावर आ गए। उन्होंने उन दोनों से दस गज पर अपनी मोटर रोक कर उनका परिचय पूछा तो उन्होंने निकाला और फायर शुरू कर दिया। यह देख

आपने नाहन देहरादून और लुधियाना जिलों में एक दल की स्थापना की। आप सरकार से गुरिल्ला प्रणाली से युद्ध करना चाहते थे। आपकी डाकुओं से यह शर्त होती थी कि वह अपने शस्त्र आपको देकर आपकी आधीनता स्वीकार करें और आप उनके लिये डाके की योजना बनायें इस समय शीतलसिंह नामक डाकू को पटियाला अदालत द्वारा फांसी का हुक्म मिला था। उस नीच ने सरकार से कहा कि वह माफी पाने की शर्त पर क्रान्तिकारियों का सारा भेद बता सकता है और पंजाब सरकार ने उसे क्षमा कर दिया आखिर शेरजंग का भी नाम लिया गया। सरकार अभी तक आपके विरुध कोई जुर्म न बना सकी थी आपके वारंट काट दिये गये आप नाहन से भाग कर फरार हो गये। फरार की दशा में आप युक्तप्रांत, बंगाल, पंजाब और बिहार में घूमते रहे। इस बीच में पुलिस ने आपका तीन चार बार मुकाबला किया। आपके अचूक निशाने से पुलिस फौरन भाग खड़ी होती थी इस समय आपको पकड़ने के लिये सरकार ने ५०००) रुपये की पारितोषक घोषणा की हुई थी उसमें लिखा था कि वह एक अचूक निशाने बाज है सरकार के इस शब्द से आपको यह लाभ हुआ कि पुलिस आपके नाम से थर थर कांपती थी फरारी की दशा में आप कई बार साधू के रूप में तथा कुछ माह-
में रहे इस समय आपने एक

विश्व विद्यालय की त्यारी कर रहे थे। निशाने बाज आप बचपन से थे, आपने १३ वर्ष की आयु में बंदूक से चीता मारा था क्रान्तिकारी दल से सम्बन्ध होने पर आपको रियासत में बम बनाने का अभ्यास करने का काम सौंपा गया कुछ दिनों बाद आपने साहन देहरादून और लुधियाना ज़िले में स्वतन्त्र सगठन बनाकर सदस्य भर्ती करने का काम आरम्भ किया। आपने नये सदस्यों को निशाने और बम बनाने की शिक्षा दी। इस कार्य के लिये आपने घर से चोरी भी की। इस समय आपने अपने घर से एक मोटर भी चुराई इस के बाद आपने तीन चार स्थानों पर डाका डाला। आपको प्रत्येक डकैती में चार पांच हजार रुपये मिले। एक समय आपने चलती गाड़ी में से एक व्यक्ति पर से तीस हजार रुपया लिया किन्तु अब आपको पता चला कि वह रुपया सरकारी नहीं है तो आपने वापिस कर दिया। इस समय गाड़ी में एक सब डिविज़नल आफीसर भी थे। आप दरवाज़ा तोड़ कर उसकी गाड़ी में चढ़े। आपने उसकी राईफल लेकर उसको छोड़ दिया। इस झमेले में दो घंटे तक गाड़ी वहीं पर रुकी रही। यह सब कारवाई अहमदाबाद के पास हुई। वहां पर लुधियाना से एंजिन में बैठकर कुछ पुलिस पहुंच गई। आपने राईफल से उस की सर्चलाइट में गोली मारी। गोली की आवाज सुनकर पुलिस एंजिन छोड़कर बुरी तरह भागी। एक आदमी तार में उलझ कर गिर पड़ा-आपने उसको राईफिल और पगड़ी उठाली। आपके उस समय पांच साथी थे। आप सब ने मोटर गाड़ी में महात्मा गांधी की जय बोली और चलते बने।

आपने नोहन देहरादून और लुधियाना जिलों में एक दल की स्थापना की। आप सरकार से गुरिल्ला प्रणाली से युद्ध करना चाहते थे। आपको डाकुओं से यह शर्त होती थी कि वह अपने शस्त्र आपको देकर आपकी आधीनता स्वीकार करें और आप उनके लिये डाके की योजना बनावें इस समय शीतलसिंह नामक डाकू को पटियाला अदालत द्वारा फांसी का हुक्म मिला था। उस नीच ने सरकार से कहा कि वह माफी पाने की शर्त पर क्रान्तिकारियों का सारा भेद बता सकता है और पंजाब सरकार ने उसे क्षमा कर दिया आखिर शेरजंग का भी नाम लिया गया। सरकार अभी तक आपके विरुद्ध कोई जुर्म न बना सकी थी आपके वारंट काट दिये गये आप नाहन से भाग कर फरार हो गये। फरार की दशा में आप युक्तप्रांत, बंगाल, पंजाब और बिहार में घूमते रहे। इस बीच में पुलिस ने आपका तीन चार बार मुकाबला किया। आपके अचूक निशाने से पुलिस फौरन भाग खड़ी होती थी इस समय आपको पकड़ने के लिये सरकार ने ५०००) रुपये की पारितोषक घोषणा की हुई थी उसमें लिखा था कि वह एक अचूक निशाने बाज है सरकार के इस शब्द से आपको यह लाभ हुआ कि पुलिस आपके नाम से थर थर कांपती थी फरारी की दशा में आप कई बार साधू के रूप में तथा कुछ माह गूजर के रूप में रहे इस आपने एक थानेदार को एक

सत्याग्रह

जिस रौलेट ऐक्ट के कारण कौंसिल में और भारतवर्ष के कोने कोने में उत्तुग विरोध की तीव्र हिलोरें आ रही थी उसी रौलेट ऐक्ट के प्रति असन्तोष प्रकट करने के लिये महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आन्दोलन की नीव डाली थी।

जनता सत्याग्रह का मतलब अच्छी तरह समझ न पाई थी और उसे स्पष्ट कल्पना न थी कि सत्याग्रह क्यों किया जाय। लोगों में सत्याग्रह के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न कल्पनाएं प्रचलित थीं। सत्याग्रह के आदि मुनि गांधी के शब्दों में ही हम सत्याग्रह का स्पष्टीकरण करते हैं।

'लगभग चालीस वर्षों से मैं सत्याग्रह के तत्वों का आचरण और उपदेश कर रहा हूँ आज मुझे सत्याग्रह के जो तत्व विदित हैं वे क्रम से परिणतावस्था को प्राप्त हुए हैं मैं ने सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह शब्द का उपयोग किया था। पैसिव रेज़िस्टैंस (Passive Resistance) या नि शस्त्र प्रतिकार नामक आन्दोलन और सत्याग्रह में बडा भारी अन्तर है–दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं।

सत्याग्रह का मूल अर्थ है सदैव सत्य का अनुकरण करना अर्थात् वह सत्य बल है। मैं ने कभी २ इसे Love Force या Soul Force अर्थात् सात्विक प्रेम बल या आत्म बल या आत्म तेज नाम भी दिया है। सत्याग्रह को कार्य रूप में परिणत करने पर मुझे मालूम हुआ है कि अपने उद्देश्य को सिद्धि के लिये बल प्रयोग करना और

मार काट करना सत्याग्रह सिद्धान्त के प्रतिकूल है। अपनी निज की सहन शीलता और सहानुभूति के बल पर अन्याय पर पराभूत करना ही सत्याग्रह शब्द का अर्थ है। विरुद्ध पक्ष को कष्ट न पहुँचाकर स्वयं दु:ख और क्लेश सहकर सत्य का समर्थन करना।

नि:शस्त्र प्रतिकार और सत्याग्रह में पृथ्वी तथा आकाश का अन्तर है। नि:शस्त्र प्रतिकार निर्बलों का शस्त्र है। निज उद्देश्य सिद्धि के लिये शारीरिक बल का प्रयोग करना भी नि:शस्त्र प्रतिकार (Passive Resistance) में शामिल है, परन्तु यह एक निश्चित बात है कि सत्याग्रह में बल का प्रयोग कदापि नहीं किया जा सकता।

मीडीज और ईरानी लोगों ने अत्याचार और अन्यायी कानून बनाया। डेनियल इन कानूनों को भंग कर दण्ड भोगने को तैयार हो गया। डेनियल का यह कार्य सत्याग्रह का शुद्ध स्वरूप है। साक्रेटीस सच्चा सत्याग्रही था। साक्रेटीस ने हठ किया था कि जो सत्य होगा वही मैं नवयुवकों को सिखलाऊंगा और अन्त में उसे अपने इस सत्याग्रह के लिए प्राण देना पड़ा। प्रह्लाद ने अपने पिता के विरुद्ध सत्याग्रह किया था। मीराबाई भी सत्याग्रही थी। इन दोनों ने अपने पिता और पति द्वारा किये गये अत्याचारों और अन्यायों को बड़ी खुशी से सहन किया था। डेनियल, साक्रेटिस, प्रह्लाद या मीराबाई को सत्याग्रह करने के कारण किसी ने दोष नहीं दिया इसके विपरीत यह चारों व्यक्ति उत्तम और वंदनीय माने जाते हैं और इतिहास में इनकी कीर्ति अमर है।

प्रत्येक मनुष्य सत्याग्रह का अनुकरण करने की प्रतिज्ञा का भी पालन कर सकता है।

राजनीति की दृष्टि से अत्याचारी कानून का विरोध करना ही सत्याग्रह है। जब कानून बनाने वाला युक्तिवाद और प्रार्थना करने पर भी अपनी गलती स्वीकार नहीं करता है तब अन्याय पूर्ण कानूनों को तोडते हुए कारागार की हवा खाने को तैयार होकर गलती करने वालों को बार २ उनकी त्रुटि दिखा देनी आवश्यक है। सत्याग्रह वादियों का कानून तोडने का नियम सात्विक स्वरूप का है पर उसे (Civil disobedience) नाम दिया गया है।

मामूली अपराधी छिप कर कानून तोडता है और तब सज़ा से बचने की कोशिश करता है परन्तु सत्याग्रही खुले आम कानून तोड सजा भोगने के लिए सदैव कमर कसे तैयार रहता है। सत्याग्रही समाज के हित के लिये कानून तोड़ता है। मेरे मत में सत्याग्रह का स्वरूप इतना उज्वल और इच्छित परिणाम उत्पन्न करने वाला है कि वह छोटे २ बालकों को भी सहज ही समझाया जा सकता है। मैं ने दक्षिण अफ्रीका के स्त्री, पुरुष और बालकों को भी सत्याग्रह समझाया था और उसका परिणाम भी अच्छा ही हुआ। रौलेट बिल के प्रकाशित होते ही मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया कि वह मानव-स्वातंत्र्य का विघातक है इसीलिये राष्ट्र का यह पवित्र कर्तव्य है कि उसका विरोध करे। सरकार कितनी ही शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी क्यों न हो, किन्तु उसे यह अधिकार नहीं कि जनता के विरोध करने पर भी कानून बनावे। रोलट ऐक्ट के विरुद्ध सुव्यवस्थित

रीति से चलाने और अत्याचार को रोकने के लिये ही मैं ने सत्याग्रह का आन्दोलन शुरू किया है। मैं ने जनता से प्रार्थना की थी कि छठी अप्रैल को सारा कारोबार बन्द रक्खा जाय अखिल भारतवर्ष ने हड़ताल मनाई यहां तक कि देहातों में भी हड़ताल मनाई गई थी।

सत्याग्रह एक धार्मिक आन्दोलन है। यह एक मार्ग है जिस पर चल कर तपस्या और अन्तः शुद्धि के बल पर स्वयं कष्ट उठा कर अन्याय नाश शेष किया जासकता है। इसी दृष्टि से मैं नीचे लिखे हुये दो उपाय सूचित करता हूं।

चौबीस घंटे तक उपवास किया जावे और दूसरे रोज कारोबार बन्द रक्खा जावे। और तीसरा उपाय यह सूचित करता हूं कि सब गांव और शहरों में सभायें कर सरकार से बिल रद कराने की प्रार्थना की जावे।

यह सच है कि महात्मा गांधी ने सच्चे सत्याग्रह के तत्वों का जो उद्घाटन किया है वह उत्पत्ति की दृष्टि से समझने में सीधा है। तथापि हमारे मन से उसका व्यवहार में लाना उतना सरल नहीं। सत्याग्रह के आचरण करने वाले को अपना मन काबू में रखना पड़ता है और बहुत ही कम लोग ऐसा कर सकते हैं। निस्सन्देह सच है कि सत्याग्रह के तत्वों का पाठ पढ़ाने से समाज का अवश्य ही कल्याण होगा।

पंजाब में सत्याग्रह शुरू होते ही सर माईकेल ओडवायर से लोगों के साथ सहकारिता नहीं की। सुना ही नहीं तत्व तक को समझने की कोशिश न की प्रत्युत उन्हों ने इस

जावे तो निस्सन्देह संसार का उपकार हो सकता है। यदि हम यह भी मान लें कि किसी देश विशेष को युद्ध विजय से कुछ लाभ होगा। तब भी विचार पूर्वक सोचने से पता चलेगा कि अन्त में वह लाभ भी युद्ध व्यय की अपेक्षा अत्यन्त कम है। भले ही युद्ध लालसा के पक्षपाती थोड़े समय के लिये संसार की परिस्थिति को भयानक बना दें किन्तु अन्त में उनके देश को भी स्थायी हानि निस्सन्देह होगी।

आतंकवाद और गांधीवाद

भारतवर्ष की जिन राजनैतिक समस्याओं का सामना ब्रिटिश सरकार को करना पड़ा है उनमें से आतङ्कवाद की समस्या का स्थान मुख्य है। यह समस्या केवल भारत सरकार के सामने ही नहीं सभी सरकारों के सामने आती है। आतङ्कवाद सशस्त्र क्रांति द्वारा सरकार को पलटने का इतिहास भी आज का नहीं है। बहुत प्राचीन काल से यह उपाय प्रयुक्त किया जा रहा है। जब से सरकार स्थापित हुई है उसे पलटने का यह तरीका भी उसी समय से चला है। जब सरकार की स्थापना ही भौतिक बल के आधार पर होगी तब उसको बदलने के लिए भी वही मार्ग ग्रहण किया गया तो इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं। इतिहास बताता है कि सभी देशों की सरकारें अपने विरुद्ध उठते हुए असन्तोष को बहुत सतर्क दृष्टि से देखती रही हैं और उसके दमन के लिये अधिक से अधिक तीव्र नीति का प्रयोग करती रही हैं। सरकार और उनके विरोधी पक्ष का हथियार एक ही रहा

है, भौतिक बल का प्रयोग। सरकार भौतिक बल पर स्थित है उसका विरोध करने के लिये भी सशस्त्र क्रान्ति का सहारा लिया गया। सरकार ने इस विरोध को दबाने के लिये भौतिक बल को और तीव्र रूप से प्रयुक्त करना शुरू किया। इसका फल यह हुआ कि विरोधियों को भी अपने उपायों में तीव्रता लाना पड़ी। इस चक्र का कहीं अन्त नहीं होता और परिणाम यह होता है कि हिंसा वाद बढ़ता जाता है। सभी राष्ट्रों में यही चक्र चलता रहता है जो दल मजबूत हो जाता है वह गद्दी पर कब्जा कर लेता है। परन्तु यह चक्र समाप्त नहीं होता।

संसार के अनेक विचारकों ने समय समय पर इस समस्या पर विचार किया है। उन्होंने इस चक्र के बदलने के उपायों पर भी विचार किया है परन्तु संसार का इतिहास नहीं बदला, जितने विद्रोही हुये हैं जितनी क्रांति हुई हैं उन सब में भौतिक बल का प्रयोग किया गया है। इस प्रयोग में बहुत बार सफलता भी मिली है और बहुत बार असफलता का भी सामना करना पड़ा है। परन्तु आज भी मनुष्य का भौतिक बल पर विश्वास है।

यह बहुत स्वाभाविक है कि भारतीय राज के इच्छुक भी स्वतन्त्र होने का कोई दूसरा मार्ग न पाकर उसी ऐतिहासिक मार्ग को अपनाने लगे हैं। भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन का जन्म करीब ३०-३५ वर्ष पहले हुआ था। यह समय २ पर विभिन्न रूपों में विविध प्रान्तों में उत्पन्न हुआ। कभी इस आन्दोलन ने संगठित रूप धारण किया तो कभी यह छिन्न भिन्न हो गया। सरकार ने भी इस के जन्म के साथ साथ

है, साहस है देश के लिये उत्कट प्रेम है। इन्हीं गुणों के कारण वह देश को स्वतन्त्र देखने की खातिर सवस्व त्यागने को उद्यत हो जाते हैं। परन्तु अब काग्रेस की सफलता ने यह बता दिया है कि दूसरे मार्ग से भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। वह खुशी २ उस पर चलने को तय्यार हो गये हैं हम इनका अभिनन्दन करते हैं।

परन्तु क्या इससे सरकार भी शिक्षा लेगी? क्या वह भी समझेगी कि दमन ही लोक मत के विरोध का उपाय नहीं है?

राष्ट्रीय झंडा



राष्ट्रीय युग के निर्माता

आज़ादी की लड़ाई

द्वितीय भाग

भारतवर्ष और उसका स्वातन्त्र्य संग्राम

मनुष्य को प्रकृति ने ही स्वतन्त्र बनाया है, इसीलिये उसका यह जन्म सिद्ध अधिकार है कि वह सर्वदा स्वतन्त्र रहने का प्रयत्न करे। हम देखते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है वह स्वतन्त्र होता है और स्वतन्त्रता से हाथ पांव मारता है। अगर उसको स्वतन्त्रता में कोई बाधा आ जाती है तो वह अपना रोने का हथियार चलाकर अपनी रुकावट को दूर कर देता है। बच्चा स्वतन्त्र होता है ज्यूं २ वह जीवन में अपने कदम बढ़ाता जाता है उसकी स्वतन्त्रता में बाधाए आनी शुरू हो जाती हैं उस समय उस स्वतन्त्रता को आरो रखना या नष्ट कर देना उस पर ही निर्भर है। एक आदमी नशे का आदी बन जाता है इससे वह नशे का प्रयोग करे या न करे अपनी स्वतन्त्रता खो बैठता है। इस प्रकार मनुष्य अपनी इन्द्रियों के आधीन हो जाता है इस तरह हम देखते हैं कि संसार में रहकर मनुष्य अपनी आजादी को अपने हाथों से नष्ट कर देता है।

जब तक कोई मनुष्य आज़ाद रहता है उसका मन सुखी रहता है। परतन्त्रता तो चाहे किसी भी प्रकार की हो सर्वदा मनुष्य के जीवन को नष्ट करती रहती है स्वतन्त्रता भी इसमें रहने वालों के जीवन पर रहती है। जिस प्रकार प्राकृतिक वस्तुओं को

इतिहास पर गहरा असर होता है इसी तरह से देश की आज़ादी भी मनुष्य की आजादी से चोली दामन का सा सम्बन्ध रखती है।

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है रासकुमारी से लेकर हिमालय तक और पेशावर से आसाम तक फैला हुआ यह भू खण्ड २२५ भाषा-भाषी जातियों का निवास स्थान है, जिनकी आबादी ३५ करोड़ से भी ऊपर है, मौजूदा हालत को देखते हुए गणित नेताओं ने कहा है कि १९४० में यह लगभग ४० करोड़ हो जावेगा। हो सकता है कि यह बात ठीक हो, क्योंकि इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि पिछले कई वर्षों से यह गरीब और गुलाम देश निर्धन, निर्बल और पराधीन बच्चे पैदा करने म उत्तरोत्तर वृद्धि करता जा रहा है। केवल इतना ही नहीं साथ ही साथ उसी अनुपात से यह अपने हाथों से स्वय अपनी विपत्तियों के बोझ भी सपन करता जा रहा है। यह सत्य है कि यदि इसकी यही रफ़्तार रही, बेकारी की वह समस्या निरन्तर जटिलतर होती गई और रोटी के लिए हाहाकार की ध्वनि अधिक व्यापक बनती गई तो सम्भव है कि स्वयं प्रकृति माता को अपने अटल नियमों की सहायता से इन समस्याओं का हल करना पड़े क्योंकि प्राकृतिक नियम हमें बार बार चेतावनी दे रहे हैं परन्तु इस पर भी हम न चेते और इस प्राकृतिक शिक्षा से लाभ न उठाया तो निस्सन्देह हमें अपनी भूलों का भयानक फल अवश्य भोगना पड़ेगा। पर खैर कुछ भी हो चाहे हम सन्तान संग्रह करें अथवा निग्रह। यह बात हमें संसार के इतिहास और अपनी सदियों की गुलामी के

कारणों के इतिहास ने सीख लेनी चाहिये कि ज्यों २ एक पराधीन देश अपनी गुलामी की आबादी बढ़ाता जाता है और राष्ट्र निर्माता वीर योद्धाओं को पैदा करने का प्रयत्न नहीं करता त्यों त्यों उसको स्वराज्य समस्या विकट रूप धारण करती जाती है और उसके मार्ग में नई नई उलझनें उपस्थित रहती हैं।

पर हां इसका यह अर्थ नहीं कि आप आज से इस व्रत को दीक्षा लेलें कि जब तक भारत वर्ष स्वतन्त्र न हो जाय तब तक आप गुलाम सन्तान उत्पन्न ही नहीं करेंगे अपितु हमारा कहने का अभिप्राय यह है कि हम अपने पिता प्रपितामहों की तरह अज्ञानतावश २०-२५ सन्तानों को उत्पन्न कर व्यर्थ में देश की आबादी ही बढाने का ख्याल न करें किन्तु सर्वदा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सब समस्याओं का अध्ययन करते हुये एक अथवा दो शक्तिशाली राष्ट्र सेवक सन्तान उत्पन्न कर उन्हें राष्ट्र माता के चरणों में समर्पित करें। क्योंकि आप जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की शक्ति की माप उसकी जन संख्या की वृद्धि और अधिकता के कारण नहीं होती, प्रत्युत बहुधा उसकी अधिक जन संख्या ही ह्रास और अध पतन का कारण बन जाती है।

यदि प्रकृति के नियमों को सूक्ष्म रूप से अधययन कर तो आपको विदित होगा कि एक ही स्थान पर पास पास बोये हुवे पेड़ों की उन्नति रुक जाती है और वह पारस्परिक संघर्ष में आकर संतोषप्रद फल पैदा नहीं कर सकते संख्या यह बहुत बढ़ जायेंगे परन्तु वे सब निकम्मे ही काम । और तो और,

हीन पेडों के काट गिराने में बहुत कम समय और बहुत थोड़ी शक्ति की ज़रूरत पड़ेगी। इसके विपरीत यदि आप उन्हें पेडों को ठीक व्यवस्थित ढंग से वपन करें और संख्या का ख्याल न रख कर उनके फैलने फलने और फूलने के लिये उपयुक्त स्थान छोड़ दें तो आप उनका आशातीत लाभ उठा सकेंगे और वे भी समय पाकर विशाल वृक्ष का रूप धारण करते हुए आकाश से बातें करने लगेंगे। यदि उनको काट डालने का कोई दुस्साहस भी करेगा तो आप विचार कर सकते हैं कि एक पेडको काट गिराने के लिये कितने समय और कितनी शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी। सच मुच यही दशा जातियों की उन्नति की है। जिस देश की जनता प्रकृति के इन साधारण से साधारण नियमों से अनभिज्ञ रह कर केवल अधिक से अधिक बीज बोने में ही अपना कर्तव्य पालन मान लेती है और उनके परिणामों वृद्धि उन्नति और फलागम पर ध्यान न देकर संख्या वृद्धि से ही सन्तुष्ट हो जाती है, वह जाति कभी सन्तुष्ट राष्ट्रों के सामने सिर नहीं उठा सकती।

आपके सन्मुख बेचारे चीन का ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित है। उसकी आबादी ४० करोड़ से भी ऊपर है, परन्तु फिर भी वह मुट्ठी भर जापानियों से बराबर मार पर मार खाता जा रहा है। नृशंस जापानी चीनियों को गाजर मूली की तरह काटते हुये, हजारों की संख्या का तहस नहस करते हुये और इमारतों को खन्डरात बनाकर लाशों के ढेर छोड़ते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं। क्या संसार के बाकी राष्ट्र गरीब देश की मदद करने का दम भरते हैं ? नहीं वे

केवल शाब्दिक सहानुभूति ही अपना कर्तव्य समझते हैं और यहीं पर भी गनीमत कर, यहीं पर सहायता को इति श्री कर डालते हैं। क्या इन बातों से चीन विजयी हो सकता है? क्या इन शब्दाडम्बरों से चीनी प्रोत्साहित हो सकते हैं और क्या संसार के कतिपय राष्ट्रों की चीन के प्रति कोरी सहानुभूति जापान के पिशाच नर रक्त प्यासे हृदय में भय संचार कर सकती है? नहीं, कदापि नहीं। जब तक स्वयं चीनियों के शीत रक्त में उबाल नहीं आता जब तक उनका एक एक बच्चा मातृ भूमि पर मर मिटने के लिये कटिबद्ध नहीं हो जाता और जब तक चीन का अन्तरात्मा स्वतन्त्रता के लिये तड़फ कर स्वयं युद्ध क्षेत्र का संचालन नहीं करता, तब तक चीन का विजय स्वप्न देखना भारी भूल है।

आप दूर ही क्यों जाते हैं अपने देश का ही उदाहरण ले लीजिये। क्या आर्यों की पवित्र भूमि, वीर विजेताओं का उत्पत्ति स्रोत !भीम, अर्जुन, कर्ण जैसे नर रत्नों का जन्म दाता, पातञ्जलि, गौतम कणाद आदि आध्यात्मिक तत्ववेता गुरुओं का भंडार और संसार का पथ प्रदर्शक कहलाने वाला आर्यावर्त, यही भारत वर्ष है जो कि पिछले एक हजार वर्षों से पराधीनता की जबरदस्त जञ्जीरों से बराबर जकड़ा हुआ चला आ रहा है। यदि आपके उस वीरता पूर्ण पिछले इतिहास की गाथाओं को कोई हठ धर्मी झूठी थोथी और निस्सार गल्पकथायें कहने का साहस करे तो आप ही बतलाइये कि आप किन प्रमाणों से उसके मुंह को बन्द कर सकते हैं। व्यर्थ में सिर फुटव्वल करते फिरें यह अलग बात है। किन्तु किताबी प्रमाणों के अतिरिक्त आपके पास

ऐसा शक्तिशाली प्रमाण है जिसने कि संसार के मनुष्य आप को राम और कृष्ण की सतान मानना प्रारम्भ कर दें ? आज इस वैज्ञानिक युग में आप की कोरी दलीलों से काम नहीं चलेगा आप को तो भगवान कृष्ण के सच्चे भक्त बन कर कर्मयोग की दीक्षा लेनी पडेगी मन, कर्म, वचन से धर्म के व्यवहारिक रूप को समझ कर तथा उस को मन्दिरों के घन्टा घडियाल हिलाने तक ही सीमित न रख कर अपने जीवन में धारण करना पडेगा। इस में तनिक भी सन्देह की कोई गुंजायश नहीं कि हमारी प्राचीन संस्कृति नर-पुंगवनों का आदर्श है और उस का साहित्य अमूल्य रत्नों की खान है परन्तु अफसोस तो इस बात का है कि ऐसे भंडार के भंडारी बन कर भी हम सदियों से उस के लाभों की अवहेलना करते आरहे हैं। झूठे मायावाद में फंस कर हम अपने वीरत्व से हाथ धो बैठे हैं। शेरों की सन्तान हो कर भी हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। अरे बाबा ! जरा गरेबान में मुंह डाल कर तो देखिये एक नहीं दो नहीं पूरी दस सदियों से हम गुलाम हैं। दस सदियां, इन ही शब्दों का उच्चारण करते ही दिल फेल होने लगता है और कलेजा मुंह को आता है। आप जानते हैं कि शेरनी की कोख से जन्म लेकर यदि उस का बच्चा गीदड़ों की संगत में बैठकर अपनत्व खो बैठता है तो उस की जन्मदात्री अपने उस कलेजे के टुकड़े को टुकड़े २ कर डालती है और माता का हृदय खून के दो आंसू न बहा कर कर्त्तव्य पालन में आनन्द का अनुभव करता है। पर हम नर सिंहों की सन्तान कहलाने वाले एक हज़ार वर्ष तक गीदड़ बने रहे और हमारी राष्ट्र माता

हमारी इस दयनीय दशा को देख कर खून के आंसू बहाती हुई भी चुप रही। उफ! माता का हृदय कितना विशाल है।

परन्तु आज यह हर्ष से लिखना पड़ता है कि माता के उस असीम धैर्य और अद्वितीय प्रेम प्रदर्शन के प्रभाव से देश की अधिकतर जनता अपनी भूलों को स्वयं अनुभव करने लगी है। यद्यपि वह अपने चारों ओर सदियों की गुलामी की दृढ़ जञ्जीरों का एक अभेद्य चक्रव्यूह बना हुआ देख रही है, परन्तु इस पर भी उसमें पूरा उत्साह है और अर्जुन तथा अभिमन्यु जैसे वीर नेताओं को अपने मध्य में पाकर वह विजय प्रस्थान के लिये उद्यत है। लेकिन आज हमें उस दूधजले की तरह छाछ को भी फूंक फूंक कर पीना है। हमने अपना एक एक कदम सम्भाल कर और देख देख कर रखना है। हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमने ऐसे विजय प्रस्तान बहुत बार किये, बहुत बार लाखों निरपराधों के खून से पृथ्वी रक्त रञ्जित कर दी, स्थान स्थान पर शोणित धाराएं बहाकर रक्त मसी से इसका इतिहास लिखा और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये क्या क्या बलिदान नहीं किये, किन्तु उन सबका परिणाम यदि यही निकला कि आज हमारे हाथ और पैर चारों ओर से जकड़े हुए हैं, तो हमें समझ लेना चाहिए कि उन सब अनथक परिश्रमों के पीछे भयकर और प्रलयकारी भूलें थीं

आज इस जागृति के युग में हमें उन सब भूलों की एक विस्तृत सूची बनाकर उनसे पूरा २ लाभ उठाने का करना चाहिये। वे भूलें कौन कौन सी थीं यह, इतिहास प्रकार जानता है

सब भूलें एक स्थान पर सूची रूप से लिखी नहीं गईं परन्तु इतिहास के भिन्न भिन्न स्थलों का अध्ययन करने से आप उनकी सूची ठीक ढंग से बना सकते हैं।

हाँ मैं यह कह रहा था कि आज एक बार फिर भारत वर्ष अपने स्वतन्त्र संग्राम के लिये कटिबद्ध है। और इसमें कोई संदेह भी नहीं देश की वर्तमान जागृति इस बात की सोलह आने समर्थक है। सच मुच आज भारत वर्ष इस बात के लिये लालायित है कि एक बार वह फिर पूर्ण स्वतन्त्र होकर संसार में फैले हुये विक्षोभ, अशान्त वातावरण और आत्म वाद के अंधकार को अपनी प्राचीन संस्कृति के उज्वलयमान प्रकाश द्वारा दूर कर संसार को सुख और शान्ति का संदेश सुनाए। वह चाहता है कि इस बार अपनी समस्त शक्तियों को एक स्थान पर केन्द्री भूत कर पराधीनता के इस चक्र व्यूह को चकनाचूर कर डाले। उसकी यह लालसा है कि इस बार उसके सब अंग-प्रत्यंग, रोम रोम और खून की एक एक बूंद उसको इस प्रयत्न में पूरा सहयोग दें। साथ ही उसकी यह भी इच्छा है कि वह पूर्ण शक्ति शाली होकर भी अहिंसा सत्य और न्याय के बल पर अपनी बेड़ियों को तोड़ें को तरल कर डालें और संसार की जातियों के सामने एक अनुपम और अभूत पूर्व आदर्श उपस्थित कर अपनी संस्कृति का चमत्कार दिखलायें। परन्तु खेद है, उसकी समस्यायें अभी बहुत विकराल रूप धारण किये हुये हैं। कहीं एक तरफ धर्मान्ध साम्प्रदायिक नेता अपनी गद्दियों को सुरक्षित रखने के लिये भाई २ का खून करवा रहे हैं, दूसरी तरफ राष्ट्र के सूत्रधारों द्वारा भाई २ की एकता के लिये किये

गये प्रयत्नों की अवहेलना की जा रही है तो कहीं तीसरी तरफ पूंजी पति अपनी पूंजी के मद से मस्त होकर एक एक शहर में पैंतालीस २ हजार गरीब, दो रोटी के मुहताज मजदूरों की रोटियां छीन कर उन्हें तड़फा रहे हैं चौथी तरफ देश की ८५ प्रतिशत भूखी और अधनगी जनता देश के नेताओं से अपनी विपत्तियों, दुर्दशाओं और असह्य कष्टों का हल मांग रही है। अरे भाई क्या २ कहें और कहां तक कहें एक हजार साल कोई कम नहीं होते। भगवान का धन्यवाद करना चाहिये कि इतने लम्बे समय से सताया, दबाया, और पिसा जाने पर भी इस प्रकार राष्ट्र का अस्तित्व संसार में कायम है। यह भला कम हर्ष की बात है ? यदि इस राष्ट्र के पीछे कोई महान आदमी न होता तो इसका नामो निशान दुनिया से मिट जाता। पर नहीं भारतवर्ष का आदर्श अमर है उसका एक उज्वल मिशन है जिसकी पूर्ति वह आज नहीं कल और कल नहीं तो परसों अवश्य करके छोड़ेगा हतोत्साह और निराश होने की कोई जरूरत नहीं। जातियां अपनी भूलों से ही नीचे गिरती हैं और उन्हीं को सुधार कर फिर उन्नति के उच्च शिखर पर जा पहुंचती है, "सहज पके तो मीठो होय" के उपदेश को सदा ध्यान में रखते हुए हमें यह भूल नहीं जाना चाहिये कि हमारी यह पराधीनता की बीमारी सदियों की पुरानी है। इसका इलाज एक दो दिन में अथवा एक दो वर्ष में हो जाने वाला नहीं। सौभाग्य से आज हमने इस बीमारी की जड़ को पकड़ लिया और इसका ठीक ठीक नुस्खा भी हमारे हाथों में आगया है। अब हमें धैर्य और अध्यवसाय की जरूरत है। अपनी

भूलों पर सदा दृष्टि रखते हुए हमें एक एक पग फूंक फूंक कर रखना उचित है, अन्यथा जरासा भी उतावलापन और बेसबरी सारे किये कराये काम पर खाक डाल सकती है।

हां मैं यह कह रहा था कि इतने समय से ऐसे विरोधी कलुषित और अस्वाभाविक जलवायु में रहकर भी इस देश की अन्तरात्मा स्वतन्त्रता के लिये तडफडा रही है उस पर किसी प्रकार का बुरा असर अपना प्रभाव नहीं डाल सका। अन्तरात्मा की तडफडाहट को देख कर इस देश का मस्तिष्क भी तिलमिला उठा है। इसकी करुणामयी पुकार सुन कर मन और बुद्धि भी विद्रोह के लिये तैयार है। और तो और इस के अंग प्रत्यंग तक भी जो अब तक भोगविलास में ही जीवन सुख मानते थे आज राष्ट्र के अन्तरात्मा की दर्द भरी आवाज को सुनकर दहल गये हैं। यद्यपि मोहनिद्रा को भंग होते देख कर उनमें कसक सी पैदा होने लगी है और वे चाहते हैं कि किसी न किसी प्रकार इस झंझट को टाल कर अपना पीछा छुडायें। परन्तु अन्तरात्मा की इस बार की पुकार में बिजली की सी शक्ति है। वह सत और न्याय के पद चिन्हों पर चलकर अहिंसा की भावना से ओत प्रोत होकर एक नये परीक्षण द्वारा अपने सर्वांगों में अदभुत शक्ति का सचार करने के लिये प्रयत्न में दत्त चित्त है आज उसके उन वर्षों के परीक्षण ने घोर अन्धकार में डूबे हुए देश वासियों को स्वतन्त्रता के प्रकाश किरण की एक झलक दिखलाकर उसकी कीमत हमारे सामने रखदी है। परन्तु आप यह सच जानिये कि क्षणिक विद्युतचमत्कार

और घोर प्रकाश की एक किरण की झलक से घटा टोप अन्धकार दूर नहीं हो जाता, अपितु वह आँखों में चका चौंध सी पैदा कर उस अन्धकार को भयानक और असह्य बना देती है। इस लिये उस निबडतम को दूर करने के लिये हमें बडी तपस्या करनी पडेगी और तब जाकर कहीं भगवान भास्कर के दर्शन हो सकेंगे।

यदि हम सच्चे दिल से चाहते हैं कि हमारे देश में पूर्ण स्वराज्य का रवि चमके, उसके प्रखर रश्मियों के प्रभाव से देश में फैले हुए दुर्गन्धित कूडा करकट की बदबू दूर होकर वह राष्ट्र रूपी वृक्ष के लिये उपयोगी खाद का काम दे और उसको रसवर्षिणी किरणों की आतप से एक बार फिर हमारा देश धान्यपूर्ण और समृद्धिशाली हो तो हमें चाहिये कि हम घोर तपस्या और आत्म-बलिदान द्वारा सदियों के इस अन्धकार के विषैले प्रभाव को दूर कर पारस्परिक वैमनस्य को तिलाञ्जलि दे पुरानी अहितकर रूढियों तथा कुप्रथाओं को ठुकरा कर, साम्प्रदायिक तनातनी के ताने को तोड कर, तन मन और वचन से एक सूत्र में बद्ध होकर एक सुसंगठित परिवार के सदस्यों की तरह एक आदर्श और एक ध्येय को सामने रखकर, पराधीनता रूपी निशा देवी को नमस्कार कर उससे सदा के लिये अलविदा लें।

सचाई और देशभक्ति

कहा जाता है कि इस देश में भी जागृति पैदा है। देश की परतन्त्रता की बेडी काटने के लिये अपना सब कुछ त्याग कर

सब कुछ करने को तैयार हैं, कुछ लोग अहिंसा व्रत को धारण कर अंग्रेज सरकार के कानून तोड़ते और जेलों में जाकर हर प्रकार का कष्ट उठाते हैं, कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जिनको अहिंसा में भरोसा नहीं और कहीं कहीं हिंसा का काम करके फांसी पर लटक रहे हैं, सरकार भी कभी हिंसा करके लोगों को दबाती है कभी कभी लोगों को खुश करने के लिये थोड़ा सा कानून सुधार देती है, एक प्रकार से तो देखते हैं कि दमन चक्र चला गया और सुधार का बोल बाला है और देश की सरकार कुछ दबी हुई है। उधर हमारी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस की शक्ति दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है और आशा है कि देश जल्द ही आज़ाद और सुखी हो जायगा।

हमारे देश की परतन्त्रता का कारण हमारी फूट थी और इसही के कारण से देश में एकता और प्रेम नहीं था और इनके कारण देश में सचाई की कमी थी, सचाई ही से यह संसार बना है, सच बोलना और सच्चा व्योपार और व्योहार हर एक मनुष्य और समाज के लिये अत्यंत आवश्यक है जो न सच बोलता है और न सच्चा व्यवहार करता है वह न तो अपने लिये दूसरे के दिल में विश्वास पैदा कर सकता है और न प्रेम, इस लिये दूसरे के साथ न्याय करना भी कठिन

नहीं और जहाँ एकता नहीं वहाँ स्वराज और सुख नहीं। हमारा देश सच्चाई की कमी से ही गुलाम हुआ है।

अब यह देखना है कि देश सुधार में जो मनुष्य लगे हुये हैं कहाँ तक सच्चाई पर चल रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुतों का स्वदेश प्रेम त्याग और सेवा बहुत बढा हुवा हैं परन्तु जब आज कल के हर एक नवयुवक और कॉग्रेस के नेताओं को देखते हैं तो लज्जा आती है कि उनके मन की ग्लानि के सम्बध में कुछ लिखने का साहस नहीं पडता और ऐसा मालूम पडता है कि स्वराज अभी बहुत दूर है। यहा पर हिंदू मुसलमान दो बडी जातिया रहती है। इनके लिये यहा से अग्रेजों को भगा देना कोई बहुत बडी बात नहीं परन्तु जब तक हिंदू और मुसलमानों में प्रेम पूर्ण विश्वास न हो तब तक स्वराज कहाँ। फिर आज कल के लडाई और झगडों से यह प्रतीत होता है कि आज कल के काग्रेसी नेताओं में भी प्रेम और विश्वास की बू नहीं मिलती और जब तक यह चीज रहेगी देश की स्वतन्त्रता एक स्वप्न है।

अत प्रत्येक मनुष्य का यह धर्म है कि वह त्याग सेवा कठिनाई सहन करके सच्चा प्रेम पैदा करे

आज की आवश्यकता

आज हम पिसे जारहे हैं, कुचले जारहे हैं ठोकरें लग रही हैं दुर दुराये जारहे हैं भूखे हैं, नगे हैं, फिर भी रहे हैं, नालो के कीडे जैसी हमारी मनोदशा है।'

पानी में, नरक में, वह सुख का अनुभव करता है। इन सड़ी हुई झोंपड़ियों और कच्चो पक्की व जलो भूनी में हमें आनंद मिल जाता है। हम बुखार से डरते हैं परन्तु हमारे शरीर में तो तपेदिक के कीड़े लगे हुए हैं वह हम को घुन की तरह खाये जा रहे हैं उस का हमें ख्याल नहीं, हम नहीं सोचते कि दो चार रोज का बुखार इस नारकीय दशा से इस पाप से, कहीं अधिक अच्छा है तब हम जीवेंगे और अधिक अच्छी तरह जीवेंगे मनुष्य होकर जीवेंगे

हमें सिखाया गया है त्याग परंतु इस त्याग ने हमारा सत्यानाश कर दिया यह त्याग अब स्वत नहीं रहा जो इस में त्याग का भी आनंद आवे। यह मजबूरन त्याग है। हम जो कुछ करते हैं अब लाचारी स करते हैं इस लिये नहीं कि हम त्यागी हैं। जरूरत हम महसूस करते हैं लेकिन आंखों से दो बूंद खून के आंसू बहाने के और ललचाई दृष्टि से देखने के अतिरिक्त और उपाय नहीं दीखता भला यह भी कोई त्याग है।

संसार आगे बढ़ रहा है ललचाई नजरें और भोचक्की आंखें उधर उठती हैं। एक बार जी में उत्साह उठता है, परन्तु आंखें चौंधिया जाती हैं। साहस साथ नहीं देता और अपने आप में सन्तुष्टि ढूंढने का हम उपाय ढूंढने लगते हैं। हम कहीं नीचे हैं? उनसे भी आगे हैं। हमारे बीच गांधी हैं, टेगोर है जवाहिर हैं। कैसा झूठा यह आत्म सतोष है। क्या इससे हमारे दिल को तसल्ली नहीं मिलती? असम्भव!

दुनिया में कोई बुराई ऐसी नहीं जिसका हमारे अन्दर प्रवेश न हो। चोर, झूठे और बेईमान हम सब ही हैं। फिर भी हम यह सोचते हैं कि हम दुनिया से अच्छे हैं। परन्तु सब भूल जाते हैं कि बाजार में शुद्ध दूध न होना, व्यापार में झूठ का बेईमानी का बोल बाला होना, चार टुकड़ों के लिए कुत्तों की भांति लड़ना, एक दूसरे की चुगली खाना, भला आखिर यह चीज है क्या!

संसार झूठा है यह मान भी लिया जाय परन्तु वहां आदमी का आदमी पर तो विश्वास है। हमें आज अपने पड़ोसी पर भी विश्वास नहीं आज हमारी समाज में नई नई त्रुटियां आ रही हैं हम उनका हल सोचने को तैय्यार नहीं आज समाज लुट रहा है और हमारा पाचाल पन दूर नहीं होता। वास्तविकता को पीछे धकेल कर नारकीय नींद में ऊंघ रहे हैं हिलने जुलने की हमारी इच्छा नहीं होती। जो हो रहा है होने दो उस से हमारा क्या मतलब चार चिथड़ों में हम खुश हैं बला से भाई जावें जहन्नुम में यह हमारी आदर्श मनोवैज्ञानिकता है।

अब क्रांति, हर देश में सम्पूर्ण क्रांति ही भारत वर्ष के उठने का एक मात्र रास्ता है। हमें अच्छा बुरा सब सामने रख कर फिर उस में से जो कुछ हमारे अनुकूल हो उसे छाटना है। वेद, उपनिषद, गीता किसी का भी हमें मोह नहीं होना चाहिए। सीता, द्रौपदी, गार्गी, राम युधिष्ठिर सब को हमें अपनी दशा के अनुकूल बनाना पड़ेगा, अन्यथा हम कुचले जाते रहेंगे, सड़ें, मरेंगे।

दिल में एक विद्रोह की भावना लिये बिना हमारा निस्तारा नहीं। आग सी उठनी चाहिये ! जिस में अच्छा बुरा सब कुछ भस्म हो जाय।

अच्छे को सम्भालने के लिये इस वक्त हमारे पास समय नहीं उसके लपेटे में हमसे बुरा भी लिपटता चाहता है इस लिये सब को ही तर्क करदेना उचित है।

इस प्रकार जब कर देंगे तब हम एक नये राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। वह राष्ट्र कीड़ों का राष्ट्र न होकर मनुष्यों का राष्ट्र होगा और उसके निवासी ससार की नज़रों में ऊंचे होंगे। भारत के नवयुवको ! सब मिल कर इस आग को लगा दो यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

हमारा राष्ट्रीय झंडा

नदी के किनारे पत्थरों की कमी नहीं, लोग उधर से गुजरते हुये उसकी ओर ध्यान भी नहीं देते। लेकिन जब उसी छोटे से पत्थर को काट छाँट कर उसकी मूर्ति बनाई जाती है अथवा यों ही उसे कहीं प्रतिष्ठित किया जाता है, तो शत शत भक्तगण उसके सामने सिर झुकाते हैं और उसके प्रति श्रद्धाभक्ति प्रदर्शित करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि भक्तों की भावना के कारण ही, नदी के किनारे पड़ा रहने वाला पत्थर भी देवता का रूप धारण कर भक्त मन्डली द्वारा पूजित होता है।

इसी प्रकार साधारण कपड़े के टुकड़े से बना हुआ किसी देश का राष्ट्रीय झंडा उस राष्ट्र के लिये गौरव और आदर की वस्तु बन जाता है। वह देश की राष्ट्रीयता का प्रतीक बन जाता है। इस लिये स्वतन्त्र देशों में बचपन से ही भावी नागरिकों को अपने राष्ट्रीय झंडे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने की तालीम दी जाती है। उन्हें बचपन से ही सिखाया जाता है कि अपने राष्ट्रीय झंडे की मान रक्षा के लिये यदि अपने प्राणों की भी आहुति देने की जरूरत पड़े तो इसमें तनिक भी हिचकिचाहट न होनी चाहिये। राष्ट्रीय झंडा ही क्यों, जिस किसी वस्तु पर राष्ट्रीय झंडे का चित्र बना हो, उसको स्वतन्त्र देशों के लोग उसी प्रकार श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। यदि कोई व्यक्ति उनकी नजरों के उसके प्रति अपमान जनक व्यवहार करे तो वे इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। वहां की सरकार भी

की मान रक्षा के लिए कानून बनाती और सब प्रकार से अपने झंडे की मान-रक्षा के लिये तैयार रहती है। कोई व्यक्ति यदि उस झंडे का अपमान करे तो वह उसे उचित दण्ड दिये बिना नहीं रहती।

परन्तु गुलाम देशों की तो बात ही न्यारी है। जिस प्रकार गुलामों का कोई मजहब नहीं, उसी प्रकार उनका कोई राष्ट्रीय झण्डा नहीं। पराधीन देश के लोग अपनी गुलाम मनोवृत्ति के कारण विजेता के झंडे के सामने ही सिर झुकाना सीखते हैं। बचपन से उन्हें किताबी तालीम के साथ इसी तरह की तालीम दी जाती है जिससे उनका दिमाग भी गुलाम हो जाता है। परन्तु जिस पराधीन राष्ट्र ने पराधीनता के पाश को छिन्न-भिन्न करने का निश्चय कर लिया हो, जिसके अन्दर आत्म सम्मान की भावना जाग्रत हो चुकी हो और जो स्वराज कायम करने के हेतु बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिये तैयार हो, वह भला दूसरे राष्ट्र के झण्डे को अपना राष्ट्रीय झण्डा क्योंकर मान सकता है? वह अपना अलग राष्ट्रीय झण्डा कायम किये बिना नहीं रह सकता और उस राष्ट्रीय झण्डे को ऊंचा फहराते रखने के लिए उसे चाहे जैसी मुसीबतों का, जैसी आपदाओं का सामना करना पड़े, वह उससे जीते जी कभी मुंह न मोड़ेगा।

हमारे राष्ट्रीय झण्डे का भी एक इतिहास है। इस देश में विदेशी हकूमत कायम हो जाने के बाद लोगों की दिमागी गुलामी भी यहां तक बढ़ गयी कि वे इस बात को भी शायद भूल गये कि हमारा भी कोई राष्ट्रीय झण्डा था और अब

हमारा कोई राष्ट्रीय झण्डा हो सकता है। वे अपने शासकों के झण्डे के सामने ही सिर झुकाने लगे, इसी का आदर करने लगे। परन्तु जब भारतवासी यहां से किसी स्वतन्त्र देश में जाते और वहां के स्वतन्त्र वातावरण में सांस लेते तो उन्हें अपनी पराधीनता, अपनी बेबसी का अनुभव होता और अपनी इस दशा पर उन्हें क्षोभ होता। एक बार की घटना है कि एक भारतीय सज्जन एक जापानी जहाज़ से अमेरिका आ रहे थे। जहाज़ के डेक पर जब वे टहल रहे थे तो एक जापानी यात्री ने जहाज पर लगे हुए अपने देश के राष्ट्रीय झण्डे को देखकर सगर्व मस्तक ऊंचा कर जिज्ञासा के रूप में उन भारतीय से नम्रता पूर्वक पूछा—'आपके देश का राष्ट्रीय झंडा कैसा है?" बेचारे क्या उत्तर देते? अपने देश की पराधीनता का अनुभव कर वे बड़े दुखी हुए और उनकी आंखों से आंसू झरने लगे। इसी प्रकार विदेशों में जाने वाले भारतीयों से जब ऐसे प्रश्न पूछे जाते थे तो उन्हें अपनी दशा पर बड़ी ग्लानि होती थी और इसी से उन लोगों को राष्ट्रीय झण्डे की जरूरत महसूस होने लगी।

ऐसी ही भावना से प्रेरित होकर पहले पहल सन् १९०६ ई० में फ्रांस और इंगलैण्ड में रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने अपने देश का राष्ट्रीय झंडा स्थिर करने का निश्चय किया था। कहते हैं कि वह भी तिरंगा झंडा था, जिसमें नीचे के पीले रंग के पट्टे में सूर्य और अर्धचन्द्र अंकित थे बीच वाले सफेद पट्टे में 'वन्देमातरम्' लिखा पाठकों होगा कि सन् १९०६,

राष्ट्रीय जागृति आरम्भ हो चुकी थी और ऐसे समय में विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के मन में ऐसी भावना जाग्रत होना भी स्वाभाविक ही था। लेकिन यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वह हमारी राष्ट्रीय जागृति का प्रारम्भिक काल था और उस समय तक विदेशी शासन के विरुद्ध लोगों में राष्ट्रीय भावना काफी प्रबल नहीं हो पायी थी। इसलिये राष्ट्रीय झंडे की इस कल्पना को जैसा प्रोत्साहन मिलना चाहिये, वैसा प्रोत्साहन उस समय नहीं मिल सका। उस समय तक हमारी मानसिक गुलामी इतनी जबर्दस्त थी कि यूनियन जैक के स्थान में किसी अन्य प्रकार के राष्ट्रीय झंडे की कल्पना करना आसान नहीं था। परन्तु राष्ट्रीयता की लहर धीरे धीरे बढ़ती ही गयी और सन् १९१६ ई० में जब होमरूल आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, उस समय राष्ट्रीय झंडे की जरूरत लोगों का खास तौर पर महसूस होने लगी परन्तु उस समय के आन्दोलन कारियों के लिये यूनियन जैक को निकाल बाहर करना कठिन था। राष्ट्रीय झंडे का इतिहास बताता है कि उस समय जो राष्ट्रीय झंडा स्थिर हुआ, उसमें यूनियन जैक को भी स्थान मिला था।

लेकिन यह झंडा भी लोकप्रिय नहीं हो सका। इस का प्रधान कारण यह था कि उस समय का राष्ट्रीय आन्दोलन काफी व्यापक रूप धारण नहीं कर सका था। कांग्रेस कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की ही राजनैतिक संस्था थी। परन्तु कांग्रेस का नेतृत्व जब १९२० में महात्मा गांधी ने ग्रहण किया तब से राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप ही बदल गया इस के साथ ही हमारी राष्ट्रीय महा सभा—कांग्रेस

था भी। समस्त देश में असहयोग आन्दोलन ने एक अभूत पूर्व जागृति उत्पन्न कर दी और राष्ट्रीयता का ऐसा प्रबल प्रवाह बहा कि एक समय तो हमारे विदेशी शासकों को भी भारी चिन्ता होने लगी थी और वह महात्मा गांधी के साथ समझौता करने के लिये भी उत्सुक दिखाई पड़ते थे। उन्हीं दिनों राष्ट्रीय झण्डे का भी निश्चय हुआ। उस समय जो तिरंगा राष्ट्रीय झंडा स्थिर हुआ उस में सब से ऊपर सफेद, बीच में हरा और सब से नीचे लाल रखा गया और बीच में चर्खे का चित्र। उपर्युक्त तीनों रंग की पट्टी में दो रंग तो भारत के दो प्रधान धर्म के—हिन्दू, इस्लाम धर्म के द्योतक थे और तीसरा रंग था भारत के अन्य सब धर्मों के लिये। चर्खे का अभिप्राय यह था कि भारत वर्ष का गृह शिल्प पहले उस अवस्था में था और इसी लिये पहले भारत समृद्धिशाली था, किन्तु गृह शिल्प के नष्ट हो जाने से आज हम ऐसे गरीब हैं अतएव पुनः गृह शिल्प को उन्नत करके ही हम गरीबी से त्राण पा सकते हैं।

इस प्रकार यह झंडा लगभग दस वर्षों तक राष्ट्रीय झंडा बना रहा और देश के हजारों नर नारी ने इसके सम्मान के लिए बड़ी बड़ी मुसीबतें झेली। नागपुर के झंडा सत्याग्रह को अभी तक लोग भूले न होंगे। राष्ट्रीय झंडे की सम्मान रक्षा के लिये ही देश के विभिन्न स्थानों से लोग सत्याग्रह करने के लिये नागपुर पहुँच रहे थे, नागपुर का झंडा सत्याग्रह अखिल भारतीय प्रश्न बन गया था और यह घटना हुई थी उस समय जब देश में चारों ओर शांति विराज रही थी, कहीं किसी प्रकार का आन्दोलन नहीं था, बल्कि

असहयोग आन्दोलन के बाद का प्रतिक्रिया का ज़माना था ? परंतु इतना सब कुछ होते हुये भी राष्ट्रीय झण्डे के सम्बन्ध कांग्रेस ने कोई प्रस्ताव पास करके इसको राष्ट्रीय झंडा स्वीकार नहीं किया था। साथ ही एक बात और भी थी। और वह यह कि राष्ट्रीय महासभा के अन्दर भी कुछ लोग ऐसे थे जो राष्ट्रीय झंडे के रूप में परिवर्तन चाहते थे। इस लिये सन् १६३१ में कराची कांग्रेस ने हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय झंडे के प्रश्न पर विचार करने के लिए सात आदमियों की कमेटी नियुक्त की थी। इस कमेटी की सिफारिशों को यद्यपि कांग्रेस ने स्वीकार नहीं किया, फिर भी कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने स्वयं राष्ट्रीय झंडे का रूप धारण कर दिया, जिसके अनुसार झंडा तो तिरंगा ही रहा, किंतु इसके रंग और विभिन्न रंगों के क्रम में थोड़ा परिवर्तन कर दिया गया। इस निश्चय के अनुसार राष्ट्रीय झंडे में सबसे ऊपर केसरिया रंग बीच में सफेद और सबके नीचे हरा रंग और झंडे पर चर्खे का चित्र रहना तै हुआ। इस बार झन्डे के रंगों का निर्णय धर्म के आधार पर नहीं बल्कि विशुद्ध राष्ट्रीयता के आधार पर किया गया था। केसरिया रंग त्याग एवं धैर्य का, श्वेत रंग सत्य और अहिंसा का, हरा रंग वीरता और वफादारी का एवं चर्खा गरीबों के उद्धार का द्योतक है। इस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय झन्डा हमारे धैर्य, बलिदान, सत्य, अहिंसा और वीरता का परिचायक है।

देश के दुर्भाग्यसे, हिन्दुस्तान में ऐसे जी हुजूर और गुलाम मनोवृत्ति वाले लोगों की कमी नहीं है, जो इस राष्ट्रीय झंडे को विद्रोह का चिन्ह समझते रहे हैं और इसी

लिये इसे महज एक दलविशेष का झंडा कह कर यूनियन जैक को सरकारी झण्डा समझ कर उस के सामने सिर झुकाते रहे हैं। अतएव इस समय जब वे ६ कांग्रेसी प्रान्तों में सरकारी इमारतों पर भी इस राष्ट्रीय झंडे को फहराते देखते हैं, तो वे हैरत में पड़ जाते हैं। कांग्रेसी प्रान्तों में जब शासन सूत्र कांग्रेस दल के हाथ में चला गया है, तब तो पुलिस तथा अन्य सरकारी नौकरों को राष्ट्रीय झंडे के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत नहीं होती, किन्तु गैर कांग्रेसी प्रान्तों में अभी भी कभी कभी राष्ट्रीय झंडे को अपमानित करने की कुचेष्टाएं हुई हैं। कलकत्ते में अहमन दिवस के अवसर पर जो घटना हुई थी, वह इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है। कहते हैं कि दस दस आदमियों को एक साथ वर्जित स्थान में होकर टाउन हॉल की सभा में इस शर्त पर जाने देने को पुलिस तैयार थी कि झंडे को झुका लें या उसे लपेटकर साथ ले जाय। जलूस वालों ने इस शर्त को राष्ट्रीय झंडे के लिये अपमान जनक समझा और झण्डा झुकाने को तैयार न हुए। इस लिये लाठी वरषा कर उन्हें तितर बितर किया गया।

इस घटना के सम्बन्ध में पुलिस के कार्यों का समर्थन करते हुये बंगाल कौंसिल में होम मेम्बर सर नज़ीमुद्दीन ने फरमाया था कि तिरंगा झंडा राष्ट्रीय झंडा नहीं बल्कि कांग्रेस झंडा है। आपने यह भी कहा है कि मुसलमानों ने इस राष्ट्रीय झंडा नहीं माना है। सर नज़ीमुद्दीन शायद समझते हैं। कि यूनियन जैक ही इस देश में झंडा है। परन्त

वे भूलते हैं। अभी तक कोई ऐसा कानून नहीं है और न तो गवर्नमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट में ही ऐसी कोई धारा है, जिसके अनुसार यूनियन जैक इसे देश का झंडा माना गया हो। जो लोग ऐसे भ्रम में हैं, उन्हें मालूम होना चाहिये कि यूनियन जैक साम्राज्यान्तर्गत सभी डोमीनियनों का भी राष्ट्रीय झंडा नहीं है और दक्षिण अफ्रीका ने यूनियन सरकार से भी सन् १९२७ ई० में एक कानून पास करके यूनियन जैक के साथ ही अपना एक अलग राष्ट्रीय झंडा भी निश्चित किया था। आयरिस फ्री स्टेट ने तो अपना अलग ही राष्ट्रीय झंडा बना रक्खा है। इससे स्पष्ट है कि यूनियन जैक हिन्दुस्तान के गौरव का परिचायक नहीं, बल्कि इसकी पराधीनता का और ब्रिटिश साम्राज्यशाही का ही परिचायक है। कांग्रेस ही इस देश की एक मात्र प्रतिनिधि राजनीतिक संस्था है और इस देश की विभिन्न जाति, सम्प्रदाय एवं विभिन्न हितों का प्रतिनिधित्व करने का दावा कांग्रेस ही कर सकती है। इसलिये राष्ट्र के नाम पर इसने इस मुल्क का राष्ट्रीय झण्डा स्थिर कर दिया है वही हमारा राष्ट्रीय झण्डा हो सकता है। इसकी इज़्ज़त करना, इसकी सम्मान रक्षा के लिये बड़े से बड़े त्याग करने को तैयार रहना प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है।

कांग्रेस और मुसलमान

एक समय था जब मुसलमान गैर थे। वह लूट खसोट और खू रेजी के लिये भारत में गिरोह बनाकर आते और मार काट और निर्दयता से धन प्राप्त कर वापस चले जाते। लुटेरों से भला किसे प्रेम होता है वह हमें मारते थे, बदले में हम उन्हें मारते थे और इसी लिये वह हमारे शत्रु थे और हम उनके।

परन्तु वह भी अपने इस आवारापन और अनियमित जीवन से तंग आ गए और भारत भूमि पर बस कर शांति पूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। वे बस और हमारे हो गये हम उनके। उनकी समस्यायें हमारी समस्यायें हुई और हमारी समस्यायें उनकी। यहां तक कि आज वह हमारे साथ हो गये हम उनके साथ, वे हमारे कारण और हम उनके कारण आज गुलामी की जंजीरों में फंसे पड़े हैं दो सौ वर्ष से अधिक की लम्बी गुलामी ने और नेताओं के कठिन परिश्रम व बलिदान ने देश की आंखें खोल दी और हम उन सुनहरी बेड़ियों को तोड़ फेंकने के लिए जुट पड़े हैं। परन्तु इस उद्योग को जड़ से हमारी पारस्परिक धार्मिक असहिष्णुता घुन बन कर खोखला कर रही है।

धर्मान्धता, द्वेष और फूट भारतीय राजनीति की पुरानी देन है। हम गुलामी में क्यों पड़े? केवल धर्मान्धता और फूट के कारण। दक्षिण में मरहटे और मुस्लिम साम्राज्य आपस में लड़े और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कभी मुसलमानों को और कभी मरहटों को मदद देकर दोनों ही

पर, यह उसी को भूल जावें, तो फिर इससे भी बढ़कर बुद्धि और स्मरण शक्ति का विकार दूसरा क्या हो सकता है।

यदि न्याय की दृष्टि से देखा जाय तो किसी भी जाति का, किसी भी देश में विशेषाधिकार मांगना अथवा उसे विशेषाधिकार दिया जाना नितान्त अनुचित और अन्याय पूर्ण है क्योंकि यदि संख्या की लघुता के कारण किसी जाति को संरक्षण दिये जाते हैं तो यह अधिक जन संख्या वाली जाति के साथ अन्याय है क्योंकि वह समझते हैं कि अधिक संख्या होने के कारण उन का यह स्वाभाविक अधिकार है कि उन्हें अधिक अधिकार दिये जावें। और यदि बड़ी संख्या वाली जाति को विशेषाधिकार दिये जाते हैं तो वह उन विशेषाधिकारों की आड़ में लघु संख्या वाली जाति के साथ अवश्य ही अन्याय करेगी। अतः विशेषाधिकारों की मांग करना अथवा विशेष अधिकार देना किसी भी प्रकार न तो उचित है और न न्याय संगत ही।

फिर इन विशेषाधिकारों के कारण, समय समय पर संघर्ष हो जाने का भी पूरा भय है जर्मनी में नाज़ी और यहूदी संघर्ष हो रहा है फिलस्तीन के रक्तपात का क्या कारण है केवल यही न कि वहां पर एक जाति की अपेक्षा दूसरी जाति को विशेष अधिकार दिये जावें।

मुस्लिम लोग विशेषाधिकार प्राप्त करने पर ही स्वातन्त्र्य संग्राम में कांग्रेस का साथ देने को तैयार हैं। इसका परोक्ष अर्थ यही होता है कि यदि उस घूंस के रूप में अधिक सुविधायें नहीं दी जातीं तो वह कदापि यह उचित नहीं समझता कि देश के स्वतन्त्र होने की चेष्टा करे,

इतिहास सदा से ही इस बात की साक्षी देता आया है कि इस प्रकार घूस देकर इकट्ठी की हुई सेना सदैव ही समय पर धोखा देती है। यदि विपक्षी उसे उतने से भी अधिक दे तो वे शीघ्र ही विपक्ष की ओर मिल सकती है क्योंकि उसका तो उद्देश्य अपना ही अधिक स्वार्थ दृष्टि में रखना होता है।

साथ ही ऐसे राजनैतिक समझौते की भी कोई जड़ नहीं होती जिनमें एक पक्ष का स्वार्थ दूसरे पक्ष से अधिक हो। वे किसी भी समय उन स्वार्थों की पूर्ति या किसी भी पक्ष द्वारा या तो खुल्लम खुल्ला ठुकराये जा सकते हैं अथवा बहाने ढूंढकर उनके स्थान में नवीन समझौता करने के लिये दोनों पक्षों में फिर संघर्ष होना अवश्यम्भावी हो जाता है। इन मनोवैज्ञानिक और इतिहासिक सत्यों पर दृष्टि रखते हुए समस्त मानव जाति के लिये केवल एक ही समझौता हो सकता है और वह है सबके समान नागरिकता के अधिकारों का। शेष समझौता अन्याय और मूर्खता पूर्ण एवं अस्थायी होता है और यही कांग्रेस और मुस्लिम लीग के समझौते के बारे में भी सत्य है।

हमें हर्ष है कि मुस्लिम लीग की भेद की नीति को मुस्लिम-जगत ने वास्तविक रूप में पहचान लिया है और मुस्लिम लीग की विशेषाधिकारों की अन्याय पूर्ण माग के बावजूद भी विशेषाधिकारों की अपेक्षा मताधिकारों को ही विशेष उपयोगी समझने लगे हैं।

यदि किसी को सन्देह होगा भी तो वह आसाम की गत दो दिनों की घटनाओं से दूर

भक्ति है। हजरत मोहम्मद साहब ने कहा है कि देश ईमान का एक भाग है और अगर आप में देश प्रेम नहीं तो सच्चे मुसलमान नहीं हैं जो मुसलमान भारत में पैदा होकर इसको देश नहीं कहते तो क्या वह अपने को मुसलमान कह सकते हैं तो फिर क्या वह भारत में पैदा होकर इंगलिस्तान को अपना वतन कहेंगे। शोक है उन लोगों पर जो देश भक्ति की जगह देश द्रोही हैं जिस मिट्टी से पैदा हुये जिसका पानी पिया जिसकी हवा खाई उसको ही धोखा दे रहे हो अगर अपनी माताओं की गोदों को स्वर्ग समझते हो तो यह भी जानो कि जिस भूमि ने तुम्हें पैदा किया, पाला पोसा जहां पर आप खेलते कूदते हैं जिसकी छाती पर आप चलते हैं उस को भी माँ समझो आपको क्या मालूम नहीं उन देश भक्तों की बाबत जिन्हों ने अपनी जानें इसके लिये निछावर की उनको जीती जागती ज्योति आज इतिहास से एक झलक पैदा कर रही है।

क्या आप देश भक्ति को बुत परस्ती समझते हो ! नहीं। यह बुत परस्ती नहीं है यह तो ईश्वर भक्ति है।

पत्थर की मूर्ति में समझा है तू खुदा है।
खाके वतन का हर ज़र्रा मुझको देवता है॥

बहुत सारे भाई बंकिम चटर्जी के बनाये हुये वन्दे मातरम् गीत पर ही झगड़ा कर देते हैं वह कहते हैं कि भारत की इतनी बड़ाई की गई जो इसको शोभा नहीं देती और जो जो वस्तुएं इस गीत में बताई गई हैं वह यहां पर होती भी नहीं इसलिये वह गीत तो ठीक नहीं है, मुझे तो यह सुनकर हंसी आती है बनको समझना चाहिये कि कविता में तमाम हकीकत नहीं हुआ करती है अगर ऐसा हो तो भारत को

तो क्या आज संसार की कविताओं से हाथ धोना पड़े। यह सब बातें क्या हैं? क्या आप अपनी जाति और देश को नीचा नहीं दिखा रहे हो? आप जातियों में फूट की बेल बो रहे हो। मैं आपसे पूछती हूँ अगर वन्दे मातरम् की जगह कोई दूसरा गीत रख देते तो क्या मुसलमान कांग्रेस में मिल जावेंगे आप अगर ठण्डे दिल से सोचें तो कोई भाग भी वन्दे मातरम का बुरा नहीं न इसमें किसी के धर्म की बढ़ाई है न इसमें बुत परस्ती है।

बहुत सारे भाई कांगरेस के झण्डे पर ही लड़ाई कर बैठते हैं, समझ मे नहीं आता इनकी समझ को क्या हो गया है। सब राष्ट्रों के लिये झण्डा एक आवश्यक वस्तु है। इस के लिये आज लाखों ने बलिदान किया है। हमारे देश का यह एक चिह्न है इसको भग करना पाप है, क्योंकि झण्डा किसी आदर्श का प्रतिनिधि है फहराता हुआ यूनियन जैक एक अंगरेज के हृदय मे उन भावों को उत्पन्न करता है जिसकी ताकत का अनुमान करना कठिन है। तारों का समूह और वे धारे पट्टे अमेरिका निवासियों के लिये सब कुछ हैं। सितारे और अर्धचन्द्र को देखते ही एक मुसलमान के हृदय मे ऊंचा वीरता का भाव जागृत हो जाता है इसी तरह हिन्दू, मुसलमान यहूदी, पारसी तथा अन्य जाति और धर्म के लोगो को जो भारत को अपना वतन समझते हैं उन सब भारतीयों को एक ऐसा सामान्य झन्डा मान लेना चाहिए जिसके लिए हम जिंदा रहें या मरें। महात्मा गांधी ने इस झन्डे को बड़ी सोच समझ के साथ बनाया है उन्होंने ... के लिए रक्खा है जो ...ग सब छोटे

सब से बड़ी गृह शिल्प खद्दर

भारतवर्ष तब तक स्वतन्त्र नहीं हो सकता जब तक कि हम लोग जान बूझकर देश के धन को इसी तरह विदेशों को देते रहेंगे जैसे कि पिछले दो सौ वर्षों से दे रहे हैं ६० करोड़ रुपये का कपड़ा सालाना विदेश से आता है और यह सब से बड़ी आर्थिक हानि है। यदि यह रोकी जा सकती है तो यही कार्य स्वराज का भागी बना देगा।

विदेशी सौदागरों की तृष्णा पूरी करने के लिये ही भारत को गुलाम बनाया गया। जिस समय कि ईस्टइंडिया कम्पनी यहां आई थी उस समय हम अपनी आवश्यकताओं के इलावा बाहर भेजने के लिये काफी कपड़ा तय्यार करते थे परन्तु विदेशी हकूमत ने किसी न किसी तरह से इस शिल्प को नष्ट कर दिया। इस समय भारत को सब से बड़ी आवश्यकता स्वदेशी की है हिन्दुस्तान के लिये यही सबसे बड़ा सुधार है। देश की हकूमत किस तरह चलाई जावे इस सवाल को तो थोड़ी देर के लिये छोड़ भी दिया जावे तो भी

णीय मनुष्यों को भी अच्छी तरह खाने पीने को नहीं मिलता।

इस अनिष्ट को रोकने का एक उपाय है। अगर हर एक पढ़ा लिखा हिन्दुस्तानी अपने सबसे बड़े कर्तव्य को समझे तो वह अवश्य अपने घर की स्त्रियों को सूत कातने के काम में लगा देगा। इस तरह रोज लाखों गज सूत तैयार हो सकता है। अगर हर एक पढ़ा लिखा भारतीय इस सूत से बने हुए कपड़े को पहनने का निश्चय कर ले तो हिन्दुस्तान के गरीबों को बड़ी मदद मिलेगी।

इसके सिवा हिन्दुस्तान के किसानों की दशा बड़ी बुरी है, खेती से जितना पैदा होता है उससे उनको गुज़र नहीं चलती इसलिये साथ में उनको और कोई रोज़गार करना भी जरूरी है, कातने का काम ही एक ऐसा काम है जो उनके लिए सबसे सहज अच्छा और लाभदायक है।

कितने ही सुधारक लोग कहते हैं कि हमको उत्तरदायी शासन मिलने दो उसके बाद हम हिन्दुस्तानी उद्योग धन्धों की रक्षा करेंगे। उस समय न हमारी स्त्रियों को कातना और जुलाहों को बुनना पड़ेगा" पर सचाई इसमें दिखाई नहीं पड़ती। जब तक हमारे हाथ में विदेशी माल पर भारी महसूल लगाने की ताकत आवे तब तक राह देखते रहना असम्भव है और इस उपाय से कपड़े के दाम भी नहीं घट सकते, दूसरी बात यह है कि इस उपाय से लाखों भूखे मरने वालों का कोई फायदा नहीं हो सकता। इन गरीब लोगों को मदद तब ही की जा सकती है जबकि कातने काम में सब को लगा दिया जावे। इसी से इनकी बढ़ सकती है।

सुख और समृद्धि उस समय डूबी जब चरखा डूबा। चरखे की पुकार से हिन्दुस्तान शायद ही पहले कभी जगा हो। जनता उसे अपना जीवन दाता समझती है। स्त्री उसे अपने सतीत्व का रक्षक समझती है। विधवाओं का चरखा ही मित्र है। उस के पुनर्जीवन से ही लाखों भूखे प्राणियों के मुंह में अनाज जायगा। १६०० मील लम्बे और १५२० मील चौड़े भूमि खंड के किसानों की बढ़ती हुई गरीबी का सवाल किसी भी औद्योगिक सुधार योजना से हल नहीं हो सकता। भारत कोई छोटा सा देश नहीं बड़ा ही विशाल है। हम अपनी टूटी फूटी झोंपड़ी में रुई से कपड़ा बना कर ही अपने देश के धन की वृद्धि कर सकते हैं। भारतीयों के जीवन के लिये हवा और पानी के समान, चरखा भी आवश्यक वस्तु है।

इसके सिवा यह मुसलमानों के लिये भी उतने ही प्रयोग की वस्तु है जितनी हिन्दुओं के लिये है, मुसलमान महिलायें तो इसको और भी जल्दी ग्रहण कर सकती हैं क्योंकि वे परदा नशीन होती हैं। गरीब पति अगर थोड़ा कमाता है तो महिला का काम है वह भी चरखा कात कर उसमें थोड़े से पैसे डाल दे। अतएव चरखा हमारे राष्ट्रीय जीवन की सब से महत्व की और सामान्य वस्तु है उसके द्वारा हम दुनिया को बताते हैं कि कम से कम अपने भोजन वस्त्र के लिये हम ने दुनिया में आज़ाद होना तय कर लिया है

रोटी के बाद मनुष्य की दूसरी आवश्यकता वस्त्र की होती है भारती अपने तन को, तीन प्रकार के कपड़े पहन कर अपने शरीर को ढांपते हैं पहला

रेशमी दूसरे मिलों के बुने हुये, तीसरे हाथ का बुना हुआ खद्दर, पहली हालत में हमारा धन सब का सब बाहर चला जाता है, केवल दलाल को थोड़ी सा दलाली ज़रूर मिल जाती है यह दलाली लग भग दो या तीन पैसा फी रुपया होती है। यूं कहिये कि रुपये में पन्द्रह आने बाहर चले जाते हैं दूसरी हालत में करोड़ों रुपया खर्च करके मशीनें मंगवानी पड़ती हैं फिर हर साल पुर्जों के घिस जाने पर नये पुर्ज़े मंगवाने पड़ते हैं इस तरह हिसाब लगाया गया है कि रुपये में से बारह आने बाहर जाकर चार आने हमारे पास बचते हैं तीसरी हालत खद्दर बरतने की है इस हालत में हमारी एक फूटी कौड़ी भी बाहर नहीं जाती रुई हमारे देश में पैदा होती है बेलने या धुनकने वाला अपने पास होता है कातने में बहन और माताएं अपना फालतू समय लगा देती हैं कपड़ा बुनने वाला गरीब जुलाहा पैसे कमा कर अपना पेट भर लेता है चन्द धोबियों का गुजारा भी इसी पर है। एक रुपया की खद्दर में किसी को क्या मिलता है इस नक्शे से पता लगा लीजिये।

कपास बेचने वाले को	=) आने
बेलने वाले को	)॥। आ०
धुनने वाले को	-)। आ०
कातने वाले को	।)॥ आ०
बुनने वाले को	।)॥ आ०
धोबी को	)॥ आ०
बेचने वाले को	-) आ०
	१६ आना

वेद कुरान और बाईबल की शिक्षा को प्रयोग में नहीं लाते तो उन के पढने से क्या लाभ ! असल चीज़ अमल है बिना अमल के किसी शिक्षा पर भरोसा रखना बेकार है।

अहिंसा में बहुत बड़ी शक्ति छुपी हुई है महात्मा जी का यह पैगाम है कि हर छोटा मनुष्य बड़ा बन सकता है और अमीर गरीब-सब देश की सेवा कर सकते हैं जो लोग बहुत अमीर हैं वह अपने ख्याल से जरा नीचे उतर आवें और अपने जीवन को सादगी से बसर करें, और लगन के साथ अपनी आवश्यकताओं को घटाते चले जाओ एक दिन वह आवेगा कि आप का जीवन आप को सुखी दिखाई पड़ेगा, अगर ऐसा आप कर देवें तो किस विदेशी की मजाल है कि वह आप पर राज्य कर सकें।

हमारी शिक्षा प्रणाली के दोष

जिन दिनों यहां की शिक्षा प्रणाली दुनियां के लिये एक
आदर्श बनी हुई थी। तब तक यहां पर हर तरह से आनन्द
मंगल था। धन दौलत से यह देश माला माल था। कला-
कौशल तथा शिक्षा में इस देश की कोई अन्य देश बराबरी न
कर सकता था। यहां तक कि देवता भी भारत भूमि में जन्म
लिया करते थे। परन्तु जब से भारत वर्ष में अंग्रेजों के
चरण फिरे हमारी हर एक चीज पर पानी फिर गया।
आशायें निराशा रूप में बदल गयीं। यानी जिस समय यह
राक्षस भारत में आये और धोखे बाजी से भारत के कुछ
इलाकों पर अपना कब्जा जमा लिया और इनके सामने सब
से बड़ा प्रश्न यह था कि हिन्द में किस प्रकार अपना राज्य
स्थापित करें। विशेषतया अंग्रेज पश्चिमी संस्कृति और सभ्य
ता को हमारी संस्कृति और सभ्यता से उच्च समझते आये हैं
मैकाले जैसे विद्वान की दृष्टि में भारत वर्ष के साहित्य का दो
कौड़ी मूल्य भी न था इस कारण इसने यह दृढ़ निश्चय
किया कि इस देश में यदि हम अपना साहित्य और अपनी
संस्कृति फैला दें तो तब ही हमारा राज्य भारत वर्ष में अधिक
दिनों तक स्थापित रह सकता है। एवम् इस
को ध्यान में रखते हुये हिन्दुस्तान की संस्कृति
को रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया। इस

हमारी इस अज्ञानता से यह सरकार प्रतिदिन बलवान होती जाती है और इसी कारण से हम को वास्तविक शिक्षा नहीं दी जाती । स्कूलों में और कालिजों में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं वे बहुत छानबीन के बाद देश द्रोहियों के द्वारा विद्यार्थियों और अध्यापकों के सामने पेश की जाती हैं जिन को पढ़ने से उनका हृदय कठोर हो जाता है और उन को देश का कुछ भी ध्यान नहीं रहता । वे किसी प्रकार का भी उन्नति नहीं कर सकते कितनी महगी शिक्षा है परन्तु उस का लाभ कुछ भी नहीं ।

पश्चिमी सभ्यता ने भारत की सभ्यता पर और अधिक तर नवयुवकों के जीवन पर जो प्रभाव डाला है उसका वर्णन करना बहुत कठिन है । नवयुवकों पर जो इसका बुरा प्रभाव पड़ा है उसके छुटकारे के लिये उनके प्राणों की बलि के सिवा और पथ नहीं दिखाई पड़ता । इस सभ्यता ने अद्भुत मनुष्य उत्पन्न कर दिये हैं । हर एक के दिल में बाबू बनने की समाई हुई है न मालूम बाबूपन को डिगरी कौन सा ऐसा टिकट है जो कि तुम्हें बहिश्त के दरवाज़े तक पहुचाने में सहायता करेगा । यदि आजकल के बाबुओं की प्रशंसा की जावे तो मेरी समझ में इस से अच्छी और क्या होगी । 'अजीब प्रकार के वस्तर पहनना, कंघा और शीशा अपनी जेब में रखना, मटक कर चलना और अन्य ऐसे कार्य्य करना जो एक साधारण जन से भिन्न हों । जिस समय भारत के नवयुवक विदेशी भाषा बोलते हैं तो लट्टू हो जाते हैं और इस के बदले अपनी मातृभाषा को निहायत गन्दी और नीची हैं । यदि उन के स्वास्थ्य की ओर ध्यान किया जावे

तो शरीर में मास का नाम-निशान तक नहीं मिलेगा, केवल हड्डियों का ढांचा दिखाई पड़ता है। लेकिन फिर भी वे लोग भागने दौड़ने के योग्य हैं। हाथ निर्बल होने पर भी कलम पकड़ने और हंटर स भालने के योग्य हैं। परन्तु यह सब क्या? पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव। यह एक शोचनीय बात है कि हमारे राज्याधिकारियों के दिलों में बाबू का अर्थ केवल मुहरिर या मुन्शी है। फिर भी हम लोग यह इच्छा रखते हैं कि बाबू बनें। आधुनिक काल की चाल देखिये। धनहीन लोगों के लिये बाबू का शब्द धनवान का चिह्न है। मज़दूर और मुलाज़िम लोग बाबू अपने स्वामी को कहते हैं। आजकल बाबू शब्द की प्रशंसा कहां तक की जावे। जिस समय हम किसी दूसरे की ज़बान से बाबू की उपाधि पाते हैं तो हमारे दिलों में वह जोश पैदा होता है, कि जैसे इस साम्राज्यके हम ही स्वामी हों। हमारे पूजनीय बैंकम चटरजी ने तो बाबू की प्रशंसा और प्रकार से की है। उनका कहना है बाबू लोग अगस्त ऋषि की भान्ति समुद्र को सुखा देंगे काच का गिलास उन का शस्त्र होगा। अग्नि देवता उन के आधीन रहेगा हुक्का और सिग्रेट दो नए आभूषण इनके मुख की शोभा देते रहेंगे। और केवल इतना ही नहीं। जिस प्रकार उन लोगों के मुख में आग लगी हुई होगी इसी प्रकार उन के दिल में भी हर समय आग लगी रहेगी। संगीत और कविता में भी अग्नि देवता मौजूद रहेंगे वहां पर इसके दो रूप होंगे। वे लोग हवा खाया करेंगे मगर सभ्यता के कारण उसका नाम प्रभात भ्रमण रक्खेंगे। चन्द्रमा देवता (बिजली) उन लोगों के घर और बाहर रहेंगे उनको सूर्य भगवान् के कभी दर्शन नहीं होंगे। आजकल के विद्यार्थी काव्य का

डिग्रीयां अपने नाम के आगे बढ़ाने के सिवाय कुछ काम नहीं आतीं। एक विद्यार्थी गणित और विज्ञान में एम० ए० करके किसी स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाने लगजाता है। भला सोचो तो सही कि वह कहां तक ठीक शिक्षा दे सकता है। प्रत्येक प्रांत में हमारी यूनीवर्सिटीयों के निकाले हुए विद्यार्थियों की बीसियों पीढ़ियां बीत चुकी हैं लेकिन अभी तक कोई भी सच्चा इतिहास वेत्ता, और वैज्ञानिक नहीं हो सका है। यह हो सकता है कि एक दो ने विदेशों में शिक्षा प्राप्त करके कुछ ज्ञान पाया हो। यहां शिक्षा को आजीविका कमाने का एक ढंग समझते हैं लेकिन वह भी सरकार की इच्छा पर है हमारी यूनीवर्सिटीयों में आजीविका कमाने वाली शिक्षा नहीं दीजाती मिशन स्कूलों में भारतीयों को बाईबिल की शिक्षा दीजाती है और उनको ईसाई बनाने के लिए तरह २ के प्रलोभन दिए जाते हैं और अपने धर्म से पतित किया जाता है। इस शिक्षा ने हमारे नवयुवकों के सदाचार को भ्रष्ट करदिया यह शिक्षा हमें केवल नकल करना सिखाती है। इसका प्रभाव हमारे हृदय पर भी बुरा पड़ता है और अन्त में हम पश्चिमीय सभ्यता के भाड बन जाते हैं। हम पश्चिमीय सभ्यता की नकल करते हैं और अपनी सभ्यता के गुणों को छोड़ते जाते हैं। आज कल के विद्यार्थियों की परीक्षा लेने का ढंग ही निराला है जो नवयुवकों के मन और मस्तिष्क को एक सीमा तक नष्ट कर देता है ग्राम के प्राईमरी स्कूलों से लेकर डिग्री लेने तक बहुतेरी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना पड़ता है। साल भर की परीक्षायें लड़के और लड़कियों के जीवन को नष्ट कर देती हैं अगर एक विद्यार्थी किसी प्रश्न के निकालने में

तनिक भी भूल करता है तो इसका एक वर्ष इसके जीवन से दूर कर दिया जाता है। भला ऐसा क्यों ? अगर भूल हो भी गई तो क्या हुआ वह वर्ष भर स्कूल जाता रहा, लगातार शुल्क देता रहा फिर इसे ऐसी कठोर सजा क्यों दी जाती है अगर उसका मस्तिष्क कमजोर है तो इसमें उसका कोई अपराध नहीं प्रकृति ने ही आदि से बेचारे को ऐसा बनाया है असफलता से इसका मस्तिष्क और भी बिगड़ेगा, वर्ष भर में इन्सपेक्टर कई बार बालकों के स्कूलों में आकर उनके हृदयों पर भय और प्रभाव बैठा देते हैं उनके मन में दासता का भाव उत्पन्न होजाता है दूसरी तरफ देखिये हमारे बालकों के जीवन के कितने अमूल्य वर्ष इन गन्दे विचारों में व्यतीत हो जाते हैं तीसरी चौथी कक्षाओं में लाखों बच्चे असफल हो जाते हैं और हजारों आठवीं दसवीं में, सैकड़ों एफ० ए० बी० ए और एम० ए० में। लड़के के लिए असफल हो जाना एक वर्ष की कैद के समान है माता पिता के सिर पर एक और वर्ष का खर्च। यह सब किस लिए ?

अमरीका और योरोप में अगर कोई विद्यार्थी विद्या पढ़ने में कमजोर होता है तो उसके अध्यापक को सजा दी जाती है। विद्यार्थी का एक वर्ष खराब करने का किसी को अधिकार नहीं है। अगर कोई विद्यार्थी असफल रह जाता है। उसके सम्बन्धी अध्यापक पर नालिश कर देते हैं।

आज देश कालिजों व स्कूलों में देश के नवयुवकों को कुटिल रीति पर चलने का पाठ पढ़ाया जाता है। उनके जीवन को परतन्त्रता के साँचे में ढाल कर उनको अर्थात् इतना निर्बल बना देते हैं कि

रखकर भारत वर्ष को फिर से तपोवन में परिवर्तित करना चाहते हैं, कोई विश्वप्रेमकी स्थापना करके इस देश को पुनः सब देशों का शिक्षा गुरू बनाना चाहते हैं। कोई सुन्दर अहातों और विशाल भवनों में ही भारत वर्ष का कल्याण देख रहे हैं और कोई कुछ पढ़े लिखे राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने की धुन में ही लगे हुये हैं। जिस प्रकार कोई कैदी जेल खाने का बन्धन तोड़कर निकल भागने की कोशिश में अ कुआ देखता है न खाई, ठीक उसी प्रकार आंखें मूंद कर हम भागे जा रहे हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ऊपर जिन संस्थाओं का उल्लेख किया गया है, उन सबके ध्येय अलग अलग हैं और उन पर वे कायम हैं, परन्तु मेरी राय में शिक्षा का ध्येय तो एक ही है, और वह है शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्तियों का विकास। उदर-पालन का प्रश्न भी इन तीनों पर ही अवलम्बित है। और जो शिक्षा हमारे लिये उपयोगी और समयानुकूल नहीं है वह शिक्षा ही किस काम की। अन्ध परम्परा के वशीभूत होकर पुरानी लकीर के फकीर बन कर हम क्या अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे जीवित रह सकेंगे ? तो फिर गेरुआ वस्त्र पहन कर संस्कृत की कोमलकान्त पदावली रटकर या कविता बना कर देश, समाज और जाति का कल्याण कर सकते हैं ?, उदर-पूर्ति की समस्या हल कर सकते हैं ? इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम अपनी पुरानी भाषा, कविता या सङ्गीत को त्याग दें। तात्पर्य यह है कि ये सब विषय गौण हैं, प्रधान नहीं। समय मिलने पर ही और ध्यान दिया जा सकता है। मो, ब्स ।

जब हमारे समाज और राष्ट्र का पूर्ण रूपसे सङ्गठन हो चुका है। पर हमें समय है कहाँ? हम क्या शारीरिक शक्तियों का विकास छोड़कर, उद्योग धन्धों को तिलाञ्जलि देकर कविता और सङ्गीत की ओर मुड़ें? हमने अब विज्ञान और शिल्प-कलाओं की तरफ एक नजर देखने का कष्ट किया है जो मनोरञ्जक और ललित कलाओं की ओर दूसरी नज़र डालें? आज हमें यह मानने की ज़रूरत है कि किस शिक्षा, किस विद्या और किस ज्ञान की अन्य-अन्य शिक्षा, विद्या या ज्ञान के मुकाबले कितनी क़ीमत है। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारा असन्तोष व्यर्थ है। सूर, तुलसी, शेक्सपियर और मिल्टन के ग्रन्थ पढ़ाने वाली बहुत सी सरकारी और गैरसरकारी संस्थायें मौजूद हैं, उनकी संख्या बढ़ाने से क्या फायदा? इसके अतिरिक्त हमारी सरकार को औद्योगिक और वैज्ञानिक शिक्षा के लिये भले ही फुरसत नहीं हो, हम यदि थोड़ी सी कोशिश करें तो बी० ए० एम० ए० वाली दो चार संस्थाएं वह आसानी से खोल देगी। ज्ञान का भण्डार तो अपार है लेकिन हमारी जिन्दगी बहुत थोड़ी है। समस्त ज्ञान इस थोड़ी-सी जिन्दगी में उपार्जन करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इस लिये हमारे लिये तो जीवन सग्राम में लाभदायक शिक्षा की ओर ही अधिक और सबसे पहले ध्यान देना आवश्यक है।

शिक्षा प्रणाली के अद्वितीय विद्वान हर्बर्ट स्पेन्सर ने भी कहा है कि जो शिक्षा प्रत्यक्ष और परोक्ष रीतियों से हमें आत्म रक्षा के योग्य बनाती है वह पहले दर्जे की है, अन्यान्य ... का क्रम पीछे आता है। लेकिन

रखकर भारत वर्ष को फिर से तपोवन में परिवर्तित करना चाहते हैं, कोई विश्वप्रेमी स्थापना करके इस देश को पुनः सब देशों का शिक्षा गुरू बनाना चाहते हैं। कोई सुन्दर अहातों और विशाल भवनों में ही भारत वर्ष का कल्याण देख रहे हैं और कोई कुछ पढ़े लिखे राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने की धुन में ही लगे हुये हैं। जिस प्रकार कोई कैदी जेल खाने का बन्धन तोड़कर निकल भागने की कोशिश में न कुआ देखता है न खाई, ठीक उसी प्रकार आँखें मूँद कर हम भागे जा रहे हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ऊपर जिन संस्थाओं का उल्लेख किया गया है, उन सबके ध्येय अलग अलग हैं और उन पर वे कायम हैं, परन्तु मेरी राय में शिक्षा का ध्येय तो एक ही है, और वह है शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्ति का विकास। उदर-पालन का प्रश्न भी इन तीनों पर अवलम्बित है। और जो शिक्षा हमारे लिये उपयोगी और समयानुकूल नहीं है वह शिक्षा ही किस काम की। अन्ध परम्परा के वशीभूत होकर पुरानी लकीर के फकीर बन कर हम क्या अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जीवित रह सकेंगे? तो फिर गेरुआ वस्त्र पहन कर संस्कृत की कोमलकान्त पदावली रटकर या कविता बना कर देश, समाज और जाति का कल्याण कर सकते हैं? उदर-पूर्ति की समस्या हल कर सकते हैं? इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम अपनी पुरानी भाषा, कविता या सङ्गीत को त्याग दें। तात्पर्य यह है कि ये सब विषय गौण हैं, प्रधान नहीं। समय मिलने पर ही उनकी ओर ध्यान दिया जा सकता है और वह भी उस हालत

व हमारे समाज और राष्ट्र का पूर्ण रूपसे सङ्गठन हो चुका ी। पर हमे समय है कहां ? हम क्यों शारीरिक शक्तियों का वकास छोड़कर, उद्योग धन्धों को तिलांजलि देकर कविता और संगीत की ओर मुड़े ? हमने अब विज्ञान और शिल्प-कलाओं की तरफ एक नजर देखने का कष्ट किया है जो मनोरञ्जक और ललित-कलाओं की ओर दूसरी नज़र डालें ? आज हमें यह मानने की जरूरत है कि किस शिक्षा, किस विद्या और किस ज्ञान को अन्य-अन्य शिक्षा, विद्या या ज्ञान के मुकाबले कितनी कीमत है। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारा असन्तोष व्यर्थ है। सूर, तुलसी, शेक्स-पियर और मिल्टन के ग्रन्थ पढ़ाने वाली बहुत सी सरकारी और गैरसरकारी संस्थायें मौजूद हैं, उनकी संख्या बढ़ाने से क्या फायदा ? इसके अतिरिक्त हमारी सरकार को औद्योगिक और वैज्ञानिक शिक्षा के लिये भले ही फण्ड नहीं मिले, हम यदि थोड़ी सी कोशिश करें तो बी० ए० एम० ए० वाला दो चार संस्थाएं वह आसानी से खोल देगी। ज्ञान का भण्डार तो अपार है लेकिन हमारी जिन्दगी बहुत थोड़ी है। सभी ज्ञान इस थोड़ी-सी जिन्दगी में उपार्जन करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इस लिये हमारे लिये तो जीवन संग्राम में लाभदायक शिक्षा की ओर ही अधिक और सबसे पहले ध्यान देना आवश्यक है।

शिक्षा प्रणाली के अद्वितीय विद्वान हर्बर्ट स्पेन्सर ने भी कहा है कि जो शिक्षा प्रत्यक्ष और परोक्ष नीतियों से हमें अपनी रक्षा के योग्य बनाती है वह पहले दर्जे की है, अन्यान्य [illegible] का क्रम पीछे आता है। लेकिन सभी

रखकर भारत वर्ष को फिर से तपोवन में परिणत करना चाहते हैं, कोई विश्वप्रेमी स्थापना करके इस देश को पुनः सब देशों का शिक्षा गुरू बनाना चाहते हैं। कोई सुन्दर अट्टालों और विशाल भवनों में ही भारत वर्ष का कल्याण देख रहे हैं और कोई कुछ पढ़े लिखे राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने की धुन में ही लगे हुये हैं। जिस प्रकार कोई कैदी जेल खाने का बन्धन तोड़कर निकल भागने की कोशिश में न कुछ देखता है न खाई, ठीक उसी प्रकार आँखें मूंद कर हम भागे जा रहे हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि ऊपर जिन संस्थाओं का उल्लेख किया गया है, उन सबके ध्येय अलग अलग हैं और उस पर वे कायम हैं, परन्तु मेरी राय में शिक्षा का ध्येय तो एक ही है, और वह है शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्तियों का विकास। उदर-पालन का प्रश्न भी इन तीनों पर ही अवलम्बित है। और जो शिक्षा हमारे लिये उपयोगी और समयानुकूल नहीं है वह शिक्षा ही किस काम की। अन्ध परम्परा के वशीभूत होकर पुरानी लकीर के फकीर बन कर हम क्या अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जीवित रह सकेंगे? तो फिर गेरुआ वस्त्र पहन कर, संस्कृत की कोमलकान्त पदावली रटकर या कविता बना कर देश, समाज और जाति का कल्याण कर सकते हैं? उदर-पूर्त्ति की समस्या हल कर सकते हैं? इसका तात्पर्य यह नहीं
भाषा, कविता या सङ्गीत को
सब विषय गौण हैं,
और ध्यान दिया जा सके

...ब हमारे समाज और राष्ट्र का पूर्ण रूपसे सङ्गठन हो चुका ...। पर हमें समय है कहां ? हम क्यों शारीरिक शक्तियों का ...विकास छोड़कर, उद्योग धन्धों को तिलांजलि देकर कविता ...और संगीत की ओर मुड़े ? हमने अब विज्ञान और शिल्प-...कलाओं की तरफ एक नज़र देखने का कष्ट किया है जो ...मनोरञ्जक और ललित-कलाओं की ओर दूसरी नज़र डालें ? ...आज हमें यह मानने की ज़रूरत है कि किस शिक्षा, किस ...विद्या और किस ज्ञान को अन्य अन्य शिक्षा, विद्या या ...ज्ञान के मुकाबले कितनी क़ीमत है। यदि हम ऐसा नहीं कर ...सकते तो हमारा असम्तोष व्यर्थ है। सूर, तुलसी, शेक्स-...पियर और मिल्टन के ग्रन्थ पढ़ाने वाली बहुत सी सरकारी ...और गैरसरकारी संस्थायें मौजूद हैं, उनकी संख्या बढ़ाने से ...क्या फायदा ? इसके अतिरिक्त हमारी सरकार की ...औद्योगिक और वैज्ञानिक शिक्षा के लिये भले ही फण्ड नहीं ...मिले, हम यदि थोड़ी सी कोशिश करें तो बी० ए० एम० ए० ...वाली दो-चार संस्थाएं वह आसानी से खोल देगी। ज्ञान का ...भण्डार तो अपार है लेकिन हमारी जिन्दगी बहुत थोड़ी ...। समस्त ज्ञान इस थोड़ी सी जिन्दगी में उपार्जन करना ...कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। इस लिये हमारे लिये तो ...जीवन संग्राम में लाभदायक शिक्षा की ओर ही अधिक ...और सबसे पहले ध्यान देना आवश्यक है।

...प्रणाली के अद्वितीय विद्वान हर्बर्ट स्पेन्सर ने भी ...जो शिक्षा प्रत्यक्ष और परोक्ष रीतियों से हमें ...। है यह पहले दर्जे की है, अन्यान्य ...ओं का क्रम पीछे आता है। लेकिन

प्रसंगवश मुझे एक दिलचस्प बात की याद आ रही है। मेरे एक मित्र भारतीय संस्कृति के बड़े क़ायल हैं। एक राष्ट्रीय संस्था के संचालक भी हैं। यदि वे किसी के सिर पर अंग्रेज़ी बाल देखते हैं तो चिढ़ जाते हैं। किसी को कोट पेन्ट पहने देखा तो आगबबूला हो गये। पर यदि खूब खुलता पायजामा और 'जवाहर-कट' की निमास्तोन और चप्पल देखी तो फूल नहीं समाते, मानो भारतीय संस्कृति आँखों के आगे नाचने लगी। मैंने उनसे पूछा कि साहब, आपको अंग्रेज़ी चाल के पहनावों से चिढ़ है या अपनी संस्कृति से प्रेम ? आप कृपाकर भारतीय संस्कृति को अलग करने वाली एक सीमाबन्दी रेखा खींचकर मुझे बतलाइये, जिससे मालूम हो कि हमें ऐसे वस्त्र और बाल रखने चाहियें। बहुत इधर उधर करने के बाद उन्होंने कहा कि मुसलमानों के आने के पहले की संस्कृति भारतीय कही जाने योग्य है। अब हमें उस काल के 'वस्त्र और बाल' का खाका खींचना होगा और उसे इस युग के पलड़ों पर रखकर देखना होगा कि वे सच मुच आज के संसार में काम के योग्य ठहरते हैं या नहीं। यथार्थ में हमने स्वयं व्यर्थ के झगड़े खड़े कर इन बातों को उत्तरोत्तर जटिल कर दिया है। ऐसे-ऐसे प्रश्नों पर मेरा विचार है कि हमें अपनी संस्कृति के मूल आधार पर झुकना चाहिये, न कि उसके आकार प्रकार पर, हमारी संस्कृति का आधार स्तम्भ 'सादगी' है। चाहे हमारे वस्त्र और चाल के 'कट' कुछ भी हों। आदर्श एक चीज़ है, व्यवहार दूसरी। सभी लोग महात्मा गांधी नहीं हो सकते और न उनकी तरह एक चादर और घुटने तक की धोती कर रह सकते हैं।

धर्म का अर्थ हमारे ऋषियों ने खूब सोच कर रक्खा है और यही अर्थ सब समय सब अर्थ में मोजूं है। जिसने अपना कर्तव्य पहचाना वही धार्मिक है। कर्तव्यच्युत की रक्षा स्वयं भगवान भी नहीं कर सकते और न इससे लगे हुये धब्बों को विष्णु सहस्र नाम के पाठ से ही धो डालने में समर्थ हो सकते हैं। धार्मिक जीवन बिताने के लिये हमें काम करना पड़ेगा और काम करने के लिये जानना पड़ेगा कि हमारा कर्तव्य क्या है। धर्म का दूसरा व्यापक अर्थ चारित्र्य है, जिसके द्वारा हम किसी के अच्छे बुरे कर्मों की परीक्षा करते हैं। सारांश यह है कि हमें धर्म और मत का भेद खूब समझ कर धार्मिक शिक्षा के विषय में अपने प्रस्ताव रखने चाहियें और शिक्षालयों में कर्तव्य और चारित्र्य की ही शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये, किसी मत विशेष की नहीं।

सरकारी विद्यालयों में धर्म हीन शिक्षा की बराबर शिकायतें होते रहने पर अधिकारियों ने स्कूलों में पढ़ाई आरम्भ करने के पहले दस मिनट प्रार्थना कराने की अनुमति दे दी है। बस, धार्मिक शिक्षा की समस्या हल हो गयी! हमारे राष्ट्रीय विद्यालय, जो सुधार के ख्याल से मैदान में उतरे हैं व्यक्तिविशेषों के इशारों के अनुसार सञ्चालित हो रहे हैं। यहां मूर्ति पूजा और कथा कथित सनातन धर्म के हामी सञ्चालक हैं, वहां दिन में सात बार हरिनाम यश-संकीर्तन और रामायण के गान में धार्मिक शिक्षा का रूप देखा जा रहा है, वहां ईश्वरवाद और अनीश्वरवाद के तर्क वितर्क में।

दूसरी बड़ी त्रुटि जो हमें देखने में आरही है, वह है पाठ

देने की विधि में। हम चीजों की अपेक्षा शब्दों को अधिक महत्व देते हैं, जिससे हमारी शिक्षा अधिकतर काल्पनिक होती है। हमें इतिहास सिर्फ इस गर्ज से नहीं पढ़ाना चाहिये कि हमारे पूर्वज बड़े धीर-गम्भीर और वीर थे, बल्कि इस गर्ज से पढ़ाना चाहिये कि हमारी अधोगति क्यों हुई? हम क्यों हजारों वर्षों से परतन्त्र हैं? हममें कौन त्रुटियां बराबर चल रही हैं और आये दिन ठीक उसी प्रकार की घटनाओं के उपस्थित होने पर इन त्रुटियों के निवारणार्थ क्या प्रयत्न कर रहे हैं। किसी विद्यार्थी को यह कह देने ही से काम नहीं चलेगा कि नया शासन विधान महज खराब, देश हित विरोधी और कई अंशों में प्रतिक्रियागामी है। इससे हमारी स्वतन्त्रता एक सीढ़ी भी ऊपर नहीं पहुँची। बल्कि हमें शासन विधान और शासकों की शासन नीति की पूरी जानकारी और तुलनात्मक ज्ञान कराना पड़ेगा। तभी हम ठोस शिक्षा-पद्धति की सफलता का अनुभव होगा।

शिक्षा का क्रम आवश्यकता और समय के अनुसार बराबर जारी रहेगा। हर्ष की बात है कि काशी विद्यापीठ के अनुभवी सञ्चालकों ने इस तथ्य को पहले ही देखा और तदनुसार अपना शिक्षा क्रम स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी बनाये रहना घोषित किया है। है भी, यह बात ऐसी, मामूली कि किसी भी शिक्षा प्रेमी देशभक्त की आंखों के सामने आपसे आप आ जायगी। राजनैतिक स्वतन्त्रता मिलने से हम सभी भांति स्वतन्त्र नहीं होंगे, बल्कि हमें तो, बहुत डर, लज्जा और सकोच होना चाहिये कि उपयोगी शिक्षा का यह अभाव स्वराज्य प्राप्त होने पर भी हमें दूसरे-दूसरे देशों का वैज्ञानिक

और औद्योगिक गुलाम बनाये रखेगा और गुलामी ऐसी जबरदस्त होगी कि उसके सामने राजनैतिक स्वतन्त्रता बिलकुल फीकी मालूम होगी।

हमारी शिक्षा का प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें इससे न तो पिंड छुड़ा कर भागना ही पड़ेगा और न किसी विशेष प्रकार के आवेश में आकर इसका गला ही घोंटना होगा। सरकारी, गैर सरकारी, अर्द्ध सरकारी और राष्ट्रीय विद्यालय के अधिकारियों को इस ओर गम्भीरता पूर्वक ध्यान देना आवश्यक है और जिनसे जितना हो सके, दिखाऊ शिक्षा से दूर रहने और उपयोगी शिक्षा को अपनाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिये।

शिक्षा का उद्देश्य

प्रत्येक प्राणि उन्नति करना चाहता है। वह सबेरे से शाम तक उन्हीं कामों के करने में अपना गौरव समझता है जिसमें उसका मान हो—जिसमें लोग उसका आदर करें। परन्तु सच्चा आदर इच्छा से ही प्राप्त नहीं होता। इच्छा होनी चाहिये, परन्तु साथ ही साथ उसके अनुकूल सामग्री जुटानी भी मनुष्य का काम है। उस सामग्री में सब से प्रधान वस्तु है, शिक्षा।

प्रत्येक मनुष्य महात्मा अथवा महत्पुरुष बनना चाहता है, उसके लिये जैसा कि ऊपर कहा है 'शिक्षा' आवश्यक वस्तु है। ऊंचा आदर्श भी अपने सामने रखना होता है परन्तु यदि उसमें शिक्षा का अभाव है, वह अपरिपक्वावस्था में है, उसमें अविवेक, असहनशीलता पग पग पर है, उसके विचार क्षणिक, विवेकहीन, अस्थिर तथा अपरिपक्व हैं। इस हालत में वह कभी आदर्श जीवन को प्राप्त नहीं कर सकता। वह धन की सहायता से नाम धारी महात्मा शायद बन जाय, परन्तु उसका व्यक्तित्व सीमित तथा संकुचित होगा और उसका कारण है शिक्षा का अभाव।

शिक्षा समाज की वह कार्यकारिणी शक्ति है जिसमें केन्द्रित होकर मनुष्य अपने आप को विचार शील और सामाजिक स्तम्भ बना सकता है। इसके अभाव में उसके जीने और मरने का कोई तात्पर्य नहीं। उद्देश्य हीन व्यक्ति कभी बड़ विचारक तथा विवेकशील नहीं हो सकता।

समाज की नैतिक उन्नति अथवा अनैतिकता का प्रधान कारण शिक्षा है। जैसी शिक्षा समाज को मिलेगी वैसा ही उसका परिणाम होगा।

परिभाषा के अनुसार समाज का भविष्य बच्चों पर है, इस लिये समाज का सब से बड़ा कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर समाज में नैतिकता का वायु मण्डल पैदा करे जिससे वे बड़े होकर समाज की बागडोर अपने हाथ में लें और समाज की नैतिक उन्नति के लिये यत्न करें तथा समाज का भविष्य अच्छा बनायें। जैसा शिक्षा का ध्येय होगा वैसा ही जीवन का साँचा ढलेगा। यदि शिक्षा का उद्देश्य अच्छा है, तो सामाजिक जीवन अच्छा तथा आदर्श पूर्ण होगा। इनके साथ ही साथ सभ्य-योजना किस अच्छा नहीं लगता? कौन मूर्ख यह कहेगा कि दुराचार एक अच्छी वस्तु है? कोई भी जुआ खेलने, चोरी करने तथा सिगरेट हुक्का पीने को पुण्य नहीं कह सकता। इन दुष्प्रवृत्तियों के दुष्परिणाम भी हमारे सामने हैं परन्तु फिर भी लोग न जाने क्यों दुष्प्रवृत्तियों में मस्त हैं, जब कि उनसे कोई लाभ नहीं। इनका एक ही कारण हमारी समझ में आता है कि पाप में हाथी के दाँतों के समान ऊपरी दिखावा है, आकर्षण है, जो बरबस भोले मनुष्यों को अपनी ओर खींचने का सामर्थ्य रखता है। ऐसा आकर्षण सत्प्रवृत्तियों में नहीं पाया जाता।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है समाज को ऊँचा उठाना, उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर करना। वह शिक्षा नहीं जो हमारे समाज पतन की ओर उन्मुख हो। समाज को

की ओर अग्रसर करना शिक्षा का कभी उद्देश्य नहीं रहा है। इसे समाज की गन्दी परिस्थिति ने ऐसा बना दिया तो आश्चर्य नहीं है, क्योंकि शिक्षा समाज की ही वस्तु है। वस्तुतः दुष्प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर करने के लिये शिक्षा की इतनी आवश्यकता ही नहीं, इसका कारण यही है कि पापमार्ग की ओर आकृष्ट करने के लिये किसी उपदेश आदि साधनों की आवश्यकता नहीं। क्योंकि जगत की अन्धपरम्परा 'गतानुगतिको लोकः' के अनुसार विश्व विख्यात है।

भारतीय शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सादा जीवन तथा उच्च विचार रहा है। जब तक इस देश में सच्चे भावों व अपनी सभ्यता पर मर मिटने वाले भारतीयों का अधिकार रहा, तब तक इस आदर्श की पूर्ति भी यथा सम्भव होती रही। यदि तत्त्व की दृष्टि से देखा जाय तो सभ्यता के निर्माण में शिक्षा का बड़ा भारी हाथ है और इसके बल पर मनुष्य अपनी मनुष्यता के आदर्श पर चलने में समर्थ हो जाता है। प्रत्येक देश और जाति के प्रधान स्तम्भ उसके विचारक प्रौढ़ नेता होते हैं। यदि वे प्रारम्भ से ही आलसी, निरक्षर और विलासी हैं, तब तक वह देश कभी भी आदर्श को प्राप्त करने का अधिकारी नहीं। देश के अधिकारी लोग देश को चाहे जिस ओर मोड़ लें, उसके लिये शर्त केवल यह है कि उनके हाथ में बागडोर हो और वाँछित परिणाम को सम्मुख रख कर विद्यार्थियों को सभ्यता के विचारों से परिपूर्ण करें।

इस समय विद्यार्थी गण अपने देश के प्रति विमुख से प्रतीत होते हैं। अपने शास्त्रों का मान तो एक ओर, उनका अपमान करना और शास्त्र वचनों की ठठोलियाँ करना अपने जीवन का एक प्रमुख कार्य और दिनचर्या का प्रधान अंग समझते हैं। और जब तक वे इस कार्य को पूरा नहीं कर लेते, तब तक चैन से बैठना अपनी अयोग्यता का परिचय देना समझते हैं। इसके अतिरिक्त उन लोगों को, जो कर्तव्य पालन व सामाजिक नियमों की दृष्टि से कुछ समय अपने शास्त्रों के पठन-पाठन में लगाते हैं। ऐसा तंग और मजबूर सा करते हैं कि वे बेचारे भी अपने कर्तव्यों से विमुख हो बैठते हैं। आधुनिक शिक्षा गुरु भक्ति के स्थान पर आत्माभिमान और गुरुओं का उपहास सिखाती है, जिससे शिक्षा अपने आदर्शों से च्युत हुई जा रही है। इस सारी अव्यवस्था की उत्तरदाता तथा कारण शिक्षा-प्रणाली है। यही शिक्षा प्रणाली शिक्षा को उसके उद्देश्यों से भिन्न करती जा रही है। इसमें शिक्षा का दोष नहीं, अपितु शिक्षा-प्रणाली को चलाने वाले सूत्रधारों का दोष है। आज शिक्षा का उद्देश्य नौकरी करना मान लिया गया है जो वस्तुतः इसका उद्देश्य नहीं।

१ प्राचीन काल में राम जैसे अटल पितृ-भक्त, कृष्ण जैसे धर्मपरायण और दुष्टों के हन्ता, कपिल, कणाद, गौतम जैसे दार्शनिक, शंकर जैसे विद्वान, वाल्मीकि और व्यास जैसे महाकवि, कबीर जैसे रहस्यवादी, तुलसी जैसे स्वामी भक्त, [illegible] जैसे उदार, चाणक्य जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ, अर्जुन जैसे वीर, धर्मराज सदृश धर्मावतार, [illegible] जैसे ध्रुव और प्रह्लाद [illegible] प्रेमी,

लक्ष्मण जैसे कर्तव्यशील, महात्मा बुद्ध जैसे दूरदर्शी, महात्मा पुरुष भिन्न २ परिस्थितियों के अनुसार पैदा हुये और होते रहे। इन सब को ही अपने २ समय की समाज और सभ्यता का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। इनमें से अधिकांश ऐसे हैं, जिनके महत्व का कारण उनकी शिक्षा है। कई तो स्वयं अपने कर्तव्य को न समझ सके, परन्तु एक साधारण सी घटना ने उन्हें चौंका कर उनके विस्मृत आदर्श को फिर जगा दिया। ध्रुव और तुलसी का नाम इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है। इसी प्रकार नानक और कबीर अनपढ़ महात्मा होते हुये भी क्यों न्याय बुद्धि वाले बन सके? इस का कारण भी एक प्रकार की शिक्षा ही है, क्योंकि केवल अक्षरज्ञान को ही शिक्षा नहीं कहा जाता।

शिक्षा का ध्येय अपने भिन्न २ उद्देश्यों को लेकर स्थिर होता है। क्या सामाजिक, क्या आध्यात्मिक सब ही विचार स्थलों को अपने सम्मुख रखना पड़ता है।

एक बच्चे का अपने माता पिता के प्रति क्या कर्त्तव्य है? शिष्य-गुरु से कैसा व्यवहार करे? व्यक्तियों का समाज के प्रति क्या कर्त्तव्य है? अपनी जाति के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है? अन्य देशों में हमें कैसा व्यवहार करना चाहिये? इन सब बातों का निश्चय हमारी शिक्षा का विषय है।

हम पश्चिमी सभ्यता में रंगे जा रहे विद्यार्थियों को दोष नहीं दे सकते। वे निरपराध हैं। अभी विचार प्रौढ़ता की दृष्टि से वे पूरे मनुष्य नहीं बने। अभी उनमें अपूर्णता है। उनको कौन सी शिक्षा दिलानी चाहिये, यह निर्णय माता पिता को करना चाहिये। माता पिता का भी इसमें क्या दोष है? यहाँ

तो शिक्षा प्रणाली मूल से ही दोषयुक्त है। प्राचीन गुरु शिष्य मर्यादा के अनुसार शिक्षा देने वाली संस्थायें आज भारत में अंगुलियों में गिनी जा सकती हैं। वैसे तो प्रत्येक संस्था अपना उद्देश्य सादा रहना और ऊँचा सोचना बताती है परन्तु उसका पालन न होने के बराबर ही है।

आप किसी संस्था व कालेज के किसी छात्र से पूछिये आपका लक्ष्य क्या है? भविष्य में आप क्या करेंगे? वह बिना सोचे समझे यह कहेगा कि भाई नौकरी देखेंगे। एक भारतीय छात्र के लिये यह घुटा हुआ उत्तर है। आज की बेकारी तथा प्रति दिन हो रही आत्महत्यायें इसी निरुद्देश्य भविष्य का फल हैं। इसके विपरीत भी यदि कालेज और अधिक बढ़ते जायें और यही शिक्षा-प्रणाली चलती रहे तथा विलास भवनों, विनोद भवनों और सिनेमा घरों की संख्या में भी वृद्धि होती जाय, तो क्या आश्चर्य है! यह वस्तुएँ नैतिक पतन की सूचक हैं और इसका कारण शिक्षा नहीं, अपितु शिक्षा प्रणाली है। शिक्षा का उद्देश्य लक्ष्य-ध्येय कभी भी नैतिक पतन नहीं, उसका उद्देश्य सदा से उन्नति की ओर अग्रसर करना ही है। शिक्षा सोये हुये को जगाती है, बैठे को उठाती है। शिक्षा कभी भी निराशा का स्वागत नहीं करती। शिक्षा का मुख्य ध्येय तो मनुष्य को सदैव आशामय बनाना तथा उच्च आदर्श बना कर वास्तविक आदर्श जीवन को प्राप्त करना ही है।

एक भ्रम लोगों को हर दम लगा रहता है और वह यह कि केवल मात्र पुस्तकें ही शिक्षा दे सकती हैं। वस्तुतः पुस्तकें शिक्षा का एक साधन अवश्य है, यह हर साथ मनुष्य को

प्राकृतिक सौंदर्य दिखाने वाले दृश्य ही वास्तविक शिक्षा दे रहे हैं।

सभ्य देशों में शिक्षा-प्रणाली उत्कृष्ट है। उसके कई कारण हैं। (१) राज्य की ओर से प्रबन्ध (२) स्वाधीनता (३) अनिवार्य शिक्षा। जापान जैसा छोटा सा देश व्यापार तथा राज्य भक्ति की दृष्टि से क्यों इतना प्रसिद्ध है। उसका कारण यही है कि वहाँ की शिक्षा प्रणाली सुव्यवस्थित रूप से देशवासियों को लाभ पहुंचाती है। छोटे से छोटे बच्चे में देश व जाति के प्रति इतना प्रेम और सञ्चार है कि जापान जैसा छोटा सा देश चीन जैसे बड़े देश से टक्कर ले रहा है।

वस्तुतः देश और जाति के उत्थान और पतन में शिक्षा-प्रणाली मुख्य कारण होती है। यदि शिक्षा प्रणाली शिक्षा के मुख्य उद्देश को भुला देती है, तो निस्सन्देह देश का कल्याण नहीं हो सकता।

हमारी शिक्षा कैसी हो ?

अपने देश के उपयुक्त शिक्षा सम्बन्धी एक नवीन योजना तैयार करने से पूर्व हमें अन्य देशों की शिक्षा प्रणाली पर एक विहंगम दृष्टि डालनी होगी और उसी के आधार पर अपने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये उनमें समुचित परिवर्तन करने होंगे।

जर्मनी में भी आरम्भ से ही बालकों की शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाता है। जब बालक कुछ २ बोलने लगता है तो इसे किंडर गार्टन स्कूलों में भेज दिया जाता है। ६ वर्ष से १६ वर्ष की आयु तक शिक्षा अनिवार्य और बाध्य है। इसके पश्चात् वह बालक किसी न किसी धन्धे से लग जाता है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक अनुसन्धान एव कला कौशल की शिक्षा में जर्मनी संसार में अपना सानी नहीं रखता। वहाँ विज्ञानियों को हर प्रकार की सुविधायें दी जाती हैं। सुना जाता है कि योरोपीय महायुद्ध के समय जर्मनी ही एक ऐसा देश था जहाँ कि प्रयोगशालाओं में प्रत्येक जर्मनी विज्ञान वेत्ता निर्विघ्न काम करते रहे थे। पांच वर्ष के युद्ध के पश्चात् जब सन्धि हो गई तभी इन विज्ञान वेत्ताओं को यह पता लगा था कि उनके देश में इस बीच में इतना भयंकर युद्ध हो चुका है। युद्ध काल में उन्हें खबर तक नहीं दी गई कि उनका देश किसी भयंकर युद्ध में संलग्न है। कारण इससे वैज्ञानिक अनुसन्धान में भारी धक्का लगने की सम्भावना है

रूस में चार वर्ष से सात वर्ष की आयु तक के बालक वहाँ के शिशु भवन में भर्ती कर दिये जाते हैं। यहाँ खेल ही खेल मे इन्हें बहुत सी शिक्षा मिल जाती है। ७ वर्ष से १७ वर्ष तक की आयु तक प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा दी जाती है। इस बीच में पुस्तकों की शिक्षा के अतिरिक्त खेल, कला, कृषि संगीत एवं उद्योग धंधों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। रूस के छोटे-मोटे बालक मोटर, ट्राम गाड़ी, बेतार के तार, बाजे इत्यादि अनेक उपयोगी धंधे योंही सीख जाते हैं। फोटोग्राफी, छपाई पत्रों का संपादन इत्यादि भी वे बड़ी सुगमता से सीख लेते हैं। रूस को इतनी आश्चर्यजनक उन्नति करने में केवल २० वर्ष लगे हैं, इस लिये रूस के लिये यह और भी गौरव की बात है।

लन्दन में ५ वर्ष से १४ वर्ष तक के बालकों और बालिकाओं के लिये शिक्षा अनिवार्य एवं बाध्य है। प्रारम्भिक स्कूलों में मातृ भाषा अंग्रेजी, हिसाब, इतिहास, भूगोल, साइंस, संगीत, ड्राइंङ्ग, शारीरिक व्यायाम और बढ़ईगीरी, लोहारी, खानागी आदि की शिक्षा दी जाती है। लड़कियों को घरलू शिक्षा भी दी जाती है। इसके अतिरिक्त वहाँ से सेण्टरल स्कूल और सीनियर स्कूल भी हैं बहुधा १५ वर्ष की आयु में बच्चा किसी न किसी उद्योग धंधे से लगने योग्य हो जाता है।

उपर्युक्त देशों की शिक्षा प्रणाली पर दृष्टि डालते हुये अब हम भारत के उपयुक्त एक योजना तैयार कर रहे हैं। पाठक स्वयं इस पर विचार करें। रूस की तरह हमारे देश में भी शिशु भवन स्थापित होने चाहिये। जिसमें ४ वर्ष से

ऊपर के बालक भर्ती किये जा सकें । वहाँ उन्हें दो वर्ष तक खेल ही खेल में व्यावहारिक शिक्षा दी जाय। इन दो वर्षों की शिक्षा से बालकों के चरित्र के सुधारने में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

इसके पश्चात् प्रारम्भिक शिक्षा का नम्बर आता है। इसमें ६ वर्ष के बालक अर्थात् शिशु भवन से निकले हुये बालक रक्खे जाये उन्हें केवल चार विषय पढ़ाये जायें। १—हिन्दी अथवा उर्दू २—गणित ३—व्यावहारिक सफाई ४—शिल्प। गणित में रोजाना काम में आने वाले हिसाब की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। क्योंकि जीवन में इससे अधिक काम पड़ता है। यद्यपि ऊँचे दर्जे का हिसाब भी पढ़ाया जाय, परन्तु तो भी व्यावहारिक गणित, जिसमें जबानी हिसाब लगा लेना और बही खाते का हिसाब इत्यादि सम्मिलित है—की ओर विशेष ध्यान दिया जाय। व्यावहारिक स्वास्थ्य विज्ञान में बालकों को 'जूनियर रेड क्रास सोसाइटी' के प्रकाशित किये चार्टों द्वारा सफाई व स्वास्थ्य सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान देने का प्रयत्न किया जाय। दस्तकारी में बालकों को तरह तरह के खिलौने बनाना, फोटोग्राफी, छपाई, जिल्दसाजी, कागज के फूल व बेले बनाना, ताश के पत्ते बनाना, बर्तन पर कलई करना इत्यादि तरह तरह के छोटे मोटे काम सिखाये जायें। प्रारम्भिक शिक्षा का कोर्स ४ वर्ष का रक्खा जाय, जिसमें लगभग १० वर्ष का बालक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये तैयार हो सके। गांवों के स्कूलों में थोड़े हेर फेर से कृषि और पशु पालन के विषय में भी बहुत कुछ ज्ञान करा

ले लिया करें। जापान ने इसी चढ़ावे की बदौलत स्थान स्थान पर औद्योगिक शिक्षणालयों को स्थापित कर बाजी मारली है। क्यों न हम भी जापान से यह सबक लेना चाहिये।

दूसरे सरकार की ओर से और पूंजीपतियों की ओर से ऐसे स्टोर भी खुले होने चाहिये, जहां से दस्तकारों को कच्चा माल मुनाफे से मिल सके और फिर दस्तकार माल तैयार करने पर उसी स्टोर के हाथ बेच सके। अर्थात् ऐसे स्टोर में अलावा बहुत माल खरीदने और बेचने के बना हुआ माल दस्तकारों से नियत कीमत पर खरीदने और फिर ग्राहकों को बेचने का प्रबन्ध होना चाहिये। यदि ऐसे स्टोर होंगे तो शिल्पकार को कच्चा माल थोक के भाव में मिल सकेगा, साथ ही उस माल को बेचने के लिये भी उसे सुबह से शाम तक न भटकना पड़ेगा। यह बात हमारे देश की औद्योगिक उन्नति में सबसे अधिक बाधक है। जापान में जगह जगह ऐसे स्टोर खुले हैं, जहां शिल्पकार अपनी दिन भर की तैयार की हुई वस्तुओं को बड़ी आसानी से बेच देता है। यही कारण है कि जापान की चीजें इतनी सस्ती आती हैं। प्रत्येक गृहस्थ एक दिन में दर्जनों खिलौने और अन्य चीजें निकाल देता है।

स्कूलों में शिल्पकारी सीखने वाले बालकों को बनाई हुई वस्तुओं की मजदूरी भी उन्हें दे देनी चाहिये जिससे बच्चों का आरम्भ ही से उत्साह बढ़े और काम भी पर्याप्त मात्रा में हो सके। स्कूलों में परिवर्तन उपस्थित करने के लिये प्रथम वर्तमान स्कूलों के अध्यापकों को औद्योगिक शिक्षा देनी

होगी। इसके लिये यह हो सकता है कि जहाँ जहाँ जिस विषय की शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा हो, वहां वहां सरकार के चुने हुये अध्यापक उस शिक्षा को प्राप्त करने के लिये बाहर भेज देने चाहिये। जब वे उस शिक्षा को प्राप्त करलें या अन्य विशेषज्ञ मिल सकें तो उन्हीं की सहायता से देश में स्थान स्थान पर अध्यापकों की ट्रेनिंग के लिए उचित व्यवस्था कर दी जाय। जिस शिक्षा के लिये अधिक धन एवं आडम्बर की आवश्यकता हो और केवल बड़े-बड़े कालिजों में ही दी जा सकती हो, उसके लिये अध्यापकों को वहीं भेज देना चाहिये। और जिस शिक्षा के लिये न अधिक धन की दरकार है और न अधिक आडम्बर की, उसके लिये ऐसे निर्देशक की नियुक्ति की जाये, जो स्थान स्थान पर भ्रमण कर अध्यापकों की बड़ी से बड़ी तादाद को अल्प समय में औद्योगिक शिक्षा दे सकें। यदि उपर्युक्त स्कीम पर मनन किया जाय और उसपर अमल करने की आयोजना की जाय, तो भारत के गये दिन लौटने में संभवतः अधिक समय न लगे।

पाठ्य क्रम तैयार करें ग्रामों में चलने वाली रोचक सरल भाषा में लिखी गई हो और उस में ग्राम से सम्बन्ध रखने वाली बातों का समावेश किया गया हो। यह आवश्यक नहीं है कि ग्राम पाठशाला का भवन शहर के अनुसार हजारों रुपया लगा कर बनवाया जाय और जो अपनी बनावट से ग्रामों में 'बकरियों के मध्य ऊंट' जैसा दृष्टि गोचर हो। स्वच्छता और हवा के विचार को दृष्टि मे रखते हुये शाला भवन का निर्माण होना चाहिये और उसे ग्रामीणों द्वारा बनवा लेना चाहिये। उस बनवाने के लिये ईंट, चूना और कारीगरों को घर से नहीं बुलवाना चाहिये। मोसिम के अनुसार बच्चों को वृक्ष के नीचे या किसी नदी के किनारे ले जाकर शिक्षा देना जितना उत्तम होगा, उतना बन्द मकान में नहीं।

पाठ्य-पुस्तकों में अब्राहम लिंकन, घएटा घर, एक घिसे पैसे की कहानी आदि पाठों का होना उतना आवश्यक नहीं है जितना गेहूँ की खेती, मालगुजारी, लगान, किसानों का जीवन, आपत्तियों का निवारण, ढोरों की

के लिये इतिहास की शिक्षा आवश्यक नहीं है। लार्ड कार्न वालिस या बेंटिक के सुधारों, बाबर और तैमूर की चढ़ाइयों के समाचार उनकी घरू अड़चनों तथा समस्याओं को दूर नहीं कर सकते उन्हें तो इतिहास की सरल कहानियाँ मौखिक सुनाई जायँ जिनका रूप, विश्राम के समय मन बहलाव हो।

ग्राम शालाओं के समय विभाग चक्र को भी हमें शीघ्र ही बदलना पड़ेगा। किसानों की सहूलियत का ध्यान रखते हुये समय विभाग चक्र तैयार किया जाना चाहिये। जिस दिन खेतों में हल चल रहे हों या बुआई होती हो अथवा फसल काटी जा रही हो या खलियान में उड़ावनी हो रही हो-बालकों को वहाँ लेजाकर अवलोकन का अवसर देना चाहिये। ऐसे समय शाला भवन का कार्य बन्द कर देना चाहिये। यदि रात्रि के समय किसी विषय की शिक्षा को ध्यान देना पड़े तो कोई हानि नहीं है।

देहाती-शालाओं में शहरों के अनुसार छुट्टियों की व्यवस्था नहीं होनी चाहिये। किसानों की सम्मति से छुट्टियों की फेहरिस्त बनानी चाहिये। जिन मुख्य २ त्योहारों पर किसान उत्सव मनाया करते हैं उनकी छुट्टी देना ही आवश्यक है।

इसके सिवाय ग्राम पाठशालाओं के कोर्स में कृषि, बागवानी, रंगरेजी, मिस्त्री, बुनने की कला आदि को स्थान देना चाहिये। सरकार और प्रजा, प्रजा के कर्त्तव्य, टैक्स, लगान-सम्बन्धी-कानून, पुलिस और उसके कर्त्तव्य आदि के लिये 'नागरिक शिक्षा' का देना भी अनिवार्य होगा

राष्ट्र भाषा क्या हो?

आज कल हम देखते हैं बहुत सारे हिन्दू विद्वान लेखकों का मत है कि राष्ट्र भाषा पूर्णतया संस्कृत मयी हो और उसमें उर्दू अथवा किसी भी अभारतीय भाषा का एक भी शब्द न आने पाए। राष्ट्र भाषा का दूसरा रूप चाहे व्यावहारिक दृष्टि से कितना ही लाभ दायक क्यों न हो यह मनुष्य ग्रहण करना नहीं चाहते। इस प्रकार एक पक्ष की ओर झुक कर किया गया निर्णय न्याय की दृष्टि से सदा संदेह जनक ही होता है। जहां तक विद्वानों की भाषा तथा साहित्यिक हिंदी से सम्बन्ध है मुझे इस विषय में कोई आपत्ति नहीं। परन्तु सवाल तो राष्ट्र भाषा का है न कि साहित्यिक हिंदी का। भाषा का सम्बन्ध एक व्यक्ति या समूह विशेष से नहीं बल्कि जन साधारण से है और वह भाषा जो जन साधारण को साथ लेकर नहीं चलती कभी राष्ट्र भाषा नहीं बन सकती। राष्ट्र भाषा का सबसे पहला गुण सरल होना चाहिये। वही भाषा राष्ट्र भाषा हो सकती है जिसे प्रत्येक भारतीय आसानी से सीख और समझ सके। यदि राष्ट्र भाषा का मुख्य आधार सरलता मान लिया जाय तो यह प्रश्न ही नहीं उठता कि उसमें संस्कृत के शब्द हैं अथवा फारसी के। जिन शब्दों को आम जनता समझ सकती है वही राष्ट्र भाषा के शब्द होने चाहिए और उसके लिये यह कोई कैद नहीं होनी चाहिये कि वह केवल संस्कृत से ही लिये जावें यदि राष्ट्र भाषा का संस्कृत मयी होना आवश्यक कर दिया जाय तो यह व्यावहारिक दृष्टि से बहुत ही हानिकर होगा। ऐसी

भाषा केवल एक समुदाय विशेष की भाषा रह जाती है और आम जनता उससे बहुत दूर हो जायगी। इस तरह हम देश में राष्ट्र भाषा का प्रचार सदियों में भी नहीं कर सकते ऐसा लिखने से मेरा कुछ यह अभिप्राय नहीं कि मैं उर्दू की हिमायत लेना चाहता हूं बल्कि मुझे तो हिन्दी मे संस्कृत के शब्द जितने प्रिय मालूम होते हैं उतने किसी भी भाषा के शब्द प्रिय नहीं लगते। परन्तु मुख्य प्रश्न तो यह है कि व्यवहारिक दृष्टि से कैसी भाषा राष्ट्र भाषा के उपयुक्त होगी हमारे देश पर सदियों तक मुसलमानों का राज्य रहा, उनकी भाषा का जो प्रभाव हमारी भाषा पर पड़ा है उसे मिटाना हमारी शक्ति से बाहर है। इस लिये राष्ट्र भाषा में हमें अवश्य ही बहुत से शब्द उर्दू से लेने पड़ेंगे। यदि मैं एक पनवाड़ी से बजाय यह कहने के कि शर्बत में काफी बरफ डालना, यह कहूं कि शर्बत में हिम पर्याप्त डालना, तो आश्चर्य नहीं कि वह यह उत्तर देदे कि महाशय मेरे यहां पर्याप्त हिम नामक कोई वस्तु नहीं है। कई शब्द हमारी भाषा में इतने मिल गए हैं कि हम उन्हें अलग नहीं कर सकते। यदि मैं 'याद' के स्थान में 'तदनन्तर' और 'याद' के स्थान में 'स्मरण' कहूं तो मेरा नौकर मेरी बात को कुछ भी न समझ सकेगा। हम कोई भी बात क्यों न करें, कोई न कोई उर्दू शब्द बीच में आ ही जायगा। उदाहरण के लिये मैं लेख लिखने बैठा मुझे ज़रूरत पड़ती है कागज़ कलम, दवात और स्याही की। पिछले चारों शब्द उर्दू भाषा के हैं इसके से ऐसे भी शब्द हैं हिन्दी में ही नहीं मिलता

लिफाफा, शिकायत, बाज़ार इत्यादि। ऐसे शब्दों को तो प्रायः हमें दूसरी भाषाओं से लेना ही पड़ेगा। परन्तु साथ ही मैं उन लोगों से भी सहमत नहीं हूं जो अनावश्यक उर्दू शब्दों को हिन्दी में घुसेड़ना चाहते हैं। जिस शब्द से भाषा की सरलता नष्ट होती हो चाहे वह उर्दू का हो या संस्कृत का, राष्ट्र भाषा के लिये ग्राह्य नहीं। कुछ लोग हिन्दुस्थानी के नाम से बहुत से अपरिचित उर्दू शब्दों को राष्ट्र भाषा में भरना चाहते हैं। मैं उनका समर्थन नहीं कर सकता। मैं इस बात से सहमत हूँ कि पारिभाषिक शब्द केवल संस्कृत से लिये जायें। पारिभाषिक शब्दों का सम्बन्ध जन साधारण से नहीं, वरन् शिक्षित समुदाय से है।

मैं ने मद्रास प्रान्त के अलावा प्रायः सभी भारत के प्रान्तों का भ्रमण किया है और यह देखने में सदा सतर्क रहता हूँ कि आम जनता बोल चाल में उर्दू के शब्द प्रयोग करती है या नहीं। मैंने यह देखा कि सभी प्रान्तों की बोल-चाल की भाषा में उर्दू के साधारण शब्द मिल गए हैं। गत शिवरात्री पर मैं नेपाल में था। नेपाल में सदा से हिन्दुओं का राज्य रहता है। मैंने समझा कि वहां की भाषा अवश्य ही संस्कृत प्रधान होगी और एक

हाजिर तथा उसके तद्भव ग्राह्य शब्दों को ले लिया जाय। जो विद्यार्थी 'हाजिर' याद रख सकता है उसके लिये 'हाजिरी' भी याद रख लेना कठिन नहीं है। कोष से यह भी लाभ होगा हम बतला सकेंगे कि अमुक शब्द राष्ट्रीय भाषा के लिये ग्राह्य समझा गया है अथवा नहीं। साथ ही उन अपरिचित उर्दू शब्दों पर भी नियन्त्रण हो जायगा जिन्हें कि कुछ लोग जबरदस्ती हिन्दी में ठूसना चाहते हैं।

मैं स्वीकार करता हूं कि भाषा और संस्कृति का सम्बन्ध अत्यधिक है। परन्तु संस्कृति का आधार केवल एक भाषा ही नहीं है तथा समयानुसार संस्कृति में भी परिवर्तन हो जाता है। कुछ उर्दू के शब्द मिलाने मात्र से ही हमारी संस्कृति नष्ट नहीं हो सकती। अंग्रेजी में हजारों शब्द दूसरी भाषाओं के लिये हुए हैं, इससे उसे कोई हानि नहीं पहुँची लाभ ही हुआ है। किसी भी भाषा के रूप को हम स्थिर नहीं रख सकते, परिस्थितियों का प्रभाव उस पर पड़ता है।

लिफाफा, शिकायत, बाजार इत्यादि । ऐसे शब्दों को तो प्रायः हमें दूसरी भाषाओं से लेना ही पड़ेगा । परन्तु साथ ही मैं उन लोगों से भी सहमत नहीं हूं जो अनावश्यक उर्दू शब्दों को हिन्दी में घुसेड़ना चाहते हैं । जिस शब्द से भाषा की सरलता नष्ट होती हो चाहे वह उर्दू का हो या संस्कृत का, राष्ट्र भाषा के लिये ग्राह्य नहीं। कुछ लोग हिन्दुस्थानी के नाम से बहुत से अपरिचित उर्दू शब्दों को राष्ट्र भाषा में भरना चाहते हैं। मैं उनका समर्थन नहीं कर सकता। मैं इस बात से सहमत हूँ कि पारिभाषिक शब्द केवल संस्कृत से लिये जायें । पारिभाषिक शब्दों का सम्बन्ध जन साधारण से नहीं, वरन् शिक्षित समुदाय से है।

मैं ने मद्रास प्रान्त के अलावा प्रायः सभी भारत के प्रान्तों का भ्रमण किया है और यह देखने में सदा सतर्क रहता हूँ कि आम जनता बोल चाल में उर्दू के शब्द प्रयोग करती है या नहीं। मैंने यह देखा कि सभी प्रान्तों की बोल- की भाषा में उर्दू के साधारण शब्द मिल गए हैं। शिवरात्री पर मैं नेपाल में था। नेपाल में सदा से ं का राज्य रहता है। मैंने समझा कि वहां की भाषा ही संस्कृत प्रधान होगी और एक व्यक्ति से बात ीत करते हुए मैंने 'अन्दाजा' के स्थान में 'अनुमान' का प्रयोग किया। वह व्यक्ति मेरी बात को न समझ सका जब तक कि मैंने 'अन्दाजा' शब्द का ही प्रयोग न किया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उनकी भाषा में भी बहुत से ‌ , भारतीय प्रान्तों की ही तरह प्रचलित हैं। भाषा का एक कोष बनाना चाहिये जिसमें कि

हाजिर तथा उसके तद्भव ग्राह्य शब्दों को ले लिया जाय। जो विद्यार्थी 'हाजिर' याद रख सकता है उसके लिये 'हाजिरी' भी याद रख लेना कठिन नहीं है। कोष से यह भी लाभ होगा हम वर्णन कर सकेंगे कि अमुक शब्द राष्ट्रीय भाषा के लिये ग्राह्य समझा गया है अथवा नहीं। साथ ही उन अपरिचित उर्दू शब्दों पर भी नियन्त्रण होजायगा जिन्हें कि कुछ लोग जबरदस्ती हिन्दी में ठूसना चाहते हैं।

मैं स्वीकार करता हूं कि भाषा और संस्कृति का सम्बन्ध अत्यधिक है। परन्तु संस्कृति का आधार केवल एक भाषा ही नहीं है तथा समयानुसार संस्कृति में भी परिवर्तन हो जाता है। कुछ उर्दू के शब्द मिलाने मात्र से ही हमारी संस्कृति नष्ट नहीं हो सकती। अंग्रेजी में हजारों शब्द दूसरी भाषाओं के लिये हुए हैं, इससे उसे कोई हानि नहीं पहुँची वरन लाभ ही हुआ है। किसी भी भाषा के रूप को हम स्थिर नहीं कर सकते, परिस्थितियों का प्रभाव उस पर पड़ना अनिवार्य है।

भारतीय विद्यार्थी और राजनीति

सिद्धान्त की दृष्टि से संसार में विद्यार्थी और राजनीति का कोई सम्बन्ध नहीं—राजनीति से तो केवल उसका इतना ही सम्बन्ध स्थापित हो सकता है कि वह उसका अध्ययन करे। राजनीति एक कार्य क्षेत्र है उसमें अध्ययन के लिये कम स्थान है। इस लिये कार्य क्षेत्र के आवेगों में पड़कर यह हो सकता है कि वह उस ठोस वस्तु को प्राप्त न कर सके जिसे प्राप्त करना उसके जीवन का प्रथम कर्तव्य है। और फिर कार्य क्षेत्र तो एक वितरण की वस्तु है किन्तु विद्यार्थी को तो उस अवस्था में संग्रह की अधिक आवश्यकता है। जितना हो सके उतना गहरा अध्ययन करे और ठोस से ठोस ज्ञान उपलब्ध करे जिससे आगामी जीवन में परिस्थितियों के समझने की पूर्ण क्षमता रख सके। इस अवस्था में उसका मस्तिष्क अपरिपक्व होता है—उसके पास किसी वस्तु को ठीक तोलने के लिये कम अवकाश रहता है यही कारण कि जिससे इस अवस्था में राजनीति में कार्य रूप से भाग पर वह सभी प्रकार के घात प्रतिघातों का शीघ्र हो सकता है।

भाव भरे और दूसरों के अन्दर से कमज़ोरियों को हटाने का निरन्तर प्रयत्न करता रहे—वह अपने आराम से ही 'जीवन एक तपस्या" का जीवन व्यतीत करने का सकल्प करे। इस प्रकार वह देश की प्रचुर सहायता कर सकेगा।

हमारे यहां के विद्यार्थी समाज में एक विशेष प्रकार की कमज़ोरी यह है कि उसमें से अधिकाश इस बात का उत्तर नहीं दे सकते कि वे अपने देश के लिये क्या चाहते हैं? इसके विपरीत और देशों में जहां राजनैतिक आन्दोलन हुये वहां का बच्चा बच्चा यह जानता था कि वे अपने देश के लिये क्या चाहते हैं। अमुक पैक्ट में क्या हुआ तथा अमुक लीडर के क्या विचार हैं? इस लिये प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी को यह चाहिये कि वह अपने देश की मांगों का पूर्ण ज्ञान रक्खे—देश की वर्तमान राजनीति से परिचित रहे तथा प्रत्येक बातके प्रति अपना कुछ स्वतत्र मत बनाये। हमारा राजनैतिक दासत्व इस लिये ही नहीं कि अग्रेज हम पर शासन करते हैं वरन हम चैतन्य नहीं हैं कि हम गुलाम हैं—वास्तव में हमारा मस्तिष्क गुलाम हो गया है। विद्यार्थियों को चाहिये कि अपनी ठोसता को रक्षा करते हुये सदैव वे अपने सामने अपनी गुलामी को रक्खें। वह देखेंगे कि उनका निश्चय देश के राजनैतिक आन्दोलन में एक निजी अस्तित्व निर्धारित कर देना है।

इस समय का आन्दोलन हमारी एक प्रकार की युद्ध कालीन राजनीति है। एक स्वतन्त्र देश की युद्ध कालीन राजनीति भिन्न होती है। वहां के निवासी यदि देश के आन्दोलन में मरते हैं तो आगामी गुलामी से बचते हैं और यदि

विजय प्राप्त करते हैं तो अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखते हैं। किन्तु यदि विचारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो हमारा युद्ध किसी देश विदेश के खिलाफ नहीं—हमारा युद्ध तो प्रवृत्तियों का युद्ध है। एक स्वतन्त्र देश का युद्ध होता है ज़मीन के लिये। यही अर्थ गांधी जी के 'अहिंसा' के महान सिद्धांत के अन्दर निहित है। वे चाहते हैं कि हम देश की ओर प्रवृत्त हों—उधर को ओर हमारा निरंतर झुकाव रहे इस लिये विद्यार्थियों से वांछनीय है कि वे अपने साथियों की प्रवृत्ति बदलते रहें—वे उनके अंदर से साम्राज्यवादी या फासिज़्म की प्रवृत्ति हटावें। वे सदा ध्यान रक्खें कि हम को केवल शासक नहीं बनना है वरन जो शासित हैं वे शासक हों—यह उनकी आकांक्षा हो। शासक और शासित तो किसी न किसी रूप में बने ही रहेंगे, इसे तोड़ने का प्रयत्न करना व्यर्थ होगा —न वे प्रयत्न करें ही।

हमारे देश की राजनीति एक दूसरी वस्तु है-शोषक और शोषित। यह प्रवृत्ति बहुत घातक है। संसार में कहीं नहीं रहनी चाहिये। परन्तु भारत में यह शोषण की … सबसे अधिक है। मुसलमान काल में शोषण की नीति … अवश्य, किन्तु वह धार्मिक शोषण था, उनका … या अर्थ शोषण नहीं था। यहां कोई यह तर्क दे सकते … अलाउद्दीन के समय में … शोषण था—

इन दोनों में अन्तर है। राजनीतिक शोषण यह है कि शासक कहीं दूसरी जगह का हो किन्तु शासित देश का धन लेकर अपने पास इस दृष्टि से रखले जिससे वह सदा शासन करता रहे और शासित सदा निर्बल बना रहे। किंतु राजनीतिक दृष्टि कोण से शोषण यह है कि शासक शासितों को इतना धन नहीं देना चाहता जिससे वे उद्दंड हो जायें। एक पिता भी तो राजनीतिक दृष्टि से शोषण करता है। वह इतना धन नहीं देना चाहता कि पुत्र उद्दंड हो जाय, किंतु यह राजनीतिक शोषण नहीं है क्योंकि पिता की मृत्यु उपरान्त वह धन पुत्रों को ही मिलता है। अलाउद्दीन का शोषण ऐसा ही था—वह धन यहीं रहा और देश निर्धन नहीं हुआ। इस शोषण के भाव को हटाने का कार्य विद्यार्थियों का ही है—उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि वह आन्दोलन में ही भाग ले। भारतीय विद्यार्थी को यह अनुभव करना चाहिये कि वे भी एक शक्ति हैं—युवक विद्यार्थियों से ही उत्तेजना का भाव अपने सच्चे रूप में मिल सकता है। वह एक ऐसी शक्ति है जिसके पैर किसी दलदल में नहीं फंसे—उसे पेट की चिन्ता नहीं। यद्यपि वह स्वयं आश्रित है किन्तु उसके आश्रित कोई नहीं। वह बड़ी सुगमता से अपने देश के संग्राम में भाग ले सकता है। किन्तु एक पिता को चिन्ता रहती है कि उसके कहीं फंस जाने पर उसका परिवार कहां मारा मारा फिरेगा। वास्तव में विद्यार्थी ऊपर नीचे सब प्रकार से स्वतन्त्र है इस लिये स्वतन्त्र और निष्पक्ष विचार हो सकते हैं तो विद्यार्थियों में हो। ऐसा हो सकता है कि शायद और लोग कोई बात अपने स्वार्थ की दृष्टि से बतायें किंतु एक विद्यार्थी से ऐसी सम्भावना

की जा सकती। इसलिये हम में ठोसपन आसकता है तो विद्यार्थियों से ही, किंतु अपेक्षित यह है कि वे अपने आप भी ठोस बनने का प्रयत्न करें। हम में से प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर यह भाव होना चाहिये कि एक दिन हमें कुछ करना होगा— एक दिन जब भारत पूर्ण स्वतन्त्र होगा तो उस की स्वतन्त्रता का भार हम को ही संभालना पड़ेगा — उस का सब प्रबन्ध करना होगा और यह हम ही करेंगे। उस को अपने समाज में निरन्तर भरते रहना चाहिये कि एक दिन स्वतन्त्र भारत का संसार में स्थान बनाना होगा। उस का अपना निजी अस्तित्व निर्धारित करना पड़ेगा—इस के लिये हमें अपने को तथा उसको योग्य बनाना चाहिये-ऐसा होने पर देश का चमकता भविष्य हमारे बहुत निकट आजायेगा।

हमारे लिये सबसे आवश्यक बात है-शोषण का अंत कर देना-इसका सीधा सा उपाय यह है कि हम उन जरियों को बन्द कर दें जिनके द्वारा शोषण होता है। हम अपने जीवन में पूर्ण स्वदेशी बन जांय तथा अपने यहां की बनी हुयी चीजों से प्रेम करें। अर्थ शास्त्र में हमको यह बताया जाता है कि किसी देश की उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि यहां के रहने वालों की वान्टस Wants बढ़े-किन्तु यह शोषकों की नीति है शोषित देशों को यह सिद्धान्त सिखाना शोषकों के पक्ष में है। हमारे लिये तो Wants बढ़ाने का सीधा सा तात्पर्य यह है कि अपनी चीजें बढ़ाओ-अपनी ही Wants बढ़ाओ। हमें Wants बढ़ाने के माने नकल करने नहीं समझ लेना चाहिये। किन्तु हम कहते क्या हैं-अजी खद्दर महंगा पड़ता है-कैसे खरीदें? हमको खद्दर की तेज दिखाई पड़ती हैं किन्तु यह तेज नहीं वरन दाम

ज्यादा है इस का एक मात्र कारण यह है कि हमारी खद्दर की माग (demand) कम है–इस लिये उसके बनाने का खर्च (Cost of Production) ज्यादा पड़ता है। यदि प्रत्येक भारतवासी खद्दर पहिनने लग जाय तो वह अति सस्ता हो जाय। और फिर इसके लिये एक और सुगम उपाय है–वह यह कि खद्दर स्वयं बनाने की कोशिश करो। यहां पर महात्मा जी के 'चर्खे' के सिद्धान्त का महत्व स्पष्ट होगा। आज उस सिद्धान्त का पूर्ण पालन हो सका तभी तो खद्दर इतना तेज प्रतीत होता है–इतना ही क्यों, हरिपुरा कांग्रेस के समय बापू जी को भी तो कहना पड़ा कि 'पेरिस का भवन बना दिया है विट्ठल नगर क्या है' जिसका अर्थ है कि घर के दीपकों में जो आनन्द है वह बिजली के लट्टुओं में नहीं–भला यदि उस सिद्धान्त का पालन होता तो यह क्यों कहना पड़ता। इसलिये खद्दर पहनना ठेठ राज नीति का भाग है–इसकी तेजी के लिये जब तक घर मे चर्खा न चलेगा तब तक यह प्रश्न रहेगा ही। हमारा बहुत सा समय यों ही तो व्यर्थ नष्ट हो जाता है–उस समय मे सूत काता जाय तो कितना अच्छा हो। जब सूत कतेगा तो उपयोग का प्रश्न खड़ा होगा–उसकी कुछ चीजे बनेंगी और चीज़े बनें तो जायें कहाँ–हम अपने कपड़े अपने आप पहिनने लग जायेंगे। जब सब ही घर में ऐसा हो जायगा तो लज्जा और शान का स्थान कहा–वह स्वयं चली जायेगी और उसके स्थान पर अच्छे सूत कतने की स्पर्धा जागृत हो उठेगी–प्रत्येक व्यक्ति चर्खा चलाने का प्रयत्न करेगा और हम दिन प्रति दिन बलवान बनते जाये गे– अपने पैरों पर खड़े होना सीखते जायेंगे।

चर्खे के महान् सिद्धान्त का छिपा रहस्य है जिसे प्रत्येक भारतीय नवयुवक को जानना आवश्यक है।

भारत की परतन्त्रता की हालत मे मशीनों से लाभ नहीं इस मे कुछ हजार मनुष्य लाखों की रोजी मार देते हैं। वैसे ही भारत में किसानों के फालतू समय का अच्छा उपयोग नहीं होता—इस अवस्था मे तो न मालूम क्या होगा। हमें मशीनों की शरण लेने की अभी जरूरत भी क्या ? जहाँ हम अपने देश के लिये प्राण तक दे सकते हैं वहाँ अपनी प्यारी खद्दर के लिये क्या चार पैसे नहीं खर्च कर सकते—पाँच बार मलमल नहीं पहनो एक बार खद्दर ही पहिन लेना ज्यादा सतोषप्रद होगा।

अन्त में भारतीय विद्यार्थियों से देश की राजनीति में भाग लेने से पूर्व एक प्रार्थना है—वह सर्व प्रथम अपनी ठोस चरित्रता और लगातार काम करने की शक्ति की पूर्ण रक्षा करें तब देश के कार्य मे पैर बढाये। प्रायः देखा जाता है कि इन दोनों कीटाणुओं के कारण भारत का जीवन खोखला सा हो गया है। उस में रस नहीं रहा इस लिये भारतीय विद्यार्थी इन दोनों के प्रति खुद आन्दोलन करके तब देश के आन्दोलन में कन्धा लगाये। यदि ये दोनों बातें पर्याप्त मात्रा में न हुई तो उलटा उनके द्वारा विष फैलेगा। इसके अतिरिक्त वह एक देश सेवा और कर सकता है—वह है मद्यनिषेध, यह भी सच्ची सेवा होगी। एक बात और, वह अपने पैरों पर खड़े होने का अधिक प्रयत्न करें—अपने योग्य अपने आप कमायें जहाँ तक हो सके पिता के ऊपर कम बोझ डाले। उसे हर समय यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि वह पिता को अपना व्यय और उसके योग्य कमा कर नहीं देता तो वह देश को दरिद्र कर रहा है।

हर भारतीय नवयुवक का यह कर्तव्य है कि वह स्वराज्य प्राप्त करने के लिये पूरा २ परिश्रम करें और संसार के किसी भी देश के विद्यार्थियों से किसी प्रकार भी पीछे न रहे। मिश्र की आधुनिक स्वतन्त्रता बहुत हद तक वहाँ के विद्यार्थियों के लगातार परिश्रम का फल है उन्होंने अपने देश के लिये जो २ बलिदान किये वे हमेशा के लिये मिश्र के इतिहास में सुनहरी शब्दों से लिखे जायेंगे। महायुद्ध के समय में इगलिस्तान, फ्रांस और जर्मनी के विद्यार्थियों ने कालिजों और शिक्षा केन्द्रों को छोड़कर अधिकांश भाग लिया था। आज स्पेन और चीन के विद्यार्थी अपने देश की स्वतन्त्रता और शान्ति के लिये कठोर परिश्रम कर रहे हैं एक समय था जब कि जापान को आवश्यकता हुई कि अपने बच्चों और नवयुवकों के हृदयों में देश भक्ति की ज्वाला को प्रदीप्त करदे। स्कूलों में सगीतों, किताबों और व्याख्यानों द्वारा उनके हृदयों में राष्ट्रीय भाव जागृत करके उनके जीवन को बहादुर जरनल जैसा बना दिया। उनको हर भान्ति देश की राष्ट्रीय सेवा के लिये प्रेरित किया गया। तरह २ की व्यायाम कराई जाती थी। भिन्न २ प्रकार की कठिनाईयों में उनको डाला जाता था। ताकि समय आने पर वह देश के काम आ सकें।

जापान के उन नवयुवकों ने रूस के साथ युद्ध में जो जौहर दिखाए उनकी याद आज तक चली आती है। जो बलिदान, जो त्याग जापान के नवयुवकों ने देश अनुराग में दिखलाया और जिस लापरवाही से उन्होंने देश के लिये जानें न्योछावर कीं आज वे ससार के इतिहास में सुनहरी शब्दों में लिखी हुई हैं। जापान के इतिहास का

भी सुन लीजिये। एक रूसी जहाज़ के डुबाने के लिये ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता थी जो एक नाव को लेकर जायें। और जहाज़ को डुबा कर स्वयं भी डूब जायं। इसकी सूचना दी गई। हजारों जापानी नवयुवकों ने अपने आपको भेंट किया उनमें से बहुत सारे प्रार्थना पत्र रक्त से लिखे हुये थे। इस लिये भारतीय विद्यार्थियो! तनिक सोचो तो सही क्या तुम किसी अन्य देश के विद्यार्थियों से किसी भाँति कम हो। क्या तुम्हारे दिल में कोई आवाज़ नहीं उठती। इस क र साम्राज्य को जो कि तुम्हें आज व्यर्थ शिक्षा देकर तुम्हारे जीवन को व्यर्थ कर रहा है। चिकना चूर कर दो। याद रखो देश की सारी भावी आशाएं तुम पर ही निर्भर हैं भारत माता के घावों को मरहम लगाने वाले केवल तुम ही हो सकते हो। यदि आप यही चाहते हैं कि अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करें और अपनी संतान के लिये एक नया पथ स्थापित करना चाहें तो स्वतन्त्रता के युद्ध में जाकर एक बलवान सिपाही की भान्ति निर्दोष बनो सबक दो और अपनी खोई हुई शक्ति के लिये तन मन धन से परिश्रम करो।

] स्वतन्त्रता के युद्ध के लिये पूरी रीति से उद्यत
। रास्ते में भिन्न२ प्रकार के कष्टों को सहन करना
। २ कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ोगे छुपी हुई कठिनाईयां
के रूप में आपका धैर्य तोड़ देने में मजबूर
इन कठनाईयों को नीलकण्ठ की तरह पी
विजय अवश्य होगी। विदेशियों ने आप के
गिनत त्रुटियां और कठिनाईयां प्रविष्ट करदी हैं
आपका यह प्रथम कर्तव्य है कि शत्रु को मज़ा च

आज भारत के अनाथ निर्धन लालों को ईसाई मिशनरी अपने जाल में फसाते हैं उन्हें रोटी देने की बजाय ईसु का नाम सिखाते हैं बर्तानिया के नीची श्रेणी के मनुष्य तरह २ के भोग विलास में निर्धन भारत को पूंजी पानी की तरह बहाते हैं। क्या आप इन सब चीजों को नहीं देखते। यदि आप के हृदय में देश सेवा का भाव है अहिंसा का प्रचार करो। इन के तन को खद्दर से सजाओ। और अपने व्याख्यानों से इनके हृदयों में जागृति की लहर पैदा करदो ऐसा साहित्य तैयार करो जिसको पढ़कर मुरदे जाग उठें। और अन्तिम दम तक स्वतन्त्रता के युद्ध में एक भौंरे और परवाने की तरह अपने जीवन को मिटा दो। इस भूमि में वह बीज बोओ जिससे वह फूल पैदा हों जो आजादी की महक देकर तुम्हारी आने वाली संतानों को तुम्हारी याद दिलाती रहें। स्वराज्य स्वतन्त्र जीवन का दूसरा नाम है। स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य का जीवन रूखा, निराश और असफल है। पोलिटिकल शतरंज पर देसी चाल चलकर अपने सत्याग्रह रूपी शस्त्र से विदेशी राज्य का नाश करदो। जिस प्रकार समुद्र से पानी भाप बन कर गरम वायु के रूप में पहाड़ों को सरद वायु से टकरा कर वर्षा के रूप में भूमि पर बरस पड़ता है इसी प्रकार अंग्रेजों के दिल के धुआंधार से भरी हुई गरम हवायें सत्याग्रह के पहाड़ के चारों ओर बहने वाली प्रेम की ठण्डी हवाओं से टकरा कर भारत वर्ष पर दया और स्वतन्त्रता की वर्षा बरसाएगी।

उस समय तलवारें कुन्द हो जायेंगी। तोपों से गोलों न हो सकेंगी और वायुयान की शक्ति नष्ट हो अंग्रेजों की मशीन में फिर कर्ज़न, लायड जार्ज, डायर जैसे निर्दयी बनने बन्द हो जायेंगे।

आज भारत के अनाथ निर्धन लालों को ईसाई मिशनरी अपने जाल में फंसाते हैं उन्हें रोटी देने की बजाय ईसु का नाम सिखाते हैं बर्तानिया के नीची श्रेणी के मनुष्य तरह २ के भोग विलास में निर्धन भारत की पूंजी पानी की तरह बहाते हैं। क्या आप इन सब चीजों को नहीं देखते। यदि आप के हृदय में देश सेवा का भाव है अहिंसा का प्रचार करो। इन के तन को खद्दर से सजाओ। और अपने व्याख्यानों से इनके हृदयों में जागृति की लहर पैदा करदो ऐसा साहित्य तैयार करो जिसको पढ़कर मुरदे जाग उठें। और अन्तिम दम तक स्वतन्त्रता के युद्ध में एक भौंरे और परवाने की तरह अपने जीवन को मिटा दो। इस भूमि में वह बीज बोओ जिससे वह फूल पैदा हों जो आजादी की महक देकर तुम्हारी आने वाली सन्तानों को तुम्हारी याद दिलाते रहें। स्वराज्य स्वतन्त्र जीवन का दूसरा नाम है। स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य का जीवन रूखा, निराश और असफल है। पोलिटिकल शतरंज पर देसी चाल चलकर अपने सत्याग्रह रूपी शस्त्र से विदेशी राज्य का नाश करदो। जिस प्रकार समुद्र से पानी भाप बन कर गरम वायु के रूप में पहाड़ों को सरद वायु से टकरा कर वर्षा के रूप में भूमि पर बरस पड़ता है इसीप्रकार अंग्रेजों के दिल के ख़ुलारात से भरी हुई गरम हवायें सत्याग्रह के पहाड़ के चारों ओर बहने वाली प्रेम की ठण्डी हवाओं से टकरा कर भारत वर्ष पर दया और स्वतन्त्रता की वर्षा बरसाएगी।

उस समय तलवारें कुन्द हो जायेंगी। तोपों से गोलों की बूछाड़ न हो सकेगी और वायुयान की शक्ति नष्ट हो जायेगी और अंग्रेजों की मशीन में फिर कर्जन, लायड जार्ज ओडायर और डायर जसे निर्दयी बनने बन्द हो जाये गे।

कि समस्त रुपया कुछ हो उंगलियों पर गिने जाने वाले पूंजी पतियों के हाथों में पड़ा हुआ है तिसपर भी महाजन व जागीरदार सूद और लगान को दर बढ़ाते चले जा रहे हैं यदि हम प्राचीन समय के भारतीय लोगों की दशा देखें तो हमें विदित होगा कि उस समय भारत का कृषक बड़ा ही सुखी था परन्तु हम देखते हैं हर ग्राम में बेकारी बढ़ती चली जा रही है आज इस देश में १२ लाख भारतीय ऐसे हैं जिन्हें एक बार ही भोजन मिलता है कई करोड़ ऐसे भी हैं जो बिना खाये सो जाते हैं मित्रों यह दशा हमारे गरीब किसानों और मजदूरों की है भारतीय किसान को खेती की प्रधान उपज धान, कोदो, सवाँ, बाजरा, दाल आदि हैं परन्तु बेचारा किसान यह नहीं जानता उसकी खेती में यह हुआ भी था या नहीं। खलीहान से ही समस्त अन्न ज़मींदारों, साहूकारों के घरों में चला जाता है और वह बेचारा अपने छोटे २ बच्चों सहित दुख से दिन बिताता है इनके निवास स्थान भी दीनता के कारण घृणित होते हैं माघ की सर्दी में उसकी झोपड़ी में रहकर वह अपने जीवन की दुख कहानी तारों को सुनाते रहते हैं क्या यह जीवन भयकर नहीं ? क्या पूंजि पति इन गरीब किसानों के बच्चों का जिन पर देश का भविष्य निर्भर किया जा सकता है उत्तरदायी नहीं जिन को वह जान बूझ कर मारता आया है मार रहा है और मारने के प्रयत्न में तत्पर है ? यदि भारत की जन संख्या के इस सबसे बड़े भाग की दशा न सुधारी गई तो भारत स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकेगा,इसमें बहुत सदेह है। मैं कहता हूँ और प्रत्येक साम्यवादी विचार वाला एक स्वर से कहेगा'–

प्राचीन काल के भारतीय धन धान्य से सम्पन्न रहते थे इनका आदर्श था।

"उत्तम खेती मध्यम बान"

वे संस्कृत के धुरंधर विद्वान होते थे। जब तक ब्राह्मण को न खिला देते तब तक भोजन नहीं खाते थे। वे सदा एक दूसरे की सहायता करने में तत्पर रहते थे परन्तु आज वह कुछ नहीं कर सकते और करें भी किस तरह जब उन्हें खाना खाने को भी नहीं मिलता सारांश यह कि भारतीय किसान जटिल समस्याओं में पड चुका है और दिन प्रति दिन तबाही के गार में गिरा जारहा है। पूंजीपति, जमींदारों साहुकारों और सरकारी कर्मचारियों के जुल्मों से अपनी महनत की कमाई भी अपने पेट में डालने से लाचार और मजबूर है। रिशवत का बाज़ार गर्म है, गरीब किसान की कोई इज्जत नहीं, एक सरकारी कर्मचारी जो कि कृषक का दास है और उन गरीब किसानों की कमाई से ही अपना पेट पालता है, गाव में जाकर अपनी हकूमत चलाता है। गरीब किसानों को धक्के देता है, सरकारी दोरे के समय बुरी तरह से धमका कर उन लोगों से बेगार ली जाती है। उस समय कृषक अपने भाग्य को देख कर रोता है। एक रुपये की जगह चार देने पर भी उन छोटे छोटे सिपाहियों के हाथों से बुरी तरह ज़लील और रुसवा होता है इस जालिम हकूमत ने हमारे निर्धन कृषक पर क्या जुल्म नहीं किये किस काम की यह हकूमत जिसमें इन्साफ को न हो। जिस राज्य में जागीरदार, और

और लूट की कमाई के

हों मामूली सरकारी कर्मचारी दासों की तरह अपने अन्न दाता को नचवाते हों इससे बढ़कर और क्या दूसरा जुल्म हो सकता है। अपने हम वतन भाई को लुटवाते हैं। झूटे गुनाहों में फंसा कर ये गुनाहों को सितम की चक्की में पिसवाते हैं। अपना काम अच्छा लिखवाने के वासते अपने हाथ से अपने घर में आग लगाते हैं।

बरबाद कर रहे हो वतन क्यों जनून में।
रंगते हो खून किस लिये भाई के खून में॥

हाय वह किसान जो सदैव सरकार को मां बाप के नाम से पुकारते हैं, सरकार की हर तरह से खिदमत करते हैं उन पर ही उन के जुल्म की बिजलियां गिरे, उन को वृक्षों से बंधवा कर उन की खाल उखड़वा दी जाती है जिन गरीबों के पास ओढने बिछाने को एक कम्बल तक नहीं खेतों में पुराल ओढ बिछा कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं परन्तु सरकारी नोकर शाही उन गरीबों पर से उस पुराल को भी छीन लेती है इस राज्य में तो दौलत की कुञ्जी हाथ बांधे जमींदारों हाकिमों के दरवाज़ों पर खड़ी रहती है, एक बड़े से गुनाह को छुपाने के लिये अशर्फियों की थेलियां पड़ी हैं। जिस समय किसान कई दिन भूका रह कर गुजारता है उस के बच्चे भूक से बिलख कर सर पटक पटक कर सो जाते हैं,वह बच्चे भूके उठते हैं,और उनकी दुख भरी आवाज से माता माता कह कर पुकारते हैं उस समय उन गरीब और लाचार माताओं की क्या छाती नहीं फटती उन की आंखों के सामने उनके लाल इस दुनियां से जब मुंह मोड़ लेते हैं। हे ईश्वर तेरी यह क्या लीला है, हे भगवान !

जीवन मरण माया का बन्धन तोड़ जब देता है तू।
परतन्त्रता की बेड़िया क्या काट सकता तू नहीं॥
गुप्त शक्ति से मिटादे जगत के अत्याचार को।
देखता है देश की यह दुर्दशा क्या तू नहीं॥
भारत के बच्चे आह व नाले कर रहे हैं भूक से।
औलाद ये दाने से इनकी मर रही है भूक से॥

हे भारत जननी कभी तो तू प्राण रक्षक कहलाती थी आज क्यों प्राण भक्षक बन रही है। जो ज़मीन एक एक दाने के बदले हजारों दाने पैदा करती थी आज वह उन बोए हुये दानों को भी अपने गर्भ में छुपा लेती है।

कुछ दिन पहले जिनके घर थे सुख सम्पत के साज।
उनके बच्चे आज हैं रूखी रोटी को मोहताज॥
जिनकी मेहनत और कमाई से खाता है सारा देश।
वही किसान देखते हैं अपने बच्चों का रोना कलेश॥

हाय भारत माता तेरे लाल भूख की अग्नि से जल रहे हैं, भूख की ज्वाला में जलाये जारहे हैं, हाय माता आज तेरे घर में अन्न का नाम नहीं, कब यह सरकारी कर्मचारी दुखी माता के दुख को दूर करेंगे।

आनन्द नन्द में मग्न थे जिस देश के वासी सभी।
सुर भी तरसते थे जहाँ पर जन्म लेने को कभी॥
हा! आज उसकी यह दशा, सन्ताप छाया सब कहीं?
सुर क्या, असुर भी अब यहा पर जन्म चाहेंगे नहीं॥

भारत! कहो तो क्या आज तुम वही भारत हो जो तमाम संसार का सिर मोर समझा जाता था। जो

हाँ मामूली सरकारी कर्मचारी दासों की तरह अपने अन्न दाता को नचवाते हों इससे बढ़कर और क्या दूसरा जुल्म हो सकता है। अपने हम वतन भाई को लुटवाते हैं। झूटे गुनाहों में फसा कर वे गुनाहों को सितम की चक्की में पिसवाते हैं। अपना काम अच्छा लिखवाने के वासते अपने हाथ से अपने घर में आग लगाते हैं।

बरबाद कर रहे हो वतन क्यों जनून में।
रंगते हो खून किस लिये भाई के खून में॥

हाय वह किसान जो सदैव सरकार को माँ बाप के नाम से पुकारते हैं, सरकार की हर तरह से खिदमत करते हैं उन पर ही उन के जुल्म की बिजलिया गिरे, उन को वृक्षों से बंधवा कर उन की खाल उधड़वा दी जाती है जिन गरीबों के पास ओढने बिछाने को एक कम्बल तक नहीं खेतों में पुराल ओढ बिछा कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं परन्तु सर॰ कारी नोकर शाही उन गरीबों पर से उस पुराल को भी छीन लेती है इस राज्य में तो दोलत की कुंजी हाथ बांधे उमीदवारों और हाकिमों के दरवाज़ों पर खड़ी रहती है, एक बड़े से गुनाह को छुपाने के लिये अशर्फियों की थैलिया पड़ी ती हैं। जिस समय किसान कई दिन भूका रह कर गुजारता है उस के बच्चे भूक से बिलख कर सर पटक पटक कर सो जाते हैं,वह बच्चे भूके उठते हैं,और उनकी दुख भरी आवाज से माता माता कह कर पुकारते हैं उस समय उन गरीब और लाचार माताओं को क्या छाती नहीं फटती उन की आँखों के सामने उनके लाल इस दुनिया से जब मुंह मोड़ लेते हैं। हे ईश्वर तेरी यह क्या लीला है, हे भगवान!

जीवन मरण माया का बन्धन तोड़ जब देता है तू।
परतन्त्रता की बेड़ियां क्या काट सकता तू नहीं॥
गुप्त शक्ति से मिटादे जगत के अत्याचार को।
देखता है देश की यह दुर्दशा क्या तू नहीं॥
भारत के बच्चे आह व नाले कर रहे हैं भूक से।
औलाद थे बाले से इनकी मर रही है भूक से॥

हे भारत जननी कभी तो तू प्राण रक्षक कहलाती थी आज क्यों प्राण भक्षक बन रही है। जो ज़मीन एक एक दाने के बदले हजारों दाने पैदा करती थी आज वह उन बोए हुये दानों को भी अपने गर्भ में छुपा लेती है।

कुछ दिन पहले जिनके घर थे सुख सम्पत के साज।
उनके बच्चे आज हैं रूखा रोटी को मोहताज॥
जिनकी मेहनत और कमाई से खाता है सारा देश।
वही किसान देखते हैं अपने बच्चों का रोना क्लेश॥

हाय भारत माता तेरे लाल भूख की अग्नि से जल रहे हैं, भूख की ज्वाला में जलाये जारहे हैं, हाय माता आज तेरे घर में अन्न का नाम नहीं, कब यह सरकारी कर्मचारी दुखी माता के दुख को दूर करेंगे।

आनन्द सन्ध में मग्न थे जिस देश के वासी सभी।
सुर भी तरसते थे जहाँ पर जन्म लेने को कभी॥
हा! आज उसकी यह दशा, सन्ताप छाया सब कहीं॥
सुर क्या, असुर भी अब यहां पर जन्म चाहेंगे नहीं॥

भारत! कहो तो क्यों आज तुम वही भारत हो,
तमाम संसार का सिर मौर समझा था। जो

उपाय का प्रबन्ध किया जाता था। आज कल की तरह नहरें सरकार की आय बढ़ाने का उपाय नहीं समझी जाती थीं। केवल नहरों के बनाने का प्रयोजन पीड़ित कृषकों की सहायता देना था पशुओं के चरने के लिये प्रत्येक गाव में चरागाह होते थे। चोर और डाकुओं से भी रक्षा की जाती थी। क्या आज कल भी गावों में किसान के पशुओं के लिये चरागाह होते हैं? ढूंढे से भी न मिलेंगे।

राजा खेतो में इतनी दिलचस्पी क्यों लेता था इसका एक मात्र कारण है भूमि कर में पैदावार का नियत भाग लिया जाना। कारण पैदावार की कमी होने पर कम आय और अधिक होने पर अधिक आय होती थी। फिर भला राजा को खेती में क्यों न दिलचस्पी होगी? जिस खेत में छै मन अनाज पैदा होता था राजा को उसका छठा हिस्सा अर्थात् एक मन अनाज दिया जाता था। यदि किसी वर्ष उसी खेत में केवल तीन मन अनाज पैदा होता तो राजा को भी उसी हिसाब से २० सेर मिलेगा, परन्तु आज भारत वर्ष में भूमि रुपयों में दिया जाता है। चाहे पैदावार हो या न हो उचित मूल्य मिले या न मिले, चाहे अन्न पेट भोजन मिले या न मिले, परन्तु उसे तो चुकानी ही पड़ेगी। न होगा महाजन से कर्ज होगा। खाने पीने के बर्तन तक बेच देने पड़ेंगे। कि जो सब का पालन पोषण करे वह रह कर अपना जीवन व्यतीत करे। यह है आधुनिक किसान की दशा में आकाश पाताल अनावृष्टि या अन्य दैवी

जाती हैं तो बेचारे किसान का दम ही सूख जाता है। यदि पहिले उसके हड्डियों के ढांचे में जीवन की कोई शेष झलक थी तो इन दुर्घटनाओं की बिजली गिरने से वह भी भस्म हो जाती है।

मुस्लिम काल

हिन्दू राजाओं के पश्चात् मुसलमान बादशाहों का नंबर आता है। मुसलमानों के समय में भी किसान से पैदावार का नियत भाग लिया जाता था। हिन्दू राजाओं के समय में पैदावार का छठा, आठवाँ या बारहवाँ भाग लिया जाता था, परन्तु मुसलमानों के समय में चौथाई और तिहाई तक कर दिया गया। यद्यपि मुसलमानों के समय में किसान को अधिक देना पड़ता था, तथापि उसे और उसके बाल बच्चों को भर पेट भोजन अवश्य मिल जाता था। मुसलमानों के समय के इतिहास के देखने से पता चलता है कि उस समय भूमि कर वसूल करने के चार तरीके प्रचलित थे। पहला कुकूट, जिसमें खेत में खड़ी हुई फसल को देखकर पैदावार का अन्दाज़ा लगाया जाता था। दूसरा तरीका बटाई का था जिसमें फसल काट कर खलियानों में आने पर अनाज बट जाता था। तीसरा तरीका था खेत बटाई, जिसमें बीज बोने के पश्चात् फौरन ही खेत बाट दिया जाता था। भूमि की पैदावार में राजा और किसान दोनों का ही समान हित होता था। यदि फसल अच्छी होती है तो किसान और राजा दोनों लाभ होता था और यदि फसल नष्ट हो गई हो तो ो ही हानि होती थी। ऐसी दशा में राजा और

उपाय का प्रबन्ध किया जाता था। आज कल की तरह नहरें सरकार की आय बढ़ाने का उपाय नहीं समझी जाती थीं। केवल नहरों के बनाने का प्रयोजन पीड़ित कृषकों की सहायता देना था पशुओं के चरने के लिये प्रत्येक गांव में चरागाह होते थे। चोर और डाकुओं से भी रक्षा की जाती थी। क्या आज कल भी गावों में किसान के पशुओं के लिये चरागाह होते हैं? ढूंढे से भी न मिलेंगे।

राजा खेती में इतनी दिलचस्पी क्यों लेता था इसका एक मात्र कारण है भूमि कर में पैदावार का नियत भाग लिया जाना। कारण पैदावार की कमी होने पर कम आय और अधिक होने पर अधिक आय होती थी। फिर भला राजा को खेती में क्यों न दिलचस्पी होगी? जिस खेत में छै मन अनाज पैदा होता था राजा को उसका छटा हिस्सा अर्थात् एक मन अनाज दिया जाता था। यदि किसी वर्ष उसी खेत में केवल तीन मन अनाज पैदा होता तो राजा को भी उसी हिसाब से २० सेर मिलेगा, परन्तु आज भारत वर्ष में भूमि कर रुपयों में दिया जाता है। चाहे पैदावार हो या न हो चाहे उसका उचित मूल्य मिले या न मिले, चाहे अन्न दाता को भर पेट भोजन मिले या न मिले, परन्तु उसे लगान की रकम तो चुकानी ही पड़ेगी। न होगा महाजन से कर्ज लेकर देना होगा। खाने पीने के बर्तन तक बेच देने पड़ेंगे। कितना अत्याचार कि जो सब का पालन पोषण करे वह स्वयं भूखा रह कर अपना जीवन व्यतीत करे। यह है प्राचीन और आधुनिक किसान की दशा में आकाश पाताल का अन्तर। जब अतिवृष्टि, अनावृष्टि या अन्य दैवी दुर्घटना उपस्थित हो

जाती है तो बेचारे किसान का दम ही सूख जाता है। यदि पहिले उसके हड्डियों के ढांचे में जीवन की कोई रोप झलक थी तो इन दुर्घटनाओं की बिजली गिरने से वह भी भस्म हो जाती है।

मुस्लिम काल

हिन्दू राजाओं के पश्चात् मुसलमान बादशाहों का नंबर आता है। मुसलमानों के समय में भी किसान से पैदावार का नियत भाग लिया जाता था। हिन्दू राजाओं के समय में पैदावार का छठा, आठवाँ या बारहवाँ भाग लिया जाता था, परन्तु मुसलमानों के समय में चौथाई और तिहाई तक कर दिया गया। यद्यपि मुसलमानों के समय में किसान को अधिक देना पड़ता था, तथापि उसे और उसके बाल बच्चों को भर पेट भोजन अवश्य मिल जाता था। मुसलमानों के समय के इतिहास के देखने से पता चलता है कि उस समय भूमि कर वसूल करने के चार तरीके प्रचलित थे। पहला कुकुट, जिसमें खेत में खड़ी हुई फसल को देखकर पैदावार का अन्दाज़ा लगाया जाता था। दूसरा तरीका बटाई का था जिसमें फसल काट कर खलियानों में आने पर अनाज बट जाता था। तीसरा तरीका था खेत बटाई, जिसमें बीज बोने के पश्चात् फौरन ही खेत बाट दिया जाता था। भूमि की पैदावार में राजा और किसान दोनों का ही समान हित होता था। यदि फसल अच्छी होती है तो किसान और राजा दोनों को ही लाभ होता था और यदि फसल नष्ट हो गई हो तो दोनों को ही हानि होती थी। ऐसी दशा में

किसान दोनों ही भूमि की ओर ध्यान देते थे। यदि किसी वर्ष में अकाल पड़ जाता है या और कोई दैवी दुर्घटना उपस्थित हो जाती थी तो कहा जाता है कि ऐसे समय में स्थान २ पर किसानों के लिये कम मूल्य पर अनाज बांटने की व्यवस्था कर दी जाती थी।

मुगल साम्राज्य के अन्त तक किसानों की अवस्था बहुत कुछ सुधरी हुई रही। परन्तु १७०७ ई० में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य का सूर्य अस्त होने लगा। पिछले अयोग्य और विलासी मुगल बादशाहों को दीन व दुनिया की कुछ भी खबर न थी इनके समय में भूमि कर वसूल करने का एक नया ढंग उत्पन्न हुआ। उस तरीके को एक प्रकार से ठेकेदारी का रूपान्तर कह सकते हैं। किसानों से भूमि कर का कुछ नियत भाग लेने की प्रथा टूट गई। इसके स्थान में भूमि कर वसूल के ठेके दिये जाने लगे। ठेके भी रकमों के होने लगे अत: इस समय में आकर भूमि कर की रकम नियत हो गई और अधिक से अधिक वसूल करने के लिये कोशिशें होने लगीं। जिस समय किसानों से पैदावार का कुछ भाग लिया जाता था उस समय राजा को भी खेतों की उन्नति का ध्यान रहता था। परन्तु जब राजा को नियत ठेकेदारों से नियत रकमें मिलने लगीं तो खेतों की ओर राजा ध्यान क्यों देने लगे ? भूमि कर की रकम नियत हो जाने से उस रकम को चुकाना भी अनिवार्य हो गया।

अंग्रेजी राज्य।

दिनों पश्चात जब भारत में अंग्रेजी राज्य

की स्थापना हुई तो इसी दूषित प्रणाली का समर्थन किया गया और भूमि कर देना अनिवार्य समझा जाने लगा। धीरे २ भूमि कर वसूल करने वाले ठेकेदार ही जमींदार कहलाने लगे। गरीब किसानों के साथ यह कितना घोर अन्याय किया गया! जो किसान अपनी भूमि का पुश्त दर पुश्त से मालिक था, उसे केवल मजदूर बना दिया गया और जो सरकार की ओर से भूमि कर वसूल करने वाले ठेकेदार थे वे जमींदार बन बैठे। इसे कहते हैं भाग्य चक्र। जो जमींदार था वह मजदूर होगया। और जो वास्तव में मजदूर था वह बन बैठा जमींदार।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट मालूम हो जाता है कि किस प्रकार जमींदार सिस्टम का आविर्भाव हुआ। जैसे ऊपर बताया जा चुका है कि भूमि कर की रकम नियत करदी गई और यह इस प्रणाली में सबसे भारी दोष था। चाहे बेचारे किसान के खेत में अनाज की एक बाल भी पैदा न हो परन्तु उसे भूमि कर की नियत रकम अवश्य चुकानी पड़ेगी।

इस प्रणाली में दूसरा दोष यह था कि जमींदारी सिस्टम के स्थापित हो जाने से किसान भूमि का मालिक न रहा। भूमि का मालिक जमींदार हो गया चूंकि भूमि का मालिक जमींदार हो गया। चूंकि भूमि जमींदार की समझी जाने लगी, किसान से लगान इस बिना पर लिया जाने लगा कि जमीन जमींदार की थी। भूमि कर राजा को भूमि की रक्षा करने के एवज में मिलता है, यह सिद्धान्त ही उड़ा दिया। फिर भला सरकार और जमींदार को क्या पड़ी है जो व्यर्थ में अपना सर खपायें और खेतों की ओर ध्यान दें। अब

सरकार को जमीदार से और जमीदार को किसान से हुई रकम लेने का पूरा २ अधिकार है, तो फिर सरकार वा जमीदार किस लोभ से खेती की ओर ध्यान दे। उन्हें भूमि की पैदावार से क्या प्रयोजन? परन्तु इससे भी अधिक अनर्थ तो देखिये कि जब किसान के अनाज का भाव चढ़ जाता था, तो फिर उसे भूमि कर भी आधा देना पड़ता था। क्योंकि इससे यह समझा जाता था कि किसान को अपनी पैदावार का मूल्य अधिक मिल रहा है। इससे उसे जमींदार को भी अधिक से अधिक रुपया देना चाहिये। परन्तु यह केवल भ्रम है। सम्भव है, यह किसी वर्ष में ठीक भी हो जाय, परन्तु अधिक तर यही देखा गया है कि अनाज का भाव तेज होने के कुछ और कारण होते हैं। यदि फसल नष्ट हो जाती है, तो भी अनाज का भाव तेज हो जाता है, कारण पैदावार कम होती है जब पैदावार कम होगी तो बेचारे किसानों की अधिक आमदनी कहां से होगी।

इस विषय में एक बात विशेष उल्लेखनीय है। यदि किन्हीं वर्षों में अनाज का भाव खूब ही तेज हो जाता है, तो उसी तेजी के आधार पर लगान की रकम भी बढ़ा दी जाती है। परन्तु जब चीज़ों का भाव फिर गिर जाता है तो प्रायः यह देखा गया है कि लगान कम नहीं किया जाता। उदाहरणार्थ गत यूरोपीय महायुद्ध के पश्चात् हमारे देश में लगभग सभी पदार्थों का मूल्य दूने से भी अधिक बढ़ गया था। सम्भवतः तिगुने से कुछ ही कम होगा। इस महंगेपन आधार पर लगान भी खूब चढ़ा दिया गया।

वर्तमान किसान

आज किसानों की दशा बड़ी शोचनीय है। बेचारे का पेट तक नहीं भरता। गांव में जाय किसानों की दशा का निरीक्षण कीजिये। आप को स्वयं ज्ञात हो जायगा कि आपका पेट भरने वाले किसान के घर नित्य एकादशी का व्रत होता है। आत्म त्याग तप और संयम का वह आदर्श है। जीवन की उसे इच्छा नहीं धन को उसे कामना नहीं, और शीत घाम और वर्षा की उसे परवाह नहीं। वृक्षों के कलामय राज प्रसाद की (केवल) एक सर्वोपयोगी शाला में शानदार पलंग पर रंग बिरंगी झालरदार ? गर्वित शैया पर कृषक राज-सुत की नींद सो रहे हैं।

मुशकिल से ३) माहवारी की कमाई वाला किसान क्या अधिक जीवित रह सकेगा। गृहस्थ का पालन पशुओं की उदर पूर्ति। शारीरिक रक्षा के लिये कपड़े और बाल बच्चों का विवाह व लड़कियों का दासत्व ये सब विभीषिकायें बन कर उस पर वार करती हैं। चारों ओर से खाने की आवाज़।

पैदावार की कमी.

भारतीय किसान को खेती बाड़ी के काम में दिन पर दिन घाटा ही होता जाता है वर्षा सन्देह युक्त और अनिश्चित है, उसके पशु अधिकतर मरते ही रहते हैं भाव गिरते ही आ रहे हैं अर्थ यह है कि खेती बाड़ी में लाभ की सूरतें कम और नुकसान की बहुत ज्यादा हैं-हिन्दुस्तान के लोग नुकसान के बावजूद इस पेशे में केवल इस लिये लगे हुये हैं कि

जीवन व्यतीत करने का इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

भोजन इत्यादी की फस्लों को पैदा करने से जो बचत किसान को मामूली सालों में हुवा करती थी वह बहुत कम हुई थी परन्तु जब से भाव गिर कर अपनी वर्तमान अवस्था को पहुँचे हैं इस वक्त से तो बचत की जगह खुला हुवा नुकसान हो रहा है किसान की जोत में जो आज जमीन है इसपर सैंकड़ों वर्षों से काश्त का सिल सिला जारी है इस लिये भूमि की प्राकृतिक उपजाऊ शक्ति से जितना अधिक से अधिक काम लिया जा सकता था वह लिया जा चुका है अब इसकी उपजाऊ शक्ति को खाद के जरिये ही बढाया जा सकता है परन्तु किसान जमीन में खाद यातो इस लिये नहीं डालता कि जमीन इसकी अपनी नहीं है या इसलिये कि गोबर जो सबसे सस्ता खाद है इसका फायदा ईंधन की तरह प्रयोग करने में ज्यादा है हिन्दुस्तान की बरसात का अस्थायित्व प्रसिद्ध है। यदि १वर्ष खुश्कसाली होती है तो दूसरे साल बाढ़ आ जाते हैं आबपाशी के इन्तिज़ाम से मामूली सा असर कम होता है सरकार ने लग भग एक अरब ५० करोड़ रुपया तीन करोड़ बजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिये लगाया है किन्तु सिंचाई द्वारा बहुत थोड़ी भूमि में खेती होती है। प्रथम तो पानी का भण्डार अविश्वास योग्य है और दूसरी ओर ओले पाले जँगली जानवरों, टिड्डियों चूहों और दूसरे हानिकारक जानवरों से पैदावर को हानि पहुँचती रहती है। इस के अतिरिक्त खेती के ढंग बड़े ही पुराने हैं। और जो यंत्र काम में लाये जाते हैं। जैसे लकड़ी का हल

हँसिया, बहुत पुराने हैं। अनाज को छाई हाथ से की जाती है या लकड़ी से पीट कर बैलों के खुरों के नीचे रौंदाकर। आधुनिक यंत्रों के खरीदने के लिये किसानों के पास रुपया नहीं होता।

बीमार पशुओं को अलग नहीं रक्खा जाता जिससे इनमें रोग फैलते हैं। फिर एक फसल काटनेके बाद खेतों को बहुत समय तक खाली छोड़ दिया जाता है। बेकार पशुओं को जीव हत्या के भय से नहीं मारा जाता। परिणाम यह है कि अमरीका में तो पशु का बोझ लग भग चोदह सो पोण्ड होता है किन्तु भारत वर्ष में चारसौ से सात सो पचीस तक होता है।

उपरोक्त बातों से यह प्रकट होता है कि किसानों की कठिनाईयों का कारण पैदावार की कमी है। भारत में प्रति एकड़ केवल तेरह बुशल गेहूं पैदा होता है। यद्यपि इंगलिस्तान में गेहूँ की पैदावार ३१ बुशल और डनमार्क में ३८ बुशल प्रति एकड़ है। भारत में प्रति एकड़ नौसौ पोण्ड चावल पैदा होता है किन्तु अमेरीका में २०३० पोण्ड और जापान में २०७० पोण्ड भारत में प्रति एकड़ ८८ पौण्ड कई पैदा होती है किन्तु अमरीका में एक सौ इकतालीस पोण्ड और मिसर में २५३ पोण्ड।

पैदावार की इस कमी के अतिरिक्त खाने वालों की संख्या ३५ करोड़ है और इनमें से ७० प्रतिशत को कृषि के धंधे से ही अपना पेट पालना पड़ता है जिस भूमि पर खाद्य पदार्थ पैदा किये जाते हैं इसको निसबत जन संख्या के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को $\frac{3}{4}$ एकड़ पड़ता है फिर सबसे बढ़कर अत्याचार यह है कि १६४१ ई० में भारत

जन संख्या ५० करोड़ तक बढ़जाने की सम्भावना है अतः दशा शोचनीय प्रतीत होती है। कुछ वर्ष बीते एक कृषि के प्रवीण ने दक्षिण के एक ग्राम की दशा को भली भांति देख कर यह मालूम किया था कि भूमि के स्वामियों में केवल आठ कुल ऐसे थे जिन्हें अपनी भूमि से काफी आय होती थी २८ कुल ऐसे थे जो कृषि के अतिरिक्त दूसरे धंधों से अपनी आय में वृद्धि करके केवल निर्वाह के योग्य कमाते थे और ६७ कुल ऐसे थे जो अति निर्धनता में जीवन व्यतीत करते थे उन महाराजों और लखपतियों के अतिरिक्त जो संसार रूपी स्टेज पर मोरों की नाई पूंछ फैला कर नाचते और अपने परों की चमक दमक दिखाते हैं। भारत निर्धनों का देश है लोगों के खान पान से इनकी आर्थिक दशा का पता चलता है। कर्नल मैक कोस जो भारत में खाद्य पदार्थों की देख भाल कर रहा है इन्होंने जब देश की जन संख्या के खास २ जातियों उदाहरणतः सिक्खों मराठों, गोरखों और पठानों और मद्रासीयों की खाद्य पदार्थ के बारे में देख रेख की तो इससे कई २ आश्चर्य जनक परिणाम प्रतीत हुए। जब इन सब जातियों के खाद्य पदार्थों का तजुरबा चूहों को खिलाकर किया गया तो इस तजुरबे से सिक्खों और बङ्गालियों की खाद्य सामग्रीयों का अन्तर मालूम होगया जिन चूहों ने सिक्खों के खाद्य पदार्थों को खाया तो वह स्वस्थ और चंचल और आराम पसन्द बन गये लेकिन जिन्होंने बंगालियों के खाद्य पदार्थ खाए उनके स्वास्थ्य खराब और उनका स्वभाव तेज़ तरार हो गया इसलिए बंगाल में जितनी राजनैतिक हलचलें होती हैं वे सब खाद्य पदार्थों के कारण होती हैं लार्डलिनलिथगो आधुनिक वायसराय ने हाल में इस बारे में बताया है कि

२० प्रतिशत जन संख्या के बारे में कहा जा सकता है कि उसे पेट भर खाने को मिलता है।

Human element.

मनुष्य सब से मुख्य गिना जाता है परन्तु भारत में इसे सबसे अधिक भुलाया जाता है मनुष्य जिस दशा में काम करता है वह बहुत ही हिम्मत तोड़ने वाली है उसे न केवल पैदावार की कमी का मुकाबला करना पड़ता है परन्तु इसके साथ ही जमींदार साहूकार और सरकारी नौकर सब इसकी जान के ग्राहक बने रहते हैं जमींदार ऐसा लुटेरा है कि फसल चाहे अच्छी हो या खराब वह अपना लगान अवश्य वसूल करता है साहूकार इतना लोभी है कि अब वह यह आवश्यकता समझता है कि कृषक को जीवन भर के लिये अपना ऋणी बनाए रखे तो उसे अपने बही खातों में जालसाजी करने में कोई झिझक नहीं होती फिर सरकारी नौकरों की निर्दयता है जो लगान वसूल करने में सब चीजें कुर्क कर लेते हैं और इसके घर को बरबाद करके उसे दर दर की ठोकरें खाने के लिये तंग करते हैं यह ग्रामीण जीवन की ऐसी घटनाएं हैं जिनसे प्रत्येक मनुष्य भली भांति परिचित है किसान सुस्त, अज्ञान और कल की न सोचने वाला होता है इसका जीवन भली भांती इसके शत्रु रूपी मित्रों पर होता है। इसे सरकारी चपरासियों और मुन्शियों तथा मुदर्रिसों को जिनकी तनख्वाहें बहुत कम होती हैं रिशवतें देनी पड़ती हैं इन छोटे २ नौकरों के ऊपर बड़े अधिकारी होते हैं जिनको इस लूट मार में हिस्सा मिलता है और इस तरह गरीब किसान को जिसका शिकार करना बहुत आसान है। बुरी तरह मोच खसोट लिया

इकाइयों में शिक्षा फैलाई गई। परन्तु भारत वर्ष में सौ साल में सरकार केवल अधिक से अधिक ८ प्रति शत मनुष्यों को शिक्षित बनाने में सफल हुई है।

परन्तु जब सरकार की आधी से अधिक आमदनी फौज पर खर्च कर दी जाय और जो शेष बचे उसका बड़ा भाग अन्य सरविसों के कार्य्यकर्ताओं को भेंट कर दिया जाय तो इससे अधिक शिक्षा की कोई आशा नहीं की जा सकती हर सूबे में compulsory education Act पास हो चुका है। परन्तु यह सब कागज़ी कार्रवाई है। शिक्षा फैलाने के लिये रुपये की आवश्यकता है। और सरकार के खजाने में इस कार्य्य के लिये रुपया ही नहीं है। परिणाम यह कि अशिक्षित होने के कारण वे जीवन के उद्योग में अति दुर्बल प्रतीत होते हैं और उन्नति के सब मार्ग उनके लिये बन्द रहते हैं।

जब तक शिक्षा का माध्यम से भारतीय किसानों को नये ढंगों से कृषि करने के लाभ से भली भांति विदित न किया जावे उस समय तक न तो कृषि के साइंटिफिक ढंग फैलाये जा सकते हैं न साहूकार से मुक्ति दिलाने के लिये सहयोगी संस्थाएं स्थापित की जा सकती हैं। न सफाई और न स्वास्थ्यरक्षा के असूलों को उन्नति दी जा सकती है। और न ही रोगों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। संक्षेप में कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता परन्तु सरकार सस्ते और Radical नुसखों की चिन्ता में है। अतएव पंजाब में कृषि कालिज के ग्रेजुएट सरकार के खर्चे से ज़मीनों पर बसाये जा रहे हैं। ताकि वह अपने पड़ोसियों को पैदावार को बढ़ाने की शिक्षा दे सकें। बम्बई प्रान्त में एक प्रस्ताव है

कि डाक्टरों को पुरस्कार देकर ग्रामों में प्रेकटिस करने के लिये प्रस्तुत किया जाय। सरकार ग्रामों में बहुत से रेडियो स्टेशन स्थापित करने की तजवीज कर रही है। ताकि सोवियट रूस की भान्ति रेडियो माध्यम से बालिगों की शिक्षा दी जा सके परन्तु रेडियों का सैट खरीदना किसान की शक्ति से बाहर है इस लिये किसानों को सरकारी रुपये से रेडियो देने होंगे।

ग्रामों की बेकारी

ग्रामों की दूसरी बुरी समस्या है, बेकारी। किसान कम से कम तीन महीने अवश्य बेकार रहता है। इस के अतिरिक्त मेहनत को इकट्ठा करने का परिश्रम नहीं किया जाता और भूमि को हजारों ऐसे मनुष्यों को पोषण करना पड़ता है जिन की मेहनत का लाभ केवल साल के चन्द उद्यमी दिनों में ही उठाया जा सकता है। पुराने काल मे ज्यादा जन संख्या को ग्रामीण व्यापारों, उदाहरणत कपड़ा बुनना, दरी बुनना और कोल्हू के काम इत्यादि मे लगाया रक्खा जाता था। परन्तु जब से बरतानिया और फिर जापान ने अपने माल को भारत की मण्डियों मे भेजना आरम्भ किया है तब से सारे देशी व्यापारी तबाह होगये हैं भारत में large seeds production के चन्द व्योपार हैं जैसे सूती कपड़े बुनने के कारखाने, लोहे और फोलाद के कारखाने, शक्कर के कारखाने इनसे ग्राम के लाखों निर्व्यापारियों के लिये काम नहीं निकल सकता। और चूंकि सरकारी नालोसी यह मालूम होती है कि भारत को केवल एक

अच्छी न हो और प्रान्तों के मंत्रियों को बड़े २ अधिकारियों के वेतनों और उनकी कमी पर कोई अधिकार न हो फिर भी हमें यह आशा है कि मंत्री बहुत से ढंगों से किसानों की सहायता करेंगे। और हम आशा करते हैं कि मंत्री हमारी इन बातों पर पूरा ध्यान करके इन ढंगों को कार्यक्षेत्र में प्रवृत करेंगे। यहां पर हम केवल एक ही दो उपाय बतायेंगे। निर्धनता ही वास्तव में किसानों के पतन का कारण है। अतः इसकी चिकित्सा भी इनकी आर्थिक दशा का सुधार है। सबसे प्रथम आवश्यकता है कि किस प्रकार कृषकों की आय बढ़ाई जावे और दूसरी आवश्यकता है इनके फालतू व्यय को घटाना ताकि इनको पेट भर भोजन और ऋतुओं के कष्ट से बचने के लिये वस्त्र मिल सकें वे अपना जीवन सुख पूर्वक बिता सकें।"

Bribory.

इसके अतिरिक्त किसान निर्धन हैं फिर भी उसे बहुत सा रुपया दूसरे मनुष्यों को विवश देना पड़ता है। और यह संख्या में बहुत अधिक है। इस extravagance बहुव्यय में शो[illegible] ही कमी की जा सकती है सबसे अधिक व्यय जो कृषक, दशा में करना पड़ता है वह अधिकारियों कर्मचारियों को घूस का है। ग्राम में पटवारी ही के भाग्य का निर्णय करते हैं और इनकी खाल खींचते हैं। इस प्रकार निर्धनों को कोई मनुष्य विवश हो कर कर्मचारी उसकी खूब हजामत बनाते हैं। से छुटकारा दिलाने का परिश्रम

बहुत ही लूटा जाता है। भारत के सरकारी अधिकारियों को संसार भर के अधिकारियों से अधिक वेतन मिलता है। परन्तु फिर भी रिश्वत का बाज़ार गरम है क्या यह लज्जा की बात नहीं जापान को देखिये। यद्यपि वहां पर कर्मचारियों का वेतन कम है परन्तु फिर भी वहा पर घूस नहीं ली जाती। इस समय आधुनिक सरकार को यह एलान कर देना चाहिये कि वे अपने २ महकमे को घूस बन्द करवाने के जुम्मेवार हैं यदि वे ऐसा न करें तो उन्हें एक दम नौकरी से हटा देना चाहिये। इन लोगों को शाही ढंग को छोड़ कर जनता की सेवा करनी चाहिये गांव २ में घूम कर जनता को डराने और धमकाने के अतिरिक्त प्रेम का व्यवहार करना आवश्यक है उनका यह प्रथम कर्तव्य है कि वे प्रजा के दुख को सुनें। यदि वे अपने नीचे के चापलूस कर्मचारियों की बातों को सुनने की बजाये उनके कर्मों का निर्णय करलें तो यह स्पष्ट रूप से जाहिर हो जायेगा कि छोटे २ कर्मचारी कितना अन्याय करते हैं आधुनिक काल को हम सुख और शान्ति का काल कहते हैं किन्तु वास्तव में यह तबाही और बरबादी का काल है। निर्धन किसानों की कमाई से, सरकारी कर्मचारियों का पेट पाला जाता भगवान वह कौन सा समय होगा जब उन के खून कर्मचारी उनके कष्ट को दूर करने का प्रयत्न यों मंत्री मंडल इस लूट को जिसे अधिकतर से पुकारा जाता है बन्द करने में सफल होंगे बरबाद होने वाले घरों को आबाद कर न किसानों के हृदय में वह उमा

देंगे कि वह ऐसी सरकार की प्रजा है जिस के अधिकारी इनकी बात सुना करते हैं। घूस बन्द करने के प्रश्न को प्रथम श्रेणी में केवल इसी लिये रक्खा गया है कि इस में रुपया व्यय करने की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु अधिकारियों को अपना कर्तव्य पूरा करने की आवश्यकता है, इस प्रकार किसानों की निर्धनता मे बड़ी सहायता की जा सकती है, जिस प्रकार वह मनुष्य जो बेहोश दुखी तथा निर्बल और भद्दे रोगी से परहेज़ करता है डाक्टर नहीं बन सकता ठीक इसी प्रकार वह अधिकारी जो फटे वस्त्र पहने हुवे विवश भूखे किसान से बात नहीं कर सकता और न ही उसकी दर्द भरी कहानी सुन सकता है अपने आप को अधिकारी कहने का कोई अधिकार नहीं रखता इस लिये प्रथम आवश्यकता यह है कि हमारे अधिकारी उनकी दर्द भरी कहानी सुनें और उनके दुख को दूर करने का प्रयत्न करें। रोगी को धैर्य बन्धाने वाले शब्द दवाई से अधिक लाभ दायक हैं यदि इस सत्य को हमारे अधिकारी अनुभव करलें तो क्या ही अच्छा हो।

मंडियों का सुधार

भारत की मंडियों में निर्धन किसान को दिन धोखे लूटा जाता है। मंडियों में तो क्या खाद्य पदार्थ दूध, घी आटा चावल तक भी उसको शुद्ध प्राप्त नहीं हो सकते जिसका परिणाम न यह केवल होता है कि भारत वासियों को शुद्ध भोजन नहीं मिलता परन्तु इसका सबसे बुरा परिणाम यह है कि किसान की वस्तुयें सस्ती बिकती हैं और इस घी को तेल का मुकाबला करना पड़ता है इसके

गेहूं के आटे को ज्वार के आटे के मुकाबले में बेचा जाता है।

भारत की मण्डियों में जो बुरी दशा मिलती है वह संसार के किसी भी देश में नहीं मिलती। मक्खन जिस में १८ प्रति शत छाछ होती है वह घी के मुकाबले में ड्योढ़ी कीमत पर बिके और किसान को दूध घी की आय से हाथ धोना पड़े यह सरासर अंधेर नहीं तो और क्या है। इटली को उदाहरण के रूप में लीजिये जिस समय मसोलिनी वहां का शासन अधिकारी बना ही था वहाँ की स्थिति भी भारत जैसी थी परन्तु उसने एक दम हुक्म दिया कि आगे पानी दूध में न मिलाया जावे घी की जगह तेल और चर्बी न बेची जावे। कानून के तोड़ने वालों को कड़ी से कड़ी सजायें दी गई आज वहाँ की दशा इस रूप में बदल गई है, आज वही इटली है जहां की वस्तुयें, आज समस्त यूरूप में शुद्ध मानी जाती हैं। क्या अच्छा होता यदि हमारी सरकार भी किसानों को इस प्रकार सहारा देती। मण्डियों में अन गिनत प्रकार की कटौतियां किसान की पैदावार में से काटी जाती हैं उसका माल ज्यादा तोला जाता है बेचते समय उसको कम दिया जाता है अगर इन सब कठिनाईयों को आज हटा दिया जावे तो किसान की दशा सुधर सकती है।

जब किसान अपने माल को बेचने के लिये मंडी में लाता है उसको सबसे पहले चुंगी देनी पड़ती है और बहुत शहरों का व्यय इस चुंगी से ही चलता है, इस प्रकार इस निर्धन पर ही शहर के व्यय को भी डाल दिया जाता है। यह बड़े अन्धेर की बात है। इस लिये किसान के माल पर चुंगी लेना बहुत बड़ा अन्याय है।

इस समय सब से अधिक आवश्यकता इस बात की है कि जो जमीन कृषक बोता है वह उस पर ही रहनी चाहिये जिस जमीन को नहर से पानी मिलता है उसमें कुछ न पैदा होने पर भी किसान को लगान देना पडता है। यह अन्याय नहीं तो और क्या है कि बेचारे कृषक को अपनी मज़दूरी भी प्राप्त नहीं होती।

जहां पर आबपाशी के लिये ट्यूब वेल लगाए गये हैं उनकी दशा और भी बुरी है। आवश्यकता के समय उनको नहीं चलाया जाता, और अगर कोई कृषक उन से पानी ले भी लेता है तो उसको लगान इतना अधिक देना पडता है कि तत पश्चात् उसके पास भर पेट खाने के लिये भी नहीं बचता इसलिये सरकार को चाहिये की वह बिजली का व्यय कम करके लगान को घटाये। बेचारे किसान यह भी नहीं जानते कि उनके अधिकार क्या क्या है जिनको समझ कर वह दद को कह सकें।

ऋण का बोझ

ऋण से छुटकारा दिलाने के बहुत सारे प्रयत्न हो सकते है अब तक सरकार ने जो विधान बनाये है, उनसे बड़े बड़े [illegible] को ही लाभ हुवा है हमारी सरकार को ऐसे [illegible] बनाने है जिन से किसानों को ऋण बहुत थोडा सूद देने से मिल जावे अगर सरकार किसी प्रकार से साहुकारों को भरोसा दिलावे कि उनका रुपया इस प्रकार से अवश्य दिलवा दिया जावेगा तब ही ऐसा हो सकता है। कोओपरेटिव सोसाईटी से अधिक से अधिक मदद करना आवश्यक है। जिस प्रकार इटली में हर मनुष्य को कोओपरेटिव

सोसाईटी का मेम्बर बनना पड़ता है इसी प्रकार से भारत में भी होना चाहिये। उनको तकावी ऋण दे कर उनकी वर्तमान स्थिति का सुधार करना बड़ा ही आवश्यक है।

जिस समय किसान की फसल तय्यार होकर आती है उस समय ही उस बेचारे को हर प्रकार की बातों को निमटाना पड़ता है। साहूकार अपना ऋण, जमींदार अपना लगान, नहर वाले अपना आबयाना उस ही समय पर मांगते हैं हर मनुष्य उसी समय अपने रुपये को वापिस लेना आवश्यक समझता है। जिसका परिणाम यह होता है एक दम मंडियों में अनाज सस्ता हो जाता है, गरीब किसान को अपने माल को उसी भाव पर बेचना पड़ता है और इस प्रकार उसकी बड़ी हानि होती है। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार की ओर से बड़े बड़े गोदाम स्टेशनों पर खोले जायें जहां पर किसानों का अनाज एकत्रित कर लिया जावे और किसानों को बाजारी कीमत का $\frac{3}{4}$ भाग उस ही समय दे दिया जावे बाकी रुपया बेचने के पश्चात दे दिया जावे इस प्रकार किसान की थोड़ी आय को और बढ़ाया जा सकता है।

पाठकों को, अगले अध्याय में यह भली भांति ज्ञात हो जावेगा किस प्रकार हम अपने निधन, दुखी भारतीय किसान का सुधार कर सकते हैं आपका कर्तव्य है कि आप अपने ग्रामों की दशा को जल्द से जल्द सुधारने का प्रयत्न करें।

ग्राम सुधार

अब से कुछ वर्ष पूर्व ग्राम सुधार स्वप्न में भी किसी की विचार धारा में नहीं आया हांलाकि भारत की ८० प्रतिशत जन संख्या ग्रामों में रहती है। और हमारी सरकार को सब से बड़ी आमदनी का यही कारण है। अतः ग्रामों के बनने और बिगड़ने पर ही देश का बनना बिगड़ना कहा जा सकता है। शोक! हमने शहरों को ही अब तक सब कुछ समझा और इन्हीं की सामाजिक तथा राजनैतिक दशा सुधारने में लगे रहे हैं परन्तु अब आखें खुली कि भारत का वास्तविक सुधार ग्रामों में है। आज सारे भारत के कोने कोने से ग्राम-सुधार की पुकार आ रही है। आज का ज्वलन्त प्रश्न कोई है तो यह ग्रामोद्धार ही है। जहां देखो वहां इसी प्रश्न का विशद विश्लेषण होता दृष्टिगत होता है स्वतन्त्रता के लिये सतत प्रयत्न शील कांग्रेस ने पूज्य महात्मा जी के नेतृत्व में यह कार्य आरम्भ कर दिया है। और इसकी देखा देखी भारत सरकार और उनके निरन्तर आश्रित नाम मात्र के राजा भी इस दिशा में कार्य करने लगे हैं। कितने ही राजा लोग अपने राज्यों में ग्रामोद्धार की योजनाएं प्रसरित करने मे प्रयत्नशील हैं हमारे लिये वास्तव में यह कम प्रसन्नता की बात नहीं है।

यदि ग्रामोद्धार का मुख्य उद्देश्य वास्तविकतया परिश्रमी कृषक वर्ग को जीवित रखने का है, यदि घर बार से विहीन ग्राम्य जनता को काल कवलित होने से बचाना है तो इन्हें आयोजनों से कुछ आशा करना व्यर्थ है। वास्तव

ग्रामोद्धार करना है तो आज कल चलने वाली रोचक आयोजनों पर निर्भर रहना व्यर्थ एवं निष्फल है। ये योजनाएं गांवों के दुख दर्द से चीख पुकार करते निःसहाय मानव समुदाय को जो ये मौत मर रहे हैं कोई सहायता नहीं दे सकती। पीड़ित ग्राम्य प्रजा के दुख दूर करने में यह योजनाएं सफल नहीं हो सकती क्योंकि आज कल की सुधार योजनाओं में।

(१) पाठशाएं खोलना (२) अस्पतालें खोलना (३) रोशनी करना (४) रास्तों की सफाई (५) मैजिक लैंटर्न से खेल करना (६) ऊंचे हवादार बगले बनाना (७) खेती सम्बन्धी मामूली ज्ञान देना (८) घूर बढ़वाना, इत्यादि बातें ही होती हैं कोई ठोस सहयोग नहीं। मैं यह कहना नहीं चाहता कि उक्त योजनाएं नितांत व्यर्थ हैं फिर भी इतना तो अवश्य कहूंगा कि इस कार्य क्रम से वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति न होगी इस से मूल रोग नष्ट होने का नहीं। संक्षेप में यह सब योजनाएं और बाह्य रोचक प्रयत्न तो मरहम पट्टी जैसे हैं हमें तो मूल रोग का नष्ट करना है क्योंकि मूल रोग के नष्ट हुवे बिना छोटे रोग नष्ट न होंगे मूल रोग के नष्ट होते ही छोटे छोटे ऊपरी रोग तो स्वभावतः अपने ही आप नाश हो जायेंगे।

जब तक हमारे देश का खेतीहर समुदाय निम्नांकित महा मारियों और भयानक रोगों से मुक्त नहीं बनाया जाता, उस समय तक ग्राम सुधार की मन मानी मनोहर एवं आकर्षक कितनी ही योजनाएं बनाई जावे उन से सच्चा ग्राम सुधार नहीं हो सकता है यह लेख उन लोगों के लिये सूचना के रूप में होगा जो अपने ग्रामों में ग्राम सुधार की

ग्राम सुधार

अब से कुछ वर्ष पूर्व ग्राम सुधार स्वप्न में भी किसी को विचार धारा में नहीं आया, हांलाकि भारत की ८० प्रतिशत जन संख्या ग्रामों में रहती है। और हमारी सरकार की सब से बड़ी आमदनी का बड़ी कारण है। अतः ग्रामों के बनने और बिगड़ने पर ही देश का बनना बिगड़ना कहा जा सकता है। शोक! हमने शहरों को ही अब तक सब कुछ समझा और इन्हीं को सामाजिक तथा राजनैतिक दशा सुधारने में लगे रहे हैं परन्तु अब आखें खुली कि भारत का वास्तविक सुधार ग्रामों में है। आज सारे भारत के कोने कोने से ग्राम-सुधार की पुकार आ रही है। आज का ज्वलन्त प्रश्न कोई है तो वह ग्रामोद्धार ही है। जहा देखो वहा इसी प्रश्न का विशद विश्लेषण होता दृष्टिगत होता है स्वतन्त्रता के लिये सतत प्रयत्न शील कांग्रेस ने, पूज्य महात्मा जी के नेतृत्व में यह कार्य आरम्भ कर दिया है। और उसकी देखा देखी भारत सरकार और उनके निरन्तर आश्रित नाम मात्र के राजा भी इस दिशा में कार्य करने लगे हैं। कितने ही राजा लोग अपने राज्यों में ग्रामोद्धार की योजनाएं प्रसरित करने में प्रयत्नशील हैं हमारे लिये वास्तव में यह कम प्रसन्नता की बात नहीं है।

यदि ग्रामोद्धार का मुख्य उद्देश्य वास्तविकतया परिश्रमी कृषक वर्ग को जीवित रखने का है, यदि घर बार से विहीन ग्राम्य जनता को काल कवलित होने से बचाना है तो इन्हें आयोजनों से कुछ आशा करना व्यर्थ है। वास्तव में

ग्रामोद्धार करना है तो आज कल चलने वाली रोचक आयोजनों पर निर्भर रहना व्यर्थ एवं निष्फल है। ये योजनाएं गांवों के दुख दर्द से चीख पुकार करते निः सहाय मानव समुदाय को जो के मौत मर रहे हैं कोई सहायता नहीं दे सकती। पीड़ित ग्राम्य प्रजा के दुख दूर करने में यह योजनाएं सफल नहीं हो सकती क्योंकि आज कल की सुधार योजनाओं में।

(१) पाठशाएं खोलना (२) अस्पतालें खोलना (३) रोशनी करना (४) रास्तों की सफाई (५) मैजिक लॅटर्न से खेल करना (६) ऊंचे हवादार घरजे बनाना (७) खेती सम्बन्धी मामूली ज्ञान देना (८) घूर बढ़वाना, इत्यादि बातें ही होती हैं कोई ठोस सहयोग नहीं। मैं यह कहना नहीं चाहता कि उक्त योजनाएं नितांत व्यर्थ हैं फिर भी इतना तो अवश्य कहूंगा कि इस कार्य क्रम से वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति न होगी इस से मूल रोग नष्ट होने का नहीं। संक्षेप में यह सब योजनाएं और बाह्य रोचक प्रयत्न तो मरहम पट्टी जैसे हैं हमें तो मूल रोग का नष्ट करना है क्योंकि मूल रोग के नष्ट हुवे बिना छोटे रोग नष्ट न होंगे मूल रोग के नष्ट होते ही छोटे छोटे ऊपरी रोग तो स्वभावतः अपने ही आप नाश हो जायेंगे।

जब तक हमारे देश का खेतीहर समुदाय निम्नांकित महा मारियों और भयानक रोगों से मुक्त नहीं बनाया जाता उस समय तक ग्राम सुधार की मन भावनी मनोहर एवं आकर्षक कितनी ही योजनाएं बनाई जावें धन से सच्चा ग्राम सुधार नहीं हो सकता है यह लेख उन लोगों के लिये सूचना के रूप में होगी जो अपने ग्रामों में ग्राम सुधार

हृदय ग्राही योजनाएं काम में लाने का विचार कर रहे हैं। जो राज्य एवं सभा ग्रामोपयोगी आयोजन करना चाहती है उसे पहले नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना होगा, इन नाशक बीमारियों से बचा कर कृषकों में सभा, कार्य करने की ठोस स्कीमों पर दृष्टिपात एवं मनन करना आवश्यक है तत्पश्चात ही उक्त मरहम पट्टी सदृश योजनाएं सफल हो सकेंगी। मूल रोग नष्ट नहीं हुवा तो मरहम पट्टी का कोई महत्व नहीं और इसमें क्रिया शक्ति एवं सम्पत्ति का व्यय निरर्थक जायगा इसलिये इन दिशा में इच्छुक सभाओं एवं संस्थाओं से मेरी नम्र प्रार्थना है कि निम्नांकित महामारियों से कृषकों को मुक्त करके तत्पश्चात अन्य प्रयास करें।

सब से बड़ी एवं दारुण बीमारी ग्रामीणों पर क़र्ज़ की है। आज क़र्ज़ की चक्की में बेचारा कृषक वर्ग बुरी तरह पीसा जा रहा है। इसमें से इन की मुक्ति करना ही ग्राम सुधार की प्रथम विवेकपूर्ण सीढ़ी है। ब्रिटिशइण्डिया के कृषकों के क़र्ज़ का अंक ८०० करोड़ से १२०० करोड़ रुपये तक है। औसतन प्रत्येक कृषक पर ५० से अधिक ही क़र्ज़ा दिखाई देता है, कम नहीं। सेन्ट्रल इन्क्वारी बैंक की गणना के अनुसार १६२१ में विभिन्न प्रान्तों के कृषकों पर क़र्ज़ का भार नीचे लिखे प्रकार से था।

बंगाल	२६०	करोड़	रुपये।
संयुक्तप्रांत	२२०	,,	,,
बिहार उड़ीसा	२६५	,,	,,
पंजाब	२३५	,,	,,
मद्रास	२५०	,,	,,
बम्बई	८२	,,	,,

केवल ६ प्रांतों में ८६२ करोड रुपये का कर्जा एक ही वर्ष में कृपकों पर था और वर्तमान परिस्थिति में २००० करोड रुपये से किसी हालत में कम नहीं। अकेले पंजाब में सन् १९२२ में ८० करोड का कर्जा था और १९२९ में १३२ करोड का हो गया अर्थात् ८ वर्ष में ४२ करोड रुपये कर्ज बढ़ गया। भारत की ७२ प्रतिशत कर्ज में परिपूर्ण डूबी हुई है भाग्य से ५ या ६ प्रतिशत कृपक ही ऐसे होंगे जो थोडे ऋणी हैं। आज आमदनी २५ होती है तभी पारिवारिक व्यय के साथ ही कर्ज के चुकाने में ४५-५० खर्च पड़ जाता है। कृपकों की जितनी आय नहीं उससे दुगना तिगना खर्च उनके सिर पर रहता है, बेचारा कृपक क्या खाता होगा क्या पहनता होगा इसकी कल्पना सहृदय पाठक खुद कर सकते हैं।

२५ वर्ष पूर्व का इतिहास बतलाता है कि पहले कृपक वर्ग इतना ऋणी नहीं था परन्तु १९१४ के विश्व युद्ध के पश्चात से यह वर्ग कर्ज में ही डूबता जारहा है। इस का प्रमुख कारण जहा तक मैं समझता हूँ और जो कुछ मेरे ग्राम भ्रमण में लोगों ने कहा है वह निम्न लिखित है।

महा युद्ध के वर्षों में खेती की उपज के बहुत अच्छे भाव आये और कृपकों ने गृह निर्माण, विवाहोत्सव, प्रीति भोज आदि में मन माना खर्च किया वह जमाना ऐसा था कि साहूकार जबरदस्ती कृपकों को विवाहोत्सव इत्यादि के लिये प्रेरित करके कर्ज दिया करते थे और किसान यह सोचते थे कि अगले साल कुछ मन कपास फेंक देंगे और ऋण मुक्त हो जायेंगे परन्तु ज्यों ही युद्ध बन्द हुआ त्यों ही खेती पैदावार के भाव गिरने लगे और कृपकों का जीवन

सुखपूर्ण एवं निर्द्वन्द न रहा, फिर भी उन्होंने सोचा कि इस साल न सही अगले वर्ष अच्छे आयेंगे और तब हम ऋण मुक्त हो सकेंगे परन्तु दुर्भाग्य वश प्रकृति के प्रकोप से वर्ष के बाद वर्ष खराब आते गये, भाव नीचे गिरते गये, और साहूकारों का ब्याज द्रौपदी के चीर की भांति बढ़ता ही गया और अन्ततः कृषक वर्ग दीनाविहीन और ऋणी होकर विनाशता का शिकार होगया। आज कल इन्हीं ब्याज खोरों के रूप में कर्ज का नाशक कीट बेचारे असहाय कृषकों को विनष्ट प्राय: कर रहा है, दीमक की तरह से चारों ओर से कुतर रहा है। कठोर परिश्रम से प्राप्त किये हुये भोजन पर भी उनका अधिकार नहीं जमींदार और साहूकार की दो नंगी तलवारें सर पर प्रतिक्षण लटक रही हैं॥

तिस पर भी लेन दार कृषक वर्ग पर आये दिन जो अमानुषिक अत्याचार कर रहे हैं उसे देख कर साहूकारों को यदि मान व आकृति में हृदय हीन दैत्य कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। ऐसी दयनीय परिस्थिति को हटाने के लिये और कृषिकों को सुखी बनाने को हर एक मनुष्य को सोचना चाहिये।

आज कल ग्राम सुधार ग्राम की सामाजिक तथा राज नैतिक हालत को सुधारना ही कहा जाता है यानी हर एक ग्राम के मनुष्यों के चित मे वह सब वस्तुएं डाल दी जावें जिस से वह अपनी वर्तमान हालत को समझने लगे अन्त में वह अपने कर्म को इस प्रकार जान लेवे कि उस को अपने जीवन में ग्रहण करने लग जावें। अपनी तमाम शक्ति को लगा कर अपनी और अपने ग्राम की तमाम उन्नति में लग

आवें। वह वह सोचने लगे कि अपने भाग्य का निर्णय स्वयं अपने ही हाथों में है। क्यों कि मनुष्य स्वय ही अपने भाग्य का निर्णय कर्ता है। परमात्मा भी उन ही की सहायता करता है जो अपने ग्राम की उन्नति करना अपना प्रथम कर्तव्य समझते हैं।

आज से तीन सौ वर्ष पहले भारत की आबादी बहुत कम थी। जमीन जरूरत से कहीं ज्यादह थी। मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार जमीन को जोतते और बोते थे। इन की आवश्यकताएं बहुत कम और मामूली होती थीं। अपनी पैदावार खुद प्रयोग मे लाते थे। इस ही कारण जमीन की माग बहुत कम थी और लगान भी मामूली था। चरागाहें बहुत ही ज्यादह नम्बर मे थीं, वह लोग ढोर बहुत ज्यादह पालते थे नकद के बजाय जिन्स के रूप में व्यापार होता था उस समय आवागमन के साधन बहुत ही कम थे ग्राम एक अलग देश के समान था, ग्राम का माल बाहर ले जा कर बेचने का विचार किसी के मन में न था Joint Family system सामूहिक परिवार होता था जिन का एक सरदार होता था, हर एक ग्राम में एक पचायत होती थी प्रत्येक, जाति की पचायत होती थी। और एक तमाम गाव की पचायत (बड़ी पचायत) होती थी जो कि ग्राम के बड़े २ झगड़ों को दूर करने का प्रयत्न करती थी इस पचायत के, पच अधिकतर माननीय वृद्ध मनुष्य पवित्र आत्मा न्याया, धीश होते थे जिन को वास्तव में ग्रामों के (पिता) कहा जाता था इन के निर्णय को सब मानते थे। नशीली वस्तुओं का प्रयोग किंचित

बच्चों के पाठशालाओं में विद्या ग्रहण करने के लिये भेजा जाता था, जिस में धार्मिक शिक्षा का होना आवश्यक था और बालअवस्था की शादी का रिवाज न था, और शादी भी मामूली तरीके से बहुत ही कम खर्च में हो जाती थी, गांव में खास खास अवसरों पर त्योहार या उत्सव मनाया जाता था, जलूस निकाले जाते थे जिन मे वह लोग अपने शारीरिक स्वास्थ्य खेल दिखलाते थे, बच्चों के स्वास्थ्य का खास ध्यान था, बुरा असर डालने वाले तमाशों की जगह रामायण और महा भारत की कथाएं होती थी ग्राम के अखाड़े में लोग कुश्ती लड़ते थे, सब लोग एक दूसरे की मुसीबत में हाथ बटाते थे, वह लोग अपने घरों की सफाई का खास ध्यान रखते थे।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, प्रकृति संसार को सदा एक रंग में देखना पसंद नहीं करती समय ने पलटा खाया, तमाम चैन, सुख और शान्ति स्वप्न बन गये। आबादी बढ़ती आरम्भ हो गई, सब ज़मीन बोई जाने लगी। चरागाहें कम होने लगीं, और ढोर भी कम हो गये आमद व रफ्त के कारण माल बाहर जाने लगा, हमारी आवश्यकताएं बढ़ती गई, खर्च भी साथ साथ बढ़ता चला गया, विदेशी माल भारत में आने लगा जिस से ग्राम की कला कौशल नष्ट हो गए, धार्मिक शिक्षा के साथ राजनैतिक शिक्षा भी जाती रही मनुष्य फैशन के गुलाम बन गये, कृषक लोग कृषि के नियम भी भूल गए, आपस में बैर बढ़ते गए, नशीली वस्तुओं के प्रयोग खूब होने लगे सारांश यह कि खर्च आमदनी से कई गुना बढ़ता चला गया। सामाजिक परिस्थिति खराब होती

गई। विवाहों में स्वांग तमाशे होने लगे जिनका खराब असर रंग लाए बिना न रहा, शादियों में रुपया कर्ज लेकर पानी को तरह बरबाद किया जाने लगा। लोग अपने न्याय के नियमों को तोड़ने लग गये, आपस में नित नये झगडे होने लगे, पचायत की प्रथा जाती रही अदालतें बढ़ती चली गई रोज़ाना कचहरियों में मुकद्दमे बाजों की नुमाईश रहने लगी रिश्वत शैतानी का बाजार गरम हो गया किसान व जमींदार झगड़ते रहने लगे इस तरह भारत का घर घर निधन होता चला गया।

अब हमें देखना यह है कि इन त्रुटियों को कैसे दूर किया जावे। अगर हम पहले समय को वही सब बातें फिर इस भारत के ग्रामों में ले आवें तो ग्राम सुधार बड़ी सुविधा के साथ हो सकता है। गाव गांव में ग्राम सुधार पचायतें बनाई जायें और तमाम गाव वालों की सलाह से उसके पंच बनाए जायें पंचायत के लिये एक पचायत घर होना चाहिये, अगर कोई पंचायत घर न हो सके तो, चौपाल और पाठशालाएं इस काम में लाई जा सकती हैं तमाम ग्राम के मनुष्य हर एक सप्ताह में वहां पर एकत्रित हों और वह सब मिल कर गाव की भलाई की बाबत सोचें।

१—कृषि की बाबत लोगों को बताया जावे कि वह किस प्रकार नये नये आविष्कारों से लाभ उठा सकते हैं कैसा बीज होना चाहिये और किस समय उसको बोना चाहिये अच्छा खाद किस तरह बनाया जा सकता है।

२—चरागाहों का प्रबन्ध होना चाहिये, नसल के सांड उनके ढोरों के लिये छोडे जावें

खूब सूरत नसल के मवेशी, बैल, गाय आसानी से मिल सकें, उनके रहने की जगह और चारे का पूरा प्रबन्ध होना आवश्यक है उनको किस्तों और तकावी पर बीज और ढोर दिलाए जावें।

३—ग्राम सुधार पंचायत अपने प्रबध से निधन कृषक के लिये एक सोसाईटी बनावे जो कि मकान में अनाज और बीज रक्खे और आवश्यकता के समय इसको गरीबों को दे देवे और फसल के कट जाने पर उससे सवाया या ड्योढा ले लेवे और इसी तरह उस को फिर जैसा कर लेवे। इस तरह हर साल अनाज बढता जाएगा और किसानों की आवश्यकतायें भी पूरी होती चली जावे गी और इस तरह उनको कर्जा न लेना पड़ेगा।

४—देहाती फंड बनाया जावे जो कि कोओपरेटिव नियम से किसानों को ढोर खरीदने के लिए रुपया देसके। और वह रकम उस से किस्तों में ली जावें।

५—ग्राम की पंचायत हो ग्राम के तमाम झगड़े निबटाने का प्रयत्न करे ताकि वे गरीब मुकद्मा बाज़ी की आदतों से छुट जावें।

६—एक ऐसी जगह हो जहां पर रात को थके हुये किसान इकट्ठे होकर बैठ जावें उनको समाचार पत्र या दूसरी अच्छी पुस्तक पढ़कर सुनाई जावे भजन मंडलियां बनाई जावें उन भजनों के द्वारा उन में अपनी उन्नती करने के ढग बताए जावें इससे उनके जीवन पर काफी असर होगा।

७—बच्चों के स्वास्थ को ठीक रखने के लिये खेल, कूद, कबड्डी का प्रबन्ध किया जावे, गांव में कपड़ा बुनना चिक व आसन बनाने सिखाए आवें।

८-पंचायत के हुकम से, गाँव की नालियाँ, कुंये, तालाब साफ कराए जावें, कीचड़, कुड़ा-करकट रास्तों में पड़ा हुवा नज़र न आवे।

ग्राम सुधार पर महात्मा गांधी की विचार धारा

भारत वर्ष में फसलें हर समय खतरें में रहती हैं क्योंकि वह सब इन्द्र देवता पर निर्भर होती है, किसान को तमाम वर्ष में काफी समय तक खाली रहना पड़ता है इस लिये उसको दूसरे छोटे-छोटे काम सीख लेना चाहिये जिससे उसका निर्वाह होता रहे, उन कामों में निम्न लिखित गुन होने चाहिये।

१—वह कार्य ऐसा हो जिससे खेती के काम में हानि न पहुँचे।

२—वह काम ऐसा हो जब मनुष्यों की खेती बाड़ी के लिये आवश्यकता हो एक दम बन्द कर दिया जा सके।

३—वह काम ऐसा हो जिसमें नौकर न रक्खे जायें परन्तु खुद ही काम किया जावे।

४—उसमें इतनी लागत लगती हो जो बहुत ही गरीब मनुष्य भी कर सके।

५—वह काम खेत, गांव, या घर के पास हो सके।

६—अगर उस काम को बहुत से आदमी करने लग जावें तो भी उस माल की खपत हो और वह ऐसा माल हो जिसकी सब को आवश्यकता हो।

७—वह काम ऐसा हो जो बहुत थोड़े समय में भी चालू हो सके।

८—उस काम को कमज़ोर, मूर्ख बच्चे सब ही कर

६—वह काम कभी भी मनुष्य को मशीनों की तरह आलस और थकावट पैदा करने वाला न हो।

इन सब बातों का ध्यान रखते हुवे, गाय का पालना, चरखे का कातना ही ज्यादह लाभदायक हो सकता है। और यही दो काम भारत के कृषक का उद्धार कर सकते हैं।

जिस प्रकार भारत में, तार, डाक, रेल अलग अलग महकमे हैं इसी प्रकार इन कामों को भी अलग समझना चाहिये। महात्मा जी की नजरों में चरखा ही इस समय भारत के किसानों के लिये लाभ दायक है।

शोक के साथ कहना पड़ता है कि आज भारत वासी संसार में सब से कम सुशिक्षित हैं। हमारी परतन्त्रता ही इसका कारण हो सकती है। जब हम रूस पर अपनी नजर दौड़ाते हैं तो देखते हैं कि आज से केवल २० वर्ष हुवे रूस की अवस्था हमारे देश से भी बुरी थी परन्तु जब से उन्हों को स्वतंत्रता मिली है उन्होंने जो उन्नति की है वह सब के सामने उज्जवलित है। आज रूस किसी पहलू से भी गिरा हुवा दिखाई नहीं पड़ता, अंग्रेजों को भारत वर्ष पर राज्य करते हुये लगभग दो सौ वर्ष हो गये हैं और आज हमारे देश में केवल १० या १२ फी सदी आदमी शिक्षित हैं उनमें से भी बहुत सारे केवल नाम ही लिखना जानते हैं इससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि अपनी हालत सुधारने के लिये स्वतन्त्रता परम आवश्यक है।

आधुनिक शिक्षा का प्रभाव आज केवल शहरों में ही पाया जाता है ग्रामीण मनुष्य शिक्षा रूपी भूषण से रहित हैं, शिक्षा बिना मनुष्य इस संसार को नहीं समझ सकता है

और न ही किसी प्रकार की उन्नति ही कर सकता है। इस लिये शिक्षा बिना ग्राम सुधार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य को सचाई के रास्ते पर लाना या स्वस्थ के नियमों पर चलाना बहुत कठिन दिखाई पड़ता है। शिक्षित किसान खेती बाड़ी के कार्य में उन्नति कर सकता है अच्छा शहरी बन सकता है। शिक्षित होने के कारण ही आज ग्राम वाले अपना बहुत सा समय लड़ने झगड़ने में खर्च कर देते हैं और बेहूदा रसम व रिवाज से ही आज ऋणी बने हुवे हैं।

हर एक देश में प्राइमरी शिक्षा लाजमी बना दी गई है परन्तु भारत वासी इस प्राकृतिक कानून से अनभिज्ञ हैं पिछले पचास वर्ष की राजनैतिक लहरों ने देश म बहुत बड़ी बेकारी पैदा करदी है। हर मनुष्य में शिक्षा ग्रहण करने का शौक बढ़ रहा है परन्तु यह शौक पूरा नहीं होता, मां बापों की लगन होते हुवे भी आज भारत के लाल शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते। शिक्षाविभाग आज अपनी सारी शक्ति ऊंचे दर्जे की शिक्षा पर लगा रहा है प्राइमरी शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, जिस इमारत की बुन्याद ही कमज़ोर हो वह कब तक खड़ी रह सकती है, बड़े बड़े शहरों और कस्बों में प्राइमरी स्कूल खोले गए हैं परन्तु देश के लाख लाख ग्राम शिक्षा रहित हैं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड रुपये की कमी की वजह से कुछ कर नहीं सकते चन्द जिलों के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ने टेक्स बढा कर प्राइमरी शिक्षा देना आरम्भ किया था परन्तु वह भी असफल रहे यह काम तो मरकजी हकूमत ही कर सकती है प्राइमरी शिक्षा हर लड़के और

लिये लाजमी ठहराई जाए और इस कार्य के लिये हर साल मरकजी फंड से काफी रकम मजूर की जावे परन्तु सवाल पैदा यह होता है कि इतना रुपया कहां से आवे इसका हल भी हकूमत ही कर सकती है। फौज और पुलिस के खर्चों को कम किया जा सकता है। सरकारी कर्मचारियों की बड़ी बड़ी तनख्वाहों को कम किया जा सकता है।

स्वास्थ्य की रक्षा और शिक्षा से ही देश की उन्नति कर सकता है। भारत में शिक्षा पर ६ फी सदी रुपया खर्च होता है और शायद दो फीसदी स्वास्थ्य की रक्षा के लिये, परन्तु लन्दन में हर साल लग भग १७ करोड़ रुपया शिक्षा पर खर्च किया जाता है जब कि ३५ क्रोड़ भारत वासियों की शिक्षा पर केवल १३ करोड़ रुपया खर्च किया जाता है अफ्रीका, जर्मनी, फ्रांस और जापान को देखिए इन बड़े मुल्कों को भी जाने दीजिये डनमार्क और नार्वे जैसे देश भी शिक्षा की प्राप्ति में हम से कहीं दूर पहुच गये हैं ऐसे विदेशी राज्य का लाभ यही है कि हम अन पढ़ और जाहिल और अपने जन्म अधिकार से वंचित रहें और हमेशा के लिये परतन्त्र बने रहें १९३३ में इंगलैंड की पारलियामेंट में जब हमारी शिक्षा को सुधारने का प्रश्न हुवा तब उस समय के वजीरों ने यह कहा था "कि हमने अपनी मूर्खता से स्कूल और कालिज खोल कर अफ्रीका को अपने हाथ से खो दिया है और यह हमारे लिये मुनासिब नहीं की इस मूर्खता को भारत में भी दोहराया जावे। अगर भारतीय शिक्षा ग्रहण करना चाहें तो उन्हें इंगलिस्तान मे आना चाहिये" यह है वह विचार धारा जिसके प्रति हमने अपने दो सौ वर्ष व्यतीत किये।

हम जानते हैं कि बड़े बड़े शहरों में स्कूल और कालिजों का नम्बर बहुत बढ़ गया है परन्तु वह शिक्षा जो वहां पर दी जाती है अत्यन्त हानी कारक है वही शिक्षा हमारे लिये लाभ दायक हो सकती है जो हमारी मातृ बोली में दी जावे। पश्चमी सभ्यता हमारे लिये बहुत ही विषैली है इस शिक्षा से बच्चे शारीरिक, आत्मिक, धार्मिक, और राजनैतिक, उन्नति नहीं कर सकते इस शिक्षा में हम को आमद व रफ्त कला व कौशल व तिजारती शिक्षा से वंचित रक्खा जाता है। आधुनिक शिक्षा का पहला आवश्यक कर्तव्य यह है कि हकूमत की मशीनरी को चलाने के लिये कलर्क पैदा करे।

हम जानते हैं को शिक्षा को उन्नति पर ही देश की सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक उन्नति निर्भर है इस लिये अपनी शिक्षा प्रणाली को लाभ दायक बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है इस लिये नीचे लिखी विधि से कार्य करना चाहिये।

१—प्राइमरी शिक्षा लाज़मी और मुफ्त दी जानी चाहिये।

२—हर एक विभाग के मनुष्यों को अपनी मातृ जबान में शिक्षा दी जाए।

३—हर एक लड़के और लड़की के दसवीं श्रेणी तक पढ़ने का प्रबन्ध होना चाहिये।

४—आप के प्रांतिक कार्य हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी में हो और विदेशियों के साथ अंग्रेज़ी में कार व व्योहार होना चाहिये।

५—मिडिल और दसवीं की जमातों में हिन्दुस्तानी की शिक्षा लाज़मी होनी चाहिये।

६—शिक्षा के ही भाग में कला व कौशल व आमद रफ्त की शिक्षा मिलनी चाहिये।

७—हमारी सरकार शिक्षा देने के लिये अपनी आमदनी का कम से कम २५ फी सदी खर्च करे तब ही देश में जागृति हो सकती है।

अब हम को यह देखना है कि कृषक की आमदनी को हम किस प्रकार बढ़ा सकते हैं इस के लिये हमारा ध्यान उसकी खेती बाड़ी पर जाता है वास्तव में कृषकों की हालत इतनी खराब हो गई है कि वे अपने भाग्य को ही बुरा समझने लग पड़े हैं उनकी हालत दिन प्रति दिन क्यों गिरती जा रही है इस के बहुत सारे कारण हैं परन्तु हम यह जानते हैं कि खेती बाड़ी में सबसे ज्यादह हानि हो रही हैं ग्राम वालों के खर्च इतने बढ गये हैं कि वह अपनी पैदावार में गुजारा नहीं कर सकते, उसके जमीन के जोतने और बोने के ढग बहुत ही पुराने और बुरे हैं, जमीन छोटे २ भागों में बटी हुई है, उधर इन्द्र देवता की तरफ आखें फाड़ फाड़ कर देखना पड़ता है, इस तरह बहुत सारे कारण ऐसे है जिनसे किसान अपनी पैदावार बढ़ाने के लिये मजबूर और लाचार है।

इस समस्या को हल करने के लिये हमारे नेता पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि कला व कौशल ही इस मुसीबत को हटा सकती है, बहुत सारे भाई यह सोचते होंगे कि क्यों न उसके खेती बाडी के ढगों को अच्छा बना दिया जाय और इस तरह उनकी आमदनी बढ सकती है। परन्तु किसान की गरीबी और उसके हालात को देख कर यह स्पष्ट प्रतीत

हो रहा है कि वह उस पहलू से कभी भी उन्नति नहीं कर सकता जब तक उसे ऊपर की थोड़ी बहुत आमदनी न हो जिससे वह अपने हर रोज के छोटे छोटे खर्चे को पूरा न करलें इस लिये अब हमें यह सोचना चाहिये कि ग्रामीण लोगों के लिये कौनसी दस्तकारी लाभ दायक होगी।

हम देख रहे हैं कि मशीनों की आमद से घरेलू दस्तकारियां नष्ट होती जा रही हैं। कलों और मशीनों के उपयोग से बड़े २ सरमायादार और पूंजी पति अपना घर भर रहे हैं परन्तु आम जनता की गरीबी और बेकारी बढ़ती जारही हैं। एक कल के जारी होते ही लाखों मजदूर बेकार हो जाते हैं और कलों से केवल चन्द मनुष्यों को लाभ होता है। यह कलें भारत वर्ष में बड़े २ शहरों में देशी या विदेशी पूंजी पतियों ने जारी कर रक्खी है। उधर ८९ फीसदी आबादी ग्रामों में रहती है और ७२ फीसदी मनुष्यों का निर्वाह खेती बाड़ी पर होता है इस का मतलब यह है कि १९ फी सदी गांव वाले दस्तकारी पर अपना पेट पाल रहे हैं या किसी दूसरे कामों को कर रहे हैं।

कृषक लोग भी साल भर में कम से कम पांच महीने बेकार रहते हैं उन दिनों में उनके पास कोई काम नहीं होता और वह लोग अपने बाल बच्चों को छोड़ कर गांव से बहुत दूर शहर के किसी मिल में काम करने भी नहीं आ सकते फिर अगर काम और घर छोड़ कर चले भी आयें मिलों में इतनी जगह कहां है कि उन सब को भर्ती कर लेवें इसलिये ग्राम सुधार तब ही हो सकता है जब कि हकूमत उन लोगों को उनके घर पर ही काम दे देवेगी।

प्राचीन काल में भारत की खुश हाली का बड़ा कारण यह भी था कि उस समय छोटी छोटी दस्तकारियाँ हर एक ग्राम में मिलती थीं यहां की सब सब से बड़ी दस्तकारी चरखा चलाने की थी भारत का बुना हुआ कपड़ा विदेशी मंडियों में जाता था ढाके की मल मल भारत की छींट और दूसरे वस्त्र अपनी बारीकी की वजह से बहुत मशहूर थे डेढ़ दो सौ वर्ष तक इंगलिस्तान का नाज़ुक मिज़ाज स्त्रियां भारत की मलमल और छींट पहन कर अपने को बड़ी भाग्यवान समझती थी। यही हाल हमारी दूसरी दस्तकारियों का था लोहे के औज़ार, सोने चांदी के बरतन यहां बनते थे। संगतराशी और फन तामीर के कीमती नमूने अब तक मिलते हैं, रेशमी सूती कपड़ों के इलावा कम्बल और कालीन यहां के बहुत मशहूर थे, चमड़े का हर एक किस्म का सामान यहाँ तैय्यार होता था उन दिनों ऊंट के चमड़े पर मुलतान में जो नकाशी का काम होता था वो अपना जवाब नहीं रखता है। कुम्हार का दरजा अब भी बहुत बुलंद है मिट्टी के बरतन हर एक हिन्दुस्तान के कोने कोने मे बनाये जाते हैं उन पर नकाशी का काम भी होता है, हाथी दांत के नुमाईशी बरतन खिलोने और जेवरात बड़े बड़े (scientists) वैज्ञानिक को भी हैरानगी मे डाल देते हैं अगर चित्रकारी और आर्ट का नमूना देखना हो तो आगरे का रोज़ा ताजमहल ही देखना काफी से ज्यादह होगा हमारी यह दस्तकारियां किस तरह बरबाद हुई इसकी एक लम्बी कहानी है पर इतना काफी होगा कि विदेशी साम्राज्य उनमे से सब से बड़ा कारण

महात्मा गांधी ने सदा देश को घरेलू दस्तकारी व कला कौशल को बनाने के लिये ज़ोर दिया है उनके बनाये हुये प्रोग्राम में चर्खे और खद्दर को खास तौर पर ग्रामीण की जान बताई है। महात्मा जी ने १९३४ में आल इंडिया विलेज इन्डस्ट्रीयल ऐसोसीएशन की स्थापना की तब से ही सोसा टी अपना कार्य कर रही है।

जाहिर तौर पर इसका काम कुछ भी दिखाई नहीं देता इसके कई कारण हैं, एक तो यह कि गांधी जी दिखावे के बड़े ही विरुद्ध है और यह चाहते हैं कि हम ठोस काम करें। दूसरा कारण विदेश की विशालता है, सात लाख गांवों में कला व कौशल चलाना बच्चों का काम नहीं तीसरी वजह अच्छे काम करने वालों का न मिलना है परन्तु इस समय ग्राम सेवकों की संख्या बढ़ती जा रही है और वह दिन दूर नहीं जब कि ग्राम सेवक एक कोने से दूसरे कोने में फैल जायेंगे और देहात सुधार बड़ा आसान हो जायेगा घरेलू दस्तकारी बढ़ जाने से हमारी व्यय करने की शक्ति भी बढ़ जायेगी और इस प्रकार भारत के किसानों की गरीबी दूर हो सकती है, देश का धन सब में बराबर बटता रहेगा, ऊंच, नीच अमीरी, गरीबी का प्रश्न मिट जायेगा।

इस समय ग्रामीणों को समझने वाले और उनकी मरण शक्ति को मापने वाले सामाजिक मनुष्यों की आवश्यकता है जो मनुष्य की साईकलोजी को अच्छी प्रकार समझ लेवे, देहाती लोग हजारों वर्षों से वे अकलों का प्रकार बनते चले आ रहे हैं।

जो लोग इस ॰॰॰ में कार्य कर रहे हैं वह अपनी

देहात में अमीर, गरीब, छोटे, बड़े, और अच्छे बुरे सब ही तरह के लोग रहते हैं और सब से एक ही तरह की अपील भी हम नहीं कर सकते ग्राम के हर एक मनुष्य को अलग अलग समझना होगा जब तक हम ऐसे साईकलोजिस्ट न बन जाएंगे ग्राम सुधार का काम पूरी तरह से न कर सकेंगे।

सबसे पहले ग्रामीण नवयुवकों को अपनी तरफ खैंचना चाहिये अगर उनको हाथ में कर लिया तो बहुत कुछ हो सकता है, उन लोगों में आप भी ग्राम सुधारक को जाहिल बन जाना चाहिये ताकि वह आपके साथ सहमत होकर काम कर सकें, उनको यह न मालूम होने पाए कि हम इस की बाबत कुछ जानते भी हैं या नहीं।

पस मेरा इन सब बातों के कहने का तात्पर्य यह था कि ग्राम सुधारकों के लिये यह परम आवश्यक है कि वह ग्राम साईकलोजी को अच्छी तरह समझ कर, ग्राम वालों को भाई की तरह समझाकर अपना कार्य पूरा करें।

अब आपके सामने ग्राम सुधारकों के लिये चन्द लाभ दायक बातें लिखूंगा जिससे वह लोग अपने कार्य में भली भान्ति सफल हो जावें।

१—सबसे पहले जो सेवक इस कार्य को करना चाहे चाहिये कि वह आल इंडिया विलेज इंडस्ट्रीयल (All Indıa vilage Industrial Association) किसी प्रान्तिक शाखा में रहकर काम करे क्योंकि एक सही और ठीक जमायत है जो महात्मा गांधी की में काम कर रही है। इस जमायत के नियम यह हैं।

१—दिहाती कला व कौशल का जारी करना और उस की उन्नति के लिये तरह तरह से कोशिश करनी चाहिये गांव की सामाजिक व शारीरिक धार्मिक उन्नति को भी साथ साथ करता रहे।

२—काम शुरू करने से पहिले कुछ ग्राम के हालात लिख लेने चाहियें और एक पूरी रिपोर्ट (survey) बना लेनी आवश्यक है। जिस काम में ज्यादह सहूलियतें हैं उसमें सबसे पहले कार्य आरम्भ करना चाहिये जब इस ग्राम में कुछ सफलता प्राप्त हो जावे तब इस ग्राम के कुछ समझदार सदस्यों को लेकर दूसरे ग्राम में भी कार्य आरम्भ कर देना चाहिये इस तरह से ग्राम सुधार का काम बढ़ता चला जावेगा परन्तु काम को उस हद तक बढ़ाना चाहिये जितना कि वह कर सके गाव का सर्वे (survey) करते समय इन बातों को ध्यान में रखना चाहिये।

१—आबादी और रकबा।
२—घरों की तादाद।
३—रोज़गार के मुताबिक भाग।
४—ढोरों का नम्बर अलग अलग।
५—ग्राम रोज़ाना का भोजन।
६—छूत छात कहा तक
७—शिक्षा कहां
, लड़के

देहात में अमीर, गरीब, छोटे, बड़े, और अच्छे बुरे सब ही तरह के लोग रहते हैं और सब से एक ही तरह की अपील भी हम नहीं कर सकते ग्राम के हर एक मनुष्य को अलग अलग समझना होगा जब तक हम ऐसे साईकलोजिस्ट न बन जाएंगे ग्राम सुधार का काम पूरी तरह से न कर सकेंगे।

सबसे पहले ग्रामीण नवयुवकों को अपनी तरफ खेंचना चाहिये अगर उनको हाथ में कर लिया तो बहुत कुछ हो सकता है, उन लोगों में आप भी ग्राम सुधारक को जाहिल बन जाना चाहिये ताकि वह आपके साथ सहमत होकर काम कर सकें, उनको यह न मालूम होने पाए कि हम इस की बावत कुछ जानते भी हैं या नहीं।

पस मेरा इन सब बातों के कहने का तात्पर्य यह था कि ग्राम सुधारकों के लिये यह परम आवश्यक है कि वह ग्राम साईकलोजी को अच्छी तरह समझ कर, ग्राम वालों को भाई की तरह समझाकर अपना कार्य पूरा करे।

अब आपके सामने ग्राम सुधारकों के लिये चन्द लाभ दायक बातें लिखूंगा जिससे वह लोग अपने कार्य में भली भान्ति सफल हो जावें।

१—सबसे पहले जो सेवक इस कार्य को करना चाहे उसको चाहिये कि वह आल इंडिया विलेज इंडस्ट्रीयल एसोशियेसन (All Iudia vilage Iudustrial Association) या इसके किसी प्रान्तिक शाखा में रहकर काम करे क्योंकि यही एक सही और ठीक जमायत है जो महात्मा गांधी की नेतृत्व में काम कर रही है। इस जमायत के नियम यह हैं।

१—दिहाती कला व कौशल का जारी करना और उस की उन्नति के लिये तरह तरह से कोशिश करनी चाहिये ।गाव की सामाजिक व शारीरिक धार्मिक उन्नति को भी साथ साथ करता रहे ।

२—काम शुरू करने से पहिले कुछ ग्राम के हालात लिख लेने चाहियें और एक पूरी रिपोर्ट (survey) बना लेनी आव श्यक है । जिस काम में ज्यादह सहूलियतें हैं उसमें सबसे पहले कार्य आरम्भ करना चाहिये जब इस ग्राम में कुछ सफलता प्राप्त हो जावे तब इस ग्राम के कुछ समझदार सदस्यों को लेकर दूसरे ग्राम में भी कार्य आरम्भ कर देना चाहिये इस तरह से ग्राम सुधार का काम बढ़ता चला जावेगा परन्तु काम को बस हद तक बढ़ाना चाहिये जितना कि वह कर सके गाव का सरवे (survey) करते समय इन बातों को ध्यान में रखना चाहिये ।

१—आबादी और रकबा ।
२—घरों की तादाद ।
३—रोज़गार के मुताबिक भाग ।
४—ढोरों का नम्बर अलग अलग ।
५—ग्राम रोज़ाना का भोजन ।
६—छूत छात कहा तक है ।
७—शिक्षा कहा तक है ।
लड़के लड़कियों की तादाद ।
८—आदात ।
९—चरखों और सूत कातने वालों की तादाद ।
१०—मन्दिरों और तलाबों की तादाद ।

रोक थाम न की गई तो इसका आखरी नतीजा सिवाए राष्ट्रीयता के नाश के और कुछ नहीं इसके लिये वही पुराना पंचायती नियम बनाना पड़ेगा तब ही इन लोगों का समय और व्यय बच सकता है।

नशीली वस्तुओं का प्रयोग भी दिन प्रति दिन बढ़ता चला जा रहा है हर बड़े गांव में शराब, अफीम चरस और भंग का ठेका तो मिल ही जाता है विवाह शादियों के अवसरों पर नशे में बद मस्त फिरना एक मामूली सी बात बन गई है जब कुछ नहीं मिलता तो ग्राम वाले भंग से अपने नशे की पूर्ति करते हैं तम्बाकू पीने का भी आम रिवाज है, बच्चा बूढ़ा जवान जिसे देखो इस बुरी आदत का शिकार है गांव की पंचायत में तो हुक्का एक बहुत ही जरूरी वस्तु बन गई है सब ग्राम वाले तम्बाकू नोशी में अपना बहुत समय नष्ट करते हैं, लग भग एक अरब और एक करोड़ रुपया हर साल नशीली वस्तुओं के खरीदने में बाहर जाता है।

इसलिये जो लोग ग्राम सुधार करना चाहते हैं उनको इन सब बुरी बातों के खिलाफ लड़ना होगा और खास कर बच्चों पर कड़ी दृष्टि रखनी पड़ेगी ताकि वह इन बीमारियों का शिकार न बनें।

अब आवश्यकता रसम व रिवाज की पाबन्दी बेचारे देहातियों को तरह तरह की मुसीबत में जकड़ देती है, लड़के की पैदायश पर सौ दो सौ खर्च करना जरूरी है नया मकान बनाने के बाद बरादरी को भोजन खिलाना आवश्यक है, विवाह शादियों और दूसरी रसूमात की अदायगी पर बहुत

खर्च किया जाता है बराबरी में अपनी शान रखने के लिये बच्चों और औरतों को जेवर पहनाते हैं।

इस देश का सामाजिक प्रबन्ध अन्दर से खोखला हो चुका है इस को, दो बारा बनाने की जरूरत है लडकी की शादी मां बाप के लिये एक बहुत बडी मुसीबत है घर में चाहे खाने तक न हो लोक लज्जा के लिये लडकी को दहेज देना ही पडता है एक बार ऋण से दबा हुआ देहाती हमेशा की मौत मर जाता है।

हम इस किसम की रसम व रवाज़ को हटा कर ही असली ग्राम सुधार कर सकते है इसलिए प्रचारकों को इन चीजों की तरफ खास ध्यान देना चाहिये।

जब तक हम गांव वालों में क्रान्ति पैदा न कर देवें तब ग्राम सुधार पूरा नहीं होता उनको बताया जाय कि भारत को तुम्हारी कितनी बडी आवश्यकता है यह इस समाज का एक बहुत ही जरूरी भाग है आराम का जीवन व्यतीत करना इसका भी प्राकृतिक बटवारा है।

भारत के कृषिक के साथ अब बाहरी दुनिया का सम्बन्ध करना होगा, बहुत समय बीत गया कि वह अपने ही घर का मेंढक बन रहा है इसी को बदलना पडेगा ताकि वह भी एक धनी मनुष्य की तरह, सडक रेलें, रेडियो तार टेलीफून को काम में ला सकें हमें ग्रामों के लिये नई नई सडकें बनवानी पडेंगी ताकि गांव वाले एक जगह से दूसरी जगह आ जा सकें और अपनी पैदावार को ठीक और तेज भाव पर बेच सके जब तक सडके देहात में न बनाई जावेंगी देहात सुधार का होना ना मुमकिन दिखाई पडता है।

दूसरी वस्तु जो सुधार के बारे में आवश्यक है वह अच्छे कुओं का बनवाना है। इसके लिये हकूमत को क़र्ज़ा देना होगा जिस जगह कुवें खोदे जावें मजदूरी का काम गांव वालों से मुफ्त लिया जावे अगर चार साल तक कुवे खोदने का प्रबन्ध किया जावे तो ज्यादह धन खर्च किये बिना ही देहातों को बड़ी मदद मिल सकती है।

अगर अच्छी सड़कें और कुवे दिहातों में बन जावें तो गांव वाले खुद काम करने लग जावें और इसके बाद ग्राम वालों को हर वस्तु जो कि वह चाहते हैं पैदा करने के लिये कहा जावे ताकि उनको बाहर वालों का मुंह न ताकना पड़े।

अन्त में मैं देश के नौजवानों से प्रार्थना करता हूं कि वह अपने जीवनों को अपने ग्रामों के सुधारने में लगा देवें, अगर उन्होंने ग्राम सुधार कर दिया तो राष्ट्रीयता का सुधार कर दिया, इसलिये देश के नवयुवको अपना तन मन धन भारत वासियों की सेवा में लगा दो भाईयों को सेवा करना ही ईश्वर की सब से बड़ी पूजा है।

रियासतों में जागृति और दमन !

देशी रियासतों में हुई जागृति को देखकर किस भारतीय के हृदय में सन्तोष न होगा। यूं तो एक अरसे से भारतीय रियासतों की प्रजा जागृति के प्रयत्न में रही, लेकिन फिर भी आज तक वह सब कोशिशें इतनी स्पष्ट और साफ नहीं थीं जितनी कि गत चार-पांच मास में होने वाली घटनाओं से स्पष्ट हैं। इन घटनाओं को देखने पर यह ठीक-ठीक पता चलता है कि देसी रियासतों की प्रजा गुलामी से कितनी तंग आ चुकी है और अपने आप को आज़ाद देखने की भावना उनके हृदय में कितनी प्रबल है। पहिले जो मौखिक विरोध था, वह अब बढ़कर कार्य रूप में परिणित होने लगा है। साथ ही पहिले जैसा दब्बूपन तथा भय भी नहीं है रियासती प्रजा आज अधिक संगठित तथा साहसी हो गई है। इसी लिये वह अपनी मांगों को अधिक दृढ़ता से अधिकारियों के सम्मुख रख रही है।

इस समय उदयपुर, जयपुर, पटियाला, त्रावनकोर, मैसूर, राजकोट, अलवर, काश्मीर, ग्वालियर, इन्दौर, जोधपुर, कलसिया, मलियर कोटला, तालचर, धेनाकनाल आदि रियासतों में जो आन्दोलन चल रहे हैं वे जहां इस बात को स्पष्ट बतलाते हैं कि रियासती प्रजा कितनी दृढ़ है तथा मांगों के लिये मर मिटने की उसमें कितनी भावना पैदा हो चुकी है; वहां ये इस बात के भी द्योतक हैं कि रियासतों

होने वाली जागृति का रूप कितना व्यापक हो गया है। आज से कुछ वर्ष पूर्व रियासती आन्दोलन केवल कुछ दक्षिण और गुजरात की रियासतों तक ही सीमित थे। अन्य भारतीय रियासतों में या तो कोई हलचल ही न थी, या यदि कहीं हलचल भी थी तब कुछ सार्वजनिक कार्य कर्त्ताओं मात्र में जनता की सहानुभूति ऐसे कार्यकर्ताओं के साथ भले ही हो लेकिन उसका सहयोग उन्हें प्राप्त न था। गत मासों ने बतला दिया कि अब दशा बिलकुल बदल गई है। जनता का न सिर्फ इन कार्यकर्त्ताओं को समर्थन ही प्राप्त है, अपितु वह तन मन धन से इनके द्वारा चलाये गये आन्दोलन को सहायता भी कर रही है। कहीं २ तो जनता ने उत्साह दिखला कर मार्ग प्रदर्शन का भार भी अपने ज़िम्मे ले लिया है।

समस्त भारत में जो आज जागृति की लहर है उसके जानकारी रखने वालों को रियासती प्रजा में इतने थोड़े दिनों में इतनी अधिक उन्नति पर कुछ आश्चर्य न होगा। यह तो अखिल भारत वर्षीय जागृति का स्वाभाविक परिणाम है। पड़ोसी को जागा देखकर दूसरे पड़ोसी की भी आँख खुल जानी नितान्त स्वाभाविक है। एक आदमी जब स्वतन्त्रता का आंशिक उपभोग कर रहा हो, तब दूसरे को भी यही स्वाभाविक इच्छा होती है। कि हम भी क्या ऐसे नहीं हो सकते। यदि हो सकते हैं तब हम भी क्यों न इस विषय में चेष्टा करें। रियासती प्रजा सैकड़ों वर्षों से बृटिश भारत की प्रजा के समान कुचली जा रही थी। दोनों के सुख और दुख को बर्दाश्त करने के तरीके दूसरे थे। वहां

राजा मनमानी करता था, यहां अधिकारियों की दिलचाही होती थी। दोनों को एक ही सबक पढ़ाया गया था कि तुम पिसने और कुचले जाने के लिये ही पैदा हुये हो। तुम्हे चू करने का अधिकार नहीं।

लेकिन उचित अनुचित शिक्षा के प्रसार के कारण बृटिश भारत की जनता कुछ साक्षर हो गई है और तब उसने विदेशी पुस्तकों को पढ़ तथा संसार में हो रहे आन्दोलन को देख कुछ-कुछ समझा। उनमें भावना पैदा होती थी कि हम कुचले जाने के लिये नहीं पैदा हुये। हमें भी जीने और हंसकर जीने का अधिकार है। कुछ ने आन्दोलन शुरू किया। लोगों के सामने अपनी बात रक्खी दुनिया के अन्य देशों में जो हो रहा है उसका चित्र उनके आगे खींचा। फलत जागृति हुई। लोग गुलामी की जञ्जीरों को तोड़ने के लिये अग्रसर हुये। रियासती प्रजा ने धड़कते हुये दिल से इन आन्दोलनों को देखा। शायद इनकी सफलता की भी कामना की और आखिर इसके परिणाम की प्रतीक्षा में लग गये। धीरे २ उन्हें पता लग गया कि यह आन्दोलन बह लहू की नदियां हमारे पड़ोसियों ने व्यर्थ नहीं बहाने दी है। उनका कुछ लाभ है। स्वतन्त्रता यदि आज न मिली तो क्या हुआ? वह मिल अवश्य सकती है। और उनमें भी अपनी आज़ादी की भावना का सचार हुआ। क्यों न वे भी इसके लिये कोशिश करें।

गत वर्ष ब्रिटिश भारतीय प्रजा की विजय की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इस विजय का सर्वव्यापक असर सतों पर भी पड़ा। आज जो कुछ भी

है यही उसी प्रभाव के कारण है और इसीलिये नितान्त स्वाभाविक है।

परन्तु रियासती अधिकारियों ने इस सत्य को जानते हुए भी उससे आंख मींचली हैं। उनकी मनमानी में इससे बाधा पड़ने की पूरी शंका है इसलिये सब जानते बूझते हुए भी इस बात की सत्यता को स्वीकार करने के लिये रियासती अधिकारी तैयार नहीं। रियासतों में जो हलचल आज मच रही है उसे वह स्वाभाविक परिणाम नहीं मानते, अपितु उनका कथन है कि यह सब ब्रिटिश भारत के कुछ उपद्रवी लोगों की शरारत है जिसने उनकी रियासती प्रजा को भड़काया है। और यह सब मान कर आज उन लोगों ने ब्रिटिश भारत के निवासियों पर अपनी रियासतों में प्रविष्ट न होने की पाबन्दी लगा दी है। इस पाबन्दी के बाद वे रियासतों में शान्ति हो जाने की उम्मेद करते हैं। दूसरी ओर उठती हुई रियासती प्रजा पर भी उन्होंने इसी आधार पर ज़ोर शोर से दमन चक्र चला दिया है। उनका कथन है कि ऐसा करके कुछ शरारती लोगों का जिन्होंने जनता को भड़काया है दमन कर सकेंगे और इस प्रकार दमन करने के बाद प्रजा शान्त हो जायगी।

मन मानी को कुछ दिन और चलाने के लिये रियासती अधिकारियों की यह सूझ और कल्पना कुछ बुरी नहीं। परन्तु हमें खेद है कि इन रियासती राजाओं और अधिकारियों ने दूर देखने की अपेक्षा अपने संकुचित दृष्टिकोण से ही अधिक काम लिया है। हो सकता है इस प्रकार दमन चक्र चला कर कुछ दिन और मनमानी करने की आज़ादी

मिल जावे। परन्तु उन्हें यह न भूलना चाहिये कि बाद में इस का कैसा उलटा असर होगा। इतिहास बतलाता है कि ऐसे दमनों का अन्तिम परिणाम बहुत खतरनाक और बुरा हुआ। फ्रांस की राज्य क्रांति की तह में यह ही दमन था जिसका फ्रास को राज शाही के खातमे में भी हाथ था यह सब विदित ही है। ऐसी अवस्था में देशी रियासतो में हो रहे दमन की प्रति क्रिया क्या होगी यह समझा जा सकता है प्रश्न यह है कि क्या राजा, लोग इस का मुकाबला करने के लिये तैय्यार हैं। क्या वह अपने में इतनी सामर्थ्य पाते हैं कि वह इस से टक्कर ले सकेंगे। जहा तक हम समझते हैं कि देशी राज्यों को इस टक्कर की बर्दाश्त नहीं। ऐसी अवस्था में अच्छा होगा कि अगला कदम बढाने से पहिले वे तनिक सोचें और सोच विचार कर जो कुछ भी करना चाहें करें।

नरेशों को सूचना

देशी रियासतों को प्रजा में जो जागृति की भावना पैदा हो गई है, उस को रियासतों के अधिकारियों और नरेशों की ओर से हर प्रकार से दमन करने का प्रयत्न हो रहा है। जनता के इन भावो के कुचलने के लिये देशी राज्यों के अधिकारी जिन पाशविक उपायों को काम में लाये हैं और लाते रहे हैं उन से सब परिचित ही हैं। परन्तु इन दमनकारी तथा आतंक पूर्ण अत्याचारों के बावजूद भी इन रियासतों के अधिकारी जनता के भावों को कुचलने में समर्थ नहीं हो रहे हैं और जनता के अपने अधि कारों की रक्षा के लिये निरन्तर बढता जा रहा है।

प्रतीत होता है कि इस परिस्थिति ने देशी राज्यों के नरेशों और उन के अधिकारियों को चिन्ता में डाल दिया है। जनता में पैदा हुई जागृति को किस प्रकार कुचला जासके यही विचार आज अधिकांश रियासतों के अधिकारियों के दिमाग में घूम रहा है। यह सच ही है कि अधिकांश देशी रियासतें उन के अंग्रेज अधि कारियों द्वारा शासित होती हैं और रियासतों के नरेश इन के हाथ की कठ पुतली बने हुवे हैं। इस लिये जनता की भावना को कुचलने की जिम्मेवारी अंग्रेज अधिकारी अपने ऊपर ही समझ रहे हैं और राज्य के लाभ हानि को न सोचते हुये अपने अभिमान और शान के लिये नये नये दमन करने के उपाय ढूंढ रहे हैं।

अब तक लोगों ने जो दमनकारी उपाय ढूंढे थे उन की असफलता देख कर हाल ही में इन्होंने एक नया दमन का रास्ता ढूंढ निकाला है। यह रास्ता है देशी जनता में भेद नीति का। बृटिश सरकार भारत में पहिले ही इस उपाय को काम में लाती रही है। ऐसी दशा में यदि अंग्रेज अधिकारी उस उपाय को काम में लावें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। हाल ही में प्रथम बार राज कोट के मामले में इस भेद नीति का अवलम्बन किया गया। वहां के हिन्दू मुसलमानों में प्रति निधियों के सवाल पर हिन्दू मुसलमान प्रश्न बना कर खड़ा कर दिया। दूसरी ओर फिर जयपुर में इस नीति की पुनरावृति की गई है। जब आंदोलन आरम्भ होने से एक सप्ताह पूर्व ही इस नीति का आश्रय ले वहां के हिन्दू मुसलमानों को लड़ा दिया गया। इस प्रकार जनता

की संकीर्ण भावनाओं को उकसा कर उन्हें फोड़ डालने की चेष्टा को जा रही है।

बहादुरी से अपने अधिकारों की रक्षा करने वाली देशी राज्यों की जनता से हमें उम्मीद है कि वह अधिकारियों के इस कुचक्र को समझ कर उनके जाल में न फंसेगी विदेश भारत ने इस भेद नीति के जाल में फस कर जो नुकसान उठाया है, देशी राज्यों के कार्यकर्ता उससे अपरिचित नहीं ऐसी दशा में उनका कर्तव्य है कि सारी स्थिति वह जनता को समझादें ताकि भोली जनता इस जाल से बची रहे एक बार यदि इस जाल में फस गई तब उसकी उन्नति की सम्भावना एक दूर की चीज़ हो जायगी। इस के अतिरिक्त आपस में लड़ कर एक दूसरे का सर फोड़ने के अतिरिक्त इस आपसी फूट का कुछ लाभ ही नहीं।

इस समय अगर देशी नरेश भी यह समझे बैठे हैं कि जनता को आपस में लड़ाकर हो उनका लाभ होगा यह एक बड़ी भूल है। ब्रिटिश सरकार की बात उन पर लागू नहीं होती। उन्हें तो इन ही लोगों में रहना है और इन ही के बीच अपना जीवन बिताना है। इसलिये सोच समझ कर अपना रास्ता अख्तियार करना चाहिये।

उनका कर्तव्य है कि वे अपने अधिकारियों को इस के प्रयोग से रोक दें। यदि उन्होंने ऐसा न किया तब नहीं कि इस भेद भाव के उग्र हो जाने पर उनका भी संकट में आजावे। यदि ऐसा न भी में बराबर असन्तोष को लहर रहने

की सुरक्षा कायम नहीं रह सकती। इसका परिणाम देशी रियासतों को आर्थिक हानि के रूप में उठाना पड़ेगा। आज चाहे कोई रियासत कितनी भी धनी क्यों न हो परन्तु यह निश्चित ही है कि इस भेद भाव के होने पर शीघ्र ही उसका कोष खाली हो जावेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि देशी रियासतों में जिस भेद भाव की नीति का प्रारम्भ हुआ है वह राजा और प्रजा दोनों के लिये ही हानि कारक है। राजा और प्रजा दोनों का कर्तव्य है कि इसका विरोध करें और जो लोग या अधिकारी इस नीति का अवलम्बन करें उनका दमन किया जावे। आशा है कि प्रजा और देशी नरेश दोनों ही इसका ध्यान रख कर इस भेद नीति का विरोध करेंगे और अपने आपको नष्ट होने से बचा सकेंगे।

जेल सुधार

हिन्दुस्तान की जेल दुनिया के सफेद चादर पर ऐसे काले धब्बे हैं, जो ससार में पराधीनता से पैदा होने वाले अन्याय और अत्याचार के मिट जाने के बाद भी धुल नहीं सकते। उन के सुधार की कोई भावना उन में काम करती हुई आज तक देखने में नहीं आई उन की सारी रचना एक दम हृदय हीन और भावना हीन हैं वहाँ का वातावरण मनुष्यता से रहित है। "तीन लोक से लंका न्यारी" वाली कहावत उस पर चरीतार्थ होती है। जेल के बड़े साहब सुपरिनटेण्डेण्ट वहा के बादशाह होते हैं, जो सबेरे के समय केवल एक बार गश्त लगाते और दफ्तरी काम काज का रिवाज पूरा करने आते हैं सेण्ट्रल जेलों में सुपरिनटेण्डेण्ट कुछ अधिक समय देते हैं,लेकिन कैदियों के साथ उनका सीधा सम्बन्ध नहीं होता। कैदियो पर जेलर की हकूमत चलती है। जेलर के बाद जमीदार का डंडा हर समय उनके सर पर रहता है। कनविक्ट वार्डर और नम्बरदार भी जेल के अफसरों में गिने जाते हैं। ये वे लोग हैं, जो साधारण कैदियो में से भरती किये जाते हैं नम्बरदार से लेकर बड़े जमीदार तक प्रायः सभी अफसर ऐसे अशिक्षित, असभ्य, गवार और उज्जड़ होते हैं कि वे कैदियों के साथ गाली,लात, घू से और डंडे के बिना बात नहीं करते। बड़े जमीदार के ऊपर के अफसरों का सलूक भी कैदियो के साथ कुछ अच्छा नहीं होता। इसी से जेल का वातावरण जितना भयानक बाहर से दीख पड़ता है, उस से अधिक भयानक भीतर रहता

जेल का सारा अनुशासन और नियन्त्रण भी वैसा ही भीषण है। १६२६ से श्रेणी विभाग होने से पहिले जिन्हें साधारण कैदियों का सा जीवन बिताने का अवसर मिला है, उन से जेल की दुनिया की भीषणता एवं भयानकता छिपी हुई नहीं है। यहां का रहन, सहन, वेश, भूषा, खान, पान, और मेहनत, मजूरी सभी कुछ ऐसी कठोर हैं कि वह सदा कैदी को उस के कैदी होने की याद दिलाती रहती है। मनुष्य के शरीर में किसी आत्मा के अस्तित्व को शायद जेल वाले स्वीकार नहीं करते। पतित अपना सुधार करके कभी उन्नत हो सकता है, यह भी वे सम्भवत: नहीं मानते। आत्मा की उन्नति मनुष्य के स्वाभाविक सद् गुणों के विकास और उसकी नैसर्गिक प्रगती में भी उनका विश्वास प्राय: नहीं है वे मनुष्य के शरीर पर वैसे ही शासन करते हैं जैसे निर्दयी मनुष्य पशुओं पर करता है। परिणाम यह होता है कि जेल में मनुष्य भी पशु बना दिया जाता है। उसकी आत्मा जेल नियन्त्रण में मर जाती है। उसके नैसर्गिक सद्गुणों की कलियां बिना खिले मुर्झा जाती हैं। उसकी स्वाभाविक शक्तियां बिलकुल नष्ट हो जाती हैं। मनुष्यता नाम, की कोई चीज उसके जीवन में शेष नहीं रह जाती। यही वजह है कि वह जेल को अपना घर बना लेता है और जेल से छुट कर आने के बाद फौरन ही फिर जेल को चल देता है। जेल में उसके लिये कोई आकर्षण होता है, ऐसी बात नहीं है। वह आदत से लाचार हो वैसा करता है। मानवीय सद्गुण उसके बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं। सदविवेक की शक्ति उसमें रहती ही नहीं बुरे भले की भावना का उसमें अभाव हो जाता है

अपना पतन उसे मालूम नहीं देता और जेल के नारकीय जीवन में ही वह सुख मानने लग जाता है कैसी दयनीय यह स्थिति है जेल के हृदय हीन अनुशासन और कठोर नियन्त्रण का यह अवश्यम्भावी परिणाम है। इसका सारा दोष एक मात्र सरकार पर नहीं डाला जाना चाहिये। जनता भी इसके लिये अपराधी है। महात्मागांधी और कांग्रेस के जेल आन्दोलन ने जेलों के बारे में जनता की भावना को जरूर कुछ बदला है, लेकिन उससे पहिले जनता की भावना जेलों और उनसे छूट कर आने वालों के लिये कितनी दूषित थी, जेल जाने वाले के लिये जात, बिरादरी, परिवार और समाज में कोई स्थान नहीं रहता था। धार्मिक दृष्टि से उसे पतित और सामाजिक दृष्टि से बहिष्कृत माना जाता था। बिना प्रायश्चित के अपने समाज या जाति में उसे शामिल नहीं किया जाता था। अपने भी उस के लिये पराये बन जाते थे। इस समय भी इस स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। जेल से खाली जेब आने वाले साधनहीन व्यक्ति को जब दुनिया में कोई जगह दीख नहीं पड़ती, तब उसे मन मार कर जेल का ही सहारा लेना पड़ता है। समाज में ऐसे व्यक्तियों के लिये क्या व्यवस्था है ? जनता की दृष्टि में वह ऐसा आदमी है, जो समाज के लिये कलंक है। ऐसे कलंकी आदमी को जब समाज अपनाता नहीं, तब वह उलटे पैर जेल को लौट जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि" कैदी के,, दुर्भाग्य का वही दिन नहीं होता, जिस दिन उसे जेल की चार दिवारी में बन्द किया जाता है, लेकिन उस के

जेल का सारा अनुशासन और नियन्त्रण भी वैसा ही भीषण है। १९२६ से श्रेणी विभाग होने से पहिले जिन्हें साधारण कैदियों का सा जीवन बिताने का अवसर मिला है, उन से जेल की दुनिया की भीषणता एवं भयानकता छिपी हुई नहीं है। यहां का रहन, सहन, वेश, भूषा, खान, पान, और मेहनत, मजूरी सभी कुछ ऐसी कठोर हैं कि वह सदा कैदी को उस के कैदी होने की याद दिलाती रहती है। मनुष्य के शरीर में किसी आत्मा के अस्तित्व को शायद जेल वाले स्वीकार नहीं करते। पतित अपना सुधार करके कभी उन्नत हो सकता है, यह भी वे सम्भवतः नहीं मानते। आत्मा की उन्नति मनुष्य के स्वाभाविक सद् गुणों के विकास और उसकी नैसर्गिक प्रगती में भी उनका विश्वास प्रायः नहीं है वे मनुष्य के शरीर पर वैसे ही शासन करते हैं जैसे निर्दयी मनुष्य पशुओं पर करता है। परिणाम यह होता है कि जेल में मनुष्य भी पशु बना दिया जाता है। उसकी आत्मा जेल नियन्त्रण में मर जाती है। उसके नैसर्गिक सद्‌गुणों की कलियां बिना खिले मुर्झा जाती हैं। उसकी स्वाभाविक शक्तियां बिलकुल नष्ट हो जाती हैं। मनुष्यता नाम, की कोई चीज उसके जीवन में शेष नहीं रह जाती। यही वजह है कि वह जेल को अपना घर बना लेता है और जेल से छुट कर आने के बाद फौरन ही फिर जेल को चल देता है। जेल में उसके लिये कोई आकर्षण होता है, ऐसी बात नहीं है। वह आदत से लाचार हो वैसा करता है। मानवीय सद्‌गुण उसके बिलकुल नष्ट हो जाते हैं। सदविवेक की शक्ति उसमें रहती ही नहीं बुरे भले की भावना का उसमे अभाव हो जाता है

अपना पतन उसे मालूम नहीं देता और जेल के नारकीय जीवन में ही वह सुख मानने लग जाता है कैसी दयनीय यह स्थिति है जेल के हृदय हीन अनुशासन और कठोर नियन्त्रण का यह अवश्यम्भावी परिणाम है। इसका सारा दोष एक मात्र सरकार पर नहीं डाला जाना चाहिये। जनता भी इसके लिये अपराधी है। महात्मागान्धी और कांग्रेस के जेल आन्दोलन ने जेलों के बारे में जनता की भावना को जरूर कुछ बदला है, लेकिन उससे पहिले जनता की भावना जेलों और उनसे छुट कर आने वालों के लिये कितनी दूषित थी, जेल जाने वाले के लिये जात, बिरादरी परिवार और समाज में कोई स्थान नहीं रहता था। धार्मिक दृष्टि से उसे पतित और सामाजिक दृष्टि से बहिष्कृत माना जाता था। बिना प्रायश्चित के अपने समाज या जाति में उसे शामिल नहीं किया जाता था। अपने भी उस के लिये पराये बन जाते थे। इस समय भी इस स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। जेल से खाली जेब आने वाले साधनहीन व्यक्ति को जब दुनिया में कोई जगह दीख नहीं पड़ती, तब उसे मन मार कर जेल का ही सहारा लेना पड़ता है। समाज में ऐसे व्यक्तियों के लिये क्या व्यवस्था है? जनता की दृष्टि में वह ऐसा आदमी है, जो समाज के लिये कलंक है। ऐसे कलंकी आदमी को जब समाज अपनाता नहीं, तब वह उलटे पैर जेल को लौट जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि" कैदी को,, दुर्भाग्य का वही दिन नहीं होता, जिस दिन उसे जेल की चार दिवारो में बन्द किया जाता है, लेकिन उस के

दुर्भाग्य का दिन वह होता है जिस दिन उस के लिये बाहर की दुनिया में जाने को जेल का दरवाजा खुलता है। वह हत भाग्य जेल में रहने की वजह से जनता की नजरों में चरित्र भ्रष्ट समझा जाता है, महीनों या वर्षों जेल में रहने से उस की हालत अनाथों जैसी हो जाती है और संसार की कठिन यात्रा का दुर्गम मार्ग तय करना उस के लिये असाध्य हो जाता है। जेल से बाहर निकलने के बाद उस का अपना कौन होता है? "कितनी भयानक है यह स्थिति,, समाज की निन्दनीय उपेक्षा और हृदय हीन व्यवहार का स्वाभाविक निष्कर्ष है। फिर भी इस दयनीय और भयानक स्थिति को अधिक जिम्मेवारी सरकार पर है। जेलों को रचना नौकर शाही हुकूमत ने की है और वहां का सारा वातावरण भी उसी का पैदा किया हुआ है। उस को बदलना उस का काम है। यही वजह है कि सात प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारों के कायम होने पर महात्मा गान्धी ने जो तीन मुख्य काम उन के सामने पेश किये हैं उन में जेल सुधार को भी शामिल किया गया है और यह बहुत खुशी की बात है कि कांग्रेस सरकारों ने इस काम को पूरी दृढ़ता के साथ अपने हाथों में ले लिया है। जेलों में कोई सुधार या परिवर्तन न कर उनको भय आतङ्क एवं दमन का घर बनाये रखना सरकार की नीति का एक प्रधान अंग है। यही वजह है कि जब से जेलें कायम की गई हैं, तब से उनके रंग-ढंग में आन्दोलन के बावजूद भी ऐसा कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया। जब वे बनाये गये थे, तब से वैसी हालत में चले आरहे हैं। १८३६

राष्ट्रीय झंडा



चौधरी शेर जंग

में नियुक्त जेल कमेटी ने यह रिपोर्ट की थी कि "भारतीय जेलों की दशा युरोप के जेलों के समान है उसके बाद एक शताब्दी का युग बीत गया। दुनिया बदल गई। इनके साथ युरोप के जेल भी बदल गये। लेकिन भारत के जेल नहीं बदले वे बाबा आदम के समय के वैसे ही बने हुये हैं। १८५७ में जब भारतीयों ने अपनी स्वतन्त्रता के लिये पहला सगठित सग्राम किया था, तब उसके बहुत से कैदी जेलों में ठू से गये थे। इस समय इन पर 'बदला लेने की भावना से की गई सख्तियों के कारण भी जेल का शासन बहुत कठोर तथा हृदय हीन हो गया और वही चाल बेढंगी अब भी कायम है। इस बीच जेल सुधार के लिये कई कमेटियां नियुक्त की गई। कई परिषदों की योजना भी की गई लेकिन, पतनाला वहीं रहा जहाँ पहिले था। १८६४, १८७७ और १८८८ में भी जेल कमेटियों की नियुक्ति की गई। पर, उनसे कोई विशेष लाभ नहीं मिला। इसके बाद १९१६ और १९२९ में भी जेल कमेटियों की नियुक्ति की गई। १९२९ में जेल कमेटी नियुक्त होने से पहिले अमर-शहीद यतीन्द्रनाथ दास लाहोर जेल में जेल के निठुर शासन की बलि वेदी पर आत्मोत्सर्ग कर चुके थे और देश में जेल सुधार के लिये तीव्र आन्दोलन उठ चुका था उसी से १९२९ की जेल कमेटी की सिफारिशों से वर्तमान श्रेणी विभाग का जन्म हुआ। लेकिन, जेलों के यातना वरण शासन एव नियन्त्रण में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मनुष्यता की निर्मम हत्या वहां वैसी ही जारी रही जैसी पहिले थी युरोप की प्रगति प्रगति शील देशों में जेल सजा के स्थान नहीं हैं और न बदला लेने की भावना से उन

सञ्चालन किया जाता है। कैदी को हमारे देश में ऐसा अपराधी मान लिया गया है जिसका सुधार हो नहीं सकता इसलिये उसको सुधार कर श्रेष्ठ व स्वावलम्बी नागरिक बनाने की कोई कोशिश नहीं की जाती। रूस में साम्यवादी क्रान्ति के बाद जेलों की काया पलट दी गई है और कैदियों में से अच्छे से अच्छे सैनिक, एवं नागरिक पैदा किये गये हैं। इसी प्रकार दूसरे देशों में भी कैदियों को जीवन के सुधार और आत्मिक उन्नति के लिए पूरा अवसर दिया जाता है। कांग्रेसी सरकारें भी उन देशों के समान जेलों को दण्डगृह न रख कर सुधार गृह बनाना चाहती हैं। उसके लिये आवश्यक है कि उनका चहुँ मुखी सुधार किया जाय। केवल जहां तहां कुछ पैवन्द लगा देने से कुछ सुधार न होगा। श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव ने एक पत्रकार ने जेल सुधार की चर्चा करते हुये यह पूछा कि क्या वे कैदियों को "तसले" की जगह "लोटा" देंगे, तब उन्होंने यह बिल्कुल ठीक कहा था कि "ऐसे सवाल पूछने वाले जेल सुधार की समस्या के वास्तविक स्वरूप एवं महत्व को समझे ही नहीं हैं। जेल सुधार के लिए लोटा की जरूरत नहीं है। वे इस समय पापाचार के बहुत महान अड्डे बने हुये हैं अब तो उनकी सारी ही व्यवस्था, शासन नियन्त्रण एवं वातावरण में आमूल चूल परिवर्तन किये बिना वह सुधार नहीं हो सकता, जिसे कांग्रेसी सरकार करना चाहती है। सौ वर्ष के ढांचे को एक-दम-बदलना सम्भव नहीं है। जेल अधिकारियों की मनो-वृत्ति को भी तुरन्त बदलना मुश्किल है। पुराने अधिकारियों की जगह नये नहीं रखे जा सकते। छोटे मोटे सुधारों के लिए भी बहुत बड़ी

रकम चाहिये। शराब आदि की आमदनी का परित्याग कर जेल सुधार के लिए कुछ खर्च कर सकना कांग्रेस सरकारों के लिये अभी सम्भव प्रतीत नहीं होता। उसके लिए केवल एक मार्ग शेष रह जाता है कि जेलों को स्वावलम्बी बनाया जाय। इस समय जेलों में कैदियों से जो मेहनत मजूरी ली जाती है, उसमें 'सजा' देने की भावना प्रधान रहती है, आमदनी की दृष्टि से वह काम नहीं लिया जाता। तेल की घानी में जोतना, चरस' में बैल की जगह लगाना, मूंज कुटवाना या रस्सी बटवाना, पत्थर तुड़वाना और आटा पिसवाना आदि ऐसे काम हैं जिनका विधान केवल सजा की दृष्टि से किया गया है और उनमें जरासी भी भूल चूक, कमी और लापरवाही होने पर, नंबरदार तथा जमादार की गाली गलौज, घूंसे एवं जूते के साथ जेल की सजा भी सिर पर सवार रहती है। कई कैदी इस व्यवहार की वजह से भयानक बिमारियों में फंस जाते हैं और उनका देह रोगों का घर बन जाता है इस मेहनत मजूरी के साथ उससे काम लेने वाले लोगों का सवाल भी बहुत टेढ़ा है। जब एक बालक को शिक्षा देने के लिए योग्य से योग्य अध्यापक की जरूरत समझी जाती है, तब दुर्व्यसनों और बुरी आदतों में फंसे हुये कैदी का सुधार करने के लिये तो असाधारण योग्यता का आदमी चाहिये। लेकिन, जेलों में ऐसे आदमी कहां हैं। कैदी को पापी या अपराधी न मानकर रोगी समझा जाना चाहिए। उनके मानसिक और आत्मिक उपकार के लिए वैसी ही योजना और व्यवस्था की जानी चाहिये, जैसी अस्पतालों में रोगियों के लिये और स्कूलों में बच्चों

के लिये की जाती हैं रोगी की सेवा करने वाली नर्सों और बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों दोनों की ममता, सहृदयता और योग्यता जेल अधिकारियों में होनी चाहिये। गान्धी जी ने कांग्रेसी मन्त्रि मण्डलों के सम्मुख जेल सुधार की योजना पेश करते हुये जो शब्द लिखे थे, उन्हें यहां दोहराना अप्रसंगिक न होगा। उन्होंने लिखा था कि "जेलों के वे तमाम उद्योग (मेहनत-मजूरी के काम) बन्द कर दिए जाय, जिनमें आवश्यक आय नहीं होती। तमाम जेलोंको हाथ कताई और हाथ बुनाई के काम को करने वाली संस्थाओं में बदल दिया जाय जहां सम्भव हो वहां कपास की खेती भी कराई जाय इस कार्य के लिये आवश्यक कुशल पुरुष जेलों में पहिले ही से मौजूद हैं। बस, योजक बुद्धि और इच्छा की जरूरत है। कैदियों को गुनहगार न समझा जाकर उन्हें अपंगु या रोगी समझा जाय। सिपाही उनके लिये भयानक जीव न हों और जेल अधिकारियों को उनका मित्र या शिक्षक बन जाना चाहिये इस प्रकार जेलों का गावों से निकट सम्बन्ध कायम हो जायगा और वे गांवों में खादी का सन्देश पहुंचाने का काम करेगीं। रिहा होने के बाद इससे कैदी के आदर्श नागरिक भी बन सकेंगे। अपनी इस योजना के बारे में गान्धी जी ने उसी लेख में लिखा था कि उनको इसकी कल्पना १६२२ से थी। तत्कालीन होम मेम्बर, जेलों के तत्कालीन इन्स्पेक्टर जनरल और दो सुपरिनटेण्डेण्टों से उन्होंने इस योजना के सम्बन्ध में बातचीत की थी। सब उससे सहमत थे। होम मेम्बर ने उसे गवर्नर के सामने पेश करने को लिखित रूप में भी मांगा था लेकिन, गवर्नर कैदी की बात सुनना कब गवारा

कर सकता था। आज वह समय आगया है जब कि उस कैदी की बात सात प्रान्तों में सुनी जा रही है और उनके जेल शासन को पागडोर उन दिनों के कैदियों के हाथों में है। हमारे सूबे के जेल विभाग के पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी श्री गोपीनाथ श्री वास्तव सम्भवतः चार चार जेल की सजा काट चुके हैं। और उन्हें जेल की परिभाषा में हैबिच्युल भी कहा जा सकता है। जिस योजना को १६२२ में गवर्नर सुनना नहीं चाहते थे, आज सात प्रान्तों में उसके अनुसार कार्य हो रहा है। जेलों में होने वाली मनुष्यता की निर्मम हत्या यदि कांग्रेसी सरकारों ने अपनी जेल सुधार की योजना द्वारा रोक दी तो निश्चय ही वे एक बहुत बड़ा काम कर जावेंगी।

हिन्दुस्तान में कानून के शब्दों का पालन किया जाता है, भावना का नहीं उसका यथार्थ नमूना यहां के जेल खाने हैं। यही वजह है कि इनमें नैतिक और राजनैतिक अपराधों में सजा पाये हुए सभी बन्दियों के साथ सब धान बाईस पसेरी वाला किस्सा चरितार्थ होता है सब को एक डंडे से हांकने की कोशिश की जाती है। राजबन्दी शब्द को स्वीकार करने के लिए यहां के जेल रजामन्द नहीं हैं। उनके लिए जेल के भीतर आने वाले सभी गुनहगार एकसे हैं। उनके साथ किसी भी प्रकार की रियायत की गुंजाइश जेल के शासन में नहीं है। इसी से जेल अधिकारियों के साथ राजबन्दियों की प्रायः सदा ही लड़ाई बनी रहती है। साधारण बन्दी के समान राजबन्दी अपनी आत्मा को दबा नहीं सकता उसको जरासी भी ठेस लगती है कि उसका स्व-

भिमानी आत्मा नागिन की तरह फुंक मार कर उठ खड़ा होता है। अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध प्राणों को बाजी लगा देने वाला राजबन्दी जेल में इसी प्रकार अपनी जान पर खेलने को तय्यार रहता है। अमर शहीद यतीन्द्रनाथ दास लाहोर जेल में इसी प्रकार अपनी जान पर खेल गये अब ढाका जेल मे श्री हरेन्द्रनाथ मुन्शी ने अमर शहीद यतीन्द्र के पद चिन्हों का अनुसरण किया है। ऐसे कितने ही ज्ञात व अज्ञात नर वीर, भारत माता के लाल, जेल की अन्धेरी कोठरीयों मे उसके हृदयहीन कठोर शासन की वेदी पर अपने प्राणो को बली चढा चुके है आज उन में से शायद ही कुछ को देश वासी जानते भी नहीं हैं। उनके त्याग, बलिदान और आत्मोत्सर्ग की कहानी मूक भाषा में जेल की काल कोठरियों की नृशंस दीवारों पर लिखी हुई अमानुषिकता की साक्षी स्वरूप अनन्त काल तक बनी रहेगी।

राजबन्दी जेल में स्वेच्छा से जाता है और सत्याग्रही की मर्यादा के अनुसार वह वहा के कानून का भी शक्ति भर पालन करना चाहता है। लेकिन, वहाँ कानून का जिस भावना से पालन कराया जाता है, वह उसे विद्रोही बना डालती है। कैदी पर जेल का आतंक बिठाने के लिये सरकार ने एक ऐसी गन्दी और भद्दी प्रथा जेलों में जारी की है कि स्वाभिमानी कैदी का आत्मा उससे जल कर राख हो जाता है। वैसे तो पग पग पर कैदी के स्वाभिमान को ठुकराया जाता है, उसकी आत्मा को नोचा जाता है और उसे सिर नीचा करके रहने को मजबूर किया जाता है। साधारण कैदियों में यह एक आम कहावत है कि "कम

खाना गम खाना, तब कटे जेल खाना" जेल खाना काटने के लिये कम और गम खाना जरूरी है। कम खाने का असर कैदी की देह और स्वास्थ पर पड़ता है, लेकिन गम कैदी के अन्तरात्मा और स्वाभिमान का मटिया मेट कर देता है। राज बन्दी शरीर और स्वास्थ्य की बरबादी सहन कर सकता है, लेकिन आत्मा और स्वाभिमान की बरबादी उस के लिये सहन नहीं है। उस को विरोध करते ही जेलों में राज बन्दियों के साथ अधिकारियों का संघर्ष पैदा हो जाता है और उसी का परिणाम होता है। राज बन्दियों की भूख हड़ताल।

सरकार एक ऐसी चीज है, जिस को मानने से इन्कार करने पर कई जेलों में राजबन्दियों को कठोर से कठोर यातनाये भोगनी पड़ी है। उन्हें टकटकी पर लटका कर बेंत तक मारी गई है। कुछ मास की सजा का वर्षों में परिणित हो जाना साधारण बात है। खड़ी बेड़ी, पड़ी बेड़ी, रात की हथकड़ी, काल कोठरी, पत्र व मुलाकात बन्द और "ए" या "बी" से "सी" श्रेणी में करदेना आदि तो साधारण सजाये हैं। लेकिन ये भी कुछ कम कठोर नहीं हैं पौराणिक ग्रन्थों में जिन नारकीय यातनाओं का वर्णन है, उन से ये कुछ कम भीषण या भयानक नहीं है। उन्हीं को दृष्टि से जेलों को नरक कहा जा सकता है। कैदी के हाथ दीवार में सिर के ऊपर हथकड़ी से एक कड़े में बांध दिये जाते हैं। और सवेरे से शाम तक, भोजनादि के समय के इलावा, उसे वैसे ही खड़े रक्खा जाता है। कभी कभी पैर की जगह पर सफेद खड़िया से निशान कर दिया जाता है। जिस से हटाना भी गुनाह माना जाता है। जेलों को दण्ड

सच मुच ही अमानुषिकता की पराकाष्टा है। करेला और नीम चढ़ा वाला किस्सा यह है कि जेल का अनुशासन भी कुछ ऐसा है कि उस में कैदी से बात की बात में अपराध हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। पंक्ति में चलना, बैठना, उठना नहाना और टट्टी तक से घराटों के इशारे पर फौरन उठ जाना, इतना कठिन बंधन है कि उस में मनुष्य से अपराध हो जाना बिलकुल स्वभाविक है। बड़े साहब सवेरे नियम पूर्वक कचहरी लगाते हैं। और फटा फट सजा सुनाते चले जाते हैं। वहां दलील, वकील, और अपील के लिये कोई गुंजाइश नहीं रहती स्वेच्छाचारी बादशाह की तरह बड़े साहब की हकूमत का वह नजारा देखने ही लायक होता है बड़े साहब और जेलर भी अभी आध फर्लांग परे होते हैं। कि "सरकार एक" का हुकम होते ही कैदी को हाथ पसार, पैर जोड़ और सिर नीचाकर उन के मान सम्मान के लिए खड़े हो जाना पड़ता है। जरा सी आँख भी कहीं ऊपर उठ गई को वह कैदी की गुस्ताखी समझी जाती है और सजा भोगने को उसे अगले दिन बड़े साहब की अदालत मे पेश किया जाता है।

इस प्रकार के वाता वरण मे राज बन्दी के लिये जब सांस लेना भी कठिन है तब सजा काटना तो और भी कठिन है। १६२० से पहिले जब राज बन्दियों को इकले दुकले जेल में जीवन बिताना पड़ता था, तब भी उनका अधिकारियों के साथ जेलों मे संघर्ष मचा रहता था लेकिन, १६२० के बाद यह संघर्ष कई बार भयानक रूप धारण कर चुका है। खाना न खाना भी जेल में गुनाह माना जाता है और इस के लिये . से कठोर सजायें भी दी जाती हैं। ऐसे गुनाहों के

लिये राज बन्दियो को भी अदालतों मे पेश किया जाता है। राज बन्दियो के लिये ये सब बहुत छोटी मोटी बाते हैं। उस के लिये सब से बड़ी बात जेल का वह वातावरण है, जिस में पग पग पर उसे अपमान की ठोकरें खानी पड़ती हैं। जेल में असहाय अवस्था में पड़ा हुआ राज बन्दी सिवा भूख हड़ताल के और क्या कर सकता है। उस नारकीय अपमान को सहन करने की अपेक्षा तिल तिल करके मर जाना उस के लिये स्वर्ग का मार्ग है। अमर शहीद यतीन्द्र नाथ दास का बलिदान या आत्मोत्सर्ग इस सम्बन्ध में सुवर्णाक्षरो में लिखा जाने लायक है। राज बन्दियो के सवाल को उन के महान बलिदान से विशेष बल मिला है लेकिन सरकारी अधिकारियो की मनोवृत्ति जेल विभाग के दृष्टि कोण और जेलों की नारकीय सृष्टि के हृदय हीन वातावरण में ऐसा कोई उल्लेखनीय परिवर्तन तब भी नहीं हुआ। जिस श्रेणी विभाग की उस के बाद सृष्टि की गई, वह जले पर नमक छिड़कने वाला साबित हुआ। १६३० में उसको कुछ उदारता से काम में लाया गया था। लेकिन १६३१-३२ में श्री भूला भाई देसाई और सेठ जमनालाल बजाज सरीखों को भी 'ए' श्रेणी में नहीं रखा गया था। सेठ जी को महीनों 'सी' श्रेणी में रहना पड़ा। कालेजों के आचार्य व प्रोफेसर 'सी' में रक्खे गये और उनके विद्यार्थी 'बी' या 'ए' में। पति 'सी' में तो पत्नी 'बी' और 'ए' में रखने के भी कुछ उदाहरण नहीं हैं। ऐसे भी उदाहरण मिलेंगे, कि पिता को एक श्रेणी दी गई, तो पुत्र को दूसरी, मोटर के मालिक को 'सी'-श्रेणी मे रक्खा गया, तो ड्राइवर को 'बी,

या 'ए' श्रेणी में। राजबन्दियों की दृष्टि से यह श्रेणी विभाग और भी अधिक भयानक इस लिए है कि नैतिक अपराधों में, यहां तक कि दुराचार आदि में सजा पाये हुए कैदी को ऊंची श्रेणी दे दी जाती है, लेकिन राजबन्दी को 'सी, में रक्खा जाता है। इस प्रकार यह श्रेणी विभाग अन्याय मूलक होने के साथ २ अपमान जनक भी हो गया, उसने जले पर नमक छिड़कने का काम किया। इसलिये राजबन्दियों की यह मांग है कि यह श्रेणी विभाग उठा दिया जाय, जो नैतिक अपराधों में सजा पाने वाले कैदियों से सर्वथा भिन्न हो। काकोरी के बन्दी श्री शचिन्द्र बख्शी और योगेश चेटर्जी भूख हड़ताल के साथ इस मांग को सदा ही प्रधानता देते रहे हैं।

इसी के साथ यह मांग भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है कि राजबन्दियों को एक ही जेल में एक साथ रक्खा जाय कम से कम इतना तो जरूर होना चाहिये कि एक जेल में अलग वार्डों में या अलग २ कोठरियों में उनको बन्द न किया जाय। साधारण कैदियों की संगति में जेल काटना उनके लिये बहुत कठिन है। अकेले में उसे बिताना और भी अधिक दूभर हो जाता है। राज बन्दियों की खुराक उनकी पुस्तकें और समाचार पत्र हैं। उनके बिना उन्हें मानसिक और आत्मिक भोजन नहीं मिल सकता है, लेकिन वह मानसिक एवं आत्मिक अनशन उनकी आध्यात्मिक मृत्यु का कारण बन जाता है।

श्री गुप्त शिव प्रसाद जी गुप्त ने राज बन्दियों की दृष्टि से जेलों के वर्तमान शासन की आलोचना करते हुए उनकी

मागों की चर्चा विस्तार के साथ की है उन्होंने निम्न लिखित तजवीजें पेश की हैं।

१—राजबन्दियों की एक श्रेणी होनी चाहिये ए० बी० और सी श्रेणियों के कारण आपस में मन मुटाव होता है।

२—राज बन्दियों के रहने का प्रबन्ध साधारण बन्दियों से पृथक होना चाहिये।

३—उन्हें अपना कपड़ा और बिस्तर इस्तेमाल करने का अधिकार होना चाहिये।

४—उन्हें अपने पास से भी उचित और मर्यादा के भीतर भोजन सामग्री मंगाने का अधिकार रहना चाहिए।

५—अपने पैसे से उचित मात्रा में पान, सुरती, तम्बाकू और सिगरेट बीड़ी भी मंगाने की अनुमति मिलनी चाहिए।

६—पुस्तकों पर कोई रुकावट न होनी चाहिए अपने पैसे से दैनिक या अन्य कोई भी समाचार पत्र मंगाने की अनुमति होनी चाहिए। जेल की ओर से प्रति ६ आदमी के पीछे एक साप्ताहिक पत्र और कुछ मासिक पत्र मंगाए जाने चाहिये।

७—जहां राजबन्दी रक्खे जावें। वहां प्रान्तीय और विदेशी भाषाओं की पुस्तकों का अच्छा संग्रह रहना चाहिये।

८—जेल की ओर से अनपढ़ बन्दियों को पढ़ाने का समुचित प्रबन्ध रहना चाहिये। पढ़े लिखे बन्दियों से यह कार्य लिया जाना चाहिये और यही उनका श्रम समझा जाना चाहिये।

९—राजबन्दियों से दिन भर में ४ घण्टे से अधिक कार्य न लेना चाहिये काम ऐसा होना चाहिये जिसे वे अपने लिये

अपमान जनक न समझें। सूत कातना, कपड़ा बुनना, दरी और कालीन बुनने के काम, कम्पोज करना, छापना, जिल्द बांधना आदि।

१०—जेल में फुटबाल, हाकी, कबड्डी, टेनिस आदि बाहरी खेल कूद का प्रबन्ध जेल की ओर से होना चाहिये खेल सामग्री रैकेट, गेंद स्टिक आदि अपने पास से मंगानी चाहिये। अखाड़ा होना चाहिये, जहां कुश्ती लड़ी जा सके। मुगदर, गदा, डम्बल, लेजिम, पेरलेल बार, होराइजैन्टलबार आदि का प्रबन्ध जेल की ओर से रहना चाहिये। इनके अतिरिक्त कसरत के सामान अपने खर्च से मगाने की अनुमति रहनी चाहिए। भीतरी खेलों के लिये शतरञ्ज, ताश, चौसर और गंजफा मंगाने की मनाही न करनी चाहिये। पर जुआ न होना चाहिये।

११—गाने बजाने की मनाही नहीं होनी चाहिये।

१२—मास में एक बार घर वालों से मिलने और एक पत्र भेजने की अनुमति रहनी चाहिये।

१३—छः मास में एक बार १५ दिन के लिए घर जाने की अनुमति और प्रबन्ध रहना चाहिये। इसके अतिरिक्त किसी सम्बंधी विशेष की बीमारी या मृत्यु के अवसर पर घर आकर उसकी दवा दारू का प्रबन्ध करने के लिये तथा मृतक संस्कार के लिये अनुमति मिलनी चाहिए। भले ही उतने दिन तक जेल में रक्खा जाय।

१४—जेल के नियम न पालन करने की अवस्था में अथवा अन्य अनुचित कार्य करने की अवस्था में इन लोगों को सजा बढ़ाने के अतिरिक्त और कोई सजा न मिल सकेगी। ऐसे

अपराधों के लिए जो सदाचार अथवा आचरण के विरुद्ध हों, उन्हें राजबन्दी कैदी से साधारण कैदी बना देने की सजा भी दी जासकती है।

१५—एल्यूमोनियम के जो बर्तन आज कल बी क्लास में मिलते हैं उनके बदले में पीतल के बर्तन मिलने चाहिये। जो लोग पसन्द करें उन्हें पीतल के बर्तनों के बदले तमाम चीनी के बर्तन मिल सकें।

इसी प्रकार अभी २ ढाका जेल के भूख हड़ताली कैदीयों ने भी निम्न पन्द्रह मांगे भूख हड़ताल छोडने के लिये पेश की हैं।

१—जेल में अपमानास्पद व्यवहार न हो।

२—जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट और अधिकारी सभ्य व्यवहार करें।

३—सब राजबन्दियों को एक वार्ड में रक्खा जाय।

४—दिन में कोठरियों में ताले में बन्द न किया जाय।

५—मेहनत मजूरी कम की जाय।

६—शाम को भोजन ७ बजे दिया जाय।

७—भोजन का प्रबन्ध सुधारा जाय और भोजन का सामान कीमत के अनुसार दिया जाय।

८—शाम को खेल कूद और व्यायाम की उचित व्यवस्था की जाय।

९—लिखने, पढ़ने और अपने वार्ड में परस्पर मिलने जुलने पर लगाई गई छोटी मोटी वत्तेजक पाबन्दियाँ दूर की जाँय।

१०—राजबन्दी अपनी पुस्तकों के पुस्तकालय की स्वय व्यवस्था कर सकें, अधिकारी उसमें हस्ताक्षेप न करें।

११—अपनी धरोहर का कुछ अधिक उपयोग करने की सुविधा दी जाय।

१२—औषधोपचार की व्यवस्था अधिक उत्तम बनाई जाय और डाक्टरी महकमे के लोगों का व्यवहार सभ्यता पूर्ण हो।

१३—दासपुर हत्याकाण्ड के राजबन्दियों को ऊंची श्रेणी में रक्खा जाय।

१४—श्रीमती सुनीति और चौधरी को अन्य महिला कैदियों के साथ रक्खा जाय।

१५—मुलाकात की अधिक अच्छी व्यवस्था की जाय।

इन मांगों द्वारा प्रगट होने वाली जेल सुधार की समस्या पर ही श्री हरेन्द्रनाथ मुन्शी का आत्मोत्सर्ग हुआ है। शब्द चाहे कुछ भी हों और उनका क्रम भी चाहे जो हो लेकिन उनके आशय में कोई भेद नहीं है। मनुष्यता की निर्मम हत्या को रोकने के लिये यदि जेलों में आमूल चूल परिवर्तन करने की जरूरत है, तो राजबन्दियों की दृष्टि से उन में अथ से इति तक परिवर्तन होना अत्यन्त जरूरी है। अपने राजनीतिक विश्वास के लिये जेल जाने वाले राजबन्दी और नैतिक अपराध करने वाले कैदों में जरूर कुछ अन्तर है। यही अन्तर जेल में उसके प्रति व्यवहार में होना चाहिये। ढाका के बन्दियों की शर्तें हमारा ध्यान सहसा उस ओर आकर्षित कर रही हैं। वर्तमान भूख हड़ताल का सम्बन्ध ऊपर से देखने में राजबन्दियों की रिहाई के साथ है, लेकिन उसकी प्रत्येक भावना का सम्बन्ध जेलों के सुधार के साथ है पीछे अथवा

मास से शुरू होकर भारत व्यापी बन जाने वाली भूख हड़ताल का सम्बन्ध भी जेल अधिकारियों के दुर्व्यवहार के साथ ही अधिक था। युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री मोहनलाल सकसेना ने उस समय वायसराय को जो पत्र लिखा था, उस में अण्डमन जेल के अधिकारियों के अपमानपूर्ण दुर्व्यवहार की स्पष्ट शिकायत की गई थी।

सम्भवत यह कहा जाय कि आठ प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें कायम हो जाने से राजबन्दियों की दृष्टि से जेल सुधार का प्रश्न इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा लेकिन ऐसा सोचना भूल है। सारे देश में कांग्रेस की निर्बाध हकूमत पूर्ण स्वराज्य कायम हो जाने के बाद राजबन्दियों की समस्या क्या रूप धारण करेगी यह अभी कहना कठिन है। लेकिन जब तक वैसा नहीं होजाता और आठ प्रान्तों में भी वैधानिक संकट पैदा होकर कांग्रेस के सत्याग्रह के मार्ग का पथिक बनने की सम्भावना हर समय बनी हुई है और इन आठ प्रांतों में भी अभी राजबन्दी जेलों में कैद हैं, तब तक इस प्रश्न को महत्वहीन नहीं बताया जा सकता। राजबन्दियों की रिहाई और जेलों का सुधार—दोनों एक समस्या के दो पहलू हैं। इस लिए दोनों के लिए एक साथ आन्दोलन होना आवश्यक है।

जरा तू देख मेरी बे नसों को देख।
हालत को मेरी देख मेरी बेकसी को देख॥
देती थी मैं रोज़ी सारे जमाने के लिए।
कुछ रहा न अब बाकी मेरे खाने के लिए॥

बृटिश साम्राज्य की पोलीसी ने भारतीयों को इस गढ़े में डलवा दिया जिसमें से निकलने के लिये एक बड़ा उद्योग करना पड़ेगा नोजवानो सोचो हमारी कला व कौशल को किस प्रकार नष्ट किया गया। १९१३ में जब महात्मा गांधी ने बंगाल का भ्रमण किया, ढाके के एक जुलाहे ने आपकी सेवा में एक फुट लम्बी थान की मरमल भेंट की इसमें ६० गज मलमल थी। इस कारीगर ने महात्मा जी को बतलाया कि यह मलमल मेरे हाथ की कती और बुनी है। परन्तु १८५७ के युद्ध में सरकार ने मेरे हाथ कटवा डाले। हंसराज वायरलेस जो कि सिंध की सरकार ने इस वर्ष १० वर्ष की कड़ी बन्दी के बाद रिहा किये हैं भारतियों के नाम यह संदेश भेजा था कि वही रेडियो जो कि आज आप ४०० वा ५०० में खरीद रहे हो मैं केवल १० रुपये में बना सकता हू।

नो जवानो देश की गिरी हुई हालत को देख कर क्या आप के कलेजे में दर्द पैदा नहीं होता, सत्य तो यह है कि जब मैं अपने देश की अविद्या को देखता हूँ, देश की दीनता को देखता हूँ, देश के ग्रामीणों को देखता हूँ, बेकारी को देखता हू, अनाथों को देखता हू, दीन दुखियों को देखता हू, इतना ही नहीं अन्धे, लूले, गूंगे, बहरे, कुष्टि, रोगी आदि अपने निर्धन भाइयों को देखता हूँ तो मेरा दर्द तिगुना हो

जाता है । अपने देश की यह गिरी अवस्था देख कर हृदय चूर चूर हो जाता है, इसी प्रकार जब भीतर की ओर देखता हूं, उन पर्दों में रहने वाली अशिक्षिता बहनों और माताओं की ओर देखता हूं, बाल विवाह और वृद्ध विवाह से ग्रस्त और त्रस्त देवियों की ओर देखता हूँ, छोटी २ वय ही में होने वाली दुखिया विधवाओं की ओर देखता हूं, तो मैं एक बार कांप कर, आंख मूंद कर, कलेजा पकड़ कर बैठ जाता हूं और यह सोचने लगता हूँ कि कैसे देश सुधार होगा, देश का बेड़ा किस प्रकार इस दुख सागर से पार होगा, इन सब का वज्र अगर कोई हो सकता है तो वह है विद्या का प्रचार इसलिये मित्रो अगर देश सेवा करना चाहते हो तो ग्राम २ में देश के बच्चों के लिये पाठशालायें खुलवादो ।

हम को अपने अधिकारों के लिये हर प्रकार से लड़ना चाहिये आज हम अपने देश के लिये कुछ भी नहीं कर सकते क्यों कि सब अधिकार विदेशी कर्मचारियों के हाथ में हैं भला विदेशी लोग किस प्रकार से हम लोगों की भलाई के लिये सोच सकते हैं भारत वासियों की लालसा और अभिलाषा की बात सिवाय भारत वासी के और दूसरा कौन जान सकता है, इसलिये हमारे लिये यह परम आवश्यक है कि हम इन विदेशी व्यापारियों को यहां से भगा कर राज काज का काम अपने हाथ में ले लेवें, एक अंग्रेज़ जिस ने कभी भी भारत के दर्शन न किये हों वह भारत के लिये कानून भेजे और वह फिर भारतीयों के उपयोगी हो बड़ा पड़ता है

इस सचाई के लिये अश्ल गवाही दे सकती है ? हरगिज़ नहीं। भारत के कानून जब तक भारती ही न बनायेंगे तब तक हमारे लिये सुखी जीवन सम्भव नहीं।

आज हमारे देश की सब से भयानक बीमारी परतंत्रता है। अगर भारत स्वतन्त्र हो जाता है तो इसके सारे दुख दूर हो जाते हैं। हमारी परतन्त्रता आकाश बेल के प्रकार भारत रूपी वृक्ष को खाये चली जा रही है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने हमारी कला और कौशल को नष्ट कर दिया, हमारे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति को बुरी तरह कुचल डाला, विदेशी हमारा घर लूट कर ले गये आज जो धन सरकार लगान और टैक्स के रूप में धनियों, किसानों और मजदूरों से लेती है उसे एक विदेशी सेना आराम के साथ स्वादिष्ट चाट बनाकर हड़प कर रही है। नौजवानो कहां है आपका राष्ट्रीय मान ? आज आप विलायतों में चोर और कमीने समझे जाते हो। आप जापान के किसी पुस्तकालय में नहीं जा सकते अमरीका के किसी होटल में नहीं ठहर सकते आखिर यह सब क्यों ? केवल आपकी परतन्त्रता से ही यह सब कुछ हो रहा है। आज भारत में लेडी लिंलंगो तपेदिक की चिकित्सा के लिये करोड़ों रुपया इकट्ठा करती फिर रही हैं क्या सचमुच यह धन हमारे ही लाभ के लिये एकत्रित किया जा रहा है ? नहीं यह धन तो कुछ लोहे के औज़ार खरीदने के लिये, विदेश में भेज दिए जायेंगे, पांच दस लेडी डाक्टरों को बड़ी २ वेतन देकर विदेशियों के पेट को भर दिया जायगा जरा सोचिये आपके लूटने के कितने ढङ्ग रचाये जा रहे हैं यह तो आप भली प्रकार से जानते

होंगे कि वह धन भारतीयों पर के कर्मचारियों ने किस २ बुरी चालों में भारतीयों को फसा कर प्राप्त किया गया। हाय भारत वालो आप इन बातों को कब सोचोगे कब इन विदेशी भिखारियों को यहा से निकाल कर अपने बच्चों की रोटी का प्रबन्ध करोगे। क्या आप नहीं देखते।

जो महमान बिन बुलाये के हैं वह सब ऐश करते हैं।
मगर जो घर के मालिक हैं वह भूके आज मरते हैं॥

एक निर्धन किसान की दशा को देखिए, कमज़ोर, हड्डियों का ढेर, शरीर पर वस्त्र नहीं, खाने को रोटी नहीं, पीने को स्वच्छ पानी नहीं, रहने के लिये फू स की झोंपड़ी नहीं उसके घर में मिट्टी के दो चार बरतनों के सिवाय कुछ नहीं उसके शरीर को देखिए मुह पिचका हुआ, हड्डिया निकली हुई, कमर झुकी हुई आखें गढ़ी हुई, परन्तु फिर भी जेठ को कड़ी धूप में पहरों हल चलाता है नगे पैरों ढेलों को ठोकरें खाता है, हाय भारत के देव कब इसकी स्थिति को सुधारोगे। जननी! कब भारत के लालों को आराम मिलेगा, आज उन की जानों के लाले पड़े हुवे हैं।

क्या पूछते हो किस उलझन में फस रहे हैं।
धीरों ये दुनिया के पत्थर बरस रहे हैं॥
तुम देख लो यहा पर ठडा पड़ा है चूल्हा।
दो दिन से रोटियों को बच्चे तरस रहे हैं॥

जब एक किसान का लाल अपनी टूटी हुई खटिया से उठता है उसके हाथ में डडा देकर ढोरों के पीछे रवाना कर दिया जाता है। दो पहर तक उद्योग करने के पश्चात जेठ की लू और माह को खेने के बाद जब

तब उसके हाथ पर दो चने की रोटी और नमक रख दिया जाता है, बेचारा सन्तोष के साथ पानी की घूंट भर भर कर रोटी के कन परन्तु कसैले टुकड़ों को निगल लेता है हमारी हकूमत इन सब बातों की जुम्मेवार नहीं किसान के बच्चों से उसका कोई वास्ता नहीं उसे तो अपना पेट भरने की पड़ी हुई है। मित्रों इस साम्राज्य की निर्दयता और कठोरता का नमूना देखो, इस बेबसी के राज्य का तमाशा देखो। आओ संसार वालो तुम भी आओ, भारत माता के उन कमाऊ नो निहालों की बेबसी और बेकसी की मूरत को अपने नेत्रों से देखो, यह कष्ट और उद्योग क्यों?

अमन कैसा कहां का सुख यहां वह तंग दस्ती है।
कि नव्वे फी सदी भाईयों को फाका मस्ती है॥
छिड़ा है हर तरफ हिंसा का करुमा राग भारत में।
जले जाते हैं सब उससे लगी है आग भारत में॥

सुबह गर खाने को है, तो रात को होता नहीं।
सीर होकर उमर भर एक रात भी सोता नहीं॥
दूसरों के वास्ते खुद आप मर लेता है वह।
एक मुट्ठी भर चनों से पेट भर लेता है वह॥

आरम्भ से लेकर आज तक यह सरकार की चाल रही है। कि भारतीयों को असभ्य और अनभिज्ञ रक्खा जाय। और इन की आंखों पर धोके की पट्टी बांध कर इन से तेली के कोल्हू के बैल की तरह काम लिया जाय। नित नई चाल चल कर हमारा सर्वस्व छीन लिया। यदि सरकार हमारी भलाई चाहती तो क्या डेढ़सो वर्ष में आठ प्रतिशत मनुष्यों को ही शिक्षा दे सकती थी। क्या हमारे मज़दूरों की यही

ऐसा होतो। किन्तु नहीं। हम पर सर्वदा अन्याय किया गया आज जब संसार की हर एक जाति स्वतन्त्रता के साथ अपनी आशा को तै कर रही है तो हमें भी आजादी क्यों नहीं दी जाती जो कि हमारा जन्माधिकार है क्यों नहीं यह विदेशी व्यापारी अपना बोरिया बिस्तर उठा कर चले जाते ! अब समय आचुका है यदि यह हमें हमारे अधिकारों को मनुष्यत्व से नहीं देंगे तो हम विवश होकर लातों के भूत बातों से नहीं मानते उसी चाल को ग्रहण करना पड़ेगा। भारत के पीड़ित मनुष्यो इन निर्दयों के सामने न गिड़गिड़ाओ आहों के तीरों से पत्थर को चीर कर दूध हासिल करने का विचार छोड़ दो सांप से दया की आशा छोड़ दो यदि आप सच्ची और दयावान सरकार चाहते हो तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद को नष्ट भ्रष्ट कर दो।

अंग्रेजों का भी खुदा के यहां हिसाब होने को है।
कारखाना सख्त गीरी का खराब होने को है॥
आह मजलूमों की जा पहुँची है हफ्त अफलाक पर।
अब गुलामों की जमीं पर इन्कलाब आने को है॥

आज भारतीय रूपी वृक्ष के फल फूल नोच लिये गये, टहनियां फाड़ दी गई इसका रङ्ग रूप तक बदल दिया गया इसके सहारे जो जीते थे वे इसके शत्रु बनगये जो इसकी छाया में बैठते थे वे इसी को नष्ट करने लगे परन्तु इस वृक्ष की जड़ें बहुत गहरी हैं और यह फिर हरा भरा हो सकता है।

इस समय देश के बच्चे २ का यह प्रथम कर्तव्य है कि इस समाज का सुधार करे क्योंकि समाज के सुधार के

राष्ट्रीय सुधार है। जो मनुष्य अपने जीवन को राष्ट्र सेवा में व्यतीत कर देता है वह सीधा स्वर्ग को चला जाता है। देश भक्ति ही प्रभु भक्ति है। हमारे करोड़ों भाई अशिक्षित हैं अज्ञानी हैं दीन और दुखी हैं इन्हें शिक्षित करने का काम उन शिक्षित भाइयों का कर्तव्य है जो भारत के सौभाग्य से कुछ लिख पढ़ कर योग्य हो चुके हैं। इसलिये ए भारत माता के नौजवानो यदि वास्तव में तुम्हारे हृदय में भारत माता का प्रेम है तो राष्ट्रीय जीवन को उच्च बनाने के लिये अपना जीवन त्याग दो। अब गुल बुलबुल के फसानों को छोड़कर इश्क व मुहब्बत के किस्सों को छोड़ कर फराक और हिजर के झगड़ों को छोड़ कर राष्ट्रीयता के गीत गाओ।

आपका देश उजड़ गया। आपकी जाति नष्ट होगई, अब आपको खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिये अपने जीवन को बलिदान करना होगा। इस समय जाति को आपकी बड़ी आवश्यकता है। भारत माता का ऋण जो तुम्हारे सर पर है उसकी कौड़ी २ चुका दो, भोले भटकों को सच्चा मार्ग दिखलादो, अपने नेताओं को देवता के समान जान कर उन की आज्ञा का पालन करो। जाति को अगर आवश्यकता हो तो जलती आग में मर जाओ।

सख्तियां सहने को पत्थर का जिगर पैदा करो।
काम की खातिर जो कट जाए वह सर पैदा करो॥

आज सारे संसार की आंखें भारतवर्ष पर लगी हुई हैं, आओ भारत माता के नौनिहालो इस संसार को जो चारों तरफ दुख से घिरा हुआ है अपनी आत्म शक्ति के बल से

बचाओ इन मक्कार और धोके बाज़ अंग्रेज़ों से अपनी माता के गरीब पुत्रों को बचाओ।

बृटिश साम्राज्य संसार के सामने यह प्रतीत कर रहा है कि हम भारत पर उनकी रक्षा करने के लिये राज्य कर रहे हैं। परन्तु रक्षा तो वह कर सकता है जो वीर हो। जिस के हृदय में कमीनापन न पाया जाता हो। यह लोग वीर नहीं परन्तु व्यापारी बनिये हैं जो भोगी बिल्ली की तरह अपना काम निकालने के लिये नित नये से नया जाल बिछाते रहते हैं। आज हमारे पास खाने को भोजन नहीं। तन ढापने को वस्त्र नहीं, तृष्णा को शांत करने के लिये जल नहीं। इस शरीर को धूप और ठण्ड से बचाने के लिये एक झोंपड़ा भी नहीं। और अपने भावों को प्रकट करने के लिये हमारे ज़बान नहीं पैर काट दिये ताकि चल न सकें। हाथ काट दिये ताकि मुर्गिया भी न उड़ा सकें। दीन धर्म को नष्ट किया। दिन दहाड़े निर्धनों को चन्द चान्दी के टुकड़ों का लोभ दिला कर ईसाई बनाया। हाय रे ज़ालिम! न हमारे पास विद्या है, न मान, न सत्कार, न आदर, न भाव।

निर्दई अंग्रेज़ों ने भारत के निर्दई नेताओं को अपराधी बना कर देश निकाला दिया। परन्तु हम जानते हैं कि उन्हीं नेताओं ने अपने रक्त से सींच कर इतना बड़ा किया है। इन वीरों का स्वदेश प्रेम, त्याग मातृ भूमि के प्रति बलिदान की भावना, उनकी तपस्या, उनकी सच्ची लग्न स्वतंत्रता के लिये हथेली पर जान रख कर चलना हमें सर्वदा याद आते रहेंगे। यदि आप इन वीरों के खून से रंगे हुए इति

राष्ट्रीय सुधार है। जो मनुष्य अपने जीवन को राष्ट्र सेवा में व्यतीत कर देता है वह सीधा स्वर्ग को चला जाता है। देश भक्ति ही प्रभु भक्ति है। हमारे करोड़ों भाई अशिक्षित हैं अज्ञानी हैं दीन और दुखी हैं इन्हें शिक्षित करने का काम उन शिक्षित भाइयों का कर्तव्य है जो भारत के सौभाग्य से कुछ लिख पढ़ कर योग्य हो चुके हैं। इसलिये ए भारत माता के नौजवानो यदि वास्तव में तुम्हारे हृदय में भारत माता का प्रेम है तो राष्ट्रीय जीवन को उच्च बनाने के लिये अपना जीवन त्याग दो। अब गुल बुलबुल के फसानों को छोड़कर इश्क व मुहब्बत के किस्सों को छोड़ कर फराक और हिजर के झगड़ों को छोड़ कर राष्ट्रीयता के गीत गाओ।

आपका देश बिगड़ गया। आपकी जाति नष्ट होगई, अब आपको खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिये अपने जीवन को बलिदान करना होगा। इस समय जाति को आपकी बड़ी आवश्यकता है। भारत माता का ऋण जो तुम्हारे सर पर है उसकी कौड़ी २ चुका दो, भोले भटकों को सच्चा मार्ग दिखलादो, अपने नेताओं को देवता के समान जान कर उन की आज्ञा का पालन करो। जाति को अगर आवश्यकता हो तो जलती आग में मर जाओ।

सख़्तियां सहने को पत्थर का जिगर पैदा करो।
काम की खातिर जो कट जाए वह सर पैदा करो॥

आज सारे संसार की आंखें भारतवर्ष पर लगी हुई हैं, आओ भारत माता के नोनिहालो इस संसार को जो चारों तरफ दुख से घिरा हुआ है अपनी आत्म शक्ति के बल से

बचाओ इन मक्कार और धोके बाज़ अंग्रेज़ों से अपनी माता के गरीब पुत्रों को बचाओ।

बृटिश साम्राज्य संसार के सामने यह प्रतीत कर रहा है कि हम भारत पर उनको रक्षा करने के लिये राज्य कर रहे हैं। परन्तु रक्षा तो वह कर सकता है जो वीर हो। जिस के हृदय में कमीनापन न पाया जाता हो। यह लोग वीर नहीं परन्तु व्यापारी बनिये हैं जो भीगी बिल्ली की तरह अपना काम निकालने के लिये नित नये से नया जाल बिछाते रहते हैं। आज हमारे पास खाने को भोजन नहीं। तन ढापने को वस्त्र नहीं, तृष्णा को शांत करने के लिये जल नहीं। इस शरीर को धूप और ठण्ड से बचाने के लिये एक झोंपड़ा भी नहीं। और अपने भावों को प्रकट करने के लिये हमारे ज़बान नहीं पैर काट दिये ताकि चल न सकें। हाथ काट दिये ताकि मुर्गियां भी न उड़ा सकें। दीन धर्म को नष्ट किया। दिन दहाड़े निर्धनों को चन्द चांदी के टुकड़ों का लोभ दिला कर ईसाई बनाया। हाय रे ज़ालिम! न हमारे पास विद्या है, न मान, न सत्कार, न आदर, न भाव।

निर्दई अंग्रेज़ों ने भारत के निर्दई नेताओं को अपराधी बना कर देश निकाला दिया। परन्तु हम जानते हैं उन्हीं नेताओं ने अपने रक्त से सींच कर इतना बड़ा किया है। उन वीरों को स्वदेश प्रेम, त्याग मात्र भूमि के प्रति बलिदान की भावना, उनकी तपस्या, उनकी सच्ची लग्न के लिये हथेली पर जान रख कर चलना हमें सर्वदा याद आते रहेंगे। यदि आप उन वीरों के खून से रंगे हुए

इतिहास को पढ़ो तो आप भी आंखों से गदगद खून बहाये बिना न रह सकेंगे। उन वीरों की वीरता देख कर आपकी छाती फूट उठेगी। और आप को ज्ञात होगा कि स्वदेश प्रेम से उन वीरों ने कहा तक अपनी आत्माओं को हनन किया है स्वतंत्रता के लिये हज़ारों को फांसी मिली बहुतेरों को काले पानी भेजा गया। लाखों ने जेल की भावनाओं से तंग हो कर आत्म हत्या करली और इस तरह भारत के लाखों कुटम्ब नष्ट होगये। परन्तु फिर भी आज तक भारत के वीर अपना सर कटाते चले आ रहे हैं। देश के वीरो, नवयुवको, क्या आप को उनकी याद नहीं सताती? आओ, युद्धक्षेत्र में आओ, और शत्रु के दांत खट्टे करो।

अगर सच मुच तुम बहादुरों की सन्तान हो और महाराणा का खून आपकी रगों में बाकी हो तो इस जालिम हकूमत को ज़ुलम करना सिखा दो। मित्रो तुम ही ने तो ससार के इतिहास की रचना की है आज तुम ही मनुष्यों की परतंत्रता के कारण हो इस सस्कार की बढ़ती हुई रोशनी में हर वस्तु स्वतंत्रता की ओर जा रही है क्या केवल तुम ही सोते रहोगे तुम ने तो भूत काल से मृत्यु को परतन्त्र बना रक्खा है तुम ही ने तो एक वीर सिपाही की तरह मातृ भूमि के लिये हसते हसते जान दी है।

इस समय भारत में हिन्दु मुस्लिम एकता की बड़ी आवश्यकता है, याद रक्खो एकता ही जातियों का जीवन है, एकता ही देश और जाति की जान है एकता ही राष्ट्रीयता का असली जौहर है एकता ही वह बुन्याद है जिस पर राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता का खूबसूरत और मज़बूत किला

बनाया जा सकता है यही वह अखन्ड मत है जिससे स्वतन्त्रता मिल सकती है। परन्तु ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी भेद नीति द्वारा भारत में जो दो दो दल खड़े कर दिये हैं यह उन्हीं के जाल में फस कर नष्ट हो जायेगी। इस बुरी नीति को नष्ट करने के लिये एक ही दवाई है कि सब मिल कर देश के झंडे के नीचे आओ हिन्दुस्तान के नाते से आप दोनों भाई भाई हो आप एक ही वृक्ष की सर सब्ज़ डाल हो, हमारी मज़हबी पुस्तकों में जगह जगह आज़ादी का पाठ पढ़ाया जाता है फिर आप अगर पक्के हिन्दु या मुसलमान हो तो पहले आज़ादी प्राप्त करलो आज अगर आप एक हो जाओ तो कल स्वतंत्रता तुम्हारे चरण छूएगी।

भारत के नवयुवको कायर न बनो, बुज़दिली न दिखाओ उदास न रहो, यह शरीर विनाशी है इसके अन्दर रहने वाली आत्मा अविनाशी है अपराध तो वह जिसे इस भेद का पता न हो। जो आया है उसे जाना है। जन्म और मौत का चोली और दामन का साथ है। न कोई हमारी मौत को टाल सकता है जब मरना ही ठहरा फिर इस से डर कर अपनी देश भक्ति को गिराना कायरों का काम है। आज अगर सब भारत वासी स्वदेश रक्षा के लिये तैयार हो जाए तो हमारा भाग्य बदले बिना नहीं रह सकता मित्रो आज़ादी और धर्म के लिये जीवन दे देना ही जीवन का असली तत्व है।

देश के लिये जीवन दे देना शूर वीर का काम है। अब भी समझो अपमान का जीवन व्यतीत करना पशुओं से

बुरा है। सोचो और देखो अपनी दशा को, आज हमारे पास खाने को रोटी नहीं, पहनने के लिये कपड़ा नहीं न दीन न धर्म न सुख न आराम न विद्या, न ज्ञान, न रुपया, न पैसा, न इज्जत, न मान, न शान, न आन, न जान, फिर हम ऐसा जीवन क्यों व्यतीत करें। भारत वासी शूर वीर बनो हल्की २ बातों में न उलझ, देश की कठिनाइयों को न बढाओ कांग्रेस को शक्ति हीन न कर स्वतंत्रता की अभिलाषा कर गुलामी का शत्रु बन, स्वराज्य का भक्त बन, शेर बन देख तो सही तेरे नेता क्या थे। रणक्षेत्र में आकर अपना भाग्य चक्र पलट आंसू न बहा देश भक्त बन नौकर शाही की कठ पुतली न बन भारतवासी बन, विदेशियों के टुकड़ों पर अपना पेट न पाल। गाधी की आज्ञा मान जवाहर से जोहर ले, सुभाष के नेतृत्व में रह, खान अब्दुलगफ्फार के पीछे पीछे चल, आज़ादी की फौज में भरती हो फिर देख भारत का कितना जल्दी उद्धार होता है।

समाप्त